वर्ष : 33, अंक : 129, अप्रैल–जून, 2010

राजभाषा भारती

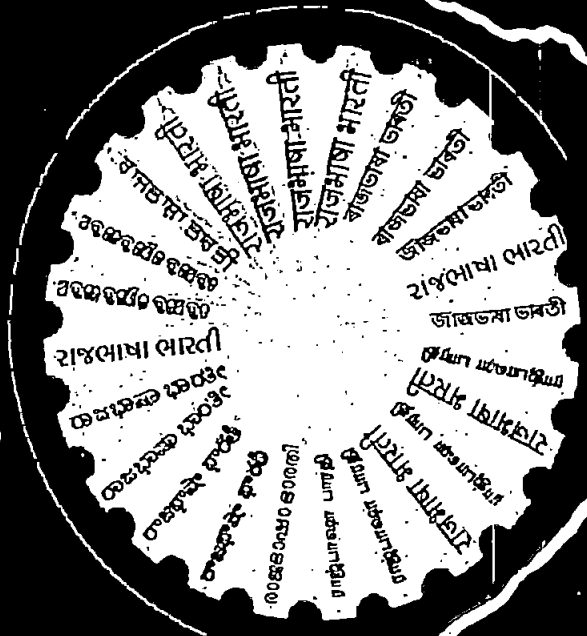

जन जन की भाषा है हिंदी

देहरादून में आयोजित दिल्ली और उत्तर क्षेत्रों का क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार समारोह में माननीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय माकन जी पुरस्कार प्रदान करते हुए ।

शिलांग में आयोजित पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र का क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार समारोह में माननीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय माकन जी पुरस्कार प्रदान करते हुए ।

भारति जय विजय करे, कनक-शस्य-कमल धरे
—निराला

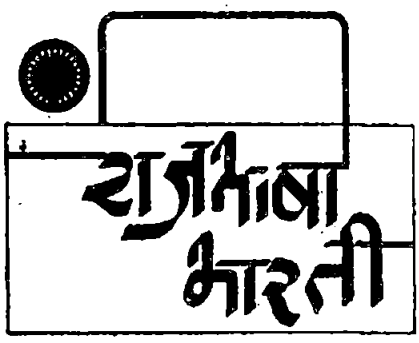

राजभाषा विभाग की त्रैमासिकी

वर्ष : 33

अंक : 129

अप्रैल—जून, 2010

❑ संपादक
रमेशबाबू अणियेरी
निदेशक (अनुसंधान)
दूरभाष : 24643622

❑ सहायक संपादक
शांति कुमार स्याल
दूरभाष : 24698054

❑ निःशुल्क वितरण के लिए

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

❑ पत्र-व्यवहार का पता :
संपादक, राजभाषा भारती,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
लोकनायक भवन (द्वितीय तल),
खान मार्किट, नई दिल्ली-110003

ईमेल—ru-ol@mha.nic.in
patrika—ol@mha.nic.in
पोर्टल—www.rajbhasha.gov..in.

विषय-सूची

			पृष्ठ
❑	संपादकीय		(iii)
❑	चिंतन		
1.	राजभाषा हिंदी : विकास यात्रा के सौपान	—डी. के. पाण्डेय	1
2.	राजभाषा कार्यान्वयन में हिंदी एस एम एस का महत्त्वपूर्ण योगदान	—बी. विश्वनाथाचारी	5
3.	राजभाषा का सफल कार्यान्वयन : समस्याएं एवं संभावनाएं	—डॉ. शशि कुमार सिंह	7
4.	साहित्य की भूमिका और समाज का दायित्व	—डॉ. पी.आर. वासुदेवन "शेष"	10
5.	साहित्यिक अनुवाद : चुनौतियां एवं संभावनाएं	—अरुण होता	12
❑	प्रबंधन		
6.	बेहतर कार्य-निष्पादन में बैठकों का प्रभाव	—सुश्री मंजुला वाधवा	17
❑	तकनीकी		
7.	कंप्यूटर संचार और हिंदी	—डॉ. तुकाराम दौड़	21
8.	लागत नियंत्रण और गुणवत्ता सुधार में हमारा प्रयास	—राज बहादुर गुप्ता	28
❑	पत्रकारिता		
9.	हिंदी पत्रकारिता : एक अवलोकन	—डॉ. मणिक मृगेश	32
❑	पर्यावरण		
10.	वायु-प्रदूषण से कैसे लड़ें	—डॉ. रामदास "नादार"	34
❑	स्वास्थ्य		
11.	संतुलित एवं स्वास्थ्यप्रद भोजन द्वारा स्वस्थ कैसे रहें	—डॉ. कैलाश चंद्र गुप्ता	38
❑	विविध		
12.	भारतीय नारी की समस्या	—डॉ. शशि बाला रावत	40

2629 HA/2010 - 1A

विषय-सूची	पृष्ठ

राजभाषा संबंधी गतिविधियां :

(क) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें 42

आयकर आयुक्त; पटियाला; मुख्य आयकर आयुक्त अमृतसर; पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर; केंद्रीय लोक निर्माण विभाग, इलाहाबाद; एन एच पी सी लि. कोलकाता; बोकारो स्टील सिटी; भिलाई इस्पात संयंत्र;

(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें 46

गुवाहाटी (उपक्रम); मुंबई (उपक्रम); जालन्धर; नाजिरा; चण्डीगढ़; लुधियाना; पटियाला; जयपुर; दिल्ली (बैंक); करनाल; बोकारो; देवास; जोधपुर; भंडारा; देहरादून; पटना (बैंक); बालाघाट; इलाहाबाद;

(ग) कार्यशाला 55

बी.एस.एन.एल. दावणगेरे; भारी पानी संयंत्र; तूतीकोरिन; परमाणु ऊर्जा विभाग, हैदराबाद; आकाशवाणी, चेन्नई; केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर; आकाशवाणी, विशाखापट्टणम; बी.ई.एम.एल. बेंगलौर; न्यूक्लियर पॉवर कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लि. कैगा; आकाशवाणी, शिलचर; रेल डाक सेवा शिलचर; कछाड़ पेपर मिल; एन.एच.पी.सी. लि. चण्डीगढ़; राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान, गोवा, आकाशवाणी, चंद्रपुर; आकाशवाणी, पणजी; भा.ति.सी.पु. बल, महानिदेशालय; केंद्रीय भूमि जल बोर्ड, फरीदाबाद; भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नाशिक रोड; पश्चिम रेलवे, दाहोद; कोयला खान भविष्य निधि, रांची; प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद; बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र, बालाघाट; एन.टी.पी.सी. फरीदाबाद; भारतीय कपास निगम लि., राजकोट; परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय, जयपुर; भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण जयपुर; भारतीय विमान पत्तन प्राधिकरण राजकोट; क्षेत्रीय तसर अनुसंधान केंद्र, भंडारा; बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र भंडारा; यूको बैंक, रांची; भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण गोवा;

(घ) हिंदी दिवस 70

मुख्य नियंत्रण सुविधा, हासन; महालेखाकार, भुवनेश्वर; आकाशवाणी, कटक; एन एम डी सी लि., हैदराबाद; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, थाने; नाईपर, मोहाली;

(ङ) विश्व हिंदी दिवस 75

विदेश मंत्रालय; नाभिकीय ईंधन सम्मिश्र हैदराबाद; परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय, जयपुर;

प्रतियोगिता/पुरस्कार 77

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन; कछाड़ पेपर मिल; एन एच पी सी बालूटर; पूर्वोत्तर सीमा रेल; एन.एच.पी.सी. लि., चण्डीगढ़; रक्षा प्रधान नियंत्रक, चण्डीगढ़; नराकास, राजकोट; भारत संचार निगम लि., तमिलनाडु;

➠संगोष्ठी/सम्मेलन 80

युनियन बैंक ऑफ इंडिया, चेन्नई; एन एम डी सी लि., हैदराबाद; भारी पानी संयंत्र तूतीकोरिन; उत्तर पूर्व विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान, जोरहाट;

➠प्रशिक्षण 83

राजभाषा विभाग द्वारा कप्यूटर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम-2010-11; एन एच पी सी, कोलकाता;

➠पाठकों के पत्र 95

2629 HA/10—1 B

संपादकीय

भारत की सांस्कृतिक चेतना विलक्षण है। संस्कृति की जड़ों को ढूँढने के लिए हमें वर्तमान काल की सच्चाई को गहराई से समझना चाहिए। संस्कृति को, तीव्र गति से बदलते हमारे जीवन का अभिन्न अंग बनाने के बारे में हमें सोचना चाहिए। भाषा व्यक्ति एवं समाज को आपस में जोड़ने वाली एक सहज शक्ति है । राष्ट्र की अखण्डता एवं राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने में प्रादेशिक भाषा साहित्य एवं प्रादेशिक भाषा साहित्यकारों की महत्वपूर्ण भूमिका है । प्रादेशिक भाषा साहित्य एवं प्रादेशिक भाषा साहित्यकारों के विचारों के आदान-प्रदान के जरिए विकसित होने वाला पूर्ण एवं सम्पुष्ट भारतीय साहित्य, हमारी राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने के लिए सहायक साबित होगा । "राजभाषा भारती" राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रचार-प्रसार के जरिए हमारे देश की विलक्षण संस्कृति की अभिवृद्धि के लिए सदा जागरूक एवं प्रयासरत है ।

इस अंक में "चिंतन" स्तंभ के अंतर्गत "राजभाषा हिंदी : विकास यात्रा के सोपान" लेख में श्री डी. के. पाण्डेय, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग ने राजभाषा के रूप में हिंदी के विभिन्न आयामों को ऐतिहासिक, समाजिक एवं व्यावहारिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है। सरल एवं सुबोध भाषा में रचित प्रस्तुत लेख में लेखक ने भाषिक एवं व्याकरणिक दृष्टि से हिंदी की विशिष्टता को रेखांकित किया है । यह लेख साहित्यिक एवं उपयोगिता की दृष्टि से भी एक उत्कृष्ट रचना है । श्री बी. विश्वनाथाचारी का "राजभाषा कार्यन्वयन में हिंदी एस. एम.एस. का महत्वपूर्ण योगदान" नामक लेख संघ की राजभाषा नीती के कार्यान्वयन में एस.एम.एस. की भूमिका पर प्रकाश डाल रहा है । आज के वैश्वीकरण एवं विश्व व्यापार के जमाने में हिंदी के सामने आई नई चुनौतियों पर प्रकाश डाल रहे हैं डॉ. शशि कुमार सिंह "राजभाषा का सफल कार्यान्वयन : समस्याएं एवं संभावनाएं" नामक अपने लेख में । "साहित्य की भूमिका और समाज का दायित्व" शीर्षक लेख में डॉ. पी.आर. वासुदेवन "शेष" ने देश, राष्ट्र, समाज तथा विश्व की उन्नति में साहित्य का क्या स्थान है, उसका परिचय कराया है। "साहित्यिक अनुवाद : चुनौतियां एवं संभावनाएं" लेख में श्री अरुण होता यह स्पष्ट कर रहे हैं कि अनुवाद के बिना विश्व साहित्य अथवा संपूर्ण भारतीय साहित्य को समझा नहीं जा सकता । विश्व साहित्य के विकास का एक प्रमुख साधन अनुवाद भी है । "प्रबंधन" स्तंभ के अंतर्गत सुश्री मंजुला वाधवा "बेहतर

कार्य निष्पादन में बैठकों का प्रभाव" नामक अपने लेख में हर क्षेत्र में सफलता और बेहतर निष्पादन के लिए सहभागिता-परक दृष्टिकोण को मजबूत करने हेतु बैठकों पर विशेष जोर दे रही हैं । "तकनीकी" स्तंभ में डॉ. तुकाराम दौड़ ने "कंप्यूटर संचार और हिंदी" नामक लेख में कंप्यूटर सूचना प्रणाली से मानव विज्ञान और समाजशास्त्रीय सिद्धांतों में हुए बदलाव का चित्रण किया है । श्री राजबहादुर गुप्ता ने द्रुत गति से चलने वाले समय की परिवर्तनशीलता का प्रभाव वैयक्तिक, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक क्षेत्रों में किस हद तक पड़ता है, उसका वर्णन "लागत नियंत्रण और गुणवत्ता सुधार में हमारा प्रयास" शीर्षक अपने लेख में किया है। "पत्रकारिता" स्तंभ में प्रस्तुत डॉ. मणिक मृगेश के "हिंदी पत्रकारिता : एक अवलोकन" लेख में हिंदी पत्रकारिता का ऐतिहासिक परिदृश्य का चित्रण किया गया है । डॉ. रामदास "नादार" ने "पर्यावरण" स्तंभ के अतंर्गत प्रस्तुत "वायु प्रदूषण से कैसे लड़ें" नामक अपने चिंतोदीपक लेख में बेहिसाब आबादी बढ़ने के कारण होने वाले प्रकृति का अंधा-धुंध दोहन पर चिंता व्यक्त की है । "स्वास्थ्य" स्तंभ में प्रकाशित "संतुलित एवं स्वास्थ्यप्रद भोजन द्वारा स्वस्थ कैसे रहें" लेख डॉ. कैलाश चन्द्र गुप्ता ने स्वस्थ जीवन के लिए संतुलित भोजन के महत्व पर प्रकाश डाला है। "विविध" स्तंभ में "भारतीय नारी की समस्या" नामक अपनी रचना में डॉ. शशि बाला रावत आह्वान कर रही हैं कि नारी पतन व उत्पीड़न के खिलाफ समाज आवाज उठाए ।

इस अंक में पहले की तरह अन्य नियमित स्तंभ भी दिए जा रहे हैं । आशा है कि "राजभाषा भारती" के पूर्व अंकों की भांति यह अंक भी पाठकों को रुचिकर लगेगा । आपके उपयोगी सुझाव की प्रतिक्षा रहेगी ।

–संपादक

चिंतन

राजभाषा हिंदी: विकास यात्रा के सोपान

–डी. के. पाण्डेय*

भाषा विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम होती है । भाषा जितनी सुबोध, सहज और सरल होगी, भाव-संप्रेषण उतना ही सफल और सशक्त होगा । भारतीय भाषाओं की परंपरा में या उनके इतिहास में हिंदी का वही स्थान व महत्व है जो प्राचीन काल में संस्कृत का था । इस संबंध में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हिंदी करोड़ों लोगों की विचारवाहिनी भाषा है । भारत की आबादी का करीब आधा हिस्सा हिंदी भाषी है और वह आपसी संप्रेषण के लिए हिंदी का ही प्रयोग करता है ।

शासन में, कानून बनाने, आदेश निकालने, अध्यादेश जारी करने, प्रतिवेदन, ज्ञापन, सूचना प्रसारित करने, लेखा-जोखा तैयार करने, व्यावसायिक काम करने, आदि के लिए जो भाषा अपनाई जाती है वस्तुतः उसी का नाम है-राजभाषा । कौटिल्य को भारतीय राजनीति का पितामह माना गया है । उनका ग्रंथ 'अर्थशास्त्र' भारत के शासन विधान का आदिग्रंथ है । राजपत्रों और उनकी भाषा के संबंध में कौटिल्य ने अपने 'अर्थशास्त्र' में लिखा है कि शासन की भाषा में अर्थक्रम, संबंध, परिपूर्णता, माधुर्य, औदार्य, स्पष्टता इन छः गुणों का होना नितांत आवश्यक है--परिपूर्णता, माधुर्यमौदार्य स्पष्टस्वमिति लेख संवत् । अतः प्रशासनिक हिंदी का स्वरूप साहित्यिक हिंदी की शैली-प्रवाह से अलग प्रकार का होता है, कामकाज की भाषा न तो साहित्यिक भाषा की भांति भाव और अलंकार प्रधान होती है और न ही बोलचाल की भाषा के समान एकदम सरल । इसका मुख्य कारण यह है कि कार्यालय में प्रयुक्त हो रही भाषा में कार्यालयी संस्कार होता है और कार्यालय की विभिन्न कार्रवाइयों के लिए अलग-अलग शब्द निर्धारित होते हैं ।

हमारे देश में राजभाषा की एक सुदीर्घ परंपरा मिलती है । प्राचीन काल में काफी समय तक लगभग संपूर्ण भारतवर्ष की राजभाषा संस्कृत थी और इसके अलावा विभिन्न प्रदेशों, राज्यों में उनकी अपनी राजभाषा प्रचलित थी । भारत में ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी से ही हिंदी विस्तृत क्षेत्र में बोली जाती रही है । मुगल काल में फारसी राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित थी । अंग्रेजी राज के समय अंग्रेजी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया था । परंतु, जनता के साथ संपर्क की भाषा सदा हिंदी ही रही । आज से 500 वर्ष पूर्व भारत में आगमन के समय वास्को डि गामा को भी पता था कि भारत जैसे बहुभाषी देश को जानने-समझने के लिए उसकी भाषा को जानना सबसे जरूरी है । इसलिए अपनी महीनों लम्बी समुद्री यात्रा के समय एक गुजराती मुसलमान की सहायता ली और हिन्दुस्तानी भाषा को सीखा । भारतीय संस्कृति की यह विशेषता है कि समय-समय पर विदेशी व्यापारी व आक्रमणकारी भारत आए और उनमें से कुछ यहीं के होके रह गए और कुछ वापस चले गए । भारत के लोगों ने सहज रूप से उनकी परंपरा और भाषा को अपनाया और आत्मसात कर लिया । चाहे वह युनान के लोग हों, फ्रांसीसी हों या फिर अंग्रेज । वर्ष 1757 में प्लासी के युद्ध में विजयी होने के उपरांत अंग्रेजों ने भारत में व्यापारी के साथ-साथ प्रशासक की भूमिका भी अदा करनी शुरू कर दी । ऐसे में अपने माल को बेचने के साथ-साथ लोगों पर शासन करने के लिए उन्होंने भारतीय भाषाओं को सीखना शुरू किया । इसी के परिणामस्वरूप कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की जहाँ भारतीय पंडित और मौलवियों की नियुक्ति इसलिए की गई कि वे अंग्रेज अफसरों को हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं का ज्ञान दे सकें । स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हिंदी ने जनसंपर्क में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । उसी समय से हिंदी को राजकीय भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया जा रहा था । स्वांत्र्योत्तर

*संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, लोक नायक भवन नई दिल्ली

2629-HA/10—2 A

भारत में स्वाधीनता और स्वावलम्बन के साथ-साथ स्वभाषा को भी आवश्यक माना गया । स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद गाँधीजी ने खुले शब्दों में कहा कि "प्रांतीय भाषा या भाषाओं के बदले में नहीं बल्कि उनके अलावा एक प्रांत से दूसरे प्रांत का संबंध जोड़ने के लिए सर्वमान्य भाषा की आवश्यकता है । ऐसी भाषा तो एकमात्र हिंदी या हिन्दुस्तानी ही हो सकती है ।" राजभाषा के संबंध में संविधान सभा के सदस्यों ने काफी चिंतन-मनन किया । तदनुसार 14 सितंबर, 1949 को देवनागरी में लिखित हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया । हिंदी भाषा सरल और सुबोध है । हिंदी में अद्‌भुत संप्रेषण शक्ति है । संपर्क भाषा के तौर पर हिंदी की खूबियत सर्वविदित है । स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हिंदी विभिन्न भाषा-भाषी लोगों के बीच में संपर्क स्थापित करने का साधन रही और उसने देशवासियों को एकता के सूत्र में पिरोया ।

भारतीय संविधान के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया । सरकारी प्रयोजनों के लिए भारतीय अंकों के अंतराष्ट्रीय रूप को मान्यता प्रदान की गई । साथ ही 1965 तक अंग्रेजी भाषा का प्रावधान रखा गया । संविधान द्‌वारा प्राप्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए 1952 में राष्ट्रपति ने एक आदेश जारी किया जिसके अनुसार राज्यपालों तथा उच्च और उच्चतम न्यायालयों के न्यायाधीशों के नियुक्ति पत्रों के लिए अंग्रेजी के अतिरिक्त हिंदी और अंतरराष्ट्रीय अंकों के साथ देवनागरी अंकों का प्रयोग अधिकृत किया गया । तीन वर्ष पश्चात् अर्थात् 1955 में एक और आदेश जारी किया गया जिसके अनुसार जनता के साथ पत्राचार करने, प्रशासनिक रिपोर्ट, सरकारी पत्रिकाओं, संसदीय रिपोर्ट, संकल्प, हिंदी राज्यों के साथ पत्राचार, संधियों और करार में, देशों की सरकारों और सरकारी दूतों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ संपर्क साधने में हिंदी का प्रयोग भी अधिकृत किया गया । इस सिलसिले में राष्ट्रपति द्‌वारा जारी तीसरे आदेश (सन् 1960) में वैज्ञानिक, प्रशासनिक और कार्यविधि प्रयोजनों के लिए हिंदी शब्दावली के विकास, प्रशासनिक और कार्यविधि संबंधी सामग्री के लिए हिंदी अनुवाद और भारत सरकार के कर्मचारियों के लिए हिंदी प्रशिक्षण का प्रावधान किया गया ।* राजभाषा संबंधी सांविधानिक और कानूनी व्यवस्थाओं का अनुपालन करने एवं संघ के सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए गृह मंत्रालय के एक स्वतंत्र विभाग की स्थापना जून, 1975 में की गई थी । अपनी स्थापना के समय से ही राजभाषा विभाग संघ के सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए प्रयास करता आ रहा है । संविधान द्‌वारा हिंदी को राजभाषा के पद पर आसीन करने से हिंदी भाषा एवं राजभाषा विभाग पर बड़ा भारी उत्तरदायित्व आ गया । प्रशासनिक भाषा में द्‌विधता से अर्थ का अनर्थ हो सकता है । अत: राजभाषा की भूमिका का निर्वहन करने के लिए हिंदी भाषा के मानकीकरण पर नए सिरे से विचार-विमर्श होने लगा । प्रशासन और शिक्षा में प्रयुक्त होने वाली पारिभाषिक शब्दावली का हिंदी में संपादन होने लगा । केंद्रीय सरकार ने एक स्थायी आयोग का गठन किया । विज्ञान के क्षेत्र में भी परिनिष्ठ या मानक हिंदी की मांग उसी प्रकार उठी जिस प्रकार शासन और न्याय के लिए । इन आवश्यकताओं की ओर राज्य सरकारों का भी ध्यान गया । सम्मेलन आयोजित किए गए जिनमें हिंदी के शब्द समूह, लिपि, वर्तनी, व्याकरण तथा शैलियों को आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित और स्थिर करने का कार्य किया गया । इन विषयों पर दो संस्थाओं का विशेष योगदान है- एक केंद्रीय हिंदी निदेशालय का और दूसरा प्रयाग विश्वविद्‌यालय के हिंदी विभाग के माध्यम से भारतीय हिंदी परिषद का । निदेशालय ने लिपि के मानकीकरण पर अधिक ध्यान दिया । वर्तनी के बारे में कारक चिह्नों (परसर्गों) को संज्ञा से पृथक और सर्वनामों से सटाकर लिखने का नियम निर्धारित किया, योजक चिह्न कहाँ-कहाँ लगाना चाहिए, अनुस्वार और अनुनासिक चिह्नों का प्रयोग किन स्थितियों में हो, इत्यादि कुछ मुद्‌दों पर बहस की गई । भाषा के सर्वांगीण मानकीकरण का प्रश्न सबसे पहले (सन् 1950 में) इलाहाबाद विश्वविद्‌यालय के हिंदी विभाग ने उठाया । अत: हिंदी के मानकीकरण के व्यावहारिक पक्ष को उजागर करने के लिए राजभाषा विभाग रेडियो, दूरदर्शन, पत्र-पत्रिकाओं और विद्‌यालयों के अध्यापकों के सहयोग के साथ कार्य कर रहा है ।

राजभाषा संकल्प, 1968 के अनुपालन में राजभाषा हिंदी के प्रसार और विकास की गति बढ़ाने के लिए तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों में इसके प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए राजभाषा विभाग प्रतिवर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम जारी करता है । वार्षिक कार्यक्रम के संबंध में

2629 HA/10—2 B

निम्नलिखित बिंदु विशेष रूप से विचारणीय हैं-संसदीय राजभाषा समिति की रिपोर्ट पर जारी किए गए राष्ट्रपति के आदेशों का मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों द्वारा अनुपालन किया जाए; कंप्यूटर, ई-मेल, वेबसाइट सहित उपलब्ध सूचना प्रौद्योगिकी सुविधाओं का अधिक से अधिक उपयोग करते हुए हिंदी में काम को बढ़ाया जाए; संबंधित विभाग वैज्ञानिक व तकनीकी साहित्य हिंदी में छपवाकर उसे जनसाधारण के उपयोग हेतु उपलब्ध करवाने हेतु आवश्यक उपाय करें; हिंदी, हिंदी टंकण-आशुलिपि संबंधी प्रशिक्षण कार्य में तीव्रता लाएं ताकि तत्संबंधी लक्ष्यों को निर्धारित समय-सीमा में प्राप्त किया जा सके; राजभाषा कार्य से संबंधित अधिकारियों को विभाग के समस्त कार्यकलापों से परिचित कराया जाना आवश्यक है, जिससे कि वे अपने दायित्व को अधिक अच्छी तरह निभा पाएं तथा मंत्रालय/विभाग अपने विषयों से संबंधित संगोष्ठियाँ हिंदी माध्यम से आयोजित करें। सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रगामी प्रयोग के क्षेत्र में प्रगति हुई है किंतु अब भी लक्ष्य प्राप्त नहीं किए जा सके हैं। सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग बढ़ा है किंतु अभी भी बहुत-सा काम अंग्रेजी में हो रहा है। राजभाषा विभाग का लक्ष्य है कि सरकारी कामकाज में मूल टिप्पण और प्रारूपण के लिए हिंदी का प्रयोग हो। यही संविधान की मूल भावना के अनुरूप होगा।

परंतु, अपनी स्वतंत्रता के 62 वर्ष पूर्ण करने के पश्चात् भी भारत राजभाषा के रूप में हिंदी को वह पहचान नहीं दे पाया है जो दुनिया के सभी देशों ने अपनी भाषा को दी है। इसका मुख्य कारण इच्छा-शक्ति की कमी और अनुवाद पर निर्भरता है। मात्र अनुवाद के सहारे हिंदी लाने का प्रयत्न कभी फलीभूत नहीं हो सकता। आवश्यकता मूल रूप से हिंदी में काम करने की है। एक वृक्ष के स्थान पर दूसरा वृक्ष तभी लगाया जा सकता है जब पहले वृक्ष को हटाया जाए। बड़े वृक्ष की छाया में छोटा वृक्ष पनप नहीं सकता। भाषा प्रयोग के कारण ही विकसित और प्रसारित होती है। भारत सरकार के कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग के लिए किए गए प्रावधान तथा सुविधाओं के बावजूद विरोध भले ही प्रत्यक्षत: नज़र न आए,.मगर प्रगति की वास्तविकता सर्वविदित है। संवैधानिक प्रावधानों एवं सरकार की प्रेरणा एवं प्रोत्साहन की नीति के बावजूद कुछ लोग हिंदी से परहेज करते हैं। इस स्थिति में परिवर्तन तभी संभव है, जब हमारी मानसिकता में परिवर्तन हो जाए तथा हम मूल रूप से सरकारी काम-काज हिंदी में करना शुरू कर दें।

वर्तमान समय में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न भाषा की सहजता और सरलता का है। माना जाता है कि प्रशासनिक हिंदी दुरूह और अस्पष्ट हो जाती है। द्विभाषिक सामग्री में लोग हिंदी की बजाए अंग्रेजी के पाठ को इसलिए पढ़ना चाहते हैं क्योंकि उसमें उन्हें स्पष्टता अधिक महसूस होती है। जब तक हिंदी भाषा का पाठ अनुवाद के रूप में हमारे समक्ष आएगा तब तक वह सहज नहीं हो सकता। यह आरोप मिथ्या नहीं है कि वर्तमान कार्यालयी हिंदी में यदाकदा एक हद तक कृत्रिमता अथवा अटपटापन भी देखने को मिलता है। सच तो यह है कि शब्द कोई कठिन नहीं होता, वह तो प्रयोग में लाने से अपना हो जाता है। हिंदी भाषा को कठिन महसूस करने की समस्या वस्तुत: मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक अधिक है, वास्तविक कम। हिंदी ध्वन्यात्मक भाषा है। जहाँ अंग्रेजी के उच्चारण के लिए भी शब्दकोश देखने की आवश्यकता हो सकती है वहीं हिंदी के लिए सिर्फ अर्थ देखने के लिए शब्दकोश की आवश्यकता पड़ती है। अंग्रेजी शब्दों की स्पेलिंग रटनी पड़ती है जबकि हिंदी के शब्दों की वर्णमाला स्वर व व्यंजन तथा बारह खड़ी को रटने से किसी भी शब्द को पढ़ना-लिखना सहज हो जाता है। यही कारण है कि हिंदी में किसी भी भाषा को लिखना या उसका उच्चारण करना सरल होता है। इस तथ्य की पुष्टि इस बात से भी होती है कि 'माइक्रोसॉफ्ट' के मालिक बिल गेट्स ने हिंदी भाषा और लिपि को विश्व की अन्य भाषाओं की तुलना में सबसे अधिक वैज्ञानिक मान है। अत: इसमें दो राय नहीं कि राजभाषा हिंदी की सबसे बड़ी समस्या हिंदी में काम करने की प्रवृत्ति अथवा इच्छाशक्ति का अभाव है। अंग्रेजी में काम करके अपने को श्रेष्ठ समझने की मानसिक दासता के चलते हिंदी में काम करने की लगन तो दूर, उत्साह भी पैदा हो पाना संभव नहीं है। यह कठिनाई केवल हिंदीतर भाषियों की ही नहीं हिंदीभाषियों की भी है। राज्य स्तर पर जो लोग हिंदी में काम करते हैं, केंद्र स्तर पर तैनात होने पर वे अंग्रेजी का ही सहारा लेते हैं। हिंदी के प्रयोग में अटपटापन, दुरूहता, जटिलता आदि काफी कुछ इसी अनिच्छा की प्रवृत्ति का परिणाम है। जिसके चलते वे इस भाषा के प्रति अपनापन महसूस नहीं करते हैं और सहज, सुबोध भाषा का प्रयोग तो दूर सही भाषा लिखने पर भी ध्यान

नहीं देते । उच्च अधिकारियों का वह रवैया निचले स्तर के अधिकारियों और कर्मचारियों को भी प्रभावित करता है । उन्हें लगता है कि यदि वे हिंदी का प्रयोग करेंगे तो यह समझा जाएगा कि वे अंग्रेजी के प्रयोग में अक्षम हैं । इस मानसिकता में बदलाव लाना जरूरी है । राजभाषा हिंदी के प्रयोग में आने वाली उक्त कठिनाइयों का समाधान कई छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देने से काफी हद तक हो सकता है । किसी विषय को स्पष्ट करने के लिए अतिरिक्त वाक्य जोड़ने से परहेज नहीं करना चाहिए । कभी-कभी अंग्रेजी के एक शब्द को स्पष्ट करने के लिए पूरा एक वाक्य भी देना पड़ सकता है । इसे भाषिक संप्रेषण क्षमता की कमी नहीं समझना चाहिए । दूसरी ओर यह भी हो सकता है कि अंग्रेजी भाषा के पूरे वाक्य के लिए हिंदी भाषा का एक शब्द ही पर्याप्त हो । भाषा का स्वरूप निर्धारित करते समय यह ध्यान रखना बहुत आवश्यक है कि पत्र या प्रारूप किस व्यक्ति को संबोधित है । उस व्यक्ति की सामाजिक, पदीय स्थिति और हिंदी भाषिक योग्यता के अनुरूप ही शब्दों का प्रयोग करना चाहिए । छोटे-छोटे वाक्य लिखना सुविधाजनक होता है और वैसे भी कई उप-वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य की रचना करना हिंदी की प्रकृति नहीं है । जहाँ तक हो सके प्रशासनिक कार्यों को सरल अभिव्यक्ति ही देनी चाहिए ।

कार्यालयी हिंदी की सहजता कथ्य की स्पष्टता, सरल-सुबोध वाक्यों की रचना और उपयुक्त शब्दों के चयन पर निर्भर करती है । दूसरी भाषाओं के जो प्रचलित शब्द हैं और आम बोलचाल की भाषा में घुलमिल गए हैं, उन्हें ज्यों का त्यों अपना लेना चाहिए । विशेष रूप से ऐसे शब्द अंग्रेजी या उर्दू भाषा से लिए जा सकते हैं । यूँ तो ऐसे शब्दों के विशुद्ध हिंदी रूप भी लिए जा सकते हैं परंतु इससे भाषा की सहजता नष्ट होने का डर होता है और भाषा बनावटी प्रतीत होती है । उन्हीं शब्दों को अपनाना चाहिए जो स्वाभाविक लगे। यही गुण कार्यालयी हिंदी को ग्राह्य और लोकप्रिय बना सकते हैं ।

राजभाषा विभाग और हिंदी सेवियों के निरंतर प्रयास के फलस्वरूप आज हिंदी भारतीय भू-भाग से बाहर निकल विश्व धरातल पर दस्तक दे रही है और यह दस्तक पूरी दुनिया में सुनी जा रही है । भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ स्थानीय भाषाओं का सहारा ले रही है और अपने व्यवसाय को आगे बढ़ा रही हैं । अपने उत्पाद को ग्राहक के मन में बसाने के लिए उनकी भाषा का सहारा लेना उनकी मार्केटिंग स्ट्रेटेजी का प्रमुख हिस्सा है । इसके फलस्वरूप ही सैटेलाइट-चैनलों पर कई हिंदी समाचार चैनलों का प्रारंभ हुआ । हिंदी भाषा की बढ़ती लोकप्रियता के कारण ही वरिष्ठ पत्रकार प्रनब राय द्वारा प्रस्तुत 'वर्ल्ड दिस वीक' कार्यक्रम को हिंदी में शुरू किया गया । इसके बाद ही दूरदर्शन पर समसामयिक विषयों पर आधारित 'आज तक' की शुरूआत हुई जो 24 घंटे के हिंदी समाचार चैनल में बदल गया । सूचना प्रौद्योगिकी विभाग ने हिंदी के लिए विभिन्न प्रकार के सॉफ्टवेयर विकसित किए हैं । इंटरनेट के क्षेत्र में हिंदी किसी भी मायने में अंग्रेजी से पीछे नहीं है । फिर भी यह हमारी मानसिकता ही है कि हम आज 21वीं सदी में पहुंच जाने के बाद भी हिंदी को वह स्थान नहीं दे पा रहे हैं जिसकी वह सर्वप्रथम अधिकारिणी है । अत: स्पष्ट है कि हिंदी को उसका उचित स्थान सम्मेलनों, अपीलों, आदेशों एवं व्याख्यानों मात्र से नहीं मिल सकता । इसके लिए अंग्रेजी का मोह छोड़कर मूल रूप से हिंदी में कार्य करना होगा, उसके महत्व एंवं उपयोगिता को बढ़ाना होगा । इसके लिए हम सबको मिलकर हिंदी के प्रचार-प्रसार में सक्रिय एवं सृजनात्मक सहयोग देना चाहिए । ■

भाषा के जरिए ही हम एक आदर्श समाज की कल्पना कर सकते हैं ।

–डॉ. मनमोहन सिंह, प्रधान मंत्री, भारत

राजभाषा कार्यान्वयन में हिंदी एस.एम.एस. का महत्वपूर्ण योगदान

–बी. विश्वनाथाचारी*

आज का युग मोबाइल युग है । आम आदमी से अमीर आदमी तक, कर्मचारी से उच्च अधिकारी तक, विद्यार्थी से प्राध्यापक तक सभी क्षेत्रों में मोबाइल फोन ने अपना स्थान कायम किया है । काम में लगे हुए लोगों को, व्यस्त रहने वाले लोगों को, एस.एम.एस. द्वारा अपने संदेश भेजना बहुत सुविधाजनक होता है । इसके साथ आजकल मोबाइल जगत में एस.एम.एस. सभी के लिए बहुत लोकप्रिय बन गई है ।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठक की सूचना, स्थगन की सूचना हिंदी एस.एम.एस. भेजने के द्वारा सूचित करना बहुत उपयोगी है, क्योंकि हम देखते हैं कि इन हिंदी बैठकों में, हिंदी सम्मेलनों और संगोष्ठियों में एक सामान्य शिकायत हमें मिलती है कि हमें सूचना नहीं मिली, पत्र देर से मिला आदि । उपर्युक्त अवसर पर संयोजक फोन द्वारा सूचना करने का प्रयास करेंगे, तो कई नंबर व्यस्त, उत्तर नहीं प्राप्त आदि कारणों से तुरंत नहीं मिलते । इस हालत में एस.एम.एस. बहुत उपयोगी है और खर्च भी बहुत कम है और समय भी बचता है ।

आजकल कई कंपनियों के ज्यादातर सेल उपकरणों में हिंदी एस.एम.एस. भेजने की सुविधा है । एक समय में हिंदी के प्रसिद्ध कवि बिहारी ने छोटी पदावलियों में गागर में सागर भर दिया ।

उसी प्रकार आज एस.एम.एस. (लघु संदेशों) में भी अपनी-अपनी क्षमता और श्रेष्ठता के अनुसार महत्वपूर्ण बातों का प्रेषण कर सकते हैं । इससे प्राप्तकर्ता लाभान्वित होते हैं ।

राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित एस.एम.एस. : इस तरह के लघु संदेशों को मोबाइल फोन के नोट पॉड में एक बार टाइप कर, रखने से बार बार पूरा विषय टाइप करने की आवश्यकता नहीं होती । सिर्फ दिनांक, समय, स्थान आदि में परिवर्तन कर भेज सकते हैं ।

1. रा.भा.का.स. की बैठक दि. 05-12-2009 को 15.00 बजे, ... कार्यालय में होगी । उपस्थित होकर सफल बनाएं ।
2. न.रा.का.स. की बैठक दि. 18-12-2009 को 11.00 बजे स्वर्ण जयंती भवन, विशाखापट्नम में होगी । आप उपस्थित होकर, बैठक की शोभा बढाएं ।
3. तिमाही प्रगति रिपोर्ट तुरंत भेजने की कृपा करें ।
4. दि. .... को ....बजे उ.प.निदेशक, बेंगलूर आपके कार्यालय का निरीक्षण करेंगे । सूचनार्थ ।
5. दि. ....को मुख्यालय में संसदीय राजभाषा समिति का निरीक्षण । निम्न विवरण तुरंत भेजें ।
6. आपके अनुरोध के अनुसार दि. ....को... ....बजे............कार्यालय, नई दिल्ली में आयोजित हिंदी कार्यशाला में आप का नामांकन हुआ । कार्यमुक्त आदेश के साथ रिपोर्ट करें ।
7. हिंदी पखवाड़े के अवसर पर दि. .... को .... बजे ....न.रा.का.स. .... की तरफ से .... कार्यालय में हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित। अपने कार्यालय के स्टाफ को भेज कर, इसे सफल बनाएं।
8. पा. एव. त.श. आयोग (पारिभाषिक शब्दावली एवं तकनीकी शब्दावली आयोग) के तत्वावधान में 'अंतराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का प्रचार-प्रसार' विषय पर संगोष्ठी .... भवन, हैदराबाद में दि .... को ...... बजे आयोजित । कृपया पधारें ।

राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा हिंदी से संबंधित सूक्तियों के एस.एम.एस. : महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, जवाहरलाल

*राजभाषा अधिकारी, बी.एस.एन.एल. विशाखापट्नम

2629 HA/10—3 A

नेहरू, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, अटल बिहारी वाजपेयी आदि नेताओं की सूक्तियों को एस.एम.एस. देने से स्टाफ में हिंदी के प्रति निष्ठा बढ़ेगी । इस तरह के एस.एम.एस. केवल पहले संदेश कर्ता ही अपने मोबाइल में ही सूक्ति को टाइप करेंगे । इन सूक्तियों के प्राप्त करने वाले यथा तथा दूसरों को भेज सकते हैं । उदाहरण के तौर पर–

1. राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है –राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है ।

एस.एम.एस. द्वारा शुभकामनाएं : हिंदी राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है । हिंदी भारतवासियों को एक सूत्र में जोड़ने वाली भाषा है । राष्ट्रप्रेमी और हिंदी प्रेमी में कोई अंतर नहीं है । इसलिए हिंदी दिवस, गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, राष्ट्रपिता गांधी जयंती आदि राष्ट्रीय पर्वो में हिंदी एस.एम.एस. द्वारा हमारी शुभकामनाएं भेजना समुचित है ।

1. हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं ।
2. गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं ।

एस.एम.एस. द्वारा हर दिन एक नहीं कई शब्द सीखिए : हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में एस.एम.एस. भेजने के द्वारा स्टाफ को कई शब्दों के अर्थ अवगत करा सकते हैं । उदाहरण के तौर पर

1. Rule = शासन
2. Administration = प्रशासन
3. Discipline = अनुशासन

एस.एम.एस. द्वारा हिंदी सिखाना : एस.एम.एस. द्वारा हिंदी सिखा भी सकते है । हिंदी वर्णमाला, संयुक्ताक्षर आदि अक्षरों को एस.एम.एस. करने के द्वारा हिंदी की लिखावट सिखा सकते हैं ।

उदा: अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ अं अः

हिंदी नाम पट्ट, साइन बोर्ड, बैनर आदि लिखवाने के समय उन्हें तैयार करने वालों को अपेक्षित हिंदी अनुवाद का एस.एम.एस. करने के द्वारा बहुत समय बचा सकते है ।

उदा: ग्राहक सेवा केंद्र, डाबा गार्डन, विशाखापट्टणम–530 020

हिंदी एस.एम.एस. तैयार करने का तरीका : अंग्रेजी एस.एम.एस. की तरह हिंदी के लिए भी की पॉड (key pad) पर पहले अक्षर के लिए एक बार, दूसरे अक्षर के लिए दो बार, तीसरे अक्षर के लिए तीन बार दबाना पड़ता है । कई सेल फोनों पर की पॉड पर अंग्रेजी के साथ हिंदी भी रहते हैं । की पॉड पर हिंदी अक्षर नहीं होने पर भी अधिकतर सेल फोनों में हिंदी प्राप्त होती है ।

हिंदी एस.एम.एस. भेजने का कुंजी पटल : अंग्रेजी एस.एम.एस. की तरह हिंदी एस.एम.एस. भेजना भी बहुत आसान है ।

मोबाइल फोन में हिंदी एस.एम.एस. भेजने के लिए कुंजी पटल
Key board lay out for sending Hindi SMS in Mobile phones

? 1 ु ं : 1	**2 a b c** अ आ इ ई उ ऊ ऋ ा ि ी ु ू	**3 d e f** ए ऐ ँ ओ औ े ै ँ ो ौ
4 g h i क ख ग घ ड	**5 j k l** च छ ज झ	**6 m n o** ट ठ ड ढ ण
7 p q r s त थ द ध न	**8 t u v** प फ ब भ म	**9 w y z** य र ल ळ व श ष स ह
Link Key	**Space**	**Shift** **Caps & small**

■

2629 HA/10—3 B

राजभाषा का सफल कार्यान्वयन; समस्याएँ एवं संभावनाएँ

–डॉ. शशि कुमार सिंह*

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि आजादी के 63 वर्षों के पश्चात् भी हिंदी को हाशिये पर ही बनाए रखने की साजिश कामयाब है । पश्चिमी देशों में तो पश्चिमी भाषाओं में शोध ग्रंथ लिखने वाले को भारतीय भाषाओं में लिखित बेहतर शोध ग्रंथों से उच्च बेहतर दर्जा प्राप्त है । लेकिन भारतीय विश्वविद्यालयों में अंग्रेजी भाषा में पढ़ने और उत्तर लिखने वाला विद्यार्थी हिंदी भाषा वाले अपने साथी की अपेक्षा श्रेष्ठ समझा जाता है । ऐसा क्यों हो रहा है ? जिस देश में हिंदी समझने वालों की तुलना में अंग्रेजी में सोचने एवं सपने देखने वालों की संख्या नगण्य है, उस देश में हिंदी के साथ सौतेले व्यवहार क्यों ? गृहस्वामी की जगह हिंदी दासी क्यों ?

हम अपने अंदर झांक कर देखें तो निश्चय ही एहसास होगा कि हम आज भी उपनिवेशवादी मानसिकता से ग्रसित है । अंग्रेजों का राजनीतिक शासन तो समाप्त हो गया परन्तु वैचारिक स्तर पर शायद उनकी गुलामी समाप्त नहीं हो पाई है । हम सभी इस स्थिति में परिचित हैं, अत: इस वास्तविकता की व्याख्या की आवश्यकता नहीं है । हाँ यह दुहराने की आवश्यकता है कि जब सांस्कृतिक श्रेष्ठजन की मानसिकता गैर-देशज हो तो विद्यापति के इस कथन का कि 'देशिल बयना सब जन मिट्ठा' का कोई मायने नहीं रहा जाता, बल्कि यह बयना खट्टा लगने लगता है, हेय प्रतीत होता है और इससे एक प्रकार की बेइज्जती लगने लगती है । यदि हिंदी को अपने ही घर में उचित जगह दिलानी है तो सर्वप्रथम इस वैचारिक पंगुता से जुझना होगा । उपनिवेशवादी विद्वान भले ही तृतीय विश्व के राष्ट्रों को काल्पनिक समुदायों की संज्ञा दें, परन्तु यह सच है कि राष्ट्रवाद की अवधारणा में एक मान्य भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है । बंगला देश के निर्माण में भाषा की केंद्रीयता निश्चय ही भारत में हिंदी की विशिष्टता को रेखांकित करता है । मैकाले की शिक्षा-प्रणाली के बजाय एक वैकल्पिक प्रणाली, जो भारतीय मूल्यों एवं परंपराओं पर आधारित हो, विकसित करनी होगी ।

अंग्रेजी को आधुनिकता से जोड़ कर हिंदी को पराधीन रखने को न्योयोचित ठहराया जाता है । आधुनिकता कालवाचक शब्द है, न कि देशवाचक, या वेशवाचक, या भाषावाचक या संप्रदायवाचक व्यास ने लिखा है कि दो क्षण कभी एक साथ नहीं रह सकते क्यों इनमें क्रमिकता होती है । यह उक्ति यहाँ प्रासंगिक तो है ही, साथ ही यह स्पष्ट करने के लिए भी हम यहाँ उद्धृत कर रहे हैं कि यह स्थापना आधुनिक और सनातन दोनों है । साहित्य शास्त्री इसे चिर-सुंदर कहते है, विद्यापति की भाषा में इस 'तिले तिले नूतन होय' कहा जाएगा । पाश्चात्य परम्परा जिसे आज आधुनिक कह रही है उसमें क्या यह तत्व है ? या इस आधुनिकता को पाश्चात्य जगत अपनी आर्थिक राजनीतिक सैनिक और कूटनीतिक बल के बूते शेष जगत पर जबरन थोप रहा है ? क्या गोरी जातीयों के अतिरिक्त अन्य आधुनिकता की इसी परिकल्पना में 'मत्य' अर्थात् बाहरी नहीं है जो उनके समकक्ष समानता के स्थान के अधिकारी हो ही नहीं सकते ? सैम्यूयेल हंटिग्टन (क्लैश ऑफ सिविलाइजेशनस) ने क्या इसकी धमकी नहीं दी है कि अन्य सभ्यताएँ और सांस्कृतियाँ यदि पश्चिम के वर्चस्व को स्वीकार नहीं करती तो सैनिक शक्ति का भी इसके लिए प्रयोग किया जाना चाहिए ? ऐसी स्थिति में क्या हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं को अपने प्राण के लाले नहीं पड़ जायेंगे ?

स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृभाव' फ्रांस की राज्यक्रांति के यदि प्रेरक भाव थे तो दुनिया के सैकड़ों देशों में उपनिवेशों की स्थापना किन लोगों ने की ? यदि रूसो, वाल्तेयर आदि विचारकों ने राज्य क्रांति की प्रेरणा दी तो यूरोप में स्पिनोजा

*पूर्वी गेट जैन कॉलेज, आरा (बिहार)

और कांट जैसे दिग्गज विचारक भी हुए जो स्त्रियों को पुरूषों के बराबर अधिकार देने के घोर विरोधी थे ।

आधुनिकता (पाश्चात्यता) के समर्थन में यह तर्क भी इधर दिया जाने लगा है कि इसका आरंभ 'ज्ञान-बोध' (इनलाइटमेण्ट) में हुआ जिसका आधार बुद्धि या युक्तिसंगतता (रीजन) थी । पर इस तर्क में कोई दम नहीं है । यदि यूरोप 'ज्ञान-बोध' से प्रेरित-परिचालित होता तो घर में लोकतंत्र और बाहर उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के अन्तर्विरोधों से वह इतने लम्बे समय तक नहीं जूझता रहता, या उपनिवेशों को अपनी स्वतंत्रता के लिए ऐसा लोमहर्षक संघर्ष नहीं करना पड़ता । आज यही संघर्ष तथाकथित आतंकवाद के खिलाफ लड़ा जा रहा है ।

मूल समस्या 'अहं' और 'इदम्' मैं और तू, आई और दाऊ की है, अपने और पराये की है । यह दार्शनिक और भावात्मक समस्या है । इसी परम्परा में ईसा मसीह ने अपनी करूणा से इसका समाधान ढूँढ़ा था । यह मानवीय या भावनात्मक समाधान है । यूरोप ने ईसाई धर्म को तो स्वीकार कर लिया परन्तु ईसा के समाधान के बदले अरस्तु के उस समाधान के मार्ग को अपनाया जिसमें अपने पराए की भेद निहित था । यह द्विधाग्रस्तता, व्यक्तित्व की यह फाँक, आज भी यूरोपीय परम्परा में विद्यमान है और यही आधुनिकता से जुड़ी हुई अधिकांश समस्याओं की जड़ है ।

भारत की भाषा संबंधी समस्याओं की जड़ यह भ्रांति है कि राष्ट्रीय एकता अंग्रेजी भाषा, या अंग्रेजी राज्य के कारण पैदा हुई । इससे भी भ्रामक बात और कोई हो ही नहीं सकती । अंग्रेजी तो मात्र लगभग दो सौ वर्षों से चल रही है, पर उसके पहले हजारों वर्षों तक संस्कृत इस देश की राज-काज शिक्षा-दीक्षा और धर्म-कर्म की भाषा रही और साथ ही प्राकृत् अर्थात् आंचलिक भाषाएँ विकसित होती रही । भारतीय एकता राजनीतिक नहीं सांस्कृतिक और भावनात्मक रही है । यह एकता उससे वैदिक वाङ्मय एवं बाल्मीकी तथा व्यास के काव्यों से प्राप्त हुई । आज भी दूरदर्शन पर रामायण और महाभारत को देखने के लिए लोग क्यों उमड़ पड़ते हैं ? इसे धार्मिकता न कहकर परम्परा के सकारात्मक तत्वों की मजबूती कहना चाहिए । उदारवादियों को भी इसमें प्रगति के तत्व ढूंढ़ने चाहिए ।

आज भारत में अनेक आधुनिक भाषाएँ भले ही हों परन्तु इन सभी भाषाओं में रचित साहित्य का स्वर भारतीय है । यूरोप, यूरोपीय संघ बनाकर जिस एकता को स्थापित करने में सफल नहीं हो पा रहा है, वह भारत आज से पाँच हजार साल पहले ही कर चुका था । चार धामों, बारह ज्योतिर्लिंगों, इक्कावन सिद्ध पीठों, सात पवित्र नदियों आदि की जो बात भारतीय परंपरा में चली आ रही है वैसी संश्लिष्ट आज तक कभी यूरोप, अमेरिका और कही बन पाई क्या ? क्यों नहीं बन पाई ? आज ये देश ही कहते है कि भारत देश नहीं है क्यों कहते हैं ?

आधुनिकता एक मनोवृति है जिसका अंगरेजियत से दूर तक का भी कोई संबंध नहीं है । यदि ऐसा होता हो इंग्लैंड के अतिरिक्त फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान, आदि अन्य भाषाएँ बोलने वाले आधुनिक कैसे हो गए ? दो सौ वर्षों के शासन काल में अंगरेज जिस भारत में सूई जैसी मामूली चीज बनाने का एक कारखाना नहीं स्थापित कर सके वही भारत आज के पचास वर्षों के टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में संसार में तीसरे स्थान का अधिकारी कैसे हो गया ? कंप्यूटर के सॉफ्टवेयर तैयार करने में आज भारतीय सारे संसार में कैसे बाजी मार ले जा रहे हैं ? बिल गेट्स भारत को क्यों महत्व दे रहे है ? यह सब अंगरेजी नहीं बल्कि भारत की आन्तरिक शक्ति और कुशलता के कारण ही संभव हो पा रहा है ।

आज अंगरेजी माध्यम की शिक्षण संस्थाओं की बाढ़-सी आ गई है । हिंदी भाषा और हिंदी भाषियों की स्थिति इतनी दयनीय क्यों ? डॉ. रामविलास शर्मा ने अपने ग्रंथ भारतीय संस्कृति और हिंदी-प्रवेश में इस पर सांगोपांग विचार करते हुए यह कहा है कि सभी हिंदी भाषी राज्यों को मिलाकर एक कर देने पर ही संसार में भारत के वर्चस्व का उदय हो सकता है और तभी पाश्चात्य विचारधारा में संतुलन आ सकता है । पर आज हुआ इसका सर्वथा विपरीत । हिंदी भाषी राज्यों का ही बँटवारा कर तीन नए राज्य बना दिए गए । विनाशकाले विपरीत बुद्धि: (जब नाश मनुष्य पर छाता है, पहले विवेक मर जाता है-दिनकर ।)

हिंदी भाषीचेतना का विकास राजनेताओं के नहीं बल्कि साहित्यकारों एवं इतिहासकारों के हाथों हुआ है । भारतेन्दु

हरिश्चंद्र हिंदीभाषी क्षेत्र की चेतना प्रेरणा पुरूष हैं जिन्होंने कहा था 'निज भाषा उन्नति को सब उन्नति को मूल, संसार के किसी अन्य साहित्यकार ने नहीं कहा, और नेताओं में केवल महात्मा गाँधी ने हिंद-स्वराज नामक विश्व-प्रसिद्ध पुस्तक उन्होंने गुजराती में लिखा था। इसी प्रकार से रविन्द्रनाथ ठाकुर ने गीतांजलि की रचना बंगला में की थी, आर. के. मुखर्जी, के. पी. जायसवाल आदि इसी परम्परा से जुड़े थे।

भारत की स्वतंत्रता के बाद दो पीढ़ियाँ जो भाषा और संस्कृति से जुड़ी पर अपने दायित्व को नहीं निभा सकी। भारत की युवा पीढ़ी अपनी भारतीयता की पहचान का पाठ जब नए सिरे से पढ़ने लगेगी तभी, अर्थात् आगामी और सहस्त्राब्दी में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं के अभ्युदय का मार्ग प्रशस्त होगा। वही समय भारतीय भाषाओं, भारतीय मान्यताओं के अभ्युदय का समय भी होगा। तब महात्मा गाँधी का विश्व मानव आधुनिक विज्ञान के विश्व ग्राम का निवासी होगा और तब विश्व वैदिक ऋषि के शब्दों में 'यत्र विश्व भवति एक नीड़म्' (यजुर्वेद) की भावना के अनुरूप सत्य का वाचक होगा, सता का नहीं।

अपनी बात समाप्त करने के पहले मैं आपका ध्यान दो अन्य बातों की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ। हाल के दशकों में समाज विज्ञान से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण शोध-लेखों को हिंदी में अनुदित कर प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में छापा गया है। जो निश्चय ही एक सराहनीय कार्य है। परन्तु यह बात समझ में नहीं आती कि यदि उतर-आधुनिकता की पाश्चात्य भाषा दुरूह है तो हिंदी में इसका रूपांतरण भी दुरूह ही होगा ? भाषा को लोकप्रिय एवं ग्राह्य बनाने के लिए सरल शब्दावली का व्यवहार होना चाहिए। साथ ही तथाकथित हिंदी सेवी संस्थाओं को, चाहे वे सरकारी हों, अथवा गैर-सरकारी, हिंदी को स्वीकार्य बनाने की दिशा में प्रयास करना चाहिए। ऐसी संस्थाएँ महज वार्षिक खाना पूरी की रस्म निभाएँ और वह भी हिंदी की कीमत पर यह सर्वथा अनैतिक है।

आज के इस वैश्वीकरण एवं विश्व बाजार के जमाने में हिंदी के सामने नई चुनौतियाँ हैं। नव-उपनिवेशवाद एक बार पुनः देशज भाषाओं को बंधनों में जकड़ना चाहती है और अंगरेजी को महिमामंडित कर रहा है। तकनीकी शिक्षा के इस दौर में जान-बूझकर यह कहा जा रहा है कि हिंदी इस चुनौति का सामना नहीं कर सकती है। लोग यह भूल जाते हैं कि प्राचीनकाल में भारत में विज्ञान शायद सर्वाधिक विकसित था और इससे संबंधित शब्दावली भी। हिंदी की तथाकथित तकनीकी कमजोरी एक झूठा प्रचार है और हम सबको मिलकर इस दुराग्रह का पर्दाफाश करना होगा। ■

राजभाषा प्रयोग की दृष्टि से क्षेत्र वर्गीकरण

संपूर्ण देश को राजभाषा प्रयोग के आधार पर तीन क्षेत्रों में रखा गया है।

"क" क्षेत्र : उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, बिहार, झारखण्ड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखण्ड, अंडमान-निकोबार व दिल्ली।

"ख" क्षेत्र : महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब व चण्डीगढ़, संघ-राज्य।

"ग" क्षेत्र : आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, असम, तमिलनाडु, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, गोवा, कर्नाटक, जम्मू-कश्मीर, केरला, नागालैंड, उड़ीसा, सिक्किम, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल, दादर एवं नगर-हवेली, दमण-दीव, लक्ष्यदीव, पाण्डिचेरी।

2629 HA/10—4 A

साहित्य की भूमिका और समाज का दायित्व

–डॉ. पी.आर. वासुदेवन 'शेष'*

मनुष्य की चिंतनशील प्रवृत्ति का परिणाम ही साहित्य के रूप में विकसित होता है । यह चिंतन भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों ही होता है । समाज मानव जीवन से जुड़ा है, कहीं भी वह मानव जीवन से अलग नहीं है । उसका निर्माण मानव जीवन के लिए करता है । अत: साहित्य सामाजिक विषय है । मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । वह अकेला नहीं रह सकता, उसने अपने जीवन में एकाकीपन तथा उदासीनता मिटाने के लिए ही साहित्य का निर्माण किया है । यानी मनुष्य के समिष्ट रूप का दर्शन ही समाज है । जिसमें व्यक्ति अंग रूप में अवस्थित है और साहित्य मनुष्य के भाषा विचार प्रवाह का नाम है । अत: साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित संबंध है ।

स्काट जेम्स ने लिख है–"Literature is the comprehensive essence of the Intellectual life of a nation"

अर्थात साहित्य किसी राष्ट्र के बौद्धिक जीवन का व्यापक सार है । राष्ट्र की कल्पना समाज के बिना नहीं की जा सकती । अत: हम दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि साहित्य किसी समाज के बौद्धिक जीवन का व्यापक सार है । कवि रवींद्र ने लिखा है–साहित्य शब्द से साहित्य शब्द मिलने का अर्थात् एक साथ होने का भाव देखा जा सकता है । वह केवल भाव-भाव का भाषा-भाषा का ग्रंथ-ग्रंथ का ही मिलन नहीं हैं, अपितु मनुष्य के साथ मनुष्य का, अतीत के साथ वर्तमान का, दूर के साथ निकट का, अंत्यत अंतरंग मिलन भी है । जो कि साहित्य के अतिरिक्त अन्य से संभव नहीं है । यही कारण है कि समाज के उत्थान अथवा पतन में साहित्य का बहुत बड़ा योगदान है ।

महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के शब्दों में-"साहित्य समाज का दर्पण है" । अर्थात् समाज का वास्तविक स्वरूप साहित्य में देखा जा सकता है । समाज के निर्माण के पश्चात् साहित्य का निर्माण होता है और दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते रहते हैं । समाज का प्रभाव पहले साहित्य पर पड़ता है, फिर समाज स्वयं साहित्य से प्रभावित होता है ।

समाज की विविध प्रकार की गतिविधियों का ही साहित्य में अंकन किया जाता है । देश जाति, राष्ट्र, समाज तथा विश्व की उन्नति में साहित्य महत्वपूर्ण साधन का कार्य करता है । साहित्यकार अपनी सामग्री का चयन समाज के विस्तृत उद्यान से ही करता है । मानव जीवन से अलग साहित्य की कल्पना असम्भव है । साहित्य समाज के विभिन्न अंगो की प्रवृतियों की विवेचना करता है । तथा उन्हें सुरक्षित रखता है इसी प्रकार समाज भी यथाशक्ति साहित्य को सुरक्षित रखने के उपाय करता है । अत: साहित्य और समाज का संबंध अटूट और अमर है ।

आचार्य भर्तहरि ने कहा है : साहित्य संगीत और कलाविहिन:

साक्षात, पशु पुच्छ विषाण हीन ।।

अर्थात् मनुष्य साहित्य संगीत और कला के ज्ञान के अभाव में एक ऐसे पशु भांति होता है जिसके पूँछ और सींग नहीं होते । मनुष्य की मनुष्यता का एक महत्वपूर्ण अंग साहित्य होता है तथा समाज की जीवनदायिनी शक्ति देने का कार्य इसी के द्वारा होता है ।

किसी कवि ने ठीक ही कहा है-अंधकार है वहां जहां आदित्य नहीं है

मुर्दा है वह देश जहां साहित्य नहीं है ।।

साहित्य को ज्ञान राशि का संचित कोश भी कहा गया है । मनुष्य अपने विभिन्न प्रकार के अनुभवों को मस्तिष्क में संचित रखता है और समाज संबंधी उन सामान्य और विशेष अनुभवों को यह साहित्य में व्यक्त कर देता है । इसी प्रकार साहित्य में संचित ज्ञान राशि से समाज अपनी उन्नति का मार्ग बनाता हुआ आगे बढ़ता है । यही कारण है कि किसी विद्वान ने साहित्य को समाज का मस्तिष्क कहा है । इस प्रकार समाज की सभ्यता संस्कृति आचार-विचार परंपरा आदि का निर्देशक साहित्य है । यदि हमें प्राचीन काल के भारतीय समाज का ज्ञान प्राप्त करना है तो उस समय का साहित्य देखना आवश्यक होगा । वेदों पुराणों प्राचीन नाटकों तथा तत्कालीन काव्यों को देखकर ही हम उस काल विशेष

*हिंदी अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार, (ए एवं ई) 361, अन्ना सलाई, तेयनमपेट, चैन्नई-600018 ।

2629 HA/10—4 B

के समाज का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। तत्कालीन समाज का सुख-दुख रहन-सहन आचार-प्रचार सभी कुछ साहित्य में प्रतिबिंबित होता है । एक वाक्य में समाज की पूरी झांकी तत्कालीन साहित्य में दिखाई पड़ती है ।

इस प्रकार साहित्य से समाज को अनेक प्रकार का ज्ञान प्राप्त करना है । समाज हरिश्चंद्र, शिव, दधीचि आदि असंख्य चरित्र नायकों के जीवन से आज तक सत्य, धर्म, त्याग, परोपकार आदि के निर्वाह और पालन के लिए प्रेरणा ग्रहण करता आ रहा है ।

वैदिक साहित्य के अवलोकन से ज्ञात होता है कि समाज में प्रकृति पूजा चलती थी । भारत कृषि प्रधान देश है और उस युग में कृषि की उन्नति के लिए प्रकृति की प्रसन्नता अपेक्षित थी, इन्द्र, रूण, उषा, सविता आदि देवों की कल्पना तथा उनकी विभिन्न प्रकार की अर्चना विधियों आदि का वर्णन स्पष्ट बताता है कि तत्कालीन समाज में बहुदेवोपासना तथा प्रकृति पूजा का प्रचार था ।

वीरगाथा काल की रचनाओं में श्रृंगार प्रेम, युद्ध, मारकाट तथा अशांति के वर्णनों से स्पष्ट हो जाता है कि भारत का समाज विभिन्न राज्यों में बंटा था इसी प्रकार रीतिकाल का साहित्य तत्कालीन समाज प्रवृत्तियों के चित्रण में समर्थ है ।

जहांगीर, शाहजहां और ओरंगजेब के राज्यकाल के उत्तरार्द्ध में जैसा समाज था उसका पूर्ण प्रभाव तत्कालीन कवियों तथा साहित्यकारों की रचनाओं पर पड़ा है । कला का जो विकास उस युग के समाज पर हो रहा था उसका प्रभाव बिहारी, देव आदि कवियों की वाणी पर भी स्वाभाविक ढंग से पड़ा ।

साहित्य मनोवृत्तियों की ही भाषा चित्र होता है, तथा पाठक हृदय को उपर्युक्त अवसर पर प्रभावित करता है । वह प्रभाव प्रवृत्तियों पर पड़ता है और क्रमशः सम्पूर्ण समाज इससे प्रभावित होता है । वैदिक काल के सरल कर्मकांड ने क्रमशः बढ़ते बढ़ते जटिलता को प्राप्त कर लिया । यज्ञों के संपादन काल में किए जाने वाले कवियों के वर्णन ने समाज में पशु बलि को प्रोत्साहित किया । यहां तक की नर बलि की प्रथा चल पड़ी । समाज में क्रिया प्रतिक्रिया का क्रम चलता ही रहता है । कर्मकाण्ड की गूढ़ता पशु बलि की अधिकता तथा जाति पाति की कठोरता आदि सामाज़िक तथ्यों ने गौतम के विचारों को झकझोरा उन्हें सत्य, अहिंसा, गुरुजन सेवा आदि से संबंधित साहित्य से प्रेरणा प्राप्त हुई और उन्होंने स्वयं एतिद्वषयक साहित्य का निर्माण किया । इस प्रकार समाज क्रमशः उनके विचारों से संबंधित साहित्य ही प्रभावित हुआ और कालांतर में उनके विचारों ने आधुनिक समाज को भी प्रभावित किया ।

साहित्य का प्रभाव समाज पर विलम्ब से पड़ता है । रूसों, मार्क्स, गाँधी आदि मनीषियों के विचारों पर आधारित साहित्य आज समाज को द्रुतगति से बदल रहा है । स्वतंत्रता समानता आत्मनिर्णय जैसी विचारधाराएँ समाज को साहित्य ने ही प्रदान की हैं । साहित्य में वह शक्ति है जो समाज को प्रतिक्षण प्रभावित करती रहती है ।

साहित्य की प्रेरणा से समाज अपना रूप बदलता है और नवीनता प्राप्त करता है ।

साहित्य का निर्माण होता है समाज की घटनाओं के आधार पर । उसमें समाज की दशा तथा उसके स्वभाविक परिणामों का वर्णन होता है । साहित्यकार अपने साहित्य में कल्पना का अपूर्ण मिश्रण करके समाज को सुधारने का प्रयत्न करता है । उसकी रचनाएँ समाज के मस्तिष्क में चिंतनधारा की दशा में मोड़ उत्पन्न करती है तथा समाज उसकी विचार धारा क्रमशः । मनसा अर्थात (विचारों से) फिर वाणी से (भाषण में) तथा कर्मणा (कार्य रूप में) ग्रहण करने लगता है । इन प्रतिक्रियाओं में वह अपने त्रुटियों का सुधार करता रहता है तथा धीरे-धीरे समाज में व्याप्त दुर्गुण नष्ट हो जाते हैं । साथ ही अन्य प्रकार के गुणों का विकास होता है । मानव स्वभाव अक्सर पाकर दुर्गुण को भी ग्रहण कर लेता है, जिसका सुधार फिर साहित्य के ही माध्यम से होता है । इस प्रकार साहित्य समाज का साधन बनता है ।

साहित्य निर्माण में कल्पना शक्ति का प्रधान हाथ है । समाज और साहित्य की घनिष्ठता का मूल कारण है मनुष्य प्रवृत्तियाँ इन्हीं प्रवृत्तियों के संकेत पर दोनों का कार्य आगे बढ़ा है । समाज को प्रेरणा देने वाली शक्ति साहित्य में है । किसी भी समाज को बदलने के लिए आगे साहित्य का बदलना आवश्यक है । साहित्य से समाज के नेताओं के मन पर प्रभाव पड़ता है तथा वे क्रमशः अपनी गतिविधि में मोड़ लेते है । साहित्य अनेक प्रकार की योजना निर्माण में सहायक होता हैं और समाज योजनानुसार अग्रसर होता रहता है, रूसों द्वारा साहित्य ने निर्मित संसार को प्रजातंत्र की प्रेरणा दी तथा मनुष्य में समानता और स्वतंत्रता की भवना जगाई । गोस्वामीजी के साहित्य ने समाज में राम को ईश्वर के रूप में लाया और सामाजिक जीवन को व्यवस्थित किया । साहित्य का मुख्य ध्येय होता है "आनंद प्रदान करना" तथा समाज का मुख्यतम ध्येय है "आनंद की खोज" । अतः दोनों एक दूसरे के पूरक बनकर विकास करते है तथा परस्पर प्रेरणा स्रोत बनते रहते है । ■

साहित्यिक अनुवाद : चुनौतियां एवं संभावनाएं

–अरूण होता *

दुनिया में तमाम संस्कृतियाँ हैं । अनेक उपसंस्कृतियाँ हैं । कैंब्रिज इन्साइक्लोपीडिया ऑफ लैंग्वेज की मानें तो फिलहाल 6326 भाषाएँ मौजूद हैं । इनमें से हजारों भाषाओं की बात छोड़ एक-आध सौ भाषाओं में साहित्य-सृजन की बात करें तो भी किसी एक व्यक्ति के लिए उन सबका ज्ञान प्राप्त करना, उनमें दक्षता-अर्जन करना संभव नहीं है । ऐसे में जिसकी सर्वाधिक आवश्यकता रहती है, वह है अनुवाद! अनुवाद के बिना विश्व साहित्य अथवा संपूर्ण भारतीय साहित्य को समझा या जाना नहीं जा सकता है । तुलनात्मक साहित्य की रूपरेखा भी सही ढंग से प्रस्तुत नहीं की जा सकती है । यह न केवल भाषाओं के बीच सेतु का काम करता है बल्कि दो संस्कृतियों, आचार-विचारों को सामने रखता है । दो संस्कृतियाँ एक दूसरे से मिलती हैं । उनमें मेल-जोल होता है । दूरियाँ घटती ही नहीं पटती भी हैं । भावात्मक संबंध मजबूत होता है । अनुवाद की भूमिका महत्त्वपूर्ण है, अति महत्त्वपूर्ण ।

प्रस्तावित विषय है साहित्यिक अनुवाद । मेरी दृष्टि में किसी भी भाषा के साहित्य की विविध विधाओं को अन्य भाषा में अनूदित रचना को साहित्यिक अनुवाद कहा जाना चाहिए । काव्यानुवाद, कथानुवाद, नाट्यानुवाद आदि साहित्यिक अनुवाद की विविध कोटियाँ हैं । पिछले कई वर्षों से अनुवाद-कर्म में जुटे रहने के पश्चात् कुछ छिट-पुट विचार तथा कई समस्याएँ सामने आई हैं, उन्हें सूत्रबद्ध करने का प्रयास भर किया जा रहा है ।

सबसे पहले सवाल यह खड़ा होता है कि क्या अनुवाद संभव भी है ? इस सवाल को लेकर पाश्चात्य चिंतक एवं आलोचक-समाज बँटा हुआ है । कई वर्ग हैं । ये अपने-अपने ढंग से इस सवाल से जुझते हैं और जो निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं उनमें मतैक्य नहीं है । क्रौचे, वर्जिनिआ वूल्फ, दांते आदि का वर्ग अनुवाद को असंभव मानता है । क्रोंचे ने बहुत विश्वास के साथ घोषणा की थी Translation is an impossibility अर्थात् अनुवाद असंभव होता है । काव्यानुवाद तो हो ही नहीं सकता । इस वर्ग की मान्यता कुछ ऐसी ही है । काव्यानुवाद के बारे में एक अच्छा रूपक प्रचलित है- काव्यानुवाद उस सुंदर औरत की भाँति है जो सुंदर है तो वफादार नहीं है और वफादार है तो सुंदर नहीं है । इस वर्ग ने अनुवादक को बड़ा गद्दार तक कहा है। हाँलाकि इसके विपरीत एक दूसरा वर्ग भी है जिसमें होरेस, ड्राइडन, पोप, काडवेल आदि के नाम उल्लेखनीय हैं ।

इस वर्ग के अनुसार साहित्यनुवाद असंभव नहीं है, भले ही कठिन क्यों न हो । कठिनाई को प्रतिभा एवं अभ्यास के द्वारा दूर किया जा सकता है । इसके अनुसार गद्धानुवाद एवं पद्धानुवाद में बड़ा अंतर है । उपन्यास, कहानी, आदि के अनुवाद की तुलना में काव्यानुवाद कठिन होता है । काव्य के अनुवाद के संबंध में सहृदय अथवा कवि-हृदय-संपन व्यकित का महत्व होता है । ऐसा अनुवादक ही कविता से तादात्म्य स्थापित करा सकता है । अर्थात् काव्य-रसिक काव्य की समझ रखने वाला व्यक्ति ही काव्यानुवाद में सफल होता है । काव्यानुवाद में काव्य-रसिक को आवश्यक समझने वाले वर्ग में इलियट, लीविस आदि के नाम महत्वपूर्ण हैं ।

सवाल यह उठता है कि काव्यानुवाद को असंभव या कठिन क्यों कहा गया है ? मुझे यह लगता है कि कविता के भद्दे और निस्सार अनुवादों के चलते विद्वान-जगत में उपर्युक्त विचार फैलने लगा । अनुवादक को सृजन की मनोभूमि में पहुँचना जरूरी होता है। उसे कवि की मानसिकता के काफी निकट पहुँचना होता है । कवि हृदयहीन अनुवादक कोरा अनुवाद करता है । ऐसे अनर्थकारी अनुवादों से साहित्य भरा पड़ा है । ऐसे अनुवाद न तो मूल रचना की मौलिक विशेषताओं को उजागर कर पाते हैं और न ही पाठक को पूरी निष्ठा के साथ अनुवाद से जुड़ पाते हैं । सृजनात्मक साहित्य का सफल अनुवाद कष्टसाध्य होता है । कविता के संदर्भ में अतिरिक्त सावधानी की आवश्यकता होती है, यह पहले भी कहा जा चुका है । कविता में लय, छंद, विंब, प्रतीक, अलंकार, अंत:संरचना जैसे त्तत्व होते हैं । यदि अनुवादक सृजन की आंतरिक प्रक्रिया से सहज ही जुड़ नहीं पाता है तो मूल का स्वाद प्रदान करने में वह असमर्थ रहेगा ।

* प्रोफेसर, हिंदी विभाग, पश्चिम बंग. राज्य विश्वविद्यालय, बारासात, 24 परगना (उत्तर) कोलकाता-700126

साहित्यिक अनुवाद भाषिक प्रक्रिया मात्र नहीं है । न ही यह स्रोत-भाषा के शब्दों को लक्ष्य-भाषा के शब्दों में तब्दील कर देना है । साहित्य का मूलाधार संवेदना है । अनुवादक को उस संवेदना की परत-दर-परत को खोलना पड़ता है । साहित्यिक अनुवाद कलात्मक तो है ही वह सांस्कृतिक झरोखा भी है । संदर्भ-ज्ञान की क्षमता भी है । इन प्रसंगों पर ध्यान केंद्रित करना भी अवाश्यक होता है । जो अनुवादक इन विषयों पर ध्यान नहीं देता वह या तो ध्वनि अथवा शब्द और वाक्य पर ध्यान देता है । फलस्वरूप, अनुवाद मॉनोटोमी बन जाता है ।

साहित्यिक अनुवाद की एक समस्या है कि कभी-कभी साहित्यकार अनुवाद करके भी अपनी रचनाओं को मौलिक ही कहते रहते हैं । अनुवाद नहीं मानना चाहते । तुलसी ने 'रामचरितमानस' को भले ही 'नाना पुराण निगमागम संमत' कहा हो परंतु उन्होंने अनेक छंदों में गीता, पुराणादि का जो अविकल अनुवाद प्रस्तुत कर दिया है उस ओर हमारा ध्यान नहीं जाता । इसी प्रकार English Literature and Oriental Classics में किसी जापानी कवि के हाइकू का अंग्रेजी अनुवाद समवेशित है जो इस प्रकार है–

"The old pond
A frog jumps in
Plop."

अज्ञेयजी ने इसका सुंदर अनुवाद किया है । परंतु वे इसे अपनी मौलिक कविता कहते हैं, अनूदित नहीं । कविता यूँ है–

"ताल पुराना
कूदा दादुर
गुडुप ।"

कवियों के कवि शमशेर ने भी इस कविता का अपने ढंग से अनुवाद किया है–

"एक पुराना तालाब
और उछलते मेंढक की आवाज
पानी के भीतर (बीच)"

यहाँ एक कविता के दो महत्त्वपूर्ण कवियों के द्वारा किया गया अनुवाद प्रस्तुत है । शमशेर जी ने अपनी ओर से कुछ जोड़ा है । अज्ञेय ने न अपनी ओर से कुछ जोड़ है और न ही कुछ छोड़ा है । जोड़ने-तोड़ने की छूट शमशेर ने ली है । दोनों अनुवादों में से कौन सा बेहतर है, इसे बताने की आवश्यकता नहीं है । परंतु अक्सर अनुवादक इस जोड़-तोड़ में उलझा रहता है । सवाल यह कि कितना जोड़ा जाए व कितना छोड़ा जाए । अथवा जोड़ने-छोड़ने वाली बात अनुवाद में कहाँ तक स्वीकृत हैं । उपर्युक्त अनुवाद से इतना तो स्पष्ट हो ही जाता है कि अच्छे अनुवादक जोड़ने-घटाने वाले कर्म में रहते ही नहीं ।

रही बात अनुदित रचना को मौलिक कहने की, यह परंपरा काफी पुरानी है । ईमानदार लेखक छायानुवाद, भावानुवाद आदि शब्दों का इस्तेमाल कर ही लेता है । कुछ कवि नहीं करते हैं तो उनकी आलोचना भी होती है । अपने महाकवि पंत के बारे में निराला ने 'पंतजी और पललव' शीर्षक एक निबंध लिखा था । उसमें उन्होंने पंत की कविताओं के साथ रवींद्रनाथ और वर्डस्वर्थ की कविताएँ प्रस्तुत करते हुए कहा है–"उदाहरण के लिए इससे अधिक की आवश्यकता न होगी । कहीं-कहीं जो थोड़ा-सा रूपातंर पंतजी ने किया है, वह केवल अपने छंद की सुविधा के लिए । पंतजी चौर्य-कला में निपुण हैं । वह कभी एक पंक्ति से अधिक का लोभ नहीं करते । एक पंक्ति किसी एक कविता से ली, दूसरी किसी दूसरी से, तीसरी में कुछ अपना हिस्सा मिलाया, चौथी में तुक मिलाने के लिए वैसा ही कुछ गढ़कर बैठा दिया । इस तरह की सफाई के पकड़ने में समालोचकों को बड़ी दिक्कत होती है । उधर कवि को अपनी मौलिकता की विज्ञापनबाजी करने में कोई भय भी नहीं रहता ।"

कविता का अनुवाद करते समय उसे छंद में परिवर्तन किया जाए या उससे बंधे रहा जाए । अनुवादक को स्रोत-भाषा के छंद में परिवर्तन की आजादी रहती है । छंद के परिवर्तन से कविता का ढाँचा बदलता है । छंद से बंधे रहने की स्थिति में भयानक गलती होने की संभावना बनी रहती है । ऐसी समस्या से निजात पाने के लिए अनुवादक को सबसे पहले आंतरिक तत्त्वों एवं लय की खोज करनी होगी । छंद से बंधे रहने या छंद परिवर्तन में भी सावधानी बरतनी पड़ती है । विराम पर ध्यान देना पड़ता है । यह समझना होगा कि शब्द-योजना केवल शब्दों का नियोजन नहीं है, बल्कि भावों का संवाहक भी है । इन तत्त्वों की ओर भी अनुवादक को ध्यान देना आवश्यक है । वर्णनात्मक प्रसंगों का अनुवाद कुछ और होता है, सहज होता है परंतु कविता में वर्ण, शब्द, शब्द-विन्यास, वाक्य-विधान, अर्थ-विधा, मुहावरा, विराम-चिन्ह आदि का प्रयोग कवि विशिष्ट अर्थों में करता है । इसीलिए काव्यानुवाद में विशिष्ट अर्थों की खोज जरूरी है । सबसे बड़ी बात है कि कविता में बहुत कुछ अनकही होती है, छिपी हुई रहती है । अनुवादक को उस अनकही

2629 HA/10—5 A

का, छिपे का अन्वेषण करना आवश्यक हो जाता है । यह खोज तब तक पूरी नहीं हो सकती है जब तक कि अनुवादक में कवि-प्रतिभा का अभाव रहता है ।

कविता के अनुवाद की एक प्रमुख समस्या यह भी है कि मूल कविता को लक्ष्य-भाषा में अनूदित करते समय भाषा का नाद, भाव, संगीत अर्थ आदि के समन्वय को कैसे कायम रखा जाए ? लक्ष्य-भाषा में इस समन्वय को अनुवादक तभी बनाए रख सकता है जब उसने कविता को केवल समझा ही नहीं बल्कि उसमें वह जिया भी हो । उसके अंदर के कवि को वह जितने बेहतर ढंग से उज्जीवित कर पाता है उतने ही उत्कृष्ट रूप में कविता का अनुवाद प्रस्तुत कर सकता है । वह तमाम नियमों में न बंधे बल्कि कविता की अर्थ-लय और अनुभूति से तादात्मय स्थापित करते हुए अनुवाद करे । कविता का बाह्य स्वरूप बहुत कुछ परिवर्तित हो जाने पर भी कोई फर्क नहीं पड़ता है । मूल संवेदना बनी रहनी चाहिए । मूल संवेदना जो अन्य शब्दों में कविता की आत्मा कहलाती है उसे जीवित रखना, उसमें कोई छेड़-छाड़ न करना अनुवाद के लिए परम आवश्यक माना जाता है ।

अनुवाद के मानदंड को लेकर भी सवाल खड़ा किया जाता है । अनुवाद के लिए कौन-से मानदंड निर्धारित हैं ? ये मानदंड चाहे जो भी हों कठोर नहीं होने चाहिएं, लचीले होने चाहिएं । प्रसिद्ध रचनाकारों की रचनाएँ एक ही भाषा में कई अनुवादकों के द्वारा अनूदित हुई हैं । यह एक शुभ-लक्षण है और इसे बढ़ावा दिया जाना चाहिए । इससे बेहतर का चयन होता है । अनुवाद के आदर्श मानदंड की बात की जा सकती है । इस संदर्भ में एक प्रसिद्ध पुर्तगाली कवि का स्मरण होता है । उनका नाम है अल्बर्टो । उनकी एक चर्चित कविता है Core परमानंद श्रीवास्तव, अरुण कमल, बच्चन सिंह जैसे प्रसिद्ध कवि एवं काव्य-मर्मज्ञों ने इस कविता का अनुवाद अपने-अपने ढ़ग से प्रस्तुत किया है । परंतु लगता है कि उक्त कविता को और भी बेहतर ढ़ंग से अनूदित किया जा सकता है । इस पर कुछ बताने के पहले एक आई टी मित्र के अनुवाद संबंधी विचारों को आप लोगों के समक्ष रखना चाहूँगा । मित्र महोदय का कहना था कि अनुवाद के पीछे समय जाया न किया जाए, दिमाग न खपाया जाए । कंप्यूटर ने यह जिम्मा ले लिया है । अंग्रेजी टाईप करो तो अनूदित रूप सामने तैयार मिलेगा । उत्सुकतावश मैंने अल्बर्टो की कविता टाईप कर दी । जो परिणाम निकला वह बड़ा निराशाजनक था । खैर, मूल कविता और उसके अनुवादों पर गौर किया जाए--

Core

I write my name on time
And on the world
All belong to me as a flower
Belongs to its perfume asleep
That stays vibrating in the air
After the sombre shedding

सर्वप्रथम श्रीमान् कंप्यूटर जी का अनुवाद प्रस्तुत है:

अभ्यंतर

"मैं इस समय अपना नाम लिख
और दुनिया पर
सभी एक फूल के रूप में मेरे हो
अपने इत्र से संबंध रखता सो
कि हवा में हिल रहता है
निराशाजनक बहा के बाद"

काफी माथापच्ची करने के बाद शायद ही उपर्युक्त अनुवाद का कोई सही अर्थ निकाला जा सके ।

परमानंद जी ने अनुवाद यूँ किया है--

मैं अपना नाम लिखता हूँ

मैं अपना नाम लिखता हूँ
समय पर
और तमाम सारी दुनियां
और ..... सब कुछ मुझसे
वैसे ही संबंधित है,
जैसे फूल
अपनी सुवासित तंद्रा से
जो हवा में काँपती रहती है
यों ही झर जाने तक .... ।

कवि अरुण कमल ने प्रस्तुत किया है--

सत्त (सत्व)

"मैंने लिख दिया है नाम
अपना काल पर, संसार पर
और यह सब मेरा है अब
जैसे फूल की है सुगंध सुप्त अंदर
जो टिकी रह जाती, झड़ने के बाद भी
हवा में थरथराती ।"

पहली पंक्ति में अरुण कमल ने कार्य की समाप्ति को सूचित किया है । उन्होंने अतीत काल में क्रिया का प्रयोग किया है ।

2629 HA/10—5 B

बच्चन सिंह का अनुवाद है–

मर्म

"मैं अपना नाम टाँक देता हूँ
समय और दुनिया पर
सब कुछ जुड़ा है मुझसे
जैसे एक फूल जुड़ा रहता है ।
अपनी उनींदी सुगंध से
जो झरने के बाद भी
हवा में टँकी रह जाती है"

अपने नाम 'टाँकने' वाली वस्तु गद्धमयता का सूचक है जबकि 'उनींदी सुगंध' एक बेहतरीन काव्याभिव्यक्ति है ।

शीर्षक : 'मम' ही अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है क्योंकि यह अनायास ही मन को छू जाता है । किसी भी कविता के एकाधिक अनुवाद होंगे तो पाठक सही एवं उपयुक्त अनुवाद ग्रहण करने में कोई कठिनाई महसूस न करेंगे । इतना तो तय है कि मशीन मशीन ही है । वह भला क्या मनुष्य की बराबरी कर सकती है । संवेदना मनुष्य के पास होती है, मशीन के पास नहीं । अरुण कमल के अनुवाद में सिर्फ दो जगह यानी पहली व चौथी पंक्ति में जो 'सुगंध सुप्त' अंदर का प्रयोग है वहाँ 'उनींदी सुगंध' रख दी जाए और 'सत्त' की जगह 'मर्म' रखा जाए तो एक आदर्श अनुवाद का मादंड प्रस्तुत किया जा सकता है । इसलिए मेरी मान्यता है कि कवि-हृदयवाला अनुवादक कविता के अनुवाद में सफल होता है ।

साहित्यिक अनुवाद में मुहावरों और कहावतों के अनुवाद कठिन होते हैं । कहावतों का सीधा संबंध जनता से होता है । भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में विभिन्न कहावतों का निर्माण होता है । इनका शब्दानुवाद प्रायः नहीं मिलता । ऐसी स्थिति में अनुवादक को चाहिए कि वह लक्ष्यभाषा की समतुल्य उक्तियों का ही प्रयोग करें ।

प्रत्येक भाषा के अपने शब्द होते हैं । उन्हीं शब्दों में से संस्कृति झाँकती होती है । अंग्रेजी के शब्द Warm Welcome में Warm का खास महत्त्व है । यूरोप जैसे शीत प्रधान देश में Warm की खास भूमिका है । हिंदी क्षेत्र में 'गर्म स्वागत' जैसे पर्याय रख दिया जाए तो बड़ा गड़बड़ होगा । इसलिए हम हिंदी वालों ने 'गर्मजोशी के साथ स्वागत' बना लिया है । ठीक इसी तरह Cold- blooded person का अनुवाद ठंडा खूनवाला आदमी कोई अर्थ नहीं रखता । व्यंजना के आधार पर संदर्भ के अनुसार कोई समानार्थी शब्द ढूँढने की जरूरत पड़ती है । निष्ठुर, नृशंस या हृदयहीन व्यक्ति के लिए हम लोगों ने Cold- blooded का प्रयोग किया है ।

साहित्यिक अनुवाद की एक प्रमुख समस्या है- अनुवादक अपनी पूरी ताकत व प्रतिभा लगाने के बाद भी वह रचना के लिए पराया समझा जाता है । यह समस्या सामाजिक है । उसे वह सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होती है जो रचनाकार को मिलती है । कभी-कभार तो अनुवादक अपने श्रम व प्रतिभा के बलबूते पर पाठकों को मूल रचना से भी अधिक रसास्वाद कराता है, बावजूद इसके न तो उसे अच्छा पारिश्रमिक मिलता है और न आदर । आज अनुवाद हो नहीं रहे हैं, करवाए जा रहे हैं । ऐसी स्थिति में अनुवाद की गुणवत्ता, प्रामाणिकता आदि संदिग्ध हो जाती हैं । भावात्मक एकीकरण के लिए अनुवाद नहीं हो रहे हैं । आर्थिक लाभ हेतु प्रकाशक बड़ी मात्रा में अनुवाद करवा रहे हैं पन्नों की दर पर । कई अकादमियाँ भी आर्थिक लाभ के लिए व्यावसायिक प्रकाशकों की नकल कर रही हैं । अनुवादकों की पैनल में नाम जोड़ने के लिए पैरवी खूब चल रही है । पुरस्कार? ऊँची सिफारिश हो तो घटिया अनुवादक को भी पुरस्कारों से नवाजा जा रहा है । लेकिन एक दूसरा पक्ष है जिस पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है कि हमारे आधुनिक साहित्य का जन्म एवं विकास अनुवाद से ही हुआ है । भारतेंदु हरिश्चंद्र तथा भारतेंदु मंडल के अनुवाद से हिंदी साहित्य की विविध-विधाओं का श्रीगणेश हुआ था । उन अनुवादों को सामने रखकर यह कहा जा सकता है कि वहाँ न तो प्रकाशक का दबाव था और न ही अनूदित पन्नों की दर को लेकर मारामारी । मन से किए गए अनुवादों का परिणाम ही कुछ अच्छा होता है । कहने का आशय यह है कि रचना अच्छी लगे और स्वतःस्फूर्त किया गया अनुवाद मूल के निकट हुआ करता है । उमर खैयाम, की रचनाओं के तमाम अनुवादों में से मैथिलीशरण गुप्त का अनुवाद 'रूबाइयत उमर खैयाम' उबाता है तो बच्चन जी का अनुवाद खैयाम की मधुशाला मूल रचना से भी अधिक प्रभावशाली है । इसी प्रकार तेंदुलकर के नाटकों के हिंदी अनुवाद या वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य अथवा सीताकांत महापात्र की रचनाओं के अनुवाद ने उन्हें भारतीय साहित्यकार बनाया है, विश्व में प्रसिद्धि दिलाई है ।

विजय तेंदुलकर के तमाम नाटकों में से 'घासीराम कोतवाल' का विशेष महत्त्व है । इसका सफल अनुवाद

वसंत देव ने किया है । गौर करने की बात है कि अनुवादक ने लोक तत्त्व को बचाए रखने, उसे अधिक संप्रेषित करने के उद्देश्य से लोक भाषा का खूब प्रयोग किया है । अधिकांश पात्र ब्रज, अवधी या दोनों के मिश्रित रूप का इस्तमाल करते हैं जबकि नाटक के दो महत्त्वपूर्ण पात्र नाना फडनवीस एवं घासीराम खड़ी बोली का प्रयोग करते हैं । यह इसलिए कि ये दोनों सत्ता के अधिकारी हैं । सत्ता की भाषा जनता की भाषा से कुछ और होती है । भाषा के इस अंतप्रदर्शन के द्वारा अनुवादक ने प्राणवंतता को जीवित तो रखा है साथ ही बिना कुछ कहे बहुत कुछ कहा है ।

यदि स्वयं रचनाकार अपनी रचनाओं के अनुवाद प्रस्तुत करें तो वह कार्य उत्कृष्ट होता है । इस संदर्भ में रवींद्रनाथ की 'गीतांजलि' का जिक्र किया जा सकता है । कवि ने स्वयं उसका अनुवाद किया सी. एफ. एंटूज के अनुरोध पर । फलस्वरूप उसका मूल रस अक्षुण्ण बना रहा । प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों एवं कहानियों के स्वयं अनुवाद किए जो कहीं भी मूल से कम नहीं लगते । बाजार-ए-हुस्न, गोश-ए-अफियत तथा 'चौगाने हस्ती' के क्रमशः 'सेवासदन' 'प्रेमाश्रम' एवं 'रंगभूमि' के नाम से प्रकाशित हुए । हालाँकि इन्हें Translation न कहकर Transcreation अर्थात् पुनः सृजन कहना अधिक उचित होगा ।

स्रोत भाषाओं में कुछ ऐसी अभिव्यक्तियाँ होती हैं जो प्रत्यक्षतः धर्म तथा संस्कृति से जुड़ी हुई हैं । इन अभिव्यक्तियों को लक्ष्य भाषा में अनूदित करते समय कठिनाई होती है । यदि लक्ष्य भाषा एवं स्रोत भाषा भारतीय हों तो समनार्थी शब्द मिल जाते हैं । लक्ष्य भाषा विदेशी होने की स्थिति में उचित प्रर्याय चुनना कष्टसाध्य हो सकता है । अनन्योपाय होकर पाद-टिप्पणी के अलावा कोई दूसरा चारा नहीं रह जाता है । मुंडन, संस्कार, यज्ञोपवतीत, डिठौना, माँग भरना, बिंदी लगाना, कुलहड, चिमटा आदि, आदि ।

आंचलिक कथा-साहित्य के अनुवाद में भी खान-पान, चाल-चलन, आचार-विचार, रीति-नीति, सभ्यता-संस्कृति संबंधी अभिव्यक्तियाँ काफी समस्याएँ उत्पन्न करती हैं । (अनुवाद के संदर्भ में) । अनुवादक को स्रोतभाषा की जितनी गहरी और सूक्ष्म पकड़ होगी उतनी ही गहराई से वह मूल पाठ का अनुवाद करने में समर्थ होगा । इसलिए अनुवादक को स्रोत भाषा की अर्थ-शक्तियों, अर्थच्छायाओं, शब्द-शक्तियों से उत्पन्न व्यंजनाओं का गहरा परिचय रखना पड़ता है । खान-पान, भिन्न-भिन्न होने के कारण कई बार समस्याएँ उत्पन्न होती हैं । पाद-टिप्पणी,दे भी दी जाए तो क्या, असली स्वाद तो मिलने से रहा । जैसे 'बासी भात' । प्रेमचंद ने 'बासी भात में खुदा को समझा' जरूर कहा है परंतु ओडिशा के पश्चिमांचल में यह भोजन चलता है । आप इसे समझाने के लिए हिंदी में चाहे जो भी पाद-टिप्पणी दें लेकिन उसके स्वाद का अनुभव तो नहीं करा सकते । यहाँ अनुवाद की अपनी सीमा होती है । दोनों प्रांतों के 'बासी भात' में बड़ा अंतर है ।

साहित्य की भाषा केवल भाषा नहीं होती । वह सामाजिक-सांस्कृतिक वस्तु भी होती है । इसलिए भाषा का ही अनुवाद नहीं होता । संस्कृति का भी अनुवाद होता है इस दृष्टि से भारतीय भाषाओं का पाश्चात्य भाषाओं में अथवा पाश्चात्य भाषाओं का भारतीय भाषाओं में अनुवाद आसान नहीं होता । अधिकाधिक पाद-टिप्पणियों से अनुवाद की सरसता बाधित हो सकती है । अनुवाद बोझिल हो सकता है ।

साहित्यानुवाद में लोक-साहित्य के अनुवाद का प्रस्तुतीकरण एक बड़ी चुनौती है । कविता, कहानी नाटक में लोक-तत्व कहीं-कहीं मिलते हैं परन्तु लोक-कथा लोक-संगीत, लोक-काव्य आदि में स्थानीयता के प्रभाव होते हैं । कई मिथक भी लोक-निर्मित हुआ करते हैं । लोक-जीवन के तमाम बिंब उकेरे गये होते हैं । पशु-पक्षी भी मनुष्य की जुबाँ में बात कर रहे होते हैं । अनुवादक को समझना पड़ता है कि आखिर पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, पत्थर आदि भी मनुष्य की भाषा में क्यों बोल रहे हैं ? रचनाकार के प्रतिपाद्य को समझे बिना अनुवाद में जीवंतता नहीं आ सकती ।

निष्कर्ष के रूप में इतना तो कहा जा सकता है कि साहित्यानुवाद असंभव तो नहीं है कठिन जरूर है । इतना अवश्य कहा जा सकता है कि अनुवाद के सिर पर सदा ही तलवार लटकती रहती है पर वीर-पुंगव उस लटकती तलवार के डर से मैदान छोड़ भाग नहीं जाते । प्रतिभा, बहुज्ञता एवं अभ्यास के संबल पर इस कठिन-कर्म में जुटे रहते हैं और लक्ष्यभाषा के साहित्य को समृद्ध करने में महती भूमिका का निर्वाह करते हैं । अनेकता में एकता के मूलमंत्र को अभिसिंचित करते हैं । भाईचारा व सहनशीलता का संदेश देते हैं । राष्ट्रीयता ही नहीं मानवता तथा विश्वबंधुत्व की स्थापना के लिए अपनी भूमिका का निर्वाह करते हैं । अनुवाद खास करके साहित्य के अनुवाद का यही कर्म, धर्म तथा उद्देश्य है । ■

बेहतर कार्य-निष्पादन में बैठकों के प्रभाव

–सुश्री मंजुला वाधवा*

किसी भी संस्थान के संप्रेषण की रीढ़ होती हैं उसकी बैठकें, यानी वह स्थल जहाँ निर्णय लिए जाते हैं और उन्हीं निर्णयों के आधार पर काम को अंजाम दिया जाता है । आज के दौर में, जब हर क्षेत्र में सफलता और बेहतर निष्पादन के लिए सहभागिता-परक दृष्टिकोण को महत्व दिया जाने लगा है, कार्यालयीन बैठकों की संख्या पहले के मुकाबले काफी बढ़ गई है । उत्पादकता से भरपूर दिन का कुछ समय आंतरिक बैठकों को देकर हम ऐसी संस्कृति को जन्म दे रहे हैं जहाँ बगैर बैठक के दिन की कल्पना ही नहीं की जा सकती । अधिकांश मामलों में योजना पर अमल शुरू करने से पहले और शुरूआती परिणामों का इंतजार किए बगैर ही समीक्षा बैठकें आहूत की जाने लगी हैं । दुर्भाग्यवश, हर दफ्तर में बहुत सी बैठकें अनुत्पादक, उबाऊ तथा बेशकीमती समय गँवाने वाली सिद्ध होती हैं ।

आजकल के विशाल और जटिल कार्य-प्रणाली वाले संस्थानों में ऐसा अकेला व्यक्ति/अधिकारी विरले ही मिलते हैं जिसके पास इतनी जानकारी, विशेषज्ञता और प्राधिकार हो कि वह संस्थान से संबंधित महत्वपूर्ण फैसले अकेले ले सके । जब महत्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए इफरात से बैठकें आयोजित करना इतना ही जरूरी हो गया है तो क्या यह बेहतर न होगा कि आयोजक संस्थाएं कारगर और प्रभावी ढ़ंग से बैठकों की योजना बनाएं और उससे भी अधिक प्रभावी तरीके से उन्हें आयोजित करें । कार्यालय के वे प्रबंधक और टीम-नेता, जो प्रभावी बैठकें आयोजित करने में सक्षम होते हैं, उनकी उत्पादकता, उनकी छवि नि:संदेह बॉस की नजरों में शानदार होती है निष्प्रभावी बैठकों से तो केवल नुकसान ही हो सकता है-प्रशासनिक व्यय में वृद्धि और उत्पादकता में कमी, नतीजन जन्म लेता है अवसाद, अनुत्साह और प्रेरणा की कमी । लिहाजा किसी भी संस्थान के सर्वोपरि हित में होगा-अपने स्टाफ को सिखाना-कैसे प्रभावी तरीके से बैठकों की तैयारी करके उन्हें कारगर रूप से आयोजित किया जाए ।

कार्यालय में किसी भी सेवा के लिंक ऑफिसर हों-उनसे अपेक्षित होता है विभिन्न प्रकार की बैठकें आयोजित करना या उनमें भाग लेना । बहुत सी बैठकें उनके आयोजन का मकसद स्पष्ट किए बिना ही रख दी जाती हैं जिससे उत्पन्न होती हैं भ्रामक स्थितियाँ । कई बार तो सुविचारित और पूर्व निर्धारित बैठकों के कारण भी समस्याएं पैदा हो जाती हैं । जिन दो समस्याओं से सबसे अधिक रूबरू होना पड़ता है, वे हैं :–

- ✓ बैठकों के प्रतिभागी अचानक विषय से ही भटक जाते हैं यानी जिन मुद्दों के समाधान के लिए बैठक आयोजित की गई थी, उन पर विचार ही नहीं किया जाता ।
- ✓ बहुत ज़्यादा लोग या फिर विषय से न जुड़े लोग बैठकों में भाग ले लेते हैं ।

ऐसी समस्याओं के निदान हेतु बेहतर होगा-बैठक के आयोजन से पूर्व सुनिश्चित योजना बनाई जाए, कार्य-नीति तैयार की जाए और फिर उसके अनुसार बैठकें आयोजित करने के बाद संस्थान की कार्य-संस्कृति में उस कार्यनीति को जज्ब किया जाए-फिर उच्च प्रबंध तंत्र का अनुमोदन लेकर पूरे स्टाफ में उसे परिचालित करके, उसका प्रशिक्षण स्टाफ को दिया जाए । यहां तक कि निर्धारित कार्यनीति के अनुसार बैठकें आयोजित करने वाले पदाधिकारियों को प्रोत्साहित/पुरस्कृत करने की नीति भी बनाई जानी चाहिए ।

* प्रबंधक, नाबार्ड, 3/7, मालवीय नगर, जयपुर.

2629 HA/10—6 A

प्रभावी बैठकों का आयोजन हेतु वांछित कौशल

- उद्देश्यों तथा प्रयोजनों की पहचान करने की क्षमता
- बैठकों में भाग लेने वाले सही पदाधिकारियों/ प्रतिभागियों की पहचान करने की सामर्थ्य
- विषय पर निरतंर केंद्रित रहते हुए कार्यसूची की मदों को क्रमवार आगे बढ़ाने की क्षमता
- विषय से ध्यान हटाने वाले तत्वों से निपटने की क्षमता
- अभिनव सोच तथा मुदों के सृजनशील ढ़ंग से हल करने की ओर प्रतिभागियों को उन्मुख करने की योग्यता
- बैठकों में उपस्थित सदस्यों की समुचित भूमिका की समझ

उक्त प्रकार की क्षमता/कौशल का उपयोग निम्नलिखित कार्य-प्रक्रियाओं में किया जा सकता है :–

बैठकों की योजना बनाना :

बैठकों की योजना बनाते समय निम्नलिखित 4 बातों को ध्यान में रखना श्रेयस्कर है :–

- **किए जाने वाले कार्य का विश्लेषण :–**

उद्देश्य निश्चित करना :–सर्वप्रथम बैठक के आयोजन का मकसद सुपरिभाषित करना जरूरी होगा कि अमुक बैठक करने के पश्चात क्या बेहतर समाधान मिल सकता है-वांछित -निर्णय, बेहतर विकल्प-उन विकल्पों के पक्ष और विपक्ष में तर्क या फिर प्रतिभागियों से किसी कार्य योजना को अंजाम देने हेतु मिलने वाली प्रतिबद्धता । उद्देश्य जो भी हो, उसे लिखित रूप में वरिष्ठों को प्रस्तुत करके उसका अनुमोदन करवा लिया जाए ।

बाधक तत्वों का पता लगाना :–उद्देश्य को सामने रखने के बाद आयोजनकर्ता उन कारकों का भी पता लगा ले जो बैठक के मूल कारण यानी लक्ष्य को प्राप्त करने के आड़े आ रहे हों । हो सकता है लक्ष्य को हासिल करने के लिए तय की गई समय सीमा कम हो या वित्तीय संसाधन पर्याप्त न हों या फिर स्टाफ की ही कमी हो । ऐसे बाधक तत्वों की सूची बना ली जाए तो पहले ही वांछित 'छंटाई' का काम हो सकता है ।

जटिल कार्य को छोटे-छोटे उप कार्यों में बांट देना :–यदि किसी विशिष्ट काम को करने के लिए एक से अधिक विषय-विशेषज्ञों की आवश्यकता हो तो अच्छा होगा कि उस काम को छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँट दिया जाए ताकि पूरे समूह की बैठक बुलाने से पहले विनिर्दिष्ट लघु समूह उस पर कार्य कर ले और फिर बृहत समूह की बैठक होने पर वे समीक्षा तथा समस्या निवारण हेतु अपने विकल्प सुझा सकें ।

अवश्यंभावी समाधानों को सूचीबद्ध करना :–

यदि कुछ स्पष्ट हल नज़र आने लगे तो सर्वोत्तम होगा उनकी सूची बना ली जाए और पूरे समूह की बैठक होने पर उनके समक्ष उन्हें प्रस्तुत कर दिया जाए । मानव मनोविज्ञान कहता है, हर व्यक्ति के लिए नए विचार देना या नई पहल करना संभव नहीं होता परंतु कुछ बेहतर संभाव्य विकल्प सुझाने पर वे अवश्य उनमें अपनी ओर से कुछ योगदान कर पाते हैं ।

प्रतिभागियों की पहचान :– हर संस्था के कार्य आबंटन में यह पूर्व-निर्धारित होता है कौन किस काम के लिए जिम्मेदार है । अवसाद और मुश्किल की स्थिति तब खड़ी होती है अगर कोई कार्य उस व्यक्ति या समूह को सौंप दिया जाए जो उनके कार्यक्षेत्र से बाहर है । बैठक की सफलता सुनिश्चित करनी है तो आयोजक को इस बात का ध्यान रखना होगा कि **सही प्रतिभागियों को ही बैठक में आमंत्रित किया जाए** जैसे बीएलबीसी की बैठक में संबद्ध जिले के लिए तैनात जिला विकास अधिकारी/या प्रबंधक के स्थान पर किसी अन्य अधिकारी को भाग लेने के लिए आमंत्रित या प्रतिनियुक्त कर दिया जाए तो वांछित परिणाम नहीं निकलेंगे । इसके अलावा, यह भी आवश्यक है कि कोई नीतिगत निर्णय बैठक में लिया जाना है तो **उसी व्यक्ति को आमंत्रित किया जाए जिसके पास निर्णय लेने और उन्हें लागू करने के प्राधिकार हैं** अन्यथा उस मसले पर बैठकें दर बैठकें होंगी परन्तु ढाक के तीन पात ही रहेगा । यही कारण है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की सांविधिक बैठकों में आयोजकों द्वारा हमेशा इस बात पर बल दिया जाता है कि प्रभारी अधिकारी स्वयं भाग लें ।

2629 HA/10—6 B

तीर मछली की आँख में ही जाकर लगे-सुनिश्चित करना हो तो बैठक में विवाद उठाने वाले प्रतिभागियों के बारे में पूर्वानुमान लगा लिया जाए ताकि सभी प्रतिभागी व्यर्थ के विवादों में ना उलझकर निर्धारित मुद्दों पर ही चर्चा करें । यदि समस्या के समाधान पर सभी प्रतिभागी तुरन्त एकमत होते प्रतीत हों तो संभावना है कि मतों की विविधता का अभाव है अर्थात एक से अधिक सही उत्तर खोजना अति महत्वपूर्ण है । **फ्रांसीसी दार्शनिक, एमिल चार्टियर ने ठीक ही कहा है 'उस नए विचार से अधिक खतरनाक कोई विचार नहीं, जो आपके पास उपलब्ध एकमात्र नवीन विचार हो ।**

व्यवहारकुशल तरीके सें व्यवस्था करना :–

बैठक की आवश्यकता का आकलन करना उसकी सफलता की पहली शर्त है । यदि किसी मुद्दे पर परस्पर विचार विनिमय, विश्लेषण की जरूरत है तभी बैठक रखनी जरूरी होगी। यदि किसी दूसरे तरीके जैसे फैक्स या ई-मेल भेजकर वांछित सूचना मंगवाई जा सकती हो तो औपचारिक बैठक आयोजित करना कदापि वांछित नहीं । यदि बैठक रखना जरूरी हो तो उसका स्थान भी उपयुक्त होना चाहिए, अनुपयुक्त स्थान का चयन करने पर प्रतिभागियों में नकारात्मक भाव और विचार पैदा हो सकते हैं । मसलन, गहन हिंदी कार्यशाला आयोजित की जा रही है–अधिकारी लाउंज में, जो यकीनन गम्भीर चर्चा की ओर प्रतिभागियों को उन्मुख कर पाना काफी कठिन होगा । किसी भी बैठक में 5 से अधिक प्रतिभागी आमंत्रित किए जाएं तो चर्चा करने, पक्ष-विपक्ष में बहस करने और सर्वसम्मति की स्थिति तक पहुंचने के लिए अधिक समय लगता है । बैठक प्रारंभ करने और समाप्त करने के लिए निर्धारित समय सीमा का कड़ाई से पालन करना बेहद जरूरी है । विलंब से आने वालों की प्रतीक्षा करना समय के पाबंद प्रतिभागियों का अपमान करना होगा। सबसे खराब होता है किसी एक या दो प्रतिभागियों के कारण बैठक को निर्धारित समय के बाद खींचना । बैठक शुरु करने से पहले यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि बैठक के लिए वांछित उपकरण जैसे एलसीडी प्रोजेक्टर, मार्कर, पेन, ओवर-हेड प्रोजेक्टर आदि ठीक दशा में हैं यानी काम करते हैं ।

कार्यसूची (एजेंडा) तैयार तथा वितरित करना :–

एजेंडा इस प्रकार तैयार किया जाए कि वांछित लक्ष्य की पूर्ति के लिए अपेक्षित कार्रवाई उसमें स्पष्ट रूप से झलकती हो। सर्वोत्तम होगा यदि हर प्रतिभागी को पहले से ही एजेंडा भेजकर यह भी लिखित में स्पष्ट कर दिया जाए कि बैठक में उनसे क्या योगदान अपेक्षित है । बैठक के उद्देश्य, प्रतिभागी, स्थान, समय, प्रयोजन से सभी प्रतिभागियों को पहले ही अवगत करा देने से बैठक की सफलता कुछ हद तक इंगित की जा सकती है ।

प्रभावी आयोजन :–प्रभावी योजना बनाना जितना महत्वपूर्ण है उससे अधिक अहम है उस योजना को प्रभावी तरीके से कार्यान्वित करना। किसी भी प्रभावी बैठक में 4 प्राथमिक भूमिकाएं होती हैं–प्रारम्भकर्ता, सुविधा प्रदायक, प्रतिभागी और कार्यवाही का रिकार्ड-कर्ता । जिस अधिकारी के पास बैठकों के आयोजन का अनुभव जितना अधिक होगा, वह उतना ही प्रभावी प्रारम्भकर्ता और तटस्थ सुविधा-प्रदायक सिद्ध हो पाएगा । प्रभावी आयोजक का काम होता है–सभी प्रतिभागियों को विषय पर केंद्रित रखना, अनावश्यक टिप्पणियां न करना और समय सीमा का पालन। प्रभावी आयोजक को चाहिए कि वह पहले मुद्दे पर विविध मत प्रकट करने को बढ़ावा दे और फिर उनमें से सर्वोत्तम विचार/निर्णय की ओर सभी का ध्यान आकृष्ट कर सभी प्रतिभागियों को सर्व-सम्मति की स्थिति में लाने का प्रयास करे।

इनके अलावा, एक बेहद जरूरी गुण जो आयोजक में होना चाहिए वह है–विवादास्पद और विघटनकारी तत्वों से निपटने की कुशलता। विवाद अपने आप में बुरा नहीं होता, बेशक किसी भी मुद्दे पर विभिन्न प्रतिभागियों के विचार अलग-अलग हो सकते हैं परन्तु यदि कोई प्रतिभागी नकारात्मक रुख अख्तियार करके किसी की व्यक्तिगत आलोचना या असंयमित व्यवहार करने लगे तो आयोजक को इतना व्यवहार कुशल होना चाहिए कि वह हास-परिहास का सहारा लेकर सभी का ध्यान वास्तविक मुद्दे पर पुनः केंद्रित करने का प्रयत्न करे ।

ज्यादातर समूह बैठकों में अपना प्रभुत्व जमाने के मामले में 80:20 का नियम लागू होता है यानी 20 प्रतिशत

लोग शेष 80 प्रतिशत लोगों पर प्रभुत्व जमाने की कोशिश करने लगते हैं। ऐसे में आयोजक का दायित्व बन जाता है कि वह बड़े व्यवहार कुशल और कूटनीतिक तरीके से शेष 80 प्रतिशत चुप बैठे प्रतिभागियों को अपने विचार रखने के लिए प्रेरित करें और यह तभी हो सकता है यदि आयोजक उन 20 प्रतिशत प्रतिभागियों के मुकाबले अधिक दृढ़तापूर्वक अपनी बात रखने/मनवाने वाला हो । सबसे अधिक निपुणता चाहिए कि वह प्रमुख मुद्दे से हटकर अन्य विषयों पर बहस-मुबाहिसा शुरु कर देने वाले प्रतियोगियों को विनम्रतापूर्वक परंतु कड़ाई से वापस बैठक के महत्वपूर्ण विषय की ओर लाने की कोशिश करें । एक और ध्यान देने योग्य बात यह है कि हमेशा एक ही पारंगत सुविधा प्रदायक (फैसिलिटेटर) ही कार्यालय की बैठकें आयोजित न करें बल्कि चुनिंदा अति महत्वपूर्ण बैठकों में यह भूमिका रोल-मॉडल के रूप में निभाकर अन्य स्टाफ सदस्यों को ऐसी प्रभावशील बैठकें आयोजित करने के लिए तैयार करें ।

आदर्श स्थिति तो यह होगी कि संस्थान में जो भी स्टाफ सदस्य बैठकें आयोजित करने के लिए जिम्मेदार हों, वे सभी प्रभावी बैठक आयोजित करने की कला सीखें । यदि कभी कोई अत्यंत महत्वपूर्ण, नाजुक मसलों पर जटिल किस्म की बैठक आयोजित करने की आवश्यकता पड़े तो किसी पेशेवर सुविधा प्रदायक/बैठक आयोजक को बाहर से बुलाना ही बेहतर होगा । अपने स्टॉफ सदस्यों को प्रशिक्षण देने के लिए उस पेशेवर के कौशल को अप्रत्यक्ष रूप से आधार बनाया जा सकता है।

ये तो हुई कुछ मूलभूत बातें, श्रेयस्कर होगा कि कार्यालयों के अधिकारी/कर्मचारी नियमित अभ्यास करके प्रभावी बैठकें आयोजित करने की कला स्वयं में विकसित करें और हमेशा बैठक की तैयारी विधिवत् निम्न प्रकार से करके जाएं ।

- कार्यसूची 2 या 3 बार पढ़कर जाए ।
- पिछली बैठक की कार्यसूची व कार्यवृत्त का बारीकी से अध्ययन करके जाएं
- जिस अनुभाग के कार्य से संबंधित मुद्दों पर बैठक में चर्चा होनी हो, उन पर नवीनतम स्थिति संबंधी चर्चा संबद्ध अनुभाग/विभाग से करके जाएं
- यह भी सुनिश्चित कर लें कि उक्त मुद्दों पर संबद्ध विभागों द्वारा जो कार्रवाई की जानी थी, वह हो चुकी है
- बैठक में प्रतिभागियों से जो भी स्पष्टीकरण लेने हों उनकी सूची बनाकर साथ ले जाएं
- बैठक स्थल पर समय से थोड़ा पहले ही पहुंच जाएं और तब तक अन्य सदस्यों से परिचय कर लें
- यदि एजेंडा के किसी मद पर स्थिति स्पष्ट न हो तो आपसी चर्चा से स्पष्ट स्थिति जानने की कोशिक करें ।

बैठक समाप्त होने के पश्चात् अनुवर्ती कार्रवाई शीघ्र करना अनिवार्यत: वांछित होगा ।

- बैठक में हुई चर्चा/लिए गए निर्णयों पर संक्षिप्त नोट अपने वरिष्ठों को प्रस्तुत कर दें
- संबद्ध मसलों पर आगे की कार्रवाई के लिए संबद्ध एजेंसियों या क्षेत्रीय कार्यालय के अनुभागों को पत्र लिखें
- बैठक के संयोजक को भी की गई कार्रवाई से अवगत करा दें।

अन्तत: किसी भी सफल कार्यालयीन बैठक का मूलमंत्र है यह समझना कि उस बैठक में क्या और उसे कैसे कहना अभीष्ट है । जैसा कि क्रिस्टोफर रॉबिन ने अपनी पुस्तक 'गिनी द पूह' में प्रभावी बैठकों के संबंध में कहा है **'व्यवस्थित होने का मतलब है किसी काम को करने से पहले काम करना ताकि जब आप इसे करें तो यह उलझन भरा न हो'** । ■

कंप्यूटर संचार और हिंदी

–डॉ तुकाराम दौड*

सार-हिंदी वर्तमान कंप्यूटर क्रांति के परिपेक्ष्य में जब अपने वैश्वीक प्रसार के लक्ष्यों को साधित करने की ओर बढ़ती है। तब न सिर्फ कंप्यूटर पर हिंदी की प्रभावशाली उपस्थिति की अपेक्षा की जाती है। क्योंकि आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी का है। कंप्यूटर संचार माध्यमों के कारण हिंदी का प्रचार प्रसार हो रहा है। ज्ञान विज्ञान का समस्त विधाओं से सूचना क्रांति का भाषा के रूप में संबंध है। कंप्यूटर भाषा विज्ञान का इस्तेमाल हिंदी में किया जा रहा है। भूमंडलीकरण के इस युग में विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा हिंदी प्रौद्योगिकी से जोड़कर हिंदी के सर्वांगीण विकास हेतु कंप्यूटर संचार भाषा, विज्ञान, कंप्यूटर प्रोग्रामिंग भाषा का अध्ययन बहुत जरुरी है।

सूचना प्रौद्योगिकी साधनों ने दुनिया को बहुत छोटा बना दिया है। टेलिग्राम, टेलीफोन, इन्टरनेट, कंप्यूटर और संचार माध्यमों ने भौगोलिक सीमाएं खत्म कर दी है। मनुष्य प्राणी और संकेतों से अदिमकाल से अपने भावों का संप्रेषण करता रहा है। कंप्यूटर संस्कृति में व्यक्तिगत और सामूहिक शिक्षा की दिशा में ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। कंप्यूटर संचार प्रणाली और हिंदी भाषा के विकास में सूचना तंत्र की भूमिका महत्वपूर्ण है। आज के सूचना प्रौद्योगिकी के युग में कंप्यूटर मध्यस्थता संचार के मुख्य रूप में से एक प्रभावी साधन है। संचार नेटवर्क के प्रतिभागों द्वारा प्रत्यक्ष प्रयोग के माध्यम से कंप्यूटर की संचार प्रक्रिया में प्रत्यक्ष उपयोग करते हैं। संचार प्रौद्योगिकी स्वीचन (जैसे टेलीफोन, या वीडियों के रूप में संकुचित) सीमित है। कंप्यूटर प्रणाली के माध्यम से कुंजीपटल इंटरफेस की योजना मध्यस्थल के रूप में कार्यरत है। हिंदी भाषा के प्रोग्राम एवं साफ्टवेयर से हिंदी को बढ़ावा मिलेगा। संचार एक प्रक्रिया जिसमें सूचनाओं का आदान प्रदान होता है। प्रो. श्याम चरण दूबे के अनुसार "संचार की प्रक्रिया तब होती है। जब कि एक स्थान से दूसरे स्थान सूचना पहुंचाई जाती है"[1]। पृथ्वी पर मानव जीवन के साथ-साथ जन्म हुआ है। संचार हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है। भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए कंप्यूटर संचार प्रक्रिया महत्वपूर्ण होती है। मल्टी मीडिया के प्रचलन से एक कंप्यूटर टेलीविजन विश्व शब्द कोश, स्टीरियो प्रणाली तथा तात्कालीक अनुवादक के रूप में कार्यरत मशीनों का निर्माण हो चुका है। इंटरनेट के माध्यम से मनुष्य कंप्यूटर संचार प्रणाली पर किसी भी भाषा में संवाद कर सकता है। कंप्यूटर संचार जाल, मौखिकी सूचना से सभी लाभान्वित हो रहे है। हिंदी भाषा के विकास दौर में संचार क्रांती ने मंनोरंजन और सूचनाओं का भण्डार तो जुड़ा लिया है। कंप्यूटर संचार के साधनों द्वारा विश्व में हिंदी के बारे में इंटरनेट के उदात्त दृष्टीकोण का प्रसार सहज ही सम्भव है।

विश्व स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए कंप्यूटर और वीडियो कॉन्फरसिंग नेटवर्क पर मध्यस्थता संचार के रूप में कंप्यूटर संचार प्रणाली कार्यरत है। मुद्रीत माध्यमों में भी कंप्यूटर सूचना तंत्र का उपयोग होने लगा है। हिंदी मीडिया में कंप्यूटर संचार प्रक्रिया को गतिमान किया गया है। इंटरनेट और सायबर युग में कंप्यूटर संचार प्रणाली के द्वारा हिंदी भाषा का विकास हो रहा है और वैश्वीकरण के युग में विश्व की दूसरी बड़ी भाषा हिंदी है। यह हिंदी भाषा

*प्रधानाचार्य एवं विभागाध्यक्ष एम. आय. टी. जनसंवाद महाविद्यालय, लातूर

2629 HA/10—7 A

सायबर युग में कदम बढ़ा रही है । अर्जुन तिवारी के अनुसार "संप्रति सर्वत्र कंप्यूटर का वर्चस्व है । उद्योग, शिक्षा, यातायात नियंत्रण, चिकित्सा सुविधा, चुनाव संबंधी भविष्यवाणियां, मौसम संबंधी सूचनाएं और कानून व्यवस्था को अधिक कारगर बनाने में कंप्यूटर सर्वाधिक सक्षम है ।"[2] दूर संचार व्यवस्था को अधिकाधिक सफल बनाने में इलेक्ट्रॉनिक्स प्रगति से संबद्ध कंप्यूटर का विशेष हाथ है । हिंदी पत्रकरिता जगत में अभूतपूर्व क्रांति लाने में इसकी अहम भूमिका है । कंप्यूटर तो मानव का मस्तिष्क की कमियों को दूर करता है । मानव प्राणी श्रेष्ठं है । वह सोचता है । विचार करता है । उसमें अनुभूती की क्षमता है । वह अविष्कार की जटिल और लम्बी गणनाओं को शुद्ध और शीघ्रता के साथ पूरा करने में वह इतना सक्षम नहीं है । जितनी कंप्यूटर संचार की शक्ति है । कंप्यूटर की स्मरण शक्ति असीमित है । मानव की सीमित है । मानव की विश्लेषण क्षमता असीमित है । लेकिन कंप्यूटर संचार की शक्ति सीमित है । आधुनिक कंप्यूटर के विकास में सूचना प्रौद्योगिकी की उन्नति एक बड़ी उपलब्धी है और अनुभूती, सोच, चेतना, निर्णय एवं रचनात्मकता के क्षेत्र में व्यक्ति आगे है । परन्तु शुद्धता, गति और कार्य संपादन की क्षमता के क्षेत्र में कंप्यूटर व्यक्ति से आगे है । सच यह है कि मानव एवं कंप्यूटर के सहयोग से अप्रत्यक्षित बातें साकार हो रही है । यह कंप्यूटर संचार क्रांति का आविष्कार है । डॉ अर्जुन तिवारी के अनुसार "कंप्यूटर के कारण समाचार प्रेषण में क्रांति मची हुई है । एक समय था । जब कि कबूतर, डाकिया, टेलीग्राम, द्वारा संवाद भेजे जाते थे । जो मंथर गति से गंतव्य तक कभी पहुंचते तो कभी बीच में पहुंच जाते थे । अब तो कंप्यूटर के कारण तत्काल समाचार पत्र कार्यालय में पहुंच जाते है ।"[3] आज के सूचना प्रौद्योगिकी के युग में कंप्यूटर संचार मानवी जीवन के विकास का अंग बन चुका है । मास मीडिया क्षेत्र में टेलीप्रिंटर और मीडिया मॉनीटर स्क्रीन से संवाद प्रेषण में तेजी आई है । समाचारों के ढेर से समाचार छांटना और उसे संबंधित विभागों का कंप्यूटरीकरण किया गया है । यह कार्य सरलता से होने लगा है । कंप्यूटर के परदे पर हिंदी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती भाषा में इलेक्ट्रॉनिक विधि से पेस्टिंग हो रही है । तथा पूरा पृष्ठ कैमरा के लिए तैयार हो रहा है । आज कंप्यूटर जन्म कुंडली बना रहा है । व्यक्ति के संबंध में भविष्यवाणी कर रहा है । डॉ. अर्जुन तिवारी कहते है "कागज और कलम के स्थान पर कंप्यूटर संचार द्वारा संचालित वीडियो डिस्प्ले इकाईयां कार्यरत है ।"[4] जिनकी सहायता से हिंदी समाचारों का वर्गीकरण, संपादन एवं वितरण हो रहा है । प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया, यू. एन. आई., समाचार भारती और प्रसार भारती; बी बी सी, यह समाचार एजेंसियाँ हिंदी भाषा के कंप्यूटर संचार के द्वारा समाचार प्रेषण करती है । आज कंप्यूटर क्रांति से हिंदी समाचार पत्र का स्वरूप बदल रहा है । शिक्षा क्षेत्र का भी रूप स्वरूप बदले लगा है । उपग्रह संचार से कंप्यूटर संचार को बढ़ावा मिला है । मनुष्य कंप्यूटर युग में साँस ले रहा है जैसे जीवन की एक इच्छा एवं आवश्यकता बनी है । यह एक अदभुत यंत्र है । आज हम कंप्यूटर संचार युग में जी रहे हैं । उसके बिना कोई भी व्यक्ति काम पूरा नहीं कर सकता है । हिंदी भाषा के विकास के लिए कंप्यूटर संचार क्रांति लाभदायक बनी है । इस शोधपत्र में कंप्यूटर संचार और हिंदी इस विषय के सभी मुद्दों पर प्रकाश डाला गया है । सूचना प्रौद्योगिकी के युग में यह हिंदी भाषा का अध्ययन बहुत जरूरी है ।

कंप्यूटर विकास के चरण-कंप्यूटर का विकास पांच चरणों में हुआ है ।

प्रथम चरण :- कंप्यूटर की उत्पत्ति 1940-1950 के बीच हुई । "सर्वप्रथम वैक्यूम का प्रयोग किया गया जो सी.पी.यू. (Central Processor Construction) के नाम से जाना जाता है ।"[5] 1940 के ई. में हमारे पूर्वज अदिमयुग से गुफाओं गिनती में निवास करते थे । बाद में डिजिटल गिनती उपकरण आया और अबॅकस के रूप में कंप्यूटर संचार का उदय हुआ और मैग्नेटिक कोड डिवाइस का प्रयोग मुख्य स्मृती से लिया जाता है । कंप्यूटर भाषा के माध्यम से मानव और मशीन का समिश्रण हुआ । और सॉफ्टवेअर पैकेज के जरिए स्मृति चिन्हों को मशीन की भाषा (बायनीर कोड) 1-0 में परिवर्तित कर दिया गया । विकसित कंप्यूटर का वजन अधिक था । "कंप्यूटर के द्वारा दूरसंचार के क्षेत्र में क्रांति आई है । कंप्यूटर एक ऐसी तीव्र मशीन है जो एक सेकंड में हजारों शब्द एक स्थान से दूसरे स्थान तक प्रेषित कर सकता है । किसी भी संदेश को कंप्यूटर

2629 HA/10—7 B

भाषा में बदल कर सूक्ष्म स्पंदों के रूप में प्रसारित किया जा सकता है ।"[6] आज जो कंप्यूटर का स्वरूप है । वह न्यूमैन नामक वैज्ञानिक की देन है ।

दूसरा चरण :- दूसरी पीढ़ी ने दूसरे चरण में कंप्यूटर का आरम्भ किया और इसमें सर्वप्रथम ट्रॉंजिस्टर टेक्नोलॉजी का प्रादुर्भाव हुआ जो वैक्यूम ट्यूब के तरह कार्य करता है । सन् 1942 में वैज्ञानिक ब्लेज पास्कल का अविष्कार किया था जिसे कंप्यूटर के मूल में देखा जा सकता है । कालांतर में वेरान गाटफिल्ड लिविन्ज ने उसी यंत्र को संशोधित किया ।"[7] इसी अवधी में फॉरट्रॉन भाषा का विकास किया गया ।

तीसरा और चौथा चरण :- यह चरण 1970 से प्रारम्भ होता है । इस अवधि में अनेक ट्रॉन्जीस्टर को सिलीकॉन वॉटर से अलग कर दिया गया । इसके अलावा कंप्यूटर भाषा का विकास हुआ । एक से अधिक प्रणाली विकसित की गई ।

"1833 में चार्ल्स बेवेज ने कई वर्षों के मेहनत के बाद एक मशीन एनालिटिकल बनाई जो पूर्णत: स्वचलित थी ।"[8] यही मशीन विकसित होकर आधुनिक कंप्यूटर के रूप में जानी गई । चार्ल्स बेवेज को ही आधुनिक कंप्यूटर का जनक माना जाता है । तीसरा चरण यह प्रोग्रामिंग भाषा का कहा जाता है । यहां से अलग-अलग भाषाओं में फॉन्ट और लिपी विकसित की गई और कंप्यूटर सूचना का माध्यम बना । इसी के साथ चतुर्थ चरण 1980 के दशक में शुरू हुआ । चतुर्थ विधि के परिणाम स्वरूप मायक्रो प्रोसेसर की उत्पति हुई । और कंप्यूटर का आकार कम हो गया ।

पंचम चरण :-इसमें "कंप्यूटर का गति से विकास हुआ और कंप्यूटर संग्रहण की क्षमता में वृद्धि हुई ।"[9] हिंदी शब्दों का प्रयोग कंप्यूटर प्रणाली में अलग-अलग सॉफ्टवेअर विकसित हो रहे हैं । उससे भाषा का विकास होगा । कंप्यूटर से सीधे हिंदी भाषा में समाचार संग्रहण की नई व्यवस्था से मीडिया में इसका इस्तेमाल हो रहा है । यह स्पष्ट है कि कंप्यूटर जैसे पांचवी पीढ़ी के अगली पीढ़ी स्मार्ट सोसायटी के रूप में विकसित होगी । माचिस के रूप में कंप्यूटर विकसित होगा और इस पीढ़ी का कंप्यूटर एक इंसान की तरह स्वयम निर्णय लेने में सक्षम होगा और मनुष्य जैसा संभाषण भी करेगा । वॉरन पॉल कंप्यूटर के बारे में कहते है कि "कंप्यूटर विशेष रूप से सॉफ्टवेअर प्रबंधन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण है । सार्वजनिक उपयोग और मशीन से कार्यकुशलता मिलेगी, यह अर्थव्यवस्था के लिए चिंता का विषय है ।"[10] कंप्यूटर संचार प्रणाली मानव की जरूरत है । मनुष्य लंबे समय से सामाजिक जिम्मेदारी संभाल रहा है । कंप्यूटर के द्वारा भाषा विकास मनुष्य कर रहा है और इंटरनेट के युग में मनुष्य ने साइबर भाषा विकसित की है । इस सभी व्यवस्थाओं का केंद्र बिदु कंप्यूटर संचार है । इसके बिना मनुष्य कार्य नहीं कर सकता है । एन.सी. पंत कंप्यूटर संचार प्रणाली के बारे में कहते है कि "कंप्यूटर नेटवर्क कंप्यूटरों का एक ऐसा समूह है, जो आपस में इस प्रकार जुड़े रहते हैं, कि वे एक दूसरे को सूचनाओं का आदान-प्रदान कर सकते हैं, ये कंप्यूटर, तार, टेलीफोन लाइन सेटेलाईट प्रसारण, फाइबर ऑप्टीक के बल तथा रेडियो संपर्क से जुड़े होते हैं ।"[11] प्रिन्ट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में सूचना प्रौद्योगिकी के द्वारा कंप्यूटर संचार को जोड़कर दुनिया में किसी भी स्थान से संचार कर सकते हैं । आधुनिक युग में मनुष्य के जीवन में कंप्यूटर का तेजी से विकास हुआ है । आज का समाज जिस तेजी के साथ प्रगति के पथ पर अग्रसर है । उसमें कंप्यूटरों का अपना विशेष महत्व है । वर्तमान में कंप्यूटर नेटवर्क का उपयोग चिकित्सा, अनुसंधान, शिक्षा, कृषि, व्यापार, मंनोरंजन, मल्टी मीडिया एनीमेशन, आदि के लिए किया जाने लगा है। संचार, आकड़ों का आदान-प्रदान सॉफ्टवेअर की सहायता से नेटवर्क जुड़े कंप्यूटरों के बीच इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से आकड़ों का संचार तुरंत किया जा सकता है । इस प्रकार के संचार को इ-मेल के नाम से जाना जाता है ।

इंटरनेट विश्व के विभिन्न स्थानों पर स्थापित कंप्यूटरों के नेटवर्क को टेलीफोन लाईन की सहायता से जोड़कर बनाया गया । एक अंतरराष्ट्रीय सूचना मार्ग है । जिस पर एक स्थान से दूसरे स्थान तक शीघ्र ही पहुंच जाती है । इंटरनेट के द्वारा सूचना तंत्र मानव की मुठ्ठी में बंद होने लगा है । "दुनिया का पहला 'कंप्यूटर' इनियाक (ENIAC) अमेरिकी रक्षा विभाग के खर्चे से 1945 में विकसित किया गया था ।"[12] इस कंप्यूटर का उपयोग अमेरिका सेना में आर्टिलरी

शैल्स का हिसाब रखने एवं करने के लिए किया गया था। "इनियाक के निर्माण में कई मिलीयन डॉलर खर्च हुए थे। यह कंप्यूटर पेनसिल्वानिया विश्वविद्यालय के मूर स्कूल ऑफ इंजिनिअरिंग में विकसित किया गया।"[13] कंप्यूटर ने वेतन सूची बनाने या जनगणना जैसे आंकड़े बनाने से अपनी यात्रा शुरू की। कंप्यूटर मीडिया ने प्रिन्ट मीडिया के पूरे कार्य पर व्यापक प्रभाव डाला है। कंप्यूटर इंटरनेट पूरी तरह खुला माध्यम हैं। कंप्यूटर संचार प्रणाली ने हर प्रकार के व्यवसाय को एक नया स्वरुप प्रदान किया है। आज ई-मेल के द्वारा लंबी दूरी तक तत्काल संचार संभव हो गया है। उदाहरण के लिए हमारे देश में रेलवे आरक्षण विभाग दूसरे रेलवे स्टेशन के आरक्षण विभाग से कंप्यूटर से जुड़ा हुआ हैं। इस प्रकार जिन-जिन स्टेशनों को कंप्यूटराईज्ड कर दिया गया है। वे आपस में जुड़े होते हैं। कंप्यूटर नेटवर्क के बारे में एन.सी. पंत कहते हैं कि, "कंप्यूटर" नेटवर्क के अंतर्गत यदि एक ही भवन में या छोटे से क्षेत्र में रखे गये कंप्यूटर सम्मिलित होते हैं तो इसे स्थानिक नेटवर्क (LAN) के नाम से जाना जाता है। जब कंप्यूटरों का प्रसार बड़े क्षेत्र से होता है उन्हें विस्तृत क्षेत्र (WAN) के रूप में जाना जाता है।"[14] स्थानीय नेटवर्क ऐसे कार्यालयों में स्थापित किए जाते हैं जिसके अनेक विभाग होते हैं। तथा विभागों के कंप्यूटर एक दूसरे से जुड़े रहते हैं। इसमें प्रत्येक विभाग अन्य विभागों के कंप्यूटरों में उपलब्ध सूचनाओं को तत्काल प्राप्त कर सकते हैं। यह कंप्यूटर प्रणाली संचार का प्रभावी माध्यम है। विस्तृत क्षेत्र (WAN) के अंतर्गत विभिन्न शहरों, देशों अथवा महाद्वीपों के कंप्यूटर लगे रहते है। उदाहरण के तौर पर हमारे देश के कई विश्वविद्यालयों में कंप्यूटर नेटवर्क उपलब्ध है। जिसके माध्यम से छात्रों को पत्र-पत्रिकाओं एवम् अन्यन सुविधाओं का साथ तभी मिल सकता है जब कंप्यूटराइज्ड हो। ऑनलाईन के लिए कंप्यूटर संचार प्रणाली लाभकारी है। रमेश जैन इस संदर्भ में कहते हैं कि, "वेबसाईट" कंप्यूटर का एक अध्याय है। आपको अपने कंप्यूटर पर किसी विशेष वस्तु के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है।"[15] इंटरनेट के सूचना माध्यम द्वारा कोई भी संदेश पत्र विद्युत गति से विश्व के किसी भी कोने में स्थित कंप्यूटर मॉनीटर पर पहुंच जाते हैं। यह कंप्यूटर संचार प्रणाली का अविष्कार है और इस सूचना माध्यम का उपयोग ई-प्रशासन के जानकारी के लिए किया जा सकता है। कंप्यूटर संचार प्रणाली द्वारा प्रशासन के संबंधित कार्य के लिए नागरिकों का एक ही समय में कार्य निपटाया जाएगा और विडियो टेक्स्ट संचार प्रणाली की अद्यतन है। जो केवल कंप्यूटर द्वारा संचलित होती है। इस प्रणाली में पाठ्य सामग्री को कंप्यूटर की स्मृति से संचित कर लिया जाता है। टेलीफोन लाइन पर कंप्यूटर मनचाही सूचना प्रसारित कर सकता है। कंप्यूटर टी. वी. के द्वारा विश्व के प्रमुख टी. वी. को देख सकते हैं। कंप्यूटर पर बहुत साफ चित्र दिखाई देते हैं। विश्व के प्रमुख टी. वी. चैनल, स्टार टीवी, जी सिनेमा, सी. एन. एन. स्काई टी. वी, बी. बी.सी., प्रसार भारती-भारतीय प्रसारण स्वायत्तशासी संस्था, दूरदर्शन और आकाशवाणी, कंप्यूटर का घरेलू मनोरंजन के लिए उपयोग किया जा रहा है। कंप्यूटर संचार के महत्व के बारे में रमेश जैन कहते है कि, "कंप्यूटर टेली कॉन्फरेंस (Computer Tale Conference) में अलग-अलग स्थानों पर बैठे व्यक्ति कंप्यूटर को प्रयोग में लाकर सूचनाओं का आदान-प्रदान कर सकते है।"[16] दूरस्थ शिक्षा में मीडिया एवं कंप्यूटर कॉन्फरेंस का उपयोग हो रहा है। क्योंकि कंप्यूटर तो मानव मस्तिष्क की कमियों को दूर करता है और कंप्यूटर संचार मनुष्य को दिन रात इस क्षेत्र के तरफ आकर्षित कर रहा है। इनकी सहायता से विज्ञान नित-नूतन शोध एवं अनुसंधान मानव करने लगा है। भारत में हिंदी पी. टी. आई., यू. एन. आई; न्यूज एजेंसियों द्वारा हिंदी की सभाचार सेवा शुरू की है और न्यूज एजेंसियों का आधुनिक संगणकीकरण उपग्रह संचार प्रणाली के साथ जोड़ा गया है यह कंप्यूटर संचार की 21वीं सदी की बहुत बड़ी उपलब्धि है। इससे हिंदी भाषा का विकास हो सकता है।

कंप्यूटर और हिंदी : कंप्यूटर नेटवर्क से तात्पर्य एक ऐसे कंप्यूटर वर्ग से है। जिसमें से अधिक कंप्यूटर परस्पर संबंधित रहते हैं तथा एक दूसरे को सूचना संप्रेषित करते हैं। राष्ट्र के विकास हेतु संगणक का ज्ञान सब के लिए आवश्यक है। हिंदी का संगणक के अनुरूप ढालने और संगणक के प्रोग्राम हिंदी में बनाने में कुछ संस्थाओं के प्रयास रहे हैं। "60 क़रोड़ से अधिक हिंदी भाषियों के लिए कंप्यूटर को और अधिक उपयोगी बनाने के उद्देश्य से

कंप्यूटर कंपनिओं ने अपना ध्यान इस ओर केंद्रित किया है।"[17] जैसे सीडैक पुणे (महाराष्ट्र) आर. के. कंप्यूटर रिसर्च फाउंडेशन नई दिल्ली, ए.सी. ई. एस. बैंगलोर (कर्नाटक) आई. आई. टी. कानपुर (उत्तर प्रदेश) इन संस्थानों ने हिंदी को कंप्यूटर प्रोग्राम भाषा बनाने हेतु कुछ पैकेज विकसित किए हैं। सीडैक ने मल्टी मीडिया स्वयं शिक्षक पैकेज भी भाषा सीख लेने के उद्देश्य से बनाया है। देववैस, सुलिपी सॉफ्टवेअर के जरिए अपने व्यक्तिसह कंप्यूटर कार्यात्मक स्वचालन विषयक सारा कामकाज हिंदी में कर सकते हैं। "इसके प्रतिकूल संपूर्ण विश्व में फैले लाखों करोड़ों कंप्यूटरों टेलीफोन लाइनों, ऑप्टीक केबल, सेटेलाइट प्रसारण फाइबर अथवा रेडियो सम्पर्क द्वारा जुड़े हो सकते हैं।"[18] आधुनिक संचार माध्यमों में कंप्यूटर सूचना प्रणाली का महत्वपूर्ण स्थान है। हिंदी भाषा विकास के लिए कंप्यूटर तकनीक बहुत जरूरी है। प्रो. रमेश जैन के अनुसार "नई सूचना टेकनॉलॉजी के चलते संवाददाता, समाचार पत्र कार्यालय में समाचार पहुंचाने के लिए ई-मेल तथा मॉडेम सुलभ नहीं है। होने पर मोबाईल फोन को छोटा लॅप टॉप कंप्यूटर से जोड़कर दुनिया में कहीं भी समाचार भेज सकता है।"[19] हिंदी समाचार पत्र कंप्यूटर तकनीक का उपयोग कर रहे हैं। वर्तमान समय व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कंप्यूटर प्रवेश कर सकते हैं। कंप्यूटर के अभाव में अब समाज की उन्नति की कल्पना नहीं की जा सकती है। कंप्यूटर नेटवर्क का हिंदी भाषा और हिंदी के अलग-अलग सॉफ्टवेअर विकसित करने के लिए इस्तेमाल होने लगा है। हिंदी कंप्यूटर सॉफ्टवेअर्स से अधिक जैसे लेखिका, आकृति, श्री लिपी, अंकुर, सुलिपी, श्री गणेश, आय . एस. एम., इनस्क्रिप्ट, 1 पी. एस. कार्पोरेट 2000, लीला हिंदी प्रबोध, लीला हिंदी प्रवीण, शब्दरत्न सुपर, हिंदी डिक्टेशन सॉफ्टवेअर, विकिपीडिया, हिंदी शब्द कोश, हिंदी रेडियो सॉफ्टवेअर, हिंदी टेलीविजन, प्रतिदेवप्रिया फॉन्टस, हिंदी सिनेमा सॉफ्टवेअर देवप्रिया हिंदी फॉन्टस, युनिकोड हिंदी शब्दकोश, हिंदी पाठ्यक्रम सीडी में केंद्रीय हिंदी संस्थान ने हिंदी में भाषा के विकास के लिए योगदान दे रहा है और इंटरनेट के ऊपर निःशुल्क ऑनलाईन हिंदी संसाधनों के कुछ लिंक उपलब्ध हैं आदि संचार माध्यमों के लिए कंप्यूटर सॉफ्टवेअर का उपयोग कर सकते हैं। देश के किसी भी भाषा का अनुवाद हिंदी में करने का तकनीक नई सूचना क्रांती ने विकसित किया है। इससे हिंदी भाषा में सूचनाओं का आदान-प्रदान करना सम्भव हो चुका है। "सॉफ्टवेअर की सहायता से नेटवर्क से जुड़े कंप्यूटरों के बीच इलेक्ट्रॉनिक ऑकड़ों का संचार शीघ्र ही किया जा सकता है।"[20] इस तरह से हिंदी भाषी लोगों को इ-मेल द्वारा सूचना का आदान-प्रदान किया जा रहा है। इसी के साथ गुगल, याहू, एम एस एफ जैसे सर्च इंजिन से हिंदी भाषा में सॉफ्टवेअर कंप्यूटर के लिए ले सकते हैं और हिंदी भाषा के ऑनलाईन फॉन्टस इनस्टॉल कर सकते हैं। आज के विश्व को संगणक विश्व कह सकते हैं। क्योंकि हमारे जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं बचा है। जहां संगणक संचार का असर न महसूस किया जाता है। हिंदी में आसान करने के लिए डाटा बाईट सी.एम.सी., एच.सी.एम. आदी उपकरण विकसित किए गए हैं। आधुनिक प्रौद्योगिकी से अर्थ है संगणक सूचना प्रौद्योगिकी कहा जा सकता है। "आई. आई. टी. मद्रास में भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक विभाग की सहायता से हिंदी भाषा में उच्चारित वाक्यों को कंप्यूटर की मदद से देवनागरी लीपी में अंतरित किया जा रहा है।"[21] वैश्विकीकरण के माहौल में हिंदी की नई संरचना उभरती आ रही है। मायक्रोसॉफ्ट, याहू, रेडिफ आदि विदेशी कंपनिओं ने अपनी वेबसाईट पर हिंदी भाषा को स्थान दिया है और कंप्यूटर संचार में विदेशी कंपनियों ने हिंदी के सॉफ्टवेअर विकसित करना शुरू किया है। गुगल भी हिंदी का अनुवाद करता है और हिंदी के प्रचार-प्रसार में प्रयोजनमूलक हिंदी कार्यालयीन शब्दावली और ऐसे ही अन्य शब्दकोषों का भी अपना महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कंप्यूटर संचार से हिंदी भाषा का विकास होने लगा है और दूसरा सॉफ्टवेअर मन्त्रा है। जिससे कंप्यूटर अंग्रेजी दस्तावेज का बढ़िया हिंदी अनुवाद तैयार कर देता है। यह हिंदी युनिकोड फॉन्ट में आऊटपुट देता है। जो की पूरे विश्व में प्रचलित है। आज कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग युनिकोड की मदद से किया जा रहा है। गुगल, याहु, बी.बी.सी. आदि ने भारतीय भाषाओं में युनिकोड आधारित वेबसाईट बनाई है। युनिकोड विश्व की सभी भाषाओं को कंप्यूटर पर प्रस्तुत करने के लिए उपयुक्त है। इस समय प्रचलित इंटरनेट सेवा सूचना महामार्ग की पहली कड़ी है। डॉ. कृष्ण कुमार रत्तू के अनुसार "इंटरनेट के तहत एक 150

2629 HA/10—8 A

देशों के करीब तीन करोड़ लोग कंप्यूटरों के माध्यम से एक दूसरे से संपर्क कर सकते है । इंटरनेट के कंप्यूटर आपस में टेलीफोन लाईनों के जरिए जुड़ें हुए है । इस सेवा का इस्तेमाल करने वालों की संख्या में हर महीने 750000 की वृद्धि हो रही है ।"[22] इंटरनेट कंप्यूटर संचार प्रणाली के आधे से अधिक ग्राहक अभी भी अमेरिका में ही हैं । सूचना मार्ग ऑप्टीकल फायबर का नेटवर्क है । जो कि कंप्यूटर प्रणाली से जुड़ा है । हिंदी भाषा के विकास में इंटरनेट कंप्यूटर प्रणाली का योगदान लक्षणीय है । जिसके माध्यम से सूचनाएं प्रकाश गति से एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचती है । यह कार्य कंप्यूटर संचार प्रणाली से हिंदी भाषा के विकास के लिए हो रहा है । आज हिंदी विश्व की दूसरी बड़ी भाषा है । सूचना प्रौद्योगिकी युग में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने में कंप्यूटर की विशेष भूमिका है । हिंदी तथा भारतीय भाषाओं के लिए उपयुक्त कंप्यूटर बनाने की आवश्यकता महसूस हुई । तब भाषाई और द्विभाषी कंप्यूटर बनाए गए । प्रत्येक भाषा के लिए अलग-अलग कुंजीपटल तैयार किए गए । टाटा समूह द्वारा हिंदी भाषा विकसित करने के लिए कई सॉफ्टवेअर प्रणाली का निर्माण किया गया है । देवनागरीलिपी में भी कंप्यूटर सॉफ्टवेअर विकसित की गई है । "संगणक के कारण अब तो कतिपय सरल टाईप की सुविधाएं हिंदी में भी हो गई है ।"[23] इसी कारण हिंदी समाचार पत्र-पत्रिकाएं, आदि के रूप स्वरूप में बदलाव आया है । मुद्रण कला के आविष्कार अथवा प्रचलन में समाचार पत्रों की पृष्ठ सज्जा बहुत सुन्दर हो गई है । यह कंप्यूटर सूचना क्रांती का आविष्कार है । इसका लाभ हिंदी पत्रकारिता को हुआ है । यह आधुनिक युग मुद्रण कला का महान युग है । हिंदी के विकास में संचार माध्यमों की भूमिका महत्पूर्ण है । ई-मेल और मोबाईल संचार प्रक्रिया द्वारा हिंदी साहित्य का प्रचार-प्रसार किया जा सकता है । और मोबाईल की जगह छोटा कंप्यूटर आने वाले काल में लेगा । कंप्यूटर संचार प्रणाली का बड़ी मात्रा में उपयोग किया जा रहा है । कंप्यूटर संचार के माध्यम से लोगों में अभिरूची पैदा करने के लिए हिंदी भाषा का स्थान महत्वपूर्ण है । हिंदी भाषा का कंप्यूटर की दुनिया में उज्ज्वल भविष्य है ।

निष्कर्ष - कंप्यूटर माध्यम यह भाषा का माध्यम है । हिंदी भाषा के विकास में कंप्यूटर संचार का योगदान लक्षणीय है । सूचना प्रौद्योगिकी के युग में प्रिन्ट मीडिया, शिक्षा, आरोग्य, विज्ञान, आयटी, कृषि, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में कंप्यूटर संचार का विशेष महत्वपूर्ण स्थान है । कंप्यूटर ने विश्वस्तर पर मास मीडिया के बहुत रास्ते खोल दिए है । खास तौर पर टेलीविजन और सिनेमा में इसकी तकनीक विकसित हो रही है । हिंदी के बारे में आम आदमी की चेतना कंप्यूटर संचार के लिए लाभदायक है । सायबर स्पेस के युग में हिंदी संप्रेषण के लिए परिकल्पनात्मक कदम उठाए जा रहे हैं और कंप्यूटर संचार से हिंदी भाषा विश्व भर में लोकप्रिय होने लगी है । इंटरनेट कंप्यूटर की यह हिंदी यात्रा हमारे रहन-सहन तथा सूचना तंत्र को किस तरह प्रभावित करेगी इसके बारे में हम कह सकते हैं कि, सूचना महामार्ग में एक ऐसे विश्व की कल्पना की गई है । जिसमें कंप्यूटर, टेलीफोन और संचार उपग्रह प्रणाली को एक दूसरे से जोड़ दिया जाएगा तथा किसी भी विषय की जानकारी एवं भाषा संगणक का बटन दबाते ही टी. वी. परदे पर उपलब्ध हो जाएगी और आवाज की दुनिया में हिंदी भाषा का अनुवाद भी होगा । हिंदी भाषा के साथ देश की कोई भी भाषा राष्ट्रीय भाषा के साथ संचालन करेगी यह परिकल्पना बड़ी रफ्तार से विकसित होगी और हिंदी भाषा में अनुवाद का कार्य कंप्यूटर संचार प्रणाली करेगी । हिंदी भाषा अनुवादक एवं सम्प्रेषण का कार्य कंप्यूटर संचार प्रणाली करेगी और विश्व में हिंदी संवाद की भाषा होगी यह सूचना प्रौद्योगिकी की प्रगती से सम्भव होगा । इस संचार साधन से हिंदी भाषा को देश में बढ़ावा मिलेगा । कंप्यूटर और सायबर युग में हिंदी को गतिमान किया जा रहा है और कंप्यूटर सूचना प्रणाली के जरिए हिंदी भाषा अपनी विशिष्ट पहचान बना रही है और विश्व प्रधान भाषाओं में हिंदी आज एक महत्वपूर्ण भाषा हो गई है । कंप्यूटर संचार के द्वारा समाज के प्रति चिकित्सा करने की बहुत जरूरत है और हिंदी के अलग-अलग फॉन्टस विकसित करने की दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे । तभी हिंदी का विकास हो सकता है ।

2629 HA/10—8 B

संदर्भसूची

[1] दुबे श्याम चरण-संचार और विकास, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला इंद्रप्रस्थ प्रेस, नई दिल्ली-1974, पृ-2,

[2] डॉ अर्जून तिवारी-जनसंचार और हिंदी पत्रकारिता, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद प्रथम संस्करण 2004, पृ-244,

[3] वही पृ-244

[4] वही पृ-245

[5] सी. के. शर्मा-सूचना प्रौद्योगिकी, (2006) एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्युटर्स, नई दिल्ली, पृ-56

[6] प्रो. रमेश जैन-इलेक्ट्रॉनिक मीडिया लेखन, मंगलदीप पब्लिकेशन जयपुर प्रथम संस्करण प्रथम संस्करण 2004, पृ-233

[7] वही पृ-233

[8] वही पृ-233

[9] सी. के. शर्मा/हेमंत शर्मा-सूचना प्रौद्योगिकी, पृ-6,

[10] Waran Paul-Communication, computer and People. The Rand Corporation, Santa Monica Califormia, November-1965

[11] एन. सी. पंत-पत्रकारिता एवं संपादन कला, राधा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण-2005 पृ. 185

[12] रमेश जैन-जनसंचार में करीअर, सबलाइम पब्लिकेशन्स जयपुर, प्रथम संस्करण 2005, पृ. 178

[13] वही पृ.-179

[14] एन. सी. पंत-पत्रकारिता एवं संपादन कला पृ.-185

[15] रमेश जैन-इलेक्ट्रॉनिक मीडिया लेखन, पृ. 231

[16] वही पृ.-239

[17] डॉ. कल्याणी जैन-कंप्यूटर में हिंदी भाषा का बढ़ता प्रभाव, राष्ट्रीय संगोष्ठी 12, 13 अक्तूबर, 2008, श्रीमती केशर बाई लाहोटी महाविद्यालय अमरावती, पृ.-139

[18] रमेश जैन-इलेक्ट्रॉनिक मीडिया लेखन, पृ. 229

[19] रमेश जैन-जनसंचार में करीअर, पृ.-178,

[20] प्रियंका वाधवा-पत्रकारिता के विविध रूप एवं सिद्धांत, रजत प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008, पृ-350

[21] राष्ट्रीय संगोष्ठी-हिंदी का वर्तमान परिदृश्य :स्थिती एवं गति, शरदाबाई पवार महाविद्यालय बारामती, 1920 डिसेंबर 2008, पृ.-28

[22] डॉ. कृष्णकुमार रत्तु-सूचना तंत्र और प्रसार माध्यम, मंगलदीप पब्लिकेशन जयपुर, प्रथम संस्करण 2001, पृ-225

[23] प्रियंका वाधवा-पत्रकारिता के विविध रूप एवं सिद्धांत, रजत प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008, पृ-110

लागत नियंत्रण और गुणवत्ता सुधार में हमारा प्रयास

–राज बहादुर गुप्ता*

भूमिका :

समय परिवर्तनशील है, काल-चक्र अपनी द्रुतगति से चलता रहता है, समय की परिवर्तनशीलता का प्रभाव वैयक्तिक, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक उद्योगीकरण, उद्योग-व्यापार, विकास नीतियों, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में पड़ना स्वाभाविक और अवश्यभावी है । उद्योगों ने एक बाजार से उठकर वैश्वीकरण का रूप ले लिया, वह एक युग आया व अपनी छाप छोड़कर चला गया, इसके पश्चात्, आर्थिक उदारीकरण का युग आया, इस कारण सभी उद्योगों ने इसके परिणाम देखे तथा झेले, इसके पश्चात् युग आया आधुनिकीकरण का, इस्पात उद्योग, आर्थिक उदारीकरण से प्रभावित होकर, आधुनिकीकरण की ओर आगे अग्रसर हुआ । दुनियाँ की लगभग सभी इस्पात उत्पादक कंपनियों ने अपने-अपने संयंत्रों का आधुनिकीकरण किया और यह 1986 से लेकर लगभग 1998-99 तक चला । लेकिन आधुनिकीकरण के लाभ लेने का जब समय आया तो इस्पात जगत में पुन: एक बार मंदी का दौर प्रारंभ हो गया, इसका सीधा परिणाम यह हुआ कि कुछ इस्पात, सिमट गए तथा कुछ बंद हो गए, हमारे देश में उस दौरान दो ही संयंत्र ऐसे थे, जिन्होंने उस दौरान भी मुनाफा कमाया, अन्य सभी संयंत्रों ने नुकसान उठाया । यह एक पुनर्गठन का युग था ! कई इस्पात कंपनियों ने अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए अपने व्यवसाय का पुनर्गठन किया, हमारी कंपनी ने भी कुछ ऐसा ही किया और कुछ नई कंपनियों का जन्म हुआ जैसे SAIL-NSPCL आदि । लेकिन उस दौरान भी भारत की दो इस्पात कंपनियाँ ऐसी थीं जिन्होंने मंदी के दौर में मुनाफा कमाया । स्वाभाविक प्रश्न उठता है उन्होंने ही क्यों ? इसका उत्तर हम आगे जरूर देंगे ।

आज पुन: एक बार वैसी ही परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गई हैं, यह परिस्थितियाँ ज्यादा कठिन हैं, आज संपूर्ण जगत में अपार मंदी का दौर आ गया है । इसने दुनियाँ की लगभग सभी व्यवसायों को प्रभावित किया । इसके चलते कई कंपनियों का दिवाला निकल गया । कई कंपनियाँ दिवालेपन के कगार पर आ खड़ी हो गई है । निर्माण उद्योग, इंफ्रास्ट्रक्चर उद्योग आदि व्यापार मंदी का सबसे ज्यादा शिकार है । निर्माण उद्योग, इंफ्रास्ट्रक्चर उद्योग आदि व्यापार मंदी का सबसे ज्यादा शिकार हुए हैं । इसी कारण इस्पात उद्योग भी प्रभावित हुआ । ज्यादातर इस्पात कंपनियों ने अपनी विकास एवं क्षमता विकास परियोजनाओं के काग को बीच में ही रोक दिया है तथा अपनी क्षमता से वे कम उत्पादन कर रही हैं क्योंकि बाजार में मांग नहीं है, लेकिन इसके वाबजूद कुछ कंपनियाँ अभी अच्छा मुनाफा कमा रही हैं । अब प्रश्न यह उठता है कि ऐसा क्यों ? ऐसा इसलिए कि कुछ लोग समय एवं बाजार की स्थिति का समय पूर्व आकलन करने में माहिर हैं तथा उनकी नीतियाँ कुछ इस प्रकार की होती हैं कि वह तुरन्त निर्णय लेकर उसको तुरंत लागू करने में सक्षम हैं और मंदी-संदी का उनकी आय तथा लाभप्रदता पर कोई ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ता है । इसी क्षमता को प्रबंधन एवं व्यापारिक वैज्ञानिक भाषा में लागत नियंत्रण और गुणवत्ता वृद्धि/सुधार कहा जाता है, यह मेरी मान्यता है । यानी सतत् लाभप्रदता बनाए रखने के लिए यह जरूरी है कि लागत हमेशा नियंत्रण में रहे तथा उत्पाद की गुणवत्ता बनी रहे ही नहीं बल्कि उसमें निरंतर सृजनशीलता के आधार पर सुधार होता रहे ।

नीति : उपरोक्त सतत् रूप से घटित होता रहे इसके लिए जरूरी है कि :–

- बाजार की स्थिति का सही आकलन ।
- उत्पादों की लागत में लगातार नियंत्रण बाजार की स्थिति के अनुसार जिससे हर एक परिस्थिति में लाभप्रदता बनी रहे ।
- गुणवत्ता में सुधार का अभिप्राय, वर्तमान परिस्थितियों में - ग्राहकीकृत उत्पादों का उत्पादन ।

*सहायक महा प्रबंधक, रिफ्रैक्टरी विभाग, राउरकेला इस्पात संयंत्र, राउरकेला-769011

– ग्राहक/बाजार क्या खोजता है अथवा क्या चाहता है? ग्राहक की आवश्यकता क्या है ? यहाँ हमको लकीर का फकीर नहीं बनना है । हमको वही गुणवत्ता अपनानी है जो ग्राहक चाहता है, अन्यथा आपका कितना भी अच्छा माल क्यों न हो बिकेगा नहीं ।

व्यापारिक भूमंडलीकरण एवं लागत नियंत्रण तथा गुणवत्ता:

आज सारी दुनियाँ का बाजार एक हो गया है । व्यापार के लिए भौगोलिक सीमाओं की कोई बंदिश नहीं है । कोई भी देश कहीं पर भी अपना व्यापार कर सकता है जैसे बाटा, कोलगेट, कोकाकोला, मेकडोनाल्ड अन्य कई विदेशी कंपनियाँ भारत में कई सदियों से व्यापार कर रही हैं, (एक लम्बे अर्से तक भारत में उनका कोई प्रतिद्वंदी नहीं था) यदि उत्पाद ग्राहकों के मुताबिक एवं सस्ते हो तो खूब चलते हैं और हम कहते हैं कि "उसकी तो चल निकली" । चीन के उत्पाद हिंदुस्तान में ही नहीं, दुनियाँ के प्रत्येक कोने में खूब बिकते हैं, क्योंकि उनकी गुणवत्ता ग्राहकीकृत है एवं काफी सस्ते भी होते हैं । इसलिए प्रत्येक वर्ग का आदमी इसकी पहुँच में आता है । यदि "आवश्यकता आविष्कार की जननी" है तो आविष्कार भी आवश्यकताओं को पैदा करते हैं । इस बात को कम से कम आज के बाजारवाद ने सिद्ध कर दिया है । "जैसा बाजार वैसा उत्पाद"- "जैसा उत्पाद वैसा बाजार" और यह सब उन्हीं देशों में घटित हो रहा है जिन्होंने सतत् रूप से उत्पादों के उत्पादन की लागत को हर परिस्थिति में नियंत्रित करके किया और साथ-साथ लागत नियंत्रण के साथ-साथ गुणवत्ता में भी सुधार किया ।

बाटा और टाटा की गुणवत्ता एवं मूल्य सटीक वहीं होते तो सदियों पुरानी कहावत जो मैंने अपने गाँव में, बचपन में सुनी थी, सही नहीं होती, "जूतों में बाटा और स्टील में टाटा" का कोई मुकाबला नहीं । दोनों कंपनियाँ सदियों पुरानी हैं और इनका बाजार, गुणवत्ता एवं निरंतर लागत नियंत्रण के कारण हमेशा सदाबहार हैं और आज भी बना हुआ है ।

किसी ने ठीक ही कहा है

"रातें उजालने का हूनर तुम हम पर छोड़ दो ।
तुम थक गए हो तो यह सफर हम पर छोड़ दो ।
तुमने इसके लिए जो किया इसका हमको इल्म है ।
अब इस घर में हम रहते हैं इसको हम पर छोड़ दो ।"

इस्पात उद्योग और लागत नियंत्रण एवं गुणवत्ता में वृद्धि :

आज वैश्विक मंदा, आर्थिक मानकों, बाजार और लगातार कीमतों में गिरावट तथा बाजार में इस्पात की मांग में भारी कमी आदि ने इस्पात उद्योग को एक असाधारण स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है । हमारी कंपनी भी इसका अपवाद नहीं रही । सेल तथा राउरकेला इस्पात संयंत्र ने इससे उबरने के लिए अनेक आंतरिक उपायों को कार्यान्वित करते हुए उत्पादन लागत को नियंत्रित करने के साथ-साथ उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार करते हुए वैश्विक स्तर पर इस्पात उद्योग द्वारा तीव्र आर्थिक मंदी का सामना करने के लिए समय से पहले कदम उठाए हैं, कुछ इस प्रकार हैं :-

– चहूँमुखी लागत दक्षता ।
– मूल्य संवर्द्धित मदों का अधिक उत्पादन ।
– कोक दर में कमी
– उत्पादकता में वृद्धि

लागत में कमी:

उदाहरण के लिए सभी संयंत्रों में लागत में कमी के विशिष्ट उपाय । हमारे संयंत्र में किए गए उत्पादों से लागत में कमी से निम्न बचत अर्जित की गई ।

लागत नियंत्रण के कारण बचत

राउरकेला इस्पात संयंत्र

रूपया-करोड़

सन्	2007-08	2008-09	2009-10 (जून-2009)
बचत लक्ष्य	104.79	137.86	110
बचत सही मायने में की गई	33.13	91.62	10.89

लागत नियंत्रण और गुणवत्ता में सुधार के उपाय :

यह एक सार्वभौम सत्य है कि किसी भी एकीकृत इस्पात संयंत्र जो कि "धमन भट्टी-एल.डी.-सतत् संचकन" पद्धति पर आधारित है । वहाँ सबसे महत्वपूर्ण बिंदु है, ऊर्जा तथा ऊर्जा खपत बहुत कुछ निर्भर करती है धमन भट्टियों की कोक दर पर । यदि कोक दर कम होती है तो ऊर्जा की खपत प्रति टन कच्चे, परिसज्जित इस्पात उत्पादन में स्वत: ही कम होती जाती है तथा लोहे का उत्पादन धमन भट्टियों में जितनी कम कोक दर से होगा, लोहे की गुणवत्ता उतनी ही अच्छी होगी तथा लागत भी स्वत: परिसज्जित इस्पात उत्पादन तक कम होती जायेगी । इसका अभिप्राय:

2629 HA/10—9 A

यह है कि अंतिम परिसज्जित इस्पात की गुणवत्ता तथा लागत को कोक दर सबसे ज्यादा प्रभावित करती है । अत: हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि इसको जितना कम कर सकते हैं कम करें । हमारी कंपनी में ऐसा ही कुछ घटित हो रहा है, प्राप्त आंकड़ों के आधार पर हमने पिछले साल की प्रथम तिमाही के आधार पर लगभग तीन प्रतिशत कोक दर में कमी की है तथा राउरकेला इस्पात संयंत्र में 539 कि.ग्रा./टन लोहा की दर हासिल की है, जो अभी तक की सबसे कम दर है । देखें निम्न तालिका (सेल कोक दर)

तालिका-सेल कोक दर

	2006-07	2007-08	2008-09	प्रतिशत कम/ ज्यादा
कोक दर (कि.ग्रा./टन लोहा)	541	533	521	प्रथम तिमाही 2009-530 कि.ग्रा./टन प्रथम तिमाही 2009-10 -512 कि.ग्रा./टन (3% प्रतिशत की कमी)
ऊर्जा की खपत गैगा-कैल./टन इस्पात	7.16	6.95	6.74	प्रथम तिमाही 09-6.89 प्रथम तिमाही 10-6.79

कोक दर में और अधिक कमी करने की जरूरत है । इसके लिए निम्नलिखित तकनीकी उपायों को अपनाना होगा ।

क. धमन भट्टियों में वायु के साथ ऑक्सीजन का अंत क्षेपण करना । भारत तथा विदेशों में कुछ संयंत्रों से इस तकनीकी का लाभ उठा रहे हैं ?

ख. धमन भट्टियों में कोल धूल का अंतक्षेपण करना ।

ग. राउरकेला की धमन भट्टी नं. 4 से प्रतिदिन 2500-2800 टन तप्त लोहे का उत्पादन करना ।

विशिष्ट इस्पात का अधिक उत्पादन

जब साधारण इस्पात की कीमतें घट रहीं हों तथा लाभ कम हो रहा है, ऐसी स्थिति में हमको हमारी क्षमता से ज्यादा विशिष्ट उत्पादों का अधिक उत्पादन करके लाभप्रदता को बनाया रखा जा सकता है । हम बहुत कुछ इसी दिशा में अग्रसर हो रहे हैं । देखें निम्नलिखित तालिका हमने विशिष्ट इस्पात का उत्पादन पिछले कई सालों की तुलना में कहीं अधिक किया है ।

(मि.टन)

सन्	2007-08	2006-07	2005-06	2004-05	2002-03
बिक्री योग्य इस्पात का उत्पादन	13.044	12.581	12.051	11.030	10.352
विशिष्ट इस्पात	5.13	4.54	4.27	3.79	2.66

मूल्य संबर्धित उत्पाद

सन	2006-07-1.46 मि.टन	प्रथम तिमाही 2009 - 2.9%
	2007-08-3.36 मि.टन	प्रथम तिमाही 2010 -10.3%
	2008-09-3.73 मि.टन	

जितना ज्यादा मूल्य संबर्धित उत्पादों का उत्पादन होगा, लागत में स्वत: कमी आती जायेगी तथा गुणवत्ता में सुधार के साथ-साथ लाभप्रदता बढ़ती जाएगी ।

अनुशासित और अभिप्रेरणा से लागत नियंत्रण तथा गुणवत्ता में वृद्धि

यह एक सदियों से मानी हुई बात है कि यदि अनुशासन और अभिप्रेरणा को संयंत्र की हर इकाई में कायम रखा जाए तो उत्पादकता में सभी कठिनाइयों के बावजूद वृद्धि होती है और लागत में कमी आती है और गुणवत्ता भी आगे बढ़ती है । इसको हमने पिछले 4-5 वर्षों में अनुभव किया है । हमारे संस्कार इसको आगे बढ़ाने में बहुत श्रेष्ठ साबित हुए हैं, हमने 2 मिलियन टन से ज्यादा तप्त लोहे का उत्पादन लगातार किया है, इस्पात गलनशालाएँ अपनी निर्धारित क्षमता से कहीं ज्यादा उत्पादन कर रही हैं । अनुशासन से सही कार्य कुशलता बरकरार रखी जा सकती है और परिणामस्वरूप उच्च गुणवत्ता और लक्षित उत्पादकता के द्वारा लागतों को नियंत्रित किया जा सकता है और इसके द्वारा ही चुनौतियों को अवसरों में बदला जा सकता है । जैसे पूर्व के ज्यादातर संयंत्र विशिष्ट इस्पात का उत्पादन करने में कतराते थे, लेकिन आज इसी के द्वारा चुनौतियों का सामना किया जा रहा है ।

लेकिन इसके लिए निहायत जरूरी है कि कारखाने के सभी कर्मचारीगण संयंत्र के प्रति एक समर्पण की भावना से कार्य करें । संयंत्र मात्र लोहा मिट्टी की इमारत नहीं है । यह हजारों लोगों ही नहीं अपितु जीव-जंतुओं की रोजी-रोटी का साधन है । उत्पादकता में वृद्धि के द्वारा लागत नियंत्रण तथा गुणवत्ता में सुधार के लिए, यह जरूरी है कि संयंत्र

में एक शांति का वातावरण बना रहे, यह एक सार्वभौम सत्य एवं सैद्धांतिक रूप से मानी हुई बात है कि औद्योगिक शांति के वातावरण में ही उद्योग अधिक फलते-फूलते हैं। इसके लिए यह नितांत आवश्यक है कि प्रबंधन श्रीराम जैसा व्यवहार करे तथा सभी कार्मिकगण हनुमान बनकर आदर्श भागीदारी एवं समर्पण का नमूना प्रस्तुत करें यानी लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए दोनों को आपस में एक व्यक्ति भाव से जुड़ना होगा। प्रबंधन व्यवस्था में कुछ ऐसे ही आदर्शों की स्थापना करनी होगी जहां पर प्रबंधन सभी कर्मचारियों को वात्सल्य तथा समता से देखता है और फिर सभी कर्मचारी प्रबंधन के सभी आदेशों को अंगीकार कर संपूर्ण समर्थन भावना से "हनुमान" बन कर उत्पादकता को आगे बढ़ाने में भागीदार बन जाते हैं, हमारी प्राचीन संस्कृति में भी कुछ ऐसा ही कहा गया है।

"उत्पादकता धर्मोभव
गुणवत्ता जातीय भव
मानवता ध्येयो भव।"

पूर्ण प्रचालन दक्षता प्रबंधन द्वारा लागत में नियंत्रण तथा गुणवत्ता में सुधार

इस आर्थिक मंदी के दौर की चुनौतियों को अवसर में बदलने के लिए हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम अपनी व्यापारिक कार्यनीति में कार्य प्रदर्शन सुधार को एक मुख्य प्राथमिकता के रूप में पहचाने तथा प्रचालन 24 घंटे प्रति दिन के सिद्धांत को अपनाना होगा।

इससे उत्पादकता में वृद्धि के साथ-साथ संपत्ति के स्थिरीकरण से कार्य का खर्च घटेगा और साथ-साथ संभावित कम समय से न्यूनतम पूंजी निवेश के साथ उत्पादन लागत में कमी आएगी क्योंकि पूर्ण प्रचालन दक्षता प्रबंधन का लक्ष्य संपर्ण बड़े सुधारों में गुणवत्ता और लागत में कमी अत्यंत कम समय में करना है तथा एक ऐसी स्थिति उत्पन्न करना जिससे लागत में निरंतर कमी के साथ-साथ गुणवत्ता में वृद्धि से लगातार निष्पादन में उन्नति भी होती रहे। जैसा कि निम्न चित्र में दर्शाया गया है।

चित्र : पूर्ण प्रचालन दक्षता प्रबंधन से लागत नियंत्रण तथा गुणवत्ता में सुधार

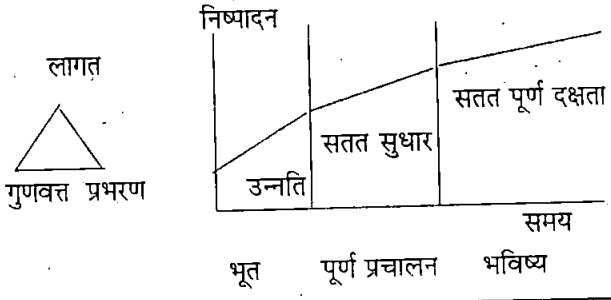

लागत नियंत्रण तथा गुणवत्ता में सुधार का महा सूत्र

1. आयातित कोयले में कमी करना।
2. धमन भट्टियों में कोल धूल अब अंत:क्षेपण को तुरन्त लागू करना, साथ-साथ सभी धमन भट्टियों में आक्सीजन अंत: क्षेपण लागू करना।
3. विकसित प्रौद्योगिकी पद्धतियों द्वारा प्रचालन में सुधार लाना।
4. स्थापित क्षमता का नव प्रवर्तन के द्वारा शत प्रतिशत से कहीं ज्यादा। उपयोग करके उत्पादन दक्षता में वृद्धि करना (इससे लागत में स्वत: ही नियंत्रण होता है)
5. ग्राहकों की संतुष्टि वाले श्रेष्ठ उत्पादों का उत्पादन करना।
6. उद्देश्यपूर्ण प्रचालन दक्षता प्रबंधन से शून्य दुर्घटना, शून्य ब्रेक डाउन, शून्य ग्राहक शिकायत एवं शून्य उत्पाद दोष।
7. ज्ञान प्रबंधन प्रक्रिया को लागू करना।

उपसंहार

उठो जागो और तब तक न रूको जब तक लक्ष्य प्राप्ति न हो जाएं-स्वामी विवेकानंद के यह उद्गार हर युग में अकाट्य सत्य की तरह गुंजायमान होते रहेंगे। जो रूका वह भला लक्ष्य प्राप्ति कैसे कर सकता है। गति से ही लक्ष्य की प्राप्ति है। लागत में नियंत्रण तथा गुणवत्ता में सुधार हमारे सभी के सतत प्रयासों के बल से ही हो सकता है। इसी से ही लाभप्रदता तथा अपने वजूद को बनाए रखा जा सकता है। हम अपने इतिहास को भूलना नहीं हैं, सन् 1999-2002 की स्थिति वापस नहीं आए इसके लिए जरूरी है कि सभी कार्मिकगण अपने नकारात्मक सोच वाले मजदूर संगठनों के चंगुल से मुक्त होकर कार्ल-मार्क्स के भौतिकवाद के अंतर्गत वर्ग संघर्ष को त्यागकर उत्पादक कार्य संस्कृति से जुड़ें, जैसा कि निम्न श्लोक में कहा गया है।

उत्पादकता शरणम् गच्छामि
गणवत्ता शरणम् गच्छामि
मानवता शरणम् गच्छामि

पत्रकारिता

हिंदी पत्रकारिता : एक अवलोकन

–डॉ माणिक मृगेश*

समाचार पत्रों का प्रकाशन सबसे पहले छठी शताब्दी में चीन में हुआ । हमारे देश में महान अशोक के शासनकाल में साम्राज्य के भिन्न प्रदेशों से समाचार एवं घटनाओं का वृत्तांत निश्चित समय पर भेजने का उल्लेख मिलता है । मुगल काल में पत्रकारिता का स्पष्ट उल्लेख है । बर्नियर ने लिखा है "बादशाह हर जिले में वाक्यानवीस नियुक्त करते थे जो महत्वपूर्ण घटनाओं की रिपोर्ट **सवारों, काफिलों** अथवा **हरकारों** के मार्फत भेजते थे ।"

भारत में समाचार पत्रों का इतिहास 1690 से शुरू होता है जबकि कलकत्ता का जन्म हुआ । पहला प्रेस सीरामपुर (बंगाल) वापटिस्ट मिशनरी द्वारा लगाया गया । पहला भारतीय पत्र एक अंग्रेज़ के संपादकत्व में 29-1-1780 को हिकीज़ बंगाल गजट के नाम से प्रकाशित हुआ । 1785 में ऑरियंटल मैगजीन मासिक पत्र का प्रकाशन हुआ । 1791 में विलियम हुफानी नामक अमरीकी इंडियन वर्ल्ड प्रकाशित किया । सन 1795 में मद्रास से इंडियन हैराल्ड निकला जिसके संपादक हफेस थे । 1818 में कलकत्ते से जेम्स स्मिथ वर्किंघम के संपादन में कलकत्ता ज़र्नल प्रकाशित हुआ ।

भारतीय पत्रकारिता को अंगरेज व अंगरेजी का योगदान अधिकांशत: भारत में अंगरेजी शिक्षा के प्रवर्तक-प्रचारक लॉर्ड मैकाले को मानते हैं और उन पर दोषारोपण करते हैं कि उन्होंने भारतीयों को क्लर्क बनाने के लिए अंगरेजी शिक्षा का प्रचार-प्रसार किया । लेकिन इतिहासकार डॉ. रमेश चंद मजूमदार इसे निराधार मानते हैं उनका कहना है कि मैकाले से पहले ही भारतीय शिक्षाशास्त्री व समाजशास्त्री राम मोहन राय 1813 में लार्ड अमहर्स्ट को पत्र लिखकर अंगरेजी शिक्षा की व्यवस्था के लिए पत्र लिख कर अनुरोध कर चुके थे । यही नहीं भारत के बहुत सारे परंपरावादियों ने भी अंगरेजी शिक्षा की वकालत की थी । परिणामस्वरूप 20 जनवरी, 1817 को हिंदू कॉलिज की स्थापना हुई जो अंगरेजी शिक्षा के प्रचार-प्रसार में सबसे अधिक सार्थक सिद्ध हुआ ।

हिंदी का पहला समाचारपत्र : उदंत्त मार्तंड

हिंदी का पहला साप्ताहिक समाचारपत्र 30 मई, 1826 को पं. युगुल किशोर शुक्ल के संपादन में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ । हालांकि इसका जीवन बहुत ही अल्प रहा और 4-12-1827 तक ही चल पाया । अंतिम अंक में संपादक ने लिखा :

"आज दिवस लौं उग चुक्यौ मार्तंड उदन्त । अस्ताचल को जात है दिनकर दिन अब अंत" इस तरह से हिंदी पत्रकारिता का प्रारंभ कलकत्ता से हुआ और यह भी कि बंगाल के केशव चंद्र सेन ने ही सर्वप्रथम हिंदी को राष्ट्रभाषा कहा ।

हिंदी पत्रकारिता का प्रथम चरण

हिंदी पत्रकारिता का प्रथम चरण 1826 से ही शुरू हुआ और यह 1900 तक चला । इस दौरान 1834 में प्रजापति, 1845 में बनारस अखबार, 1849 में मानव समाचार, 1854 में हिंदी का प्रथम दैनिक "समाचार सुधावर्षण" श्री श्यामसुंदर सेन के संपादकत्व में शुरू हुआ जो कि

*इंडियन ऑयल कार्पोरेशन लि. गुजरात रिफाइनरी, जवाहर नगर, वडोदरा-391 320

1868 तक चलता रहा । इसी काल में दैनिक कलकत्ता, सुधानिधि, हिंदोस्तान आदि अखबार निकाले गए ।

भारतेंदु युग

इसी समय भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म होता है और उन्होंने हिंदी पत्रकारिता को एक नई दिशा दी । अबतक हिंदी पत्रकारिता पर पूरी तरह से ब्रजभाषा का प्रभाव था । "सभों को खबर दी जाती है कि जिस किसको गंगा की मिट्टी लेनी हो तो तीर की रात बल्ली और फुट 151 के अटकल जगह छोड़ के खाले की मुंह खनि लेय"

इसी काल में राष्ट्रीय आंदोलन शुरू हो चुका था । केशव चंद सेन और राजाराम मोहन राय इसके अगुआ थे । इसी काल में भरतमित्र सार सुधानिधि, उचित वक्ता कवि सुधा हरिश्चंद मैगजीन, हिंदी प्रदीप, हरिश्चंद आदि अखबार प्रकाश में आए । इसी दौरान 1893 में नागरी प्रचारिणी सभा का गठन हुआ । बाबू श्याम सुंदर, रामनारायण मिश्र, शिवपूजन सहाय इस दौर के मुख्य पत्रकार थे ।

तृतीय चरण

इस चरण में विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार व स्वदेशी का आंदोलन चल पड़ा था । बाल गंगाधर तिलक उग्र पत्रकारिता के हिमायती, विपिनचंद पाल, लाला लाजपतराय, अरविंद घोष आदि राजनीति का नेतृत्व कर रहे थे । तो वहीं महावीर प्रसाद द्विवेदी "सरस्वती" के माध्यम से हिंदी पत्रकारिता को मानकता प्रदान कर रहे थे । भाषा की शुद्धता पर इस पत्रिका ने काफी जोर दिया । मारवाड़ी बंधु, नृसिंह वे देवनागर इस समय के प्रमुख समाचार पत्र हैं । दुर्गा प्रसाद मिश्र, अंबिका प्रसाद वाजपेयी, बाबूराव विष्णु, पराडकर लक्ष्मीनारायण वाजपेयी आदि प्रमुख पत्रकार हैं ।

गांधी युग

गांधी युग के साथ ही आदर्शवादी पत्रकारिता शुरू हुआ । इसी समय विशाल भारत का प्रकाशन शुरू हुआ । माधुरी सुधा, मतवाला और का प्रकाशन शुरू हुआ । मतवाला ने तो सारे बंधन तोड़ डाले । उधर पंडित सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने कविता में नया प्रयोग किया "खुल गए छंद के बंध" तो संपादकों ने समाज को हर दृष्टि से एक नई दिशा प्रदान की ।

मतवाला के संपादकीय स्तम्भ के ऊपर अकबर इलाहाबादी की ये पंक्तियाँ :

वेद वाक्य के रूप में रहती थीं :

खींचो न कमानों को न तलवार निकालो ।
जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो ।

इस काल को स्वच्छंदता और नवजागरण का काल भी कहा गया है । इस काल में आचार्य शिवपूजन सहाय, बनारसी दास चतुर्वेदी तथा नवजाति कलास प्रमुख पत्रकार रहे । "सरोज साहित्यिक" पत्रिका इसी काल में शुरू हुई ।

आज़ादी के बाद

धर्मवीर भारती, हीरानंद सच्चिदानंद वात्सायन 'अज्ञेय', राजेंद्र अवस्थी, राजेंद्र माथुर, एस.पी.सिंह, नरेश मेहता, प्रभाकर माचवे आदि महत्वपूर्ण पत्रकार रहे ।

वर्तमान संदर्भ

वर्तमान मीडिया पूर्णत: इलेक्ट्रोनिक मीडिया को समर्पित है तथापि प्रिंट मीडिया की भी उपयोगिता अभी कम नहीं हुई है । मुद्रित शब्द ज्यादा दिनों तक टिका रहता है । आज प्रिंट मीडिया में दो तरह की पत्रकारिता है । एक समाचार पत्रकारिता दूसरी साहित्यिक पत्रकारिता । समाचार पत्रिका के रूप में वर्तमान में इंडिया टुडे और आउट लुक दो ही मात्र अच्छी पत्रिका हिंदी में हैं ।

दैनिक समाचार पत्रों में नवभारत टाइम्स, हिंदुस्तान, जनसत्ता, नई दुनिया है । प्रसार की दृष्टि से दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, पंजाब केसरी व अमर उजाला अपनी पकड़ बनाए हुए हैं ।

साहित्यिक पत्रिकाओं में हंस एक अच्छी पत्रिका है लेकिन यह कथा साहित्य को ही समर्पित है । समकालीन साहित्य कथादेश, वर्तमान साहित्य कादम्बिनी का अपना स्थान है । लोकप्रियता की दृष्टि से दिल्ली प्रेस की पत्रिकाएं भले ही साहित्यिक न हों पर सबसे आगे हैं । मानक वर्तनी की दृष्टि से "सरिता" उत्कृष्ट पत्रिका है । यह पत्रिका

शेष पृष्ठ 37 पर

पर्यावरण

वायु-प्रदूषण से कैसे लड़ें

–डॉ. रामदास "नादर"*

प्रदूषण अब एक व्याप्रक शब्द बन गया है । ऐसा माना जाता है कि संसार में तीन प्रकार के ताप हैं–दैहिक, दैविक और भौतिक । शरीर संबंधी कष्ट या रोग दैहिक, भू-कम्प, बाढ़ आदि दैवी आपदाएं दैविक कष्ट और अन्य संसारिक परेशानियां भौतिक कष्टों की गिनती में आती हैं। किंतु आज प्रदूषण तीन श्रेणियों तक सीमित नहीं है । अभी तक प्रदूषण केवल तीन प्रकार वायु, जल या शोर का ही माना जाता रहा है। मगर अब प्रदूषण अनेक प्रकार से हमारे सामने हैं । वायु-प्रदूषण, जल-प्रदूषण और शोर-प्रदूषण ही नहीं बल्कि अब प्रदूषण का साम्राज्य इतना फैल गया है कि हर स्तर पर प्रदूषण ही प्रदूषण दृष्टि-गोचर होता है ।

शारीरिक, मानसिक, आत्मिक प्रदूषण, सामाजिक, राजनीतिक, जातीय, देशीय प्रदूषण, सांस्कृतिक, धार्मिक, नैतिक प्रदूषण, वाचिक, मौखिक, काल्पनिक, कार्मिक एवं वैचारिक प्रदूषण, शैक्षिक, व्यापारिक, व्यवहारिक, पारस्परिक संबंधों आदि में प्रदूषण। औषधि खाद्य पदार्थों, वेशभूषा, रहन-सहन में प्रदूषण । इनके अतिरिक्त दृष्टि, श्रुति प्रदूषण भी आम है । लोग प्रदूषित बोलने, सुनने और देखने में भी आनंद लेने लगे हैं । ऐसा लगता है चारों ओर प्रदूषण का तिमिर अपने विकराल रूप में हर स्तर पर व्याप्त है । प्रदूषण की आग की लपटें ऊंची उठती साफ दिखाई पड़ती हैं । न जाने यह दुनिया किस गर्त में जा गिरी है। कहीं भी प्रकाश की कोई किरण, आशा की चमक दिखाई ही नहीं देती । जनसाधारण घोर निराशा से त्रस्त है। मानवता का अंत समीप प्रतीत होता है। ऐसा आभास होता है । इस संसार की इतिश्री होने वाली है । जीवन मृत्यु का ग्रास बनने की ओर अग्रसर है और सब कुछ विनाश के कगार पर आ पहुंचा है । वाणी, श्रवण एवं दृष्टि प्रदूषण सभी अपनी चरम सीमा पर हैं।

इक्कीसवीं शताब्दी में प्रवेश किए हमें एक दशक हो गया है। आज से पांच दशक पूर्व हमने सोचा भी नहीं था कि जो कुछ आज हमें दृष्टिगोचर हो रहा है, वह देखने को मिलेगा। इन पचास वर्षों में संसार में इतना विकास हुआ है, दुनिया इतनी परिवर्तित हुई है कि इसे पहचान पाना भी कठिन होता जा रहा है। यदि हम पचास वर्ष पूर्व कहीं छिप गए होते और एकाएक प्रकट होते, तो हम अपनी दुनिया को पहचान ही न पाते । हमें विश्वास ही न होता कि हम इसी धरती पर जन्में हैं और हमने इसी दुनिया में अभी तक वास किया है। गत 50 वर्षों में इतने परिवर्तन घटित हुए हैं जिन्होंने इस दुनिया का हुल्या तथा रूप ही बदल दिया है। विज्ञान की इतनी उन्नति हुई है कि अब हम चलते-चलते लाखों मील दूर बैठे अपने प्रियजनों से सीधा संपर्क साध सकते हैं, बात कर सकते हैं । उनका चित्र हमारे सामने होता है जैसे आमने-सामने बैठे बात हो रही हो । समुद्र पार घटने वाली घटनाओं को दूरदर्शन के पर्दे पर साथ-साथ देख सकते हैं । चंद्रमा पर जाना तो इतना सुगम है कि प्रतिदिन लोग वहां की यात्रा करने लगे हैं । वहां बस्तियां बसाने का कार्यक्रम बना रहे हैं । रेल-यात्रा की भांति चंद्रमा-यात्रा की टिकटें बुक हो रही हैं ।

उन्नति की यह दौड़ कहां रूकेगी, पता नहीं । इस दुनिया की जनसंख्या बेतहाशा बढ़ रही है। बेहिसाब आबादी बढ़ने के कारण हम प्रकृति का अंधा-धुंध दोहन कर रहे हैं । उसके द्वारा प्रदत्त साधनों का प्रयोग स्वछंदता से हो रहा है । जंगल कट रहे हैं, कंक्रीट के महल जगह-जगह खड़े हो रहे हैं। नगदीकरण द्रुतगति से होने के कारण हम सभी प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं । हमारा जीवन कृत्रिम हो कर रह गया है । परिणाम-स्वरूप प्रदूषण बढ़ रहा है । जल, वायु सभी कुछ

*20/30, मोती नगर, नई दिल्ली-110015

2629 HA/10—10 B

प्रदूषित हो रहा है । बढ़ती हुई आबादी को सभी प्रकार की वस्तुएं दरकार हैं । मानव का जीवन आक्सीजन पर निर्भर करता है । वृक्षों का जीवन मनुष्य द्वारा त्यागी कार्बनडाइआक्साइड गैस पर आधारित है । प्रकृति ने एक संतुलन पैदा किया था जिसे मनुष्यों की बढ़ती जनसंख्या ने बिगाड़ दिया है । मां प्रकृति से मनुष्य जूझ रहा है । उसे चुनौती दे रहा है । ललकार रहा है ।

सभी प्रकार के प्रदूषण पर विचार करने के लिए एक बृहत् ग्रंथ की आवश्यकता पड़ेगी । इस लघु आलेख में समग्र रूप से प्रदूषण पर विचार कर पाना संभव नहीं । यों भी इस लेख में, हमारा अभीष्ट, वायु-प्रदूषण तथा उससे लड़ने के उपाय तलाशना है ।

यह बताया जा चुका है कि आक्सीजन मनुष्य के लिए प्राण-वायु है । हम प्राण-वायु लेते हैं और जीते हैं । यह प्राण-वायु हमें प्रकृति ने प्रचुर मात्रा में प्रदान की है । दिन के समय वृक्ष आक्सीजन त्यागते हैं और हमारे द्वारा छोड़ी गई कार्बनडाइआक्साइड गैस ग्रहण करते हैं । आक्सीजन जीवों के जीवन का आधार है । जीवों की आबादी बढ़ने से एक और आक्सीजन की खपत बढ़ती है तो दूसरी और उनको रहने के लिए स्थान भी चाहिए । यह सब उपलब्ध कराने के लिए मकान आदि की व्यवस्था करना जरूरी हो जाता है । यह व्यवस्था तभी हो सकती है जब खाली जमीन उपलब्ध हो । इसके लिए जंगल कटते हैं । वृक्षों पर कुल्हाड़ी चलाई जाती है । सांस द्वारा हम जो कार्बनडाइआक्साइड त्यागते हैं, वह वृक्षों का जीवन, आधार है । रात के समय वृक्ष यही कार्बनडाइआक्साइड छोड़ते हैं और दिन के समय ग्रहण करते हैं । बदले में हमें आक्सीजन देते हैं । इसलिए पुराने लोग बच्चों को रात के समय वृक्षों के पास जाने की यह कहकर मनाही करते थे, कि वहां रात को भूत होते हैं । वास्तव में रात के समय उनका जहरीली गैस छोड़ना ही भूत-तुल्य है। वृक्षों और मनुष्य का चोली दामन का साथ है। वायु-प्रदूषण का एक बड़ा कारण उनके अनुपात में गड़बड़ होना है । यदि इनके बीच का संतुलन बिगड़ता है तो वायु-प्रदूषण भयंकर रूप धारण कर लेगा । इस तथ्य को समझ लेना बहुत जरूरी है । संसार की जनसंख्या में वृद्धि और जगलों की कटाई वायु-प्रदूषण का मूल कारण है । अन्य कारण और भी हैं जिनका उल्लेख यथा स्थान करेंगे । आबादी का घनत्व बढाने से आक्सीजन की खपत में वृद्धि होना स्वाभाविक है । प्रकृति हमारी माता है । माता की तरह ही यह हमारा पोषण करती है । परमात्मा ने वातावरण में विभिन्न प्रकार की गैसें उत्पन्न की हैं । उनमें दो गैसें मुख्य हैं—आक्सीजन और नाइट्रोजन प्रकृति ने इन दोनों के बीच एक संतुलन पैदा किया है । यह संतुलन प्रकृति मां की देन है । मगर मनुष्य ने नगरीकरण एवं उद्योगीकरण की अंधी दौड़ में इस संतुलन को बिगाड़ दिया है और निरंतर इसे और बिगाड़ रहा है । मनुष्यों की संख्या बढ़ेगी तो कार्बन-डाइआक्साइड का अधिक मात्रा में त्याग होगा किंतु इसे ग्रहण करने वाले वृक्ष यदि कम होंगे तो प्रकृति में गैसों का संतुलन भयंकर रूप से प्रभावित होगा। इधर आक्सीजन की आवश्यकता भी बढ़ेगी मगर आक्सीजन देने वाले जब वृक्ष ही नहीं होंगे तो आक्सीजन की पूर्ति कहां से होगी। निश्चय ही संतुलन बुरी तरह बिगड़ेगा। बस यही हो रहा है । इसी कारण वायु-प्रदूषण तीव्रगति से बढ़ रहा है। हम वायु प्रदूषण बढ़ा तो रहे हैं किंतु इसे कम करने के लिए हमारे प्रयास सर्वथा अप्रयाप्त एवं नाकाफी हैं । हमारे पास भूमि तो उतनी ही है । अन्य साधन भी सीमित हैं । बढ़ती आबादी को स्थान मुहाया कराने के लिए भूमि की अधिक आवश्यकता है । अधिक भूमि उपलब्ध कराने के लिए जंगल काटने के अतिरिक्त और कोई विकल्प बचता ही नहीं । जंगल कटेंगे तो वृक्ष विनष्ट होंगे। वृक्ष और मनुष्यों का एक दूसरे के लिए अन्योन्याश्रित संबंध हैं । वे एक दूसरे के जीवन रक्षक तथा पोषक हैं । एक दूसरे के सच्चे एवं स्थाई मित्र तथा सखा हैं इनका आपसी रिश्ता अत्यंत गहरा तथा प्रगाढ़ है । एक जीता है तो दूसरे को भी जीवन मिलता है । एक मरता है तो दूसरे का जीवन स्वत: ही समाप्त होता है । वृक्षों की मौजूदगी अन्य और भी कार्य करती है । जैसे पानी की उपलब्धता और बाढ़ आदि पर नियंत्रण रखना । समय पर वर्षा का होना और अनावृष्टि से रक्षा में भी वृक्ष एक बड़ी सीमा तक सहायक होते हैं । वृक्ष जीवों को न केवल आक्सीजन उपलब्ध कराते हैं बल्कि उनके त्यागे मल मूत्र को ग्रहण कर वातावरण को स्वच्छ रखने में भी मदद करते हैं । मनुष्यों तथा अन्य जीवों द्वारा त्यागा गया मल मूत्र वृक्षों के लिए खाद का काम करता है । उन्हें पोषण मिलता है और वातावरण शुद्ध साफ एवं स्वच्छ रहता है । हरियाली बढ़ती है । वायु प्रदूषित होने से बचती है । हमने देखा कि

वायु-प्रदूषण का मुख्य कारण वास्तव में जनसंख्या वृद्धि ही है । प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ने वाला एक मात्र कारण जनसंख्या-वृद्धि है । लोग बढ़ते हैं तो अन्य काम भी बढ़ते हैं। वाहनों में वृद्धि होती है । उद्योगों का विस्तार होता है । नगर अधिक बसते हैं । उद्योग बढ़ेंगे तो उनकी चिमनियों से निकलने वाला विषैला धुंआ जहरीली गैसों का विसर्जन करेगा जिससे वातावरण में इन गैसों की अभिवृद्ध होगी और वातावरण दूषित होगा । वाहन भी वायु प्रदूषित करने में कोई कम योगदान नहीं करते । आज हम देखते हैं कि परम्परागत यातायात के साधन कम हो रहे हैं और मशीनी वाहन आदि बढ़ रहे हैं । पेट्रोल, डीजल की खपत अधिक हो रही है जिनसे वातावरण में जहरीला धुंआं विसर्जित होता है। वायु-प्रदूषण बढ़ता है, संतुलन बिगड़ता है । परिणामतः जहरीली गैसें बढ़ रही हैं । आक्सीजन कम हो रही है । सांस तथा इससे संबंधित अन्य असाध्य रोगों में वृद्धि हो रही है । ऐसे लगता है कि संसार में जीवन समाप्त होने की कगार पर आ पहुंचा है । नाम मात्र के विकास ने मनुष्य तथा सभी जीवों के जीवन को खतरे में झोंक दिया है । नदियों में गंदगी बढ़ रही है । शुद्ध एवं स्वच्छ जल की प्राप्ति असंभव हो गई जान पड़ती है । प्राकृतिक जल कहां से मिले । क्लोरिन आदि का प्रयोग जल को कृत्रिम बना रहा है । नए नए रोग जन्म ले रहे हैं। विज्ञान दोधारी तलवार है । जहां इसने मनुष्य जीवन सुगम, सुखमय बनाया है वहां कितने कष्ट भी इसके लिए पैदा कर दिए हैं । वायु-प्रदूषण का एक अन्य कारण युद्धास्तरों का आविष्कार एवं परमाणु बमों का विस्फोट एवं इनका प्रयोग है । रही सही कसर इन अस्त्रों तथा शस्त्रों ने पूरी कर दी है । इन सबके कारण वातावरण एवं पर्यावरण विषैला हो रहा है। यह दुनिया छोटी हो गई है । मात्र एक नगर बन कर रह गई है । फासिले एवं दूरियां मिट गई हैं । इनका कोई महत्व नहीं रह गया । कोई भी घटित घटना संसार के किसी कोने में घटे तो समस्त संसार तुरंत इसकी चपेट में आ जाता है । वायु-प्रदूषण के कारण जान लेने के पश्चात् अब यह देखें कि इस गंभीर समस्या का निदान क्या है । इस जटिल रोग से कैसे लड़ें। यहां यह समझ लेना जरूरी है कि इस समस्या का निदान किसी एक व्यक्ति तथा राष्ट्र के बूते की बात नहीं । इस संसार में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अपने दायित्व को समझकर भरसक प्रयास करने होंगे और इस समस्या से निपटने के लिए अपना भरपूर योगदान करना होगा । वर्तमान संतति का दायित्व अधिक है । तभी वह आने वाली पीढ़ियों के जीवन की रक्षा कर सकती है । अन्यथा इसे निश्चित समझ लेना चाहिए कि अब न चेते तो बहुत देर हो जाएगी और तब कोई कुछ नहीं कर पाएगा । संसार से जीवन का विनाश अवश्यमभावी है ।

ऊपर बताया जा चुका है कि वायु-प्रदूषण बल्कि सभी प्रकार के प्रदूषणों के मूल में बेतहाशा हो रही जनसंख्या वृद्धि है । हमें चाहिए कि जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण करने में अपना पूरा सहयोग करें । इसका एक मात्र उपाय प्रकृति की ओर लौटना है । फिर से संयम और शुद्ध-पवित्र जीवन-यापन करने की आदत डालनी होगी । बनावटी एवं कृत्रिम वस्तुओं से दूर रहना होगा । अपने जीवन में सादगी, शुद्धता, पवित्रता का संचार करना होगा । जीवन को अधिक से अधिक वासना-मुक्त बनाना होगा। खान-पान, पहनावा और रहन-सहन में ज्यादा से ज्यादा प्राकृतिक रूप से वस्तुओं का प्रयोग करना होगा। वाहनों को बढ़ाने के स्थान पर पैदल चलने की आदत बनानी होगी। अपनी जीवन-शैली में पूर्ण-रूपेण परिवर्तन एवं बदलाव लाना होगा ताकि हम अधिक से अधिक प्रकृति की ओर लौट सकें। सभी प्रकार के नशों एवं व्यस्नों से दूर रहकर सद्गुणों को जीवन में अपनाना होगा । इस प्रकार जीवन में शुद्धता आएगी। आचार-विचार में पवित्रता आएगी ।

नगरीकरण एवं उद्योगीकरण की गति नितांत धीमी करनी होगी। जंगलों को काटना छोड़ वृक्षों की रक्षा करना अपना धर्म समझना होगा। प्रत्येक व्यक्ति अपना कर्त्तव्य समझ कर अधिक से अधिक वृक्ष लगाए तथा उनका संरक्षण करे । एक वृक्ष कटे तो दो वृक्ष और रोपित होने चाहिएं । मशीनी वाहनों की संख्या घटाकर परम्परागत यातायात साधनों का प्रयोग बढ़ाया जाना चाहिए। सभी जीव-जन्तुओं की रक्षा की जानी चाहिए ताकि मनुष्य और प्रकृति के बीच फिर से संतुलन स्थापित हो पाए । प्रकृति में व्याप्त एवं निवास करने वाले किसी भी जीव के अस्तित्व को कोई खतरा न हो । सभी जीव जड़-चेतन, प्रकृति मां की संतान हैं । प्रकृति का प्रभुत्व फिर से लौटाया जाना चाहिए। मनुष्य असके कार्य में हस्तक्षेप करना बंद करे । युद्धास्त्रों एवं शस्त्रों की होड़ खत्म हो। इनका निर्माण एवं प्रयोग कदाचित् न हो । संसार से मनुष्य के जीवन को खतरा इन्हीं से है ।

यों भी और वों भी । सबसे आवश्येक बात यह है कि हम अपने बच्चों को जागरूक बनाएं । वायु-प्रदूषण की भयंकरता की जानकारी उन्हें दें । शिक्षा-प्रणाली में उचित संशोधन करें । प्रदूषण एवं परिवार-नियोजन पर समुचित ध्यान आकृष्ट किया जाए । बच्चों में ऐसे संस्कार उत्पन्न किए जाएं जिससे वे इस समस्या से भली-भांति अवगत हो सकें । स्कूलों एवं कालिजों के सभी विद्यार्थी प्रदूषण की समस्या से परिचित हों । उनमें अपने दायित्व का बोध हो और इस ओर समुचित पग उठाने की ललक पैदा हो । मनुष्य को अपने जीवन-दर्शन में मूल-भूत परिवर्तन लाना होगा। तभी वह इस विकराल समस्या से दो-दो हाथ कर सकेगा। उसकी सोच तथा मानसिकता न बदली तो उसके विनाश में किंचित भी संदेह नहीं । भावी संतति यदि जागरूक न हुई और प्रदूषण की समस्या को यों ही हल्के रूप में लिया गया तो निश्चय ही परिणाम भयंकर होंगे । मनुष्य का अस्तित्व मिट जाएगा । आज के विद्यार्थी कल के नागरिक हैं । इस प्रकार उनका दायित्व कहीं और अधिक हो जाता है । उन्हें आने वाले खतरों की जानकारी करनी होगी और मनुष्य जाति को विनष्ट होने से बचाना होगा ।

सब समस्याओं का रामबाण हल एक ही है कि वापस प्रकृति मां की गोद में चलें । प्रकृति से अपनी कृत्रिम दूरी समाप्त कर आदि मानव का सा जीवन पुनः जीना सीखें । प्रकृति द्वारा प्रदत्त संसाधनों का उचित तथा संयमित दोहन हो । सीमाएं न लाघें । प्राकृतिक वस्तुओं का प्रयोग इनके नैसर्गिक रूप में करें । कृत्रिमता तथा बनावट से परहेज करें । कृत्रिम या विकृत रूप में प्रयोग न हो । प्रकृति मां हम पर तभी कृपालु होगी जब हम भी बच्चों की तरह प्रकृति को मां समझकर इसका संरक्षण प्राप्त करेंगे। प्रकृति के विरुद्ध हमारा आचरण हमारे लिए घातक सिद्ध होने वाला है । हम अपने शत्रु स्वयं न बनें । प्रकृति की शरण में पुनः लौटने में ही हमारी भलाई एवं कल्याण निहित है । एक मात्र यही मार्ग है न केवल वायु-प्रदूषण से लड़ने बल्कि सभी प्रकार के प्रदूषणों से लड़ने का जिनका वर्णन उपर्युक्त पक्तियों में हुआ है । ■

पृष्ठ 33 का शेष

अच्छी सामाजिक वह पारिवारिक पत्रिका भी है । इस प्रकार पत्रकारिता की उपादेयता हमेशा से रही है और रहेगी । डॉ. सुशीला ने पत्रिकारिता को "मौसम पक्षी" बताया है तो विद्यालंकार इसे पाँचवाँ वेद मानते हैं । प्रभाष जोशी इसे चौथा खंभा बताते हैं और कहते हैं कि इसे अन्य तीन पर जज़ के रूप में रहना चाहिए । वेद प्रताप वैदिक इसे नया नाम "खबर पालिका" देते हैं तो श्रीमती इंदिरा गांधी ने पत्रकारिता को एक सच्ची "जनसेवा" कहा है । डॉ. मैथ्यू अर्नलडो ने इसे "आशु साहित्य" की संज्ञा दी है ।

राजभाषा पत्रकारिता

14 सितंबर, 1949 को हिंदी भारत संघ की राजभाषा घोषित की गई । पूरे देश में केंद्र सरकार, बैंकों तथा उपक्रमों में हिंदी अनुभाग खोले गए । विभागीय प्रतिभाओं को उचित मंच प्रदान करने तथा राजभाषिक गतिविधियों की जानकारी आम कर्मचारी/जनता तक पहुँचाने के उद्देश्य से कुछ विभागों ने हिंदी की पत्रिकाएं प्रकाशित करना शुरू किया । कुछ विभाग मासिक, कुछ त्रैमासिक पत्रिकाएं प्रकाशित कर रहे हैं । वर्तमान में कोल (इंडिया) लि. की "खनन भारती", सेल की "इस्पात भारती", भारतीय स्टेट बैंक की "प्रयास" रेल विभाग की "रेल राजभाषा", इंडियन एअरलाइन्स की "वैमानिकी", सेंट्रल वेअरहाउस की "भंडारण भारती" इंडियन ऑयल की **"अभिधा"** उल्लेखनीय पत्रिकाएँ हैं । इस्पात राजभाषा भारती, प्रयास व रेल राजभाषा व्यावसायिक पत्रिकाओं के स्तर की पत्रिकाएँ हैं । राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने राजभाषा संबंधी आदेश-अनुदेश की अद्यतन जानकारी देने तथा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाले राजभाषिक कार्यक्रमों व गतिविधियों की जानकारी देने के लिए त्रैमासिक पत्रिका **"राजभाषा भारती"** का प्रकाशन शुरू किया है । पत्रिका पूरे देश में अत्यंत लोकप्रिय है । इस प्रकार राजभाषा पत्रकारिता भी निरंतर विकास की ओर अग्रसर है ।

2629 HA/10—11 A

स्वास्थ्य

संतुलित एवं स्वास्थ्यप्रद भोजन द्वारा स्वस्थ कैसे रहें

–डॉ. कैलाश चन्द्र गुप्ता*

आज हमारे देश में ऐसे रोगों की संख्या बढ़ती जा रही है जिनकी रोकथाम संभव है एवं जिनका हमारी लाइफ-स्टाइल (जीवन शैली) से बहुत संबंध है। बचपन से हमारे देश के बच्चों को प्रकृति से दूर आधुनिक वातावरण में ढाला जा रहा है। घर में खाने की आदतें बदल रही हैं, फास्टफूड जैसे पिज्जा, बर्गर, पास्ता, नूडल्स आदि ज्यादा पसंद किए जा रहे हैं। आउटडोर गेम्स की जगह इन्डोर कंप्यूटर गेम्स की तरफ रुझान बढ़ रहा है। शारीरिक व्यायाम की कमी और फास्टफूड की अधिकता अनेक रोगों का कारण बन रही है। आज स्कूलों व कॉलेजों में कैंटीन तथा होटलों में भी कोल्ड ड्रिंक्स, फास्टफूड, आईसक्रीम, केक व पेस्ट्री आदि खाने-पीने की चीजें ज्यादा पसंद की जा रही हैं। इन सब कारणों से हममें व हमारे बच्चों में संतुलित व स्वास्थ्यप्रद भोजन की कमी होती जा रही है तथा इसकी वहज से अनेक रोग पनप रहे हैं जैसे कुपोषण, मोटापा, गंजापन, पेट की बीमारियां (अल्सर, पेचिश), उच्च रक्तचाप, मधुमेह आदि।

इसलिए संतुलित एवं स्वास्थ्यप्रद भोजन के बारे में जानना भी आवश्यक है जिसके नियमित सेवन से उक्त बताए रोगों एवं अन्य अस्वास्थ्यप्रद जीवन शैली से संबंधित रोगों से रोकथाम की जा सकती है।

संतुलित एवं स्वास्थ्यप्रद भोजन

ऐसा भोजन जिसमें सभी पोषक तत्व मौजूद हों, जरूरत के आधार पर पोषक तत्वों की मात्रा सही हो, जिसमें कुछ रेशे (फाइबर) वाली खाने की चीजें भी सम्मिलित हों एवं पानी की मात्रा भी सही हो। पोषक तत्वों में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा (फैट), विटामिन व मिनरल आदि हैं।

भोजन द्वारा हमें ऊर्जा मिलती है जिसे कैलोरीज द्वारा जाना जाता है। इस ऊर्जा की जरूरत विभिन्न कार्य करने वालों को अलग-अलग होती है। ज्यादा फिजिकल लेबर करने वालों को ज्यादा कैलोरीज की जरूरत होती है करीब 3000 कैलोरीज प्रतिदिन। ऑफिस में कार्य करने वाले लोगों को कम कैलोरीज की जरूरत होती है – करीब 2000 कैलोरीज प्रतिदिन। कुछ रोगों से पीड़ित व्यक्तियों को उनके रोग के आधार पर भोजन की सलाह दी जाती है। गर्भावस्था में व स्तनपान कराने वाली महिलाओं को अतिरिक्त कैलोरीज की जरूरत होती है।

पोषक तत्व सभी महत्वपूर्ण हैं, जिनकी कमी से या अधिकता से कुछ रोग पनप सकते हैं। इसलिए सही मात्रा में सभी पोषक तत्वों का समावेश हमारे दैनिक भोजन में होना चाहिए। प्रतिदिन कम से कम 8-10 गिलास पानी भी पीना चाहिए। पीने का पानी साफ, स्वच्छ, फिल्टर्ड व कीटाणुरहित होना चाहिए अन्यथा दूषित पानी पीने की वजह से भी अनेक रोग जैसे टायफाइड, हैजा, पेचिश, आंत्रशोध आदि हो सकते हैं। इसलिए इस बात का ध्यान रखना जरूरी है कि जो पानी हम पी रहे हैं, दूषित नहीं हो। पानी को आजकल बाजार में उपलब्ध अनेक साधनों जैसे वाटरफिल्टर, एक्वागार्ड, आरओ वॉटर सिस्टम आदि द्वारा या उबालकर कीटाणुरहित पीने लायक बना सकते हैं और उक्त बताए गए रोगों से बचाव कर सकते है।

पानी की तरह दूषित भोजन से भी बचना चाहिए। आजकल बाजार में बिना ढकी हुई मिठाइयों, नमकीन पदार्थ,

*वरिष्ठ प्रोफेसर (स्वास्थ्य प्रबंधन), रेलवे स्टाफ कालेज, लाल बाग, बड़ोदरा-390004

2629 HA/10—11 B

समोसे, कचोरियों. पानी पुड़ी आदि से दूर ही रहना बेहतर है, अगर अपने आप को स्वस्थ रखना है । भोजन द्वारा स्वास्थ्य प्राप्त करना अपने ऊपर भी निर्भर करता है । इसके लिए संपूर्ण सही जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है ।

भोजन में पोषक तत्व किन-किन खाद्य पदार्थों से प्राप्त किए जा सकते हैं, इसकी जानकारी अब दी जा रही है ।

- कार्बोहाइड्रेट के लिए हमें साबुत अनाज, चावल, आलू, शकरकंद, केला, मीठे फल, शक्कर/चीनी, गुड़, फलों का रस आदि हमारे भोजन में शामिल करना चाहिए।

- प्रोटीन के लिए दूध, दूध से बने पदार्थ, पनीर, विभिन्न दालें, सूखे मेवे, बीन्स, मूंगफली, अंडे, मछली, मीट आदि भोजन में शामिल कर सकते हैं।

- वसा/फैट भी एक पोषक तत्व है जो हमें देशी घी, नारियल का तेल, अन्य खाने के तेल जैसे सरसों का तेल, मूंगफली का तेल, कपासिया तेल, सोयाबीन तेल आदि से प्राप्त होता है । अंडे, मांस, मछली, चीज, मिठाई आदि भी काफी वसा प्रदान करते हैं । वसा सीमित मात्रा में ही लेना चाहिए ।

- विटामिन व मिनरल बहुत महत्वपूर्ण पोषक तत्व हैं जो ज्यादातर सब्जियों, फलों, अंकुरित अनाज/दाल/बीन्स, दूध व दूध के पदार्थ, अंडे, मछली, सोयाबीन, मूंगफली, चने, सूखे मेवे, मसाले आदि खाद्य पदार्थों द्वारा प्राप्त किए जा सकते हैं। इनका ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करना चाहिए ।

उपर्युक्त बताए गए सभी पोषक तत्व हमारे शरीर को स्वस्थ, सुंदर, सुदृढ़ बनाने में मदद करते हैं । इनकी कमी से विभिन्न रोग होने का खतरा रहता है । उदाहरण के तौर पर – प्रोटीन की कमी से – सूखा रोग, प्रोटीन - कैलोरी कुपोषण का रोग, शारीरिक ग्रोथ में रुकावट आदि, कार्बोहाइड्रेट की कमी से – शारीरिक व मानसिक कमजोरी, कुपोषण आदि, वसा की कमी से – कुपोषण आदि रोग होने का खतरा रहता है । विटामिन व मिनरल की कमी से – शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है जिसकी वजह से विभिन्न रोग – संक्रमण रोग होने का खतरा बढ़ जाता है । विटामिन ए की कमी से आंखों के रोग व चमड़ी के रोग, विटामिन बी की कमी से मुंह में छाले, नसों में कमजोरी, मानसिक कमजोरी आदि, विटामिन सी की कमी से मसूढ़े के रोग (स्कर्वी), छाले, चमड़ी के रोग आदि, विटामिन डी की कमी से बच्चों में रिकेट्स (हड्डी की कमजोरी) का खतरा है ।

इसी प्रकार भोजन में मिनरल केल्शियम की कमी से हड्डी व मांस (मसल्स) में कमजोरी तथा दांतों के रोग, आयरन (लोहतत्व की कमी से खून में कमी (एनीमिया), एवं अन्य मिनरल आयोडीन की कमी से थायरॉयड की बीमारी हो सकती है ।

इसलिए अगर हम सभी पोषक तत्वों से युक्त संतुलित भोजन नियमित रूप से लें, तो उन सभी रोगों की रोकथाम कर सकते हैं जिनका कारण इन पोषक तत्वों की कमी है तथा पूर्णतया स्वस्थ जीवन जी सकते हैं । आवश्यकता है यह सभी बताई गई जानकारी की, इस जानकारी को अपने सभी साथियों के साथ बांटने की तथा अपनी दिनचर्या में नियमित रूप से पोष्टिक/संतुलित भोजन को शामिल करने की ।

अन्त में फिर सभी को अपने संपूर्ण अच्छे स्वास्थ्य के लिए मेरी सलाह है कि आप स्वयं को व अपने परिवार के सदस्यों/बच्चों को फास्टफूड (जो जंकफूड है) से बचाएं तथा संतुलित/पोष्टिक भोजन लेने की आदत विकसित करें। सुबह नाश्ता, दोपहर के भोजन व रात्रि के भोजन में दूध, दही, चावल, रोटी, दाल, हरी सब्जी, छाछ, सलाद, अंकुरित दाल/अनाज/बीन्स, नींबू आदि जरूर शामिल करें। मौसमी (सीजनल) फल दिन में दो-तीन बार खाएं एवं पानी भी पर्याप्त मात्रा में (कम से कम 8-10 गिलास) पीएं । आप सभी स्वस्थ रहें यही हमारी शुभकामना है । ■

विविध

भारतीय नारी की समस्या

–डॉ. शशि बाला रावत*

'मनुस्मृति' के अनुसार नारी को कहा गया है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता:' अर्थात् जहां नारी का आदर किया जाता है, वहां देवता लोग निवास करते हैं। कहा जाता है कि एक नारी समाज का कल्याण करती है पर आज के युग में नारी की दयनीय दशा देखकर ही पता चल जाता है। प्राचीन युग में नारी की पूजा की जाती थी, जैसे त्रेता युग में श्री राम ने अश्वमेघ यज्ञ सीता की स्वर्ण मूर्ति बनाकर सम्पन्न किया था जो उनके नारी के प्रति आदर को दर्शाता है। किंतु आज जैसे ही समाज विकसित हुआ वैसे-वैसे पुरुष जाति ने अपने को ताकतवर व नारी की कमजोर असहाय की श्रेणी में डाल दिया।

सत्य ही कहा गया है कि "नारी तेरी यही कहानी आंचल में दूध आंखों में पानी" यह हमारे नारी समाज की विडंबना ही तो है जो इस रीति को मानने के लिए बाध्य है कि जिस पति द्वारा वह मात्र दहेज की रकम न मिलने पर जलाई एवं प्रताड़ित की जाती है, जो कि बेहद अमानवीय व घिनौना कार्य है और मानवता के ऊपर करारा थप्पड़ है। मन को तार-तार करने वाला कार्य है। उसी पति की लंबी उम्र के लिए व्रत रखती है। क्यों नहीं वह ऐसे व्रत की कामना करती है जिससे उसके पति की आयु कम हो और वह उस प्रताड़ना से उबरे ? नहीं ऐसा सोचना भी उसके लिए पाप है यह संस्कार उसके भीतर बचपन से ही कूट-कूट कर भर दिए जाते हैं कि वह धरती की भले ही खूबसूरत रचना ईश्वर की देन है वह ही सृष्टि रचियता है पर वह पुरुष के कोप व भोग निवारण के ही निमित्त है।

नारी जो आज एक पूरे परिवार व समाज की जीवनदात्री होती है। आज उसी परिवार, समाज व समुदाय में उसकी अपनी पहचान कहीं गुम-सी हो गई है। शुरू से ही उसे पति व भाई का सहारा देकर अपंग बनाया जाता है तथा यौवनावस्था पर पहुंचने पर बिना उसकी मर्जी पूछे उसे बस मूक जानवर की भांति कहीं भी खूंटे से बांध दिया जाता है और वह उस खूंटे से बंधने के लिए खुशी-खुशी बाध्य है, वह घर की, परिवार की इच्छाओं की पूर्ति के पाट के बीच इस कदर पिस जाती है कि वह यह भी भूल जाती है कि उसकी अपनी भी कुछ इच्छा, अपने भी कुछ सपने व जिंदगी को जीने का नजरिया भी हो सकता है। उसकी अपनी इच्छा दम ही तोड़ लेती है। उस पर हुए अत्याचारों को सहने पर उसे दया की मूर्ति की संज्ञा दी जाती है। पुरुष उसे मात्र पांव की जूती समझता रहा जिसको जब चाहा पहना व उतार दिया। वह मात्र उस फूल की खुशबू की तरह है जो किसी और के लिए है। वह मात्र पुरुष के हाथों का खिलौना रह जाती है। वह नारी जो परिवार की नींव रखती है, उसे जन्म से ही एक बोझ माना जाता है। उसे लड़कों की तरह शिक्षा देने पर अंकुश लगा दिया जाता है कि ज्यादा पढ़कर क्या करेगी, पराए घर ही तो जाना है।

इसका मुख्य कारण परिवार से उसको शुरू से मिलने वाली शिक्षा-दीक्षा है, जिसमें परिवार में उसके जन्म पर खुशियां नहीं बल्कि मातम-सा छा जाता है। उस पर पढ़ने के ऊपर खर्चा करने से अच्छा माता-पिता उस पैसे को दहेज में खर्च करना पसन्द करते हैं, सत्य कहा गया है कि 'ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी यह सब है ताड़न के अधिकारी'।

अत: नारी को जानवरों की श्रेणी में रखकर प्रताड़ित कर रखने वाले मूक पशु से संबन्धित किया गया है। जब तक नारी स्वयं समाज में व्याप्त इस अत्याचार के खिलाफ आवाज नहीं उठाएगी तब तक वह इससे उबर नहीं पाएगी।

*मार्फत प्रो. मंजुला राणा, पो. ओ. 84, श्रीनगर, गढ़वाल।

समाज का दायित्व है कि वह आज समाज में नारी पतन व उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाए । नारी पर हुए इन अत्याचारों के पीछे नारी का भी हाथ है, एक नारी ही दूसरी नारी की शत्रु बन बैठती है । वह यह भी भूल जाती है कि वह एक नारी है । दहेज के लालच में उसे प्रताड़ित किया जाता है । नारी उत्थान के लिए समाज द्वारा किए गए कुछ सफल प्रयास जैसे महिला आरक्षण, नारी सशक्तिकरण दिवस, भ्रूण हत्या पर रोक, महिला शिक्षा, नारी मुक्ति आन्दोलन इत्यादि तभी कारगर सिद्ध होंगे जब तक नारी स्वयं आगे बढ़ने की दृढ़ इच्छाशक्ति रखे। वह जब आत्मनिर्भर होगी तभी उसे आत्मसम्मान मिलेगा । नारी को आज चाहिए कि वह नारी समाज में एक आदर्श स्थापित करे जिससे वह पुरुषों से बराबरी कर सके । भारत की महिला इतनी कमजोर नहीं कि उसे किसी की बैशाखी लेनी पड़े वह भी ईश्वर की कृति है, जिसने पुरुष बनाया है । कुछ महिलाओं ने आगे बढ़कर समाज में नारी की छवि को इस प्रकार प्रस्तुत कर दिया है कि वे किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं अपितु श्रेष्ठ ही हैं । 21वीं सदी के आते ही व समाज के कल्याणकारी कार्य के चलते भले ही नारी आज घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर अपने समाज में अस्तित्व बना रही है, परन्तु अभी उसे समाज में पुरुष ललचाई नजरों से निगलने को तैयार रहते हैं व उसे मात्र भोग की वस्तु समझते हैं ।

आज हर विज्ञापन पर नारी की देह को अश्लील ढंग से प्रस्तुत किया जाता है । वह उसका पुरुष द्वारा शोषण ही तो है और वह आगे की ओर बढ़ने की होड़ में अपनी सारी सीमाएं लांघने पर मजबूर हो जाती है । वह प्रकृति की सुंदर संरचना व प्रभु की कृति है परंतु उसकी सुंदरता को अश्लीलता का चोला पहनाकर एक वस्तु की भांति प्रस्तुतीकरण में पुरुष के हाथ की कठपुतली बनाई जाती है । जहां अपनी अलग छवि बनाने की होड़ में पुरुष की इच्छाशक्ति द्वारा ही उसे नचाया जाता है । कैसी विडम्बना है कि जिस स्त्री को देवी का और घर का पर्याय कहा जाता है, वही आज पूरी दुनिया व अपने ही परिवार के सदस्यों द्वारा दी जाने वाली यातनाओं से ग्रस्त नजर आ रही है ।

महिलाओं को इस हिंसा व उत्पीड़न से बचाने के लिए कई कानून बनाए गए हैं । हाल ही में 14 सितंबर को एक कानून लागू किया गया जिसमें इस तरह की हिंसा के विरुद्ध सुनवाई के हक को मानवाधिकार के मुद्दे से जोड़ा गया, लेकिन महिला शोषण के खिलाफ बने कानून मात्र कागजी सिद्ध होकर रह गए हैं । क्योंकि इनको लागू करने की जिम्मेदारी जिस समाज पर है वह मूलतः पुरुष प्रधान है, और जिसकी मानसिकता पुरुष वर्चस्व पर आधारित है । परम्परा की जगह में सदैव ही महिलाओं का मानसिक, यौन, शारीरिक, मौखिक व भावनात्मक शोषण होता रहा है ।

स्त्री को अगर एक औरत नहीं बल्कि एक मानव का सामाजिक दर्जा दिया जाए, तो पुरुषों के समकक्ष ही उसकी भावनाओं, समस्याओं को समझा जा सकेगा। आज भी परिवार में लड़कियों को वो सारी स्वतंत्रता व अधिकार नहीं मिलते जो लड़कों को मिलते हैं, अगर बहुत जद्दोजहद के बाद किसी को अपनी इच्छानुसार कार्य करने की स्वतंत्रता मिल भी जाए तो समाज में उपस्थित भेड़ियों व असामाजिक तत्वों द्वारा उन्हें इतना उत्पीड़ित व घोषित किया जाता है कि मजबूरन उन्हें उसी परिवेश व परिस्थिति में वापस जाना पड़ता है । लेकिन आज महिलाएं सड़कों से अधिक घर के भीतर असुरक्षित हैं । उन पर हर रोज जुल्मों-सितम ढाया जा रहा है । उनके विचारों व अधिकारों का हनन किया जा रहा है ।

अगर घर में महिला अपने अधिकारों व ताकत का उपयोग करे तो वह एक पुरुष तो क्या पूरे समाज का नजरिया बदल सकती है, बशर्ते वह किसी के साथ का इंतजार न करे और किसी पर निर्भर न रहे और अपने हौसले बुलंद रखे। जब हम अपने मन में इसे जगाते हैं, मैं एक लड़की हूँ और यह शब्द कहते हुए मुझे गर्व महसूस हो रहा है । लड़की आज के समाज में एक नई दिशा लेकर आई है, जो अपने परिवार की इज्जत और मान को बढ़ाती है ।

अतः सरकार ने हमें सभी समान अधिकार दिए हैं, हमें इन अधिकारों का सही ढंग से प्रयोग करना है । हम यह नहीं चाहेंगी कि पुरुष आज भी हमें दया का पात्र समझें हमें कुछ ऐसा करना होगा जिससे किसी को यह महसूस न हो कि समाज में हम नारियां सबसे पीछे खड़ी हैं, हमें पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा होना होगा। हमें निडर बनकर समाज में आगे आना होगा। सामाजिक कार्यों में हिस्सेदारी निभानी होगी। हमें खुद से लड़ना होगा । जिससे प्रत्येक नारी गर्व से कहे—मैं एक लड़की हूँ परिवार, समाज और देश के निर्माण में मैं भी सहायक हूँ । ■

2629 HA/10—12 A

राजभाषा संबंधी गतिविधियां

(क) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

आयकर आयुक्त, पटियाला प्रभार

पटियाला प्रभार की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक श्री जी. सी. नेगी, आयकर आयुक्त, पटियाला की अध्यक्षता में दिनांक 30-11-2009 को प्रातः 11.30 बजे आयोजित की गई । बैठक में 30-09-2009 को समाप्त तिमाही के लिए विभिन्न रेंजों/कार्यालयों से प्राप्त रिपोर्टों की समीक्षा की गई । यह पाया गया है कि रेंज कार्यालयों में हिंदी में पत्राचार अपेक्षा से कम है । चर्चा के बाद यह निर्णय लिया गया कि सभी कार्यालय हिंदी पत्राचार की मात्रा बढ़ाने का प्रयास करें । अध्यक्ष महोदय ने निदेश दिया कि अगली तिमाही तक सभी रेंज कार्यालयों में हिंदी पत्राचार कम से कम 50% तक अनिवार्य रूप से हो जाना चाहिए । चर्चा के बाद राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए निम्नलिखित निर्णय लिए गए :—

1. सूचना पत्रों पर मोहरें व हस्ताक्षर हिंदी में किए जाएं ।
2. सभी प्रकार के अग्रेषण पत्र व पृष्ठांकन कार्य हिंदी में किया जाए ।
3. आई.टी.एन.एस. 50 पर निर्धारितियों के नाम व पते हिंदी में भरे जाएं ।
4. निर्धारण आदेश भेजने के लिए हिंदी में मानक अग्रेषण पत्र/पृष्ठांकन हिंदी में बनवाया जाए ।
5. सभी प्रकार के नोटिसों के प्रोफार्मे द्विभाषी तैयार करवाए जाएं और उनमें नाम व पता हिंदी में लिखा जाए ।
6. अपीलीय आदेशों के अग्रेषण पत्र/पृष्ठांकन हिंदी में किए जाएं ।
7. मासिक डी.ओ/कैप-1, कैप-2 इत्यादि/मासिक प्रगति रिपोर्टें/तिमाही प्रगति रिपोर्टों में पृष्ठांकन कार्य हिंदी में किया जाए ।
8. छोटे-छोटे निर्धारण आदेश तथा भूल सुधार आदेश हिंदी में किए जा सकते हैं ।
9. जन शिकायतों की पावती हिंदी में भेजी जाए ।
10. रजिस्ट्रेशन और धारा 12-ए व 80-जी से संबंधित रिपोर्टों को अग्रेषित करने के लिए अग्रेषण पत्र हिंदी में बनाए जाएं तथा रेंजों से भी रिपोर्ट हिंदी का अग्रेषण पत्र लगवाकर ही भेजी जाए ।
11. कंप्यूटरों पर हिंदी अथवा यूनिकोड फॉन्टस लोड करवाए जाएं ।
12. सभी रेंजों में पावती व डिस्पैच रजिस्टर अलग-अलग लगाए जाएं ताकि पत्राचार के सही-सही प्रतिशत का पता लग सके ।
13. न्यायिक व सतर्कता शाखा में सभी प्रकार की रिपोर्टें भेजने के लिए अग्रेषण-पत्र हिंदी में ही भेजे जाएं ।

बैठक के अंत में वर्ष 2008-09 के दौरान हिंदी में मूल कार्य करने के लिए 17 कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया । वर्ष 2009 में हिंदी पखवाड़े के दौरान करवाई गई तीन हिंदी प्रतियोगिताओं के 25 विजेताओं को भी नकद पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र एवं प्रतिभागिता पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया ।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में श्री जी. सी. नेगी, आयकर आयुक्त ने पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी और आशा व्यक्त की कि वे अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करेंगे । उन्होंने सदस्यों से कहा कि वे अपने कार्यालयों में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करवाएं ताकि उत्तर-पश्चिम क्षेत्र की प्रभार राजभाषा शील्ड उनके पास ही रहे । रिपोर्टें ठीक प्रकार से भरी जाएं ताकि किए गए कार्य को ठीक प्रकार से दिखाया जा सके ।

कार्यालय : मुख्य आयकर आयुक्त, आयकर भवन, मक्बूल रोड, अमृतसर-143001

मुख्य आयकर आयुक्त; अमृतसर क्षेत्र की राजभाषा कार्यान्वयन समिति, की विशेष बैठक 15-03-2010 को श्री कल्याण चन्द आयकर महानिदेशक (प्रशा.) नई दिल्ली कैंप अमृतसर की अध्यक्षता में संपन्न हुई ।

2629 HA/10—12 B

बैठक के दौरान निरीक्षण रिपोर्ट की प्रत्येक मद पर विस्तृत चर्चा की गई तथा आयकर महानिदेशक महोदय ने प्रत्येक मद पर अपनी टिप्पणी प्रस्तुत की। विस्तृत विचार विमर्श के पश्चात् आयकर महानिदेशक महोदय ने अमृतसर क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु निम्नलिखित सुझाव दिए :

1. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों की अध्यक्षता विभागाध्यक्ष द्वारा की जानी चाहिए।

2. हिंदी में पत्राचार को बढ़ावा देने हेतु :—

(क) जिन पत्रों पर कोई कार्रवाई आवश्यक नहीं होती उनकी पावती सूचना हिंदी में भेजी जाए।

(ख) आयकर संबंधी कार्यों में हिंदी में कार्य के लिए आयकर अधिनियम की धारा 80जी, 12ए, 10(23) संबंधी आदेश हिंदी में जारी किए जाएं।

(ग) आयकर आयुक्त (अपील), अपील वापिस लेने, condonation of delay के आदेश हिंदी में पारित कर सकते हैं।

3. उच्च अधिकारी फाइलों पर छोटी-छोटी तथा सामान्य टिप्पणियां हिंदी में लिखें। रूटीन नोटिंग के लिए मोहरें बनवा कर प्रयोग में लाई जाएं क्योंकि उच्च अधिकारियों द्वारा फाइल पर लिखी गई टिप्पणी का सभी पर असर पड़ता है।

4. हिंदी टंकण प्रशिक्षण के लिये शेष कर सहायकों को विभाग की सुविधा को ध्यान में रखते हुए पत्राचार पाठ्यक्रम या राजभाषा विभाग के हिंदी कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम द्वारा प्रशिक्षण दिलवाया जाए।

5. सामान्य आदेश/अधिसूचनाएं अनिवार्य रूप से हिंदी में जारी करें।

6. फार्म/रजिस्टरों के शीर्ष हिंदी में लिखें यदि शीर्ष द्विभाषी रूप में हों तो हिंदी का शीर्ष ऊपर तथा अंग्रेजी शीर्ष उसके नीचे लिखे।

7. मुख्य आयकर आयुक्त जयपुर से संपर्क करके वेतन बिल के लिए हिंदी का साफ्टवेयर मंगवाकर प्रयोग में लाया जाए।

8. प्रशासनिक कार्य/वित्तीय स्वीकृतियों संबंधी सभी प्रोफार्मे जैसे कि जी.पी.एफ. स्वीकृति आदेश, वाहन अग्रिम की स्वीकृति, छुट्टी की स्वीकृति के आदेश इत्यादि का हिंदी प्रोफार्मा कंप्यूटर पर लोड करें तथा उसका अंग्रेजी रूपांतरण कंप्यूटर से हटवा दें।

9. हिंदी का कार्य सुचारू रूप में चलाने के लिए आयकर आयुक्त-1, अमृतसर द्वारा हिंदी टाइपिस्ट का अभाव बताए जाने पर आयकर महानिरीक्षक महोदय ने कांट्रेक्ट आधार पर हिंदी टाइपिंग का कार्य करवाए जाने का सुझाव दिया।

अंत में महानिदेशक महोदय ने टिप्पणी की कि राजभाषा हिंदी के कार्य को व्यक्ति के बजाए संस्था से जोड़ना चाहिए। दूसरे शब्दों में हिंदी कार्य में प्रवीण व्यक्ति के स्थानांतरित होने पर उस पद पर किया जाने वाला हिंदी कार्य उसी प्रकार चलता रहे।

कार्यालय, महाप्रबंधक/राजभाषा, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 30-12-2009 को मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य मालभाड़ा परिवहन प्रबंधक, श्री रण विजय सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में 30-09-09 को समाप्त तिमाही अवधि में हुई प्रगति की समीक्षा की गई।

बैठक में अपने अध्यक्षीय संबोधन में मुख्य राजभाषा अधिकारी, श्री रण विजय सिंह ने सभी सदस्यों को नव वर्ष की अग्रिम बधाई देते हुए कहा कि मुझे प्रसन्नता है कि पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों के अनुपालन में मुख्यालय में आयोजित विभागीय बैठकों की कार्यसूची एवं कार्यवृत्त हिंदी में तैयार किए गए और इन सभी में हिंदी प्रगति की चर्चा भी की गई। परंतु निरीक्षण रपटों को हिंदी में जारी करने एवं उनमें हिंदी पैरा का उल्लेख किये जाने के मामले में हम अभी भी शतप्रतिशत का लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सके हैं। इस पर हमें ध्यान देना है। वैसे हमारी रेलवे भारत सरकार द्वारा जारी वर्ष 2009-10 के वार्षिक कार्यक्रम की कुछ मदों में लक्ष्य से काफी आगे है। अधिकांश मदों में हमने बोर्ड द्वारा निर्धारित लक्ष्य प्राप्त कर लिए हैं। अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में देना, हिंदी में मूल पत्राचार जैसी मदों में हम शतप्रतिशत अनुपालन के काफी नजदीक हैं, यह अच्छी स्थिति है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि हम लगातार इसी प्रकार राजभाषा के प्रयोग-प्रसार में आगे बढ़ते रहेंगे।

उन्होंने आगे कहा कि सभी सदस्यों के सक्रिय सहयोग से मुख्यालय के राजभाषा विभाग द्वारा 'रेल रश्मि' का नियमित प्रकाशन संभव हो सका है। इसके लिए उन्होंने सभी सदस्यों को बधाई दी। उन्होंने आशा व्यक्त की कि

इसी प्रकार सभी का सहयोग हमें मिलता रहेगा । मुख्यालय में स्थापित केंद्रीय हिंदी पुस्तकालय में आपकी सुरुचि की पुस्तकें उपलब्ध हों, इसके लिए सभी के सुझाव आमंत्रित हैं और केंद्रीय हिंदी पुस्तकालय को समृद्ध बनाने में आपका सदैव सहयोग मिलता रहेगा ।

केंद्रीय लोक निर्माण विभाग, इलाहाबाद केंद्रीय परिमण्डल, 34ए, एम.जी. मार्ग, सिविल लाइंस, इलाहाबाद-211001

इंजी. रमेशचंद्र, अधीक्षण अभियंता, इलाहाबाद केंद्रीय परिमण्डल, के.लो.नि.वि., इलाहाबाद की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष 2010 की प्रथम बैठक दिनांक 12-01-2010 को पूर्वाह्न 11.00 बजे किया गया ।

इलाहाबाद केंद्रीय मण्डल की शत-प्रतिशत प्रगति को कायम रखने पर अध्यक्ष महोदय ने कार्यपालक अभियंता एवं उनके सहयोगियों को बधाई दी । वाराणसी प्रोजेक्ट मण्डल तथा वाराणसी केंद्रीय मण्डल की प्रगति पर अप्रसन्नता व्यक्त की तथा कानपुर केंद्रीय मण्डल की प्रगति में 0.05% की वृद्धि होने पर संतोष व्यक्त किया गया । वा.प्रो.मं. एवं वाराणसी केंद्रीय मण्डल अपने सामूहिक प्रयास से लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करें । कार्यपालक अभियंता प्राप्त प्रगति को बनाए रखते हुए आगे बढ़ा जाए ।

अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में अध्यक्ष महोदय ने सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का आह्वान किया कि वे अपनी सामूहिक प्रतिबद्धता का परिचय देते हुए राजभाषा के विकास में अपनी सहभागिता निभाएं और लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करें।

एन एच पी सी लि., कार्यालय कार्यपालक निदेशक (क्षेत्र-III) क्षेत्रीय कार्यालय, ब्लाक-डी पी, प्लाट-3, सैक्टर-V, साल्ट लेक सिटी, कोलकाता-91

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता की राजभाषा कार्यान्वयन समित की चौथी तिमाही बैठक दिनांक 05-03-2010 को श्री दिग्विजय नाथ, कार्यपालक निदेशक की अध्यक्षता में संपन्न हुई । इस बैठक में समिति के सदस्य एवं सहायक प्रबंधक व उससे ऊपर के अधिकारियों ने भाग लिया ।

इस बैठक के प्रारंभ में श्री दिग्विजय नाथ, कार्यपालक निदेशक व अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने उपस्थित सदस्यों एवं अधिकारियों का स्वागत किया । उन्होंने कहा कि अपने दैनंदिन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाना अतिआवश्यक है । हम यह देखते हैं कि हमारे कार्यालय में हिंदी में कार्य की मात्रा निर्धारित लक्ष्य से अधिक है जबकि उसे हम सभी सही तरीके से दिखला नहीं पा रहे हैं । इसलिए हिंदी कार्य की प्रगति को दिखलाने के लिए सभी विभाग रिकार्ड रखें । आज की बैठक का यही संकल्प होगा कि सभी विभाग अपने-अपने विभाग में सबसे पहले हिंदी प्राप्ति रजिस्टर खोलें और हिंदी में प्राप्त होने वाले पत्रों एवं अन्य कागजातों को उसमें दर्ज करावें उसके साथ ही साथ कार्रवाई की गई पत्रों का भी रिकार्ड रखें । हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि किसी को यह महसूस न हो कि उनको हिंदी में काम करने के लिए बाध्य किया जा रहा है बल्कि प्रेम व प्रेरणा के जरिए उनमें हिंदी कार्य के प्रति रूचि जागृत करने की जरूरत है, भले ही इसमें समय लग सकता है, पर सफलता अवश्य मिलेगी । उसके बाद उन्होंने सदस्य सचिव श्री अजय कुमार बक्सी, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) को बैठक प्रारंभ करने के निर्देश दिए । सदस्य सचिव ने समिति को बैठक की कार्यसूची की जानकारी दी । उन्होंने कहा कि इस समिति की तीसरी तिमाही बैठक दिनांक 24-11-2009 को आयोजित हुई थी और उस बैठक का कार्यवृत्त सभी सदस्यों को उनकी सूचना एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु दिनांक 02-12-2009 को भिजवा दी गई थी जबकि उस कार्यवृत्त पर किसी विभाग से कोई सुझाव/विचार प्राप्त नहीं हुए हैं । इसे देखते हुए उस कार्यवृत्त की पुष्टि की गई । तत्पश्चात् पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर की गई अनुवर्ती कार्रवाई एवं उसकी प्रगति समिति के समक्ष रखी गई । समिति को यह सूचित किया गया कि इस कार्यालय में हिंदी प्रशिक्षण का कार्य पूरा हो गया है और अब हिंदी भाषा प्रशिक्षण के लिए कोई हिंदीतर कार्मिक शेष नहीं है । सदस्य सचिव ने बतलाया कि निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार वित्तीय वर्ष 2009-2010 में इस कार्यालय में द्विमासिक हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं और 03 प्रतियोगिताओं का परिणाम घोषित किया जा चुका है । इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को उचित अवसर पर पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे । दिनांक 31-12-2009 को समाप्त तिमाही रिपोर्ट की समीक्षा के दौरान कार्यपालक निदेशक महोदय ने विभागों से प्राप्त तिमाही प्रगति रिपोर्ट को देखा और उसकी समीक्षा करते हुए संबंधित विभागाध्यक्ष को आवश्यक निर्देश दिए ।

इस बैठक में वार्षिक कार्यक्रम 2009-10, संसदीय समिति को दिए गए आश्वासनों को पूरा किए जाने, हिंदी

टाइपलेखन प्रशिक्षण, राजभाषा नियम 1976 के नियम 10(4) के अंतर्गत कार्यालय को अधिसूचित कराया जाना आदि मदों पर विस्तार पूर्वक चर्चा के उपरांत आवश्यक कार्रवाई किए जाने का निर्णय लिया गया ।

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड, बोकारो स्टील प्लांट, इस्पात भवन, बोकारो स्टील सिटी-827001

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष 2009-10 की तृतीय बैठक का आयोजन दिनांक 17-12-2009 को 11.00 बजे दिन में श्री बी. के. श्रीवास्तव, प्रबंध निदेशक, बोकारो स्टील प्लांट की अध्यक्षता में इस्पात भवन स्थित प्रबंध निदेशक सम्मेलन कक्ष में किया गया ।

आरंभ में श्री उमाकांत शरण, उप महाप्रबंधक (सं. एवं प्रशा.) ने अध्यक्ष सहित सभी उपस्थित अधिकारियों का स्वागत किया तथा बैठक के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला । इसके बाद मानव संसाधन विकास विभाग की गृह पत्रिका "पहल" का विमोचन अध्यक्ष महोदय द्वारा किया गया । तदुपरांत कार्यसूची के अनुसार विगत बैठक में लिए गए निर्णयों के अनुपालन की स्थिति तथा 30 सितंबर, 2009 को समाप्त तिमाही में हिंदी प्रगति की समीक्षा की गई । तद्नुसार बोकारो स्टील प्लांट में हिंदी पत्राचार का प्रतिशत क, ख एवं ग क्षेत्र में क्रमश: 91.31, 90.83 एवं 69.06 है । बैठक में निम्नलिखित निर्णय लिए गए—

1. बोकारो जनरल अस्पताल से त्रैमासिक स्वास्थ्य बुलेटिन प्रकाशित किया जाए ।
2. पी.सी. पर हिंदी टंकण प्रशिक्षण हेतु मानव संसाधन विकास विभाग से स्लॉट प्राप्त किया जाए ।
3. हॉट स्ट्रिप मिल एवं सामग्री प्रबंधन विभाग द्वारा गृह पत्रिका प्रकाशित की जाए ।
4. समय-समय पर अधिशासी निदेशक (संकार्य) को प्लांट में हिंदी प्रगति की स्थिति से अवगत कराया जाए ।
5. 10 नए विभागों में शत प्रतिशत हिंदी पत्राचार सुनिश्चित किया जाए ।

बैठक के अंत में अध्यक्ष महोदय ने सभी विभागीय प्रधानों से हिंदी कार्यान्वयन में तेज़ी लाने के लिए कार्य योजना बनाकर उस पर अमल करने का अनुरोध किया ।

भिलाई इस्पात संयंत्र

भिलाई इस्पात संयंत्र की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 94वीं बैठक प्रबंध निदेशक श्री रा. रामराजु की अध्यक्षता में प्रबंध निदेशक सभागार में 26 अक्टूबर, 2009 को संपन्न हुई ।

सभा को संबोधित करते हुए राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री रा. रामराजु ने कहा कि हमारा संयंत्र 'क' क्षेत्र में स्थित है, जहां कार्यालय का कामकाज शत-प्रतिशत हिंदी में होना चाहिए । इस लक्ष्य को पाने में आप सभी के सहयोग से ही हम 86 प्रतिशत तक पहुंचे हैं । इस दिशा में हमें और मेहनत करनी है ताकि भारत सरकार के वार्षिक लक्ष्य 2009-10 के अनुरूप शत-प्रतिशत कार्य हिंदी में संपादित कर सकें । श्री रामराजु ने राजभाषा विभाग की सक्रियता की सराहना करते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्तर लगातार मिल रहे सम्मान अपने साथ जिम्मेदारियां भी लेकर आ रहे हैं । हमें अपने ही प्रदर्शन, अपनी ही उपलब्धियों से जूझना पड़ता है । श्री रामराजु ने भिलाई इस्पात संयंत्र में राजभाषा अनुपालन पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि यहां हिंदी के प्रति वरिष्ठ अधिकारियों की गंभीरता अनुकरणीय है ।

इस महती बैठक में संयंत्र के कार्यपालक निदेशक (खदान) श्री मानस कुमार बिंदु को अध्यक्ष महोदय द्वारा राजभाषा उन्नायक सम्मान-2009 से अलंकृत किया गया । प्रारंभ में सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री अशोक सिंघई ने सभापटल पर हाईटेक अनुपालन प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिसमें विगत तिमाही में संपादित कार्यों की समीक्षा व आलोच्य वित्त वर्ष के प्रथम छ: महीनों की उपलब्धियों पर विस्तार से चर्चा हुई तथा नए लक्ष्य सुनिश्चित किए गए । जनवरी 2010 में राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी के आयोजन पर सैद्धांतिक सहमति व्यक्त करते हुए सदन ने विगत बैठक में सुनिश्चित किए गए कार्य बिंदुओं के शत-प्रतिशत अनुपालन पर संतोष व्यक्त किया ।

बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि हिंदी में कार्यालयीन कामकाज बढ़े इसके लिए समयबद्ध तथा चरणबद्ध योजना बना कर कार्यक्रम किए जाएं । कंप्यूटर प्रशिक्षण पर अधिक बल दिया जाए एवं यूनिकोड सुविधायुक्त पर्सनल कंप्यूटर पर हिंदी कम्प्यूटर प्रशिक्षण, हिंदी आशुलिपि पुनश्चर्या पाठ्यक्रम, अनुवाद प्रशिक्षण जैसे कार्यक्रम सुनिश्चित किए जाएं । अंत में अशोक सिंघई के आभार व्यक्त के साथ सभा की कार्यवाही संपन्न हुई ।

2629 HA/10—13 A

(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

गुवाहाटी रिफाइनरी (उपक्रम)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) की 34वीं बैठक गत 30 दिसंबर' 09 को गुवाहाटी रिफाइनरी के प्रशिक्षण केंद्र में संपन्न हुई । बैठक की अध्यक्षता गुवाहाटी रिफाइनरी के कार्यपालक निदेशक श्री जी. भानुमूर्ति ने की ।

नराकास (उ) के अध्यक्ष श्री जी. भानुमूर्ति ने अपने संबोधन में नराकास (उपक्रम) गुवाहाटी को वर्ष 2008-09 के लिए पूर्वोत्तर क्षेत्र के अंतर्गत भारत सरकार, गृह मंत्रालय से राजभाषा द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करने पर सभी सदस्य कार्यालयों को बधाई दी तथा इसी समिति के ही चार कार्यालय--भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, गुवाहाटी रिफाइनरी, ऑयल इंडिया लिमिटेड तथा कर्मचारी राज्य बीमा निगम को क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार प्राप्त करने पर हार्दिक बधाई ज्ञापन की ।

राजभाषा विभाग के सहायक निदेशक श्री अशोक कुमार मिश्र ने राजभाषा विभाग द्वारा निर्देशित हर नीति का अनुपालन करने पर जोर दिया, जिससे कार्यालयों में राजभाषा के प्रचार-प्रसार को और अधिक बढ़ावा मिल सके ।

हिंदी शिक्षण योजना के सहायक निदेशक श्री ए.के. चौहान ने हिंदी प्रशिक्षण के संबंध में उपस्थित सभी को विस्तृत जानकारी दी और सरकार द्वारा निर्धारित समय सीमा तक सभी कार्यालयों के कर्मचारियों को प्रशिक्षित कराने तथा इसकी सूचना हिंदी शिक्षण योजना कार्यालय में समय पर भेजने के लिए सभी से अनुरोध किया ।

हर साल की तरह 2008-09 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन करने वाले सदस्य कार्यालयों को गुवाहाटी रिफाइनरी द्वारा दिए जाने वाले रिफाइनरी राजभाषा चल वैजयंती शील्ड पुरस्कार की घोषणा की । नराकास अध्यक्ष के करकमलों द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण को प्रथम, ऑयल इंडिया लिमिटेड को द्वितीय एवं कर्मचारी राज्य बीमा निगम लि. को तृतीय पुरस्कार के रूप में शील्ड व प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया तथा इन कार्यालयों के कार्यलयाध्यक्षों को क्रमशः "राजभाषा श्री", "राजभाषा कीर्ति" तथा "राजभाषा शिल्पी", सम्मान और हिंदी प्राधिकारियों को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया । इसके अतिरिक्त राजभाषा कार्यान्वयन में सराहनीय कार्य निष्पादन हेतु केंद्रीय रेशम बोर्ड मूगा रेशमकीट बीज संगठन, क्षेत्रीय विकास कार्यालय, नीपको कार्यालय, भारतीय पटसन निगम तथा स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया को प्रशस्ति पत्र प्रदान की गई बैठक की समापन प्रबंधक (निगम संचार) श्रीमती चन्द्रिमा शर्मा की धन्यवाद ज्ञापन से हुई ।

मुंबई (उपक्रम)

मुंबई (उपक्रम) न.रा.का.स की 44वीं बैठक 18 दिसंबर, 2009 को हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड के निदेशक--मानव संसाधन, श्री वी. विजिया सारधि की अध्यक्षता में संपन्न हुई ।

श्री वी.विजिया सारधि ने अपने संबोधन में कहा "मुझे विश्वास है कि आप सब वार्षिक कार्यक्रम 2009-10 पर अमल करते होंगे । किसी भी मंच की बुनियाद आपस में सहयोग के लिए रखी जाती है और मुझे विश्वास है कि टॉलिक उस बुनियाद को मजबूत कर रहा है । इस मंच का सार्थक उपयोग करते हुए, आप एक-दूसरे से सहयोग करें और राजभाषा कार्यान्वयन को आगे बढ़ाएं " ।

राजभाषा विभाग के उप निदेशक--कार्यान्वयन, डॉ. एम.एल. गुप्ता ने मुंबई उपक्रम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की सक्रियता की सराहना करते हुए विभिन्न उपक्रमों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों के लिए सभी संगठनों को बधाई दी । उन्होंने 44वीं बैठक में कार्यपालकों की इतनी तादाद में उपस्थिति पर प्रसन्नता व्यक्त की ।

उन्होंने निम्न मुद्दों पर सदस्यों का ध्यान आकृष्ट किया ।

- कार्यालयों में ई-मेल भी हिंदी में भेजा जाना चाहिए जिसे पत्राचार में गिना जाए ।
- कार्यपालकों की जिम्मेदारी है कि वे कार्यालयों में हिंदी सुविधायुक्त सॉफ्टवेयर उपलब्ध कराएं ।

2629 HA/10—13 B

➤ युनीकोड फॉन्ट का इस्तेमाल करते हुए ई-मेल भेजना भारत सरकार का आदेश है । संस्थान की आवश्यकताओं के लिए उन्होंने सदस्यों से द्विभाषी सॉफ्टवेयर ही खरीदने की अपील की । उन्होंने न.रा.का.स. के माध्यम से सदस्यों के लिए युनीकोड के लिए कार्यशाला का आयोजन करने का सुझाव दिया ।

➤ इस बात पर उन्होंने बल दिया कि सभी उ... न.रा.का.स. को रिपोर्ट निर्धारित समय पर भेजें ।

➤ संविधान के पालन के साथ ही हिंदी के प्रयोग को लाभप्रदता से जोड़ें ।

➤ प्रशिक्षण संस्थान में मिली-जुली भाषा का प्रयोग करें । राजभाषा अधिकारी अपने दायित्व को भली-भांति निभाएं ।

सहायक निदेशक--हिंदी शिक्षण योजना, डॉ. सुनीता यादव ने पुरस्कृत संगठनों को बधाई देते हुए सभी टॉलिक सदस्यों से प्रशिक्षण के अद्यतन आंकड़े भेजने का अनुरोध किया ।

हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पो. लि. के कार्यकारी निदेशक--मानव संसाधन विकास ने अपने वक्तव्य में राजभाषा कार्यान्वयन के प्रयास को इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार द्वारा सम्मानित किए जाने की जानकारी दी । उन्होंने बताया कि विभिन्न कार्यस्थलों के निरीक्षण, प्रशिक्षण कार्यक्रम, हिंदी कार्यशालाएं, एमएस ऑफिस 2007 कंप्यूटर प्रशिक्षण तथा हिंदी ई-मेल अभियान के साथ साथ हमने टॉलिक सदस्यों के लिए भी एक व्यवहारपरक कार्यक्रम हमारे प्रशिक्षण संस्थान निगड़ी में आयोजित किया गया ।

जालंधर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जालंधर की छमाही बैठक दिनांक 28-01-2010 को बाद दोपहर 3 बजे पंजाब नेशनल बैंक, मंडल कार्यालय, जालंधर के सहयोग से होटल सेखों ग्रांड में आयोजित की गई । बैठक की अध्यक्षता केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल, जालंधर के उपमहानिदेशक श्री सतपाल रॉवत ने की ।

बैठक को सूचित किया गया कि उपरोक्त दो वर्षों के दौरान क्रमशः नराकास जालंधर को प्रथम पुरस्कार व सी. आर.पी.एफ., सेंट्रल बैंक, इण्डियन ऑयल, भारतीय जीवन बीमा निगम आदि कार्यालयों को गत दिनों देहरादून में आयोजित पुरस्कार वितरण में पुरस्कृत किया गया था । इसकी एक संक्षिप्त रिपोर्ट श्री अनिल धीमान, राजभाषा अधिकारी, भारतीय जीवन बीमा निगम ने प्रस्तुत की । सभी सदस्यों ने करतल ध्वनि से प्रसन्नता अभिव्यक्त की ।

सदस्यों से अनुरोध किया गया कि वे निम्नलिखित के प्रति सजग रहें यथा :-

1. हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में ही देना ।
2. धारा 3(3) का अनुपालन सुनिश्चित करना ।
3. नाम पट्ट व मोहरों को द्विभाषी प्रयोग में लाना ।
4. कार्यालयों को नियम 10(4) के अंतर्गत अधिसूचित करवाना ।
5. अधिसूचित कार्यालयों के प्रवीणता प्राप्त कर्मचारियों को नियम 8(4) के अधीन अपना कार्य हिंदी में ही करने हेतु कार्यालय प्रमुख द्वारा आदेश जारी करना ।
6. हिंदी कार्यशालाओं व तिमाही बैठकों का आयोजन :--यह सूचित किया गया कि प्रत्येक कार्यालय द्वारा तिमाही में एक हिंदी कार्यशाला व एक बैठक आयोजित की जानी चाहिए । कुछ कार्यालय इस दिशा में अच्छा प्रयास कर रहे हैं । जो छोटे कार्यालय अपने स्तर पर हिंदी कार्यशाला आयोजित नहीं कर पाते, वे समिति द्वारा आयोजित कार्यशालाओं में अपने कर्मचारी भेज सकते हैं ।
7. राजभाषा विभाग केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तर) द्वारा प्राप्त हिंदी टंकण/आशुलिपि प्रशिक्षण, हिंदी प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ की जानकारी तथा अन्य सूचनाएं सदस्यों को दी गई ।

गाजियाबाद से बैठक में उपस्थित क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय के प्रतिनिधि श्री जसवंत सिंह जी ने बैठक के सफल आयोजन व प्रायोजन हेतु नराकास, जालंधर व पंजाब नेशनल बैंक की भूरी-भूरी प्रशंसा की तथा समिति से कहा कि उनकी नजरें अब इंदिरा गांधी पुरस्कार प्राप्त करने पर होनी चाहिए ।

श्री सतपाल रावत, उपमहानिरीक्षक, श्री आर.पी. एफ जालंधर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में नराकास जालंधर का

आभार व्यक्त किया । उन्होंने केंद्रीय विद्यालय, सूरानुस्सी के छात्रों द्वारा प्रस्तुत गीतों व नृत्यों की प्रशंसा करते हुए धन्यवाद दिया तथा समिति सदस्यों से अनुरोध किया कि भारत में 200 से अधिक बोलियां हैं तथा अनेक भाषाएं हैं, हमें सबका सम्मान करना चाहिए किंतु हिंदी हमारी राजभाषा है, अत: इसका आदर तो करना ही चाहिए । इसके प्रयोग में हमें गर्व महसूस करना चाहिए । उन्होंने कहा कि पूरे भारत में हिंदी न जानने वालों की संख्या शून्य के बराबर है, इसलिए हिंदी का प्रयोग संपर्क भाषा के रूप में भी किया जाता है । उन्होंने सभी से अनुरोध किया कि वे इस भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु प्रयासरत रहें ।

नाजिरा

दिनांक 11 फरवरी 2010 कॉ सेंट्रल वर्क्स शॉप ओ. एन.जी.सी. शिवसागर में प्रात: 10 बजे नराकास नाजिरा की बैठक माननीय श्री प्रदीप सहारिया, महाधिप्रबंधक (मा. सं.) की अध्यक्षता में संपन्न हुई ।

उप निदेशक (कार्या.) क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर क्षेत्र) राजभाषा विभाग गुवाहाटी ने अपने संबोधन में कहा कि प्रारंभ में लग रहा था कि यहां पर उदासीनता है, लेकिन उपस्थिति को देख कर प्रशन्नता हुई । उन्होंने अपने संबोधन में कहा हिंदी के विकास के लिए लगन से कार्य करें, लगाव से नहीं । यदि लगन होगी तो निराशा निकट नहीं आएगी, क्योंकि हिंदी अपने में स्वयं बलवान है । अंडमान का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहां पूर्व में अण्डमान निकोबार ग क्षेत्र में सम्मिलित था, लेकिन वहां हिंदी की लगन ने इसे क क्षेत्र में सम्मलित करा दिया । सरकार की अपेक्षा यही है कि कार्यालयों में हिंदी का वातावरण बने, जिससे सभी इसको अपनाने में झिझक महसूस न करें ।

अध्यक्षीय संबोधन में महाधिप्रबंधक (मा.सं.) ने पहले नराकास नाजिरा को वर्ष 2007-08 के लिए माननीय गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार श्री अजय माकन द्वारा उत्कृष्ट कार्य के प्रति प्राप्त शील्ड के लिए बधाई दी । आगे कहा कि भारत ऐसा देश है, जिसमें 31 राज्य हैं तथा यहां लगभग 1600 भाषाएं बोली एवं समझी जाती हैं, जो थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बदलती रहती है । हिंदी के प्रचार प्रसार में चलचित्र की अहम भूमिका रही है ।

विदेशों में भी हिंदी फिल्मों को देखने के लिए सिनेमा हाल भरे रहते हैं । वह भी भारतीयों से नहीं उसमें विदेशी अधिक होते हैं । हिंदी लिखते समय उन शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए जो बोल चाल में सम्मलित हो । आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि हिंदी अपना शीघ्र प्रथम स्थान प्राप्त कर लेगी ।

चण्डीगढ़

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चण्डीगढ़ ने टैगोर टर, सैक्टर--18, चण्डीगढ़ में अपने वार्षिक राजभाषा ार वितरण एवं सांस्कृतिक समारोह का आयोजन कि । समारोह की अध्यक्षता मुख्य आयकर आयुक्त, उत्तर श्चिम क्षेत्र एवं अध्यक्ष नराकास श्री पी.के. चोपड़ा जी ने की । समारोह में केंद्रीय सरकारी कार्यालयों/ निगमों/उपक्रमों के 450 कार्यालयाध्यक्षों/ अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया । नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चण्डीगढ़ स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए प्रति वर्ष कई हिंदी प्रतियोगिताओं और हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करती है । इस समारोह के दौरान लगभग 180 कर्मचारियों/अधिकारियों को समिति द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के पुरस्कार प्रदान किए गए । समारोह के दौरान वर्ष 2007-08 एवं 2008-09 में अपने कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए 44 कार्यालय अध्यक्षों को भी पुरस्कार प्रदान किए गए ।

समिति के सचिव डॉ. सुरेन्द्र शर्मा ने सूचित किया कि चंडीगढ़ स्थित केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए किए गए प्रयासों हेतु भारत सरकार ने समिति को इस वर्ष प्रथम पुरस्कार प्रदान किया है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री पी.के. चोपड़ा मुख्य आयकर आयुक्त ने कहा "हिंदी न केवल हमारी राजभाषा है बल्कि यह हमारी राष्ट्रीय पहचान भी है । यह हमारे विचारों और संस्कारों की भाषा है । अत: हिंदी में काम करना न केवल हमारा कानूनी दायित्व है बल्कि हमारी नैतिक जिम्मेदारी भी है । हिंदी आज मीडिया, मार्किट और मनोरंजन की भाषा है । अत: हमें भी अपने केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करके आम आदमी तक पहुंचने और प्रशासन में पारदर्शिता लाने का प्रयास करना है ।" उन्होंने वरिष्ठ अधिकारियों से अपील की कि वे स्वयं हिंदी में कार्य करके अपने कर्मचारियों को प्रेरित करें । उन्होंने पुरस्कार प्राप्त करने वाले कार्यालयाध्यक्षों

नराकास (उपक्रम) गुवाहाटी की बैठक में अधिकारीगण ।

नराकास (बैंक) पटना की बैठक का एक दृश्य ।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण राजकोट द्वारा आयोजित हिंदी कार्यशाला में अधिकारीगण ।

दि. 26-10-09 को आयोजित समारोह में श्री वाई.एस. मय्या, अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), हैदराबाद-सिकंदराबाद तथा अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, ईसीआईएल से वर्ष 2008-09 के लिए नराकास राजभाषा शील्ड "प्रथम पुरस्कार" ग्रहण करते हुए श्री विजय कुमार, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), एनएमडीसी लि. ।

केंद्रीय रेशम बोर्ड, भंडारा द्वारा आयोजित हिंदी कार्यशाला का दृश्य ।

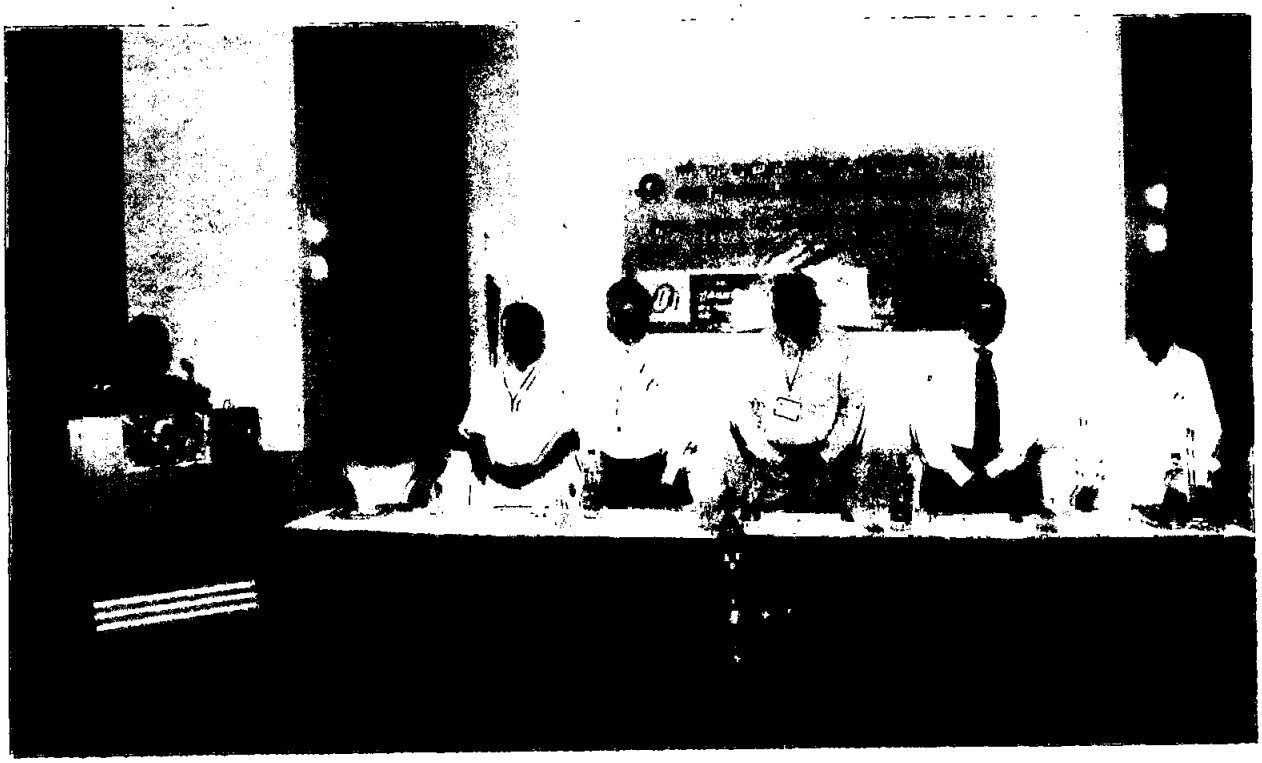

नराकास चेन्नई के बैनर तले यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, चेन्नई द्वारा आयोजित संगोष्ठी में महाप्रबंधक श्री पी.बी. नागर, सहायक महाप्रबंधक श्री आर.आर. सरीन, उप निदेशक (का.) श्री वी. बालकृष्णन, नराकास अध्यक्ष श्री पी.के. चतुर्वेदी, सदस्य सचिव, श्री शेख अब्दुल कादर एवं श्री पवन कुमार साहनी वरिष्ठ प्रबंधक उद्घाटन सत्र में ।

श्री वी.के. संजीवी, महाप्रबंधक, भारत संचार निगम लिमिटेड, मदुरै, मदुरै नगर स्थित सरकारी कार्यालयों/भारत सरकार के उपक्रमों के बीच वर्ष 2008-2009 में राजभाषा कार्यान्वयन के सर्वोत्तम निष्पादन हेतु नराकास 'राजभाषा शील्ड' प्राप्त करते हुए ।

नाईपर में आयोजित हिंदी पखवाड़ा-2009 के समापन कार्यक्रम के अवसर पर हिंदी कक्ष द्वारा लगाई राजभाषा प्रदर्शनी के बारे में जानकारी देते हुये (बांए से) श्री संतोष सोहगौरा, प्रभारी अधिकारी (राजभाषा) एवं जनसम्पर्क अधिकारी, मुख्य अतिथि श्री उदय कुमार सिन्हा, एक्ज़िक्यूटिव एडिटर, अमर उजाला, चंडीगढ़, श्री भूपिन्दर सिंह, कार्यवाहक कुलसचिव एवं निदेशक प्रो. पी. रामाराव ।

नगर राभाकास की बैठक में श्री मालवीय, प्रबंधक, भारतीय जीवन बीमा निगम, बालाघाट द्वारा अपने विचार व्यक्त करते हुए ।

एनएमडीसी लिमिटेड, हैदराबाद में आयोजित इस्पात मंत्रालय के नियंत्रणाधीन उपक्रमों के "हिंदी अधिकारियों के सम्मेलन" में मंच पर बांए से दांए–श्री जी. बी. जोशी, अधिशासी निदेशक (कार्मिक), श्री एन. राजशेखर, मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री वी.के. शर्मा, निदेशक (वाणिज्य), श्री वी.पी. सिंह, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), इस्पात मंत्रालय, श्री भीम सिंह, सहायक निदेशक (राजभाषा), इस्पात मंत्रालय, श्री विजय कुमार, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) दिखाई दे रहे हैं ।

नराकास (उपक्रम) मुंबई की बैठक का एक दृश्य ।

एन.एच.पी.सी. लि., फरीदाबाद की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में अधिकारीगण ।

और प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई दी तथा कहा कि समिति इस वर्ष भी हिंदी की कई प्रतियोगिताओं का आयोजन करेगी ।

लुधियाना

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लुधियाना की 57वीं बैठक दिनांक 03-02-2010 को सायं 4.00 बजे पंजाब नैशनल बैंक के आंचलिक प्रशिक्षण केंद्र, नज़दीक मंजू सिनेमा, जी.टी. रोड, लुधियाना के सभागार में आयोजित की गई । यह बैठक यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा प्रायोजित की गई थी । श्री जी.एस. रंधावा, मुख्य आयकर आयुक्त, लुधियाना एवं अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने इस बैठक की अध्यक्षता की ।

श्री जी.एस. रंधावा, मुख्य आयकर आयुक्त एवं अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति लुधियाना ने उपस्थित सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लुधियाना की 57वीं बैठक में सदस्य कार्यालयों के अध्यक्षों या वरिष्ठ अधिकारियों का बढ़-चढ़ कर भाग लेना आप सब की राजभाषा हिंदी के प्रति सच्ची लगन तथा गहरी निष्ठा का परिचायक है । वह एक शुभ संकेत है । आप सब जानते हैं कि वर्तमान परिस्थितियों में हिंदी की संपर्क भाषा के तौर पर भूमिका को नकारा नहीं जा सकता । हिंदी हम सबको आपस में जोड़ने का कार्य करती है । हम किसी भी प्रांत के वासी हों राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी ही हमें एक दूसरे के निकट लाती है । हमें चाहिए कि हम राजभाषा हिंदी को मन, वचन और कर्म से अपनाएं न कि आंकड़ों के भ्रमजाल में भटक कर रह जाएं । इसलिए यह जरूरी है कि सभी अधिकारी और कर्मचारी अपना अधिक से अधिक काम हिंदी में करने का संकल्प लें और शुरुआत के तौर पर अपने दैनिक कार्य का थोड़ा बहुत कार्य हिंदी में करें ।

पटियाला

पटियाला नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 03-12-2009 को सायं 03.30 बजे आयकर भवन, पटियाला के सम्मेलन कक्ष में आयोजित की गई । बैठक की अध्यक्षता श्री जी.सी. नेगी, आयकर आयुक्त, पटियाला एवं अध्यक्ष, नराकास, पटियाला ने की । बैठक में वर्ष 2008-09 में कार्यालयों में हिंदी में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए 5 कार्यालयाध्यक्षों को राजभाषा शील्ड प्रदान की गई ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पटियाला के स्तर पर हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई हिंदी भाषण प्रतियोगिता, हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी शब्द ज्ञान प्रतियोगिता एवं कंप्यूटर पर हिंदी टाइप प्रतियोगिता के 20 विजेताओं को भी पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र दिए गए ।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में श्री जी.सी. नेगी ने उपस्थित सदस्यों का बैठक में आने के लिए धन्यवाद किया । उन्होंने कहा कि पुरस्कार जीतने वाले सभी सदस्यों को बधाई हो । उन्होंने कहा कि पत्रिका के प्रकाशन का कार्य एक निर्धारित समय के अंदर पूरा होना चाहिए । आयुष संस्थान, आकाशवाणी, केंद्रीय विद्यालय, डीजल रेल इंजन कार्यालय, उत्तर क्षेत्र भाषा केंद्र रचनाएं भेजें । अन्य कार्यालय भी अपेक्षित सहयोग दें । सभी कार्यालयाध्यक्ष बैठकों में भाग लें और समिति के निर्णयों को अपने कार्यालयों में लागू करें ताकि पटियाला नगर में राजभाषा का प्रयोग बढ़े । राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए नए-नए प्रयास किए जाएं । सभी कार्यालयों से रिपोर्टें भेजी जाएं और समय पर भेजी जाएं । उन्होंने बैठक में उपस्थित होने के लिए सदस्यों को धन्यवाद किया तथा नव वर्ष की बधाई दी ।

जयपुर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (के.का.) जयपुर की 58वीं अर्द्धवार्षिक बैठक दिनांक 27-01-2010 को अपराह्न 3.00 बजे महालेखाकार भवन जयपुर के मनोरंजन कक्ष में आयोजित की गई । बैठक की अध्यक्षता प्रधान महालेखाकार श्रीमती मीनाक्षी मिश्रा ने की ।

श्रीमती मीनाक्षी मिश्रा, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक), एवं अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (के.का.), जयपुर ने अपने संबोधन में यह कहा कि अर्द्धवार्षिक बैठक की सूचना पत्र द्वारा भिजवाए जाने के पश्चात् दूरभाष एवं फैक्स से स्मरण करवा दिया जाता है फिर भी 105 सदस्य कार्यालयों में से केवल 53 कार्यालयों के ही छःमाही प्रतिवेदन प्राप्त होना, खेदजनक है । कुछ कार्यालयों द्वारा अर्द्धवार्षिक बैठक के लिए निर्धारित दिन को छःमाही प्रतिवेदन दिए जाने को गंभीरता से लेते हुए अध्यक्ष महोदया ने छःमाही अवधि समाप्त होने के तुरंत बाद प्रथम सप्ताह में प्रतिवेदन प्रस्तुत करने का प्रस्ताव रखा । इस

पर कुछ कार्यालयों ने अपने खंडीय/उप कार्यालयों से सूचना संकलन में एक सप्ताह के समय को कम बताया तब अध्यक्ष महोदया ने इसे दो सप्ताह कर दिया । इस पर सभी सदस्य कार्यालयों ने सहमति प्रदान कर दी ।

अतः सर्वानुमति से यह निश्चय किया गया कि भविष्य में छःमाही प्रतिवेदन प्रतिवेदन निर्धारित छःमाही समाप्त होने के तुरंत बाद के दो सप्ताह में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (केंद्रीय कार्यालय) जयपुर के संयोजक कार्यालय में सभी सदस्य कार्यालय प्रस्तुत कर देंगे एवं निर्धारित तिथि का अंकन सदस्य कार्यालयों द्वारा अपने "कलैण्डर ऑफ रिटर्न" (विवरणी पंजिका) में कर दिया जायेगा । साथ ही अध्यक्ष महोदया ने समेकित छःमाही प्रतिवेदन की समीक्षा करते हुए छः सदस्य कार्यालयों द्वारा धारा 3(3) का उल्लंघन एवं एक सदस्य कार्यालय द्वारा नियम 5 का अनुपालन न करने पर चिंता प्रकट की । तीन सदस्य कार्यालयों द्वारा लगातार दूसरी छमाही में भी धारा 3(3) के उल्लंघन पर क्षोभ व्यक्त करते हुए उपस्थित कार्यालयाध्यक्षों/अधिकारियों से अपील की कि राजभाषा नियमों के पूर्ण अनुपालन हेतु हम सभी को सजग रहने की आवश्यकता है ।

"हिंदी को आप हिंदी कहें या हिंदुस्तानी, मेरे लिए तो दोनों एक ही हैं । हमारा कर्त्तव्य यह है कि हम अपना राष्ट्रीय कार्य हिंदी भाषा में करें", राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के इस कथन के साथ अध्यक्ष महोदया ने अपना संबोधन समाप्त किया ।

दिल्ली (बैंक)

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 31वीं छमाही बैठक श्री आर.के. दुबे, अध्यक्ष दिल्ली बैंक नराकास एवं महाप्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक, दिल्ली मंडल की अध्यक्षता में दिनांक 20-01-2010 को पंजाब नैशनल बैंक के केंद्रीय स्टाफ कालेज, सिविल लाइन्स दिल्ली के सभाकक्ष में आयोजित की गई । श्री बी.एस. परशीरा, आईएएस, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, बैठक के मुख्य अतिथि थे ।

सदस्य सचिव ने सूचित किया कि पिछली बैठक में लिये गए निर्णय के अनुसार समिति ने मैसर्स प्राइड सिस्टम लिमिटेड, दिल्ली के सहयोग से नराकास की वैबसाइट तैयार करा ली है जिसका शुभारम्भ बैठक के मुख्य अतिथि एवं सचिव, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के करकमलों से किया गया है । उन्होंने कहा कि संभवतः दिल्ली बैंक नराकास देश भर में स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों में ऐसी पहली समिति होगी जिसकी अपनी वैबसाइट है । उन्होंने आगे कहा कि वैबसाइट के लांच हो जाने के साथ ही समिति पेपरलैस कार्य युग में प्रवेश कर गई है । उन्होंने आगे कहा कि भविष्य में समिति की बैठकों के आयोजन, कार्यसूची एवं कार्यवृत्त तथा अन्य जानकारियां वैबसाइट के माध्यम से ही सदस्यों को उपलब्ध कराई जाएंगी, अतः सभी कार्यालय वैबसाइट को नियमित रूप से खोलें तथा वहां अपलोड जानकारियों को डाउनलोड कर अपने उच्चाधिकारियों के ध्यान में लाएं । उन्होंने आगे कहा कि सदस्य कार्यालय भी अपने से संबंधित किसी जानकारी को वैबसाइट पर अपलोड कराना चाहते हैं तो वे भी समिति सचिवालय से संपर्क कर सकते हैं ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं सचिव, भारत सरकार, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, श्री बी.एस. परशीरा ने अपने संबोधन में कहा कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां सरकारी कार्यालयों में हिंदी कार्य का प्रभावी वातावरण निर्मित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं । उन्होंने कहा कि यह बेहतर मंच है इसका अधिकतम सदुपयोग करें । उन्होंने बताया कि देश के विभिन्न नगरों में 271 समितियां कार्यरत हैं तथा अधिकांश काफी प्रभावी हैं । उन्होंने दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को पिछले दो वर्षों के प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने पर बधाई देते हुए कहा कि इसे राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार प्राप्त होना चाहिए । उन्होंने कहा कि समिति के कुछ सदस्य कार्यालयों ने बहुत अच्छे परिणाम दिए हैं तो कुछ अधिक बेहतर कार्य नहीं कर सके हैं । उन्होंने आगे कहा कि सभी सदस्यों द्वारा अच्छे परिणाम देने पर ही समिति शीर्ष स्थान प्राप्त कर सकेगी । सचिव महोदय ने कहा कि यह समिति देश की राजधानी में कार्य कर रही है इस कारण दूसरी समितियों के लिए यह प्रेरणास्रोत का कार्य करे । यूनीकोड के संबंध में जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि इसकी उपलब्धता से हिंदी का प्रयोग सुलभ हो गया है । उन्होंने समिति द्वारा कराए गए यूनिकोड प्रशिक्षण संबंधी आयोजनों की सराहना की । दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा अपनी वैबसाइट लांचिंग की भरपूर सराहना करते हुए सचिव महोदय ने कहा कि मैं संपूर्ण टीम की प्रशंसा करता हूं । उन्होंने आगे कहा कि प्रतिस्पर्धा के दौर से गुजर रहे सरकारी

क्षेत्र के बैंक अपने ग्राहकों पर निर्भर हैं तथा यदि वे उनकी भाषा अर्थात् हिंदी में अपना कार्य करेंगे तो इससे बैंकों का भरपूर विकास होगा । श्री परशीरा ने कहा कि यह समिति कार्यशालाएं तथा संगोष्ठियां आयोजित कर रही है जो सराहनीय है । उन्होंने आह्वान किया कि राजभाषा की प्रगति के लिए राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम का अनुपालन सुनिश्चित करें, स्टाफ को प्रशिक्षित कराएं, राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) तथा राजभाषा नियम 5 का पालन करें, उच्चाधिकारी अपने दायित्व को समझते हुए अपने कार्यालयों में संघ की राजभाषा नीति का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ।

करनाल

दिनांक 18-12-2009 को नराकास करनाल की 50वीं छमाही बैठक एवं रजत जयंती समारोह का अयोजन केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, काछवा रोड, करनाल के सभागार में किया गया ।

श्री आर.पी. वैश्य, अध्यक्ष, नराकास एवं निदेशक, एमएसएमई विकास संस्थान ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि वैश्वीकरण एवं औद्योगीकरण के इस समय में राजभाषा हिंदी को धीरे-धीरे ही सही पर उसे अपने आप उसका उचित स्थान मिलता जा रहा है ।

श्री वी.एन. राय, पुलिस महानिदेशक, हरियाणा पुलिस मुख्य अतिथि ने समिति को 25 वर्ष पूरे करने के उपलक्ष्य में बधाई दी तथा कहा कि यह भी समिति की सकारात्मक सोच का ही परिणाम है कि समिति ने सफलतापूर्वक 25 वर्ष पूरे किए हैं । उन्होंने यह भी कहा कि समिति के तत्वाधान में जो प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं वे आम जन के लिए भी खुली होनी चाहिए ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इन प्रतियोगिताओं में भाग लेकर इनका स्तर और उंचा बना सकें । भाषा और साहित्य में एक बड़ा फर्क यह होता है कि साहित्य तो किसी भी भाषा से ग्रहण किया जा सकता लेकिन भाषा को लेकर झगड़े होते हैं । अगर किसी भी तरह की पढ़ाई में अगर उसकी एप्लीकेशन नहीं है तो वह पढ़ाई लगभग बेकार ही है । अगर साहित्य का कहीं न कहीं इस्तेमाल हो रहा है तो वह बढ़ता ही जाएगा । लोग कहते हैं कि अंग्रेजी को छोड़ो लेकिन अंग्रेजी जानना भी आवश्यक है आज भौगोलीकरण के जमाने में अगर आपको विश्व स्तर पर जाना है तो अंग्रेजी भी आवश्यक है लेकिन हम अपना काम हिंदी में ही करें ताकि हमारी बात आम लोगों तक पहुंच सके । यह मानसिकता की बात है कि हम हिंदी का प्रयोग छोड़ कर अपने काम में अंग्रेजी को वरीयता देते हैं तो यह हमारी गुलाम मानसिकता का ही परिचायक है । हमारे देश में हिंदी को राजभाषा का दर्जा तो दे दिया गया है लेकिन हम हिंदी को लागू करने में कहीं पिछड़ रहे हैं । उन्होंने डा. होमी भाभा एवं राष्ट्रपिता महात्मागांधी के उदाहरण दे कर कहा कि जीवन जीने का नाम है । डा. होमी भाभा ने कहा था कि जीवन को इनटैंसिटी के साथ जीना चाहिए । उन्होंने अच्छे जीवन का उदाहरण देते हुए कहा कि बैरटिन ने अच्छे जीवन की परिभाषा कुछ इस तरह से दी है ।

"गुड लाइफ इज इंसपायरड बाई लव एंड
गाइडिड बाई नालिज"

"हमारे जीवन में भी हमें इन्टैनसिटी के साथ
जीवन जीते हुए आगे बढ़ना चाहिए" ।

बोकारो

बोकारो नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष 2009-10 की द्वितीय बैठक प्रबंध निदेशक, बोकारो स्टील प्लांट एवं अध्यक्ष, बोकारो नराकास श्री बी के श्रीवास्तव की अध्यक्षता में प्रबंध निदेशक सम्मेलन कक्ष में दिनांक 13-01-2010 को 11.30 बजे दिन में संपन्न हुई ।

बैठक में मुख्य रूप से पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों के अनुपालन की स्थिति, सितंबर, 2009 में समाप्त तिमाही के प्रगति प्रतिवेदन की समीक्षा तथा विगत 6 माह में सदस्य संगठनों द्वारा किए गए कार्यों के विवरणों पर चर्चा हुई । अध्यक्ष महोदय ने नराकास के सभी सदस्यों से नए वर्ष में राजभाषा के क्षेत्र में कुछ नया काम करने का आह्वान किया तथा पी सी पर हिंदी में काम करने के लिए कार्मिकों को आवश्यक प्रशिक्षण दिलाने पर बल दिया ।

देवास

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 44 वीं बैठक दिनांक 14-12-2009 को अपराह्न 3.00 बजे बैंक नोट मुद्राणालय, देवास के सभाकक्ष में बैंक नोट मुद्रणालय के उप महाप्रबंधक एवं विभागाध्यक्ष श्री एम.सी. बैलप्पा की अध्यक्षता में संपन्न हुई ।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री बैलप्पा जी ने कहा–

सर्दी के गुदगुदाते मौसम में संपन्न हो रही नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 44 वीं तथा इस वर्ष की दूसरी और साल की अंतिम बैठक में पधारे सभी सदस्यों का हार्दिक अभिनंदन ।

हमारी अंतर-आत्मा की आवाज हमारी मातृभाषा जनभाषा हिंदी में ही झलकती है । जन-जन की भाषा का उपयोग कर हम जन-जन का विश्वास जीत सकते हैं, जन-जन का विश्वास पाना ही लोकतांत्रिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा है और सरकारी संस्थान इसके अंग हैं । लोकतांत्रिक व्यवस्था मे जनता से सीधा संपर्क होता रहता है, इसलिए जनता से जनता की भाषा में संपर्क करना तथा उनकी भाषा में कार्य करने से न केवल कार्य करने में आसानी होती है बल्कि इससे हमारे व्यवसाय को बढ़ावा भी मिलता है ।

आप सभी राजभाषा के कार्यान्वयन तथा प्रचार-प्रसार में कदम से कदम मिलाकर इस समिति को गौरवान्वित कर रहे हैं । यह आपके सदप्रयासों का ही प्रतिफल है कि हमारी समिति को अब तक कई अखिल भारतीय सम्मान प्राप्त हो चुके हैं । हाल ही में समिति को मिले राजभाषा कीर्ति तथा राजभाषा शिल्पी सम्मान ने इस शृंखला को और आगे बढ़ाया है, जिसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं ।

इस बैठक में हम प्रगति रिपोर्ट के साथ-साथ समिति को सक्रियता प्रदान करने वाले अन्य तत्वों पर विचार करेंगे जिनमें सदस्य कार्यालयों की उपस्थिति एवं समय पर रिपोर्टों का प्रेषण शामिल है । यह दो बातें ऐसी हैं जिनमें प्रत्येक कार्यालय और उसके प्रमुख का व्यक्तिगत सहयोग ही समिति के कार्यकलापों को गति प्रदान कर सकता है । मेरा विश्वास है कि आप सभी के सहयोग से हम हमेशा की तरह आगामी वर्ष में भी इन सभी दायित्वों का सफलतापूर्वक वहन कर समिति को नई ऊंचाईयां प्रदान करेंगे । दहलीज पर खड़े नव वर्ष के लिए आप सभी को अग्रिम शुभकामनाएं ।

जोधपुर

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि यह समिति राजभाषा प्रयोग प्रसार की दृष्टि से सदैव अग्रणी रही है और आशा व्यक्त की कि भविष्य में यह समिति प्रगति के पथ पर अग्रसर रहेगी । उन्होंने कहा कि यदि हम तकनीकी कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दें तो निश्चित रूप से राजभाषा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में अधिक आसानी होगी ।

इसके पश्चात् अध्यक्ष महोदय ने सभी सदस्यों से आग्रह किया कि हिंदी के प्रगामी प्रयोग को सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक कार्यालय में आवश्यकता के अनुसार हिंदी पदों का सृजन किया जाए । इसके अलावा जिन कार्यालयों में पहले ही हिंदी पद सृजित किए जा चुके हैं, उन कार्यालय के हिंदी कार्मिकों को केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली में अनुवाद प्रशिक्षण हेतु बारी-बारी से नामित किया जाए । इस व्यवस्था से न केवल हिंदी के प्रयोग प्रसार में तेजी आएगी बल्कि राजभाषा विभाग द्वारा जारी लक्ष्यों को प्राप्त करने में आसानी रहेगी ।

अध्यक्ष महोदय ने कंप्यूटर पर हिंदी के प्रयोग की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि आज के तकनीकी युग में केंद्रीय सरकार के लगभग सभी कार्यालयों में कंप्यूटर का प्रयोग दिनों-दिन प्रचलित होता जा रहा है । कंप्यूटर के अधिकाधिक प्रयोग से यह नितांत रूप से आवश्यक हो जाता है कि कार्यालय में प्रयुक्त हर कंप्यूटर में हिंदी अंग्रेजी में कार्य करने की सुविधा उपलब्ध हो । उन्होंने सभी सदस्यों से आग्रह किया कि कार्यालय में प्रयुक्त कंप्यूटर पर हिंदी अंग्रेजी में कार्य करने की सुविधा अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराई जाए ।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि यदि प्रशासनिक प्रधान व्यक्तिगत स्तर पर सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग पर पहल करें तो निश्चित रूप से हिंदी के प्रयोग प्रसार में आशातीत वृद्धि दर्ज होगी । इसके लिए आवश्यक है कि आशुलिपिकों और टंककों को अधिकाधिक डिक्टेशन हिंदी में दिए जाएं, अधिकांश फाइलों पर नोटिंग हिंदी में दें और विभागीय निरीक्षण के साथ साथ हिंदी प्रगति का भी जायजा लें, कार्यालय में प्रयुक्त रबड़ की मोहर एवं नामपट्ट व सूचनापट्ट द्विभाषी रूप में तैयार कराए जाएं एवं क और ख क्षेत्रों में भेजे जाने वाले लिफाफों पर पते हिंदी में लिखे जाएं ।

अध्यक्ष महोदय ने राजभाषा नियम 1976 के नियम 12 का हवाला देते हुए कहा कि कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान को यह दायित्व सौंपा गया है कि वह कार्यालय में राजभाषा अधिनियम व इसके अंतर्गत बनाए गए नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए उपर्युक्त व प्रभावशाली

उपाय करें और अपनी ओर से विनिर्दिष्ट विषयों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करने के लिए सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए व्यक्तिशः आदेश भी जारी करे ।

अध्यक्ष महोदय ने वार्षिक कार्यक्रम पर चर्चा करते हुए सभी सदस्यों से अनुरोध किया कि वे अपने विभागीय लक्ष्यों के साथ-साथ राजभाषा प्रयोग प्रसार के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सभी आवश्यक उपाय करें ताकि आपके सामूहिक प्रयासों से ही हम इस समिति को आदर्श रूप देने में सफल हो सकें ।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि संघ की राजभाषा नीति प्रेरणा व प्रोत्साहन पर आधारित है । इस संकल्पना को तभी मूर्तरूप दिया जा सकेगा जब हम अधिकाधिक लोगों को हिंदी के साथ जोड़कर हिंदी में कार्य करने की भावना जागृत करेंगे । इस जागृति में आप सब का सक्रिय सहयोग अपेक्षित है ।

भंडारा

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भंडारा (महाराष्ट्र) की छमाही बैठक का आयोजन दिनांक 15-12-2009 को केंद्रीय रेशम बोर्ड के सौजन्य से बुनियादी तसर बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र पर किया गया । बैठक की अध्यक्षता श्री एम. यु. गड. पायले मंडल अभियंता (प्रशासन) भारत संचार निगम लि. ने की ।

श्री गड पायले ने अपने अध्यक्षीय भाषण में ज्यादा से ज्यादा कार्य/पत्राचार राजभाषा हिंदी में करने का आह्वान किया । उन्होंने अधिनस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए प्रोत्साहन करने की सलाह दी । लक्ष्य प्राप्त करने वाले कार्यालयों को उन्होंने यथा स्थिति बनाए रखने की अपील की । जिन कार्यालयों में लक्ष्य की प्राप्ति नहीं की जा सकी उन्हें इसके लिए प्रेरित किया । उन्होंने अपना भाषण इन चार पंक्तियों से समाप्त किया ।

जिसने आकाश को छू लिया,
उस हिमालय का है ताज हिंदी,
राग है, सूर है साज है हिंदी,
करोड़ों की आवाज़ है हिंदी ।

इस अवसर पर वर्ष 2008-09 के लिए राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यालयों को पुरस्कृत किया गया । प्रथम पुरस्कार-बुनियादी तसर बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र, भंडारा, वित्तीय पुरस्कार-क्षेत्रीय तसर अनुसंधान केंद्र, भंडारा एवं तृतीय पुरस्कार-प्रदर्शन सह तकनीकी सेवा केंद्र, भंडारा को प्रदान किया गया, पुरस्कार में राजभाषा शील्ड एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया । अन्य उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यालयों आयुध निर्माणी, भारत संचार निगम, केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं भारतीय जीवन बीमा निगम को भी प्रोत्साहन पुरस्कार के रूप में प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गए । कार्यक्रम का संचालन श्री एस.पी. तुमडाम, राजभाषा अधिकारी, भारत संचार निगम लि., भंडारा द्वारा किया गया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. एस.के. माथुर, वैज्ञानिक--डी केंद्रीय रेशम बोर्ड, भंडारा द्वारा दिया गया ।

देहरादून

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति देहरादून की बैठक डॉ. डी.पी. सेमवाल, आयकर आयुक्त देहरादून की अध्यक्षता में ओ.एन.जी.सी. देहरादून के सौजन्य से दिनांक 31-12-2009 को प्रातः 11:00 बजे के डी.एम.आई.पी. के लघु सभागार कौलागढ़ रोड में आयोजित हुई ।

अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में डॉ. डी.पी. सेमवाल ने कहा कि किसी भी देश की संस्कृति को एकता के सूत्र में बांधने के लिए एक राष्ट्रभाषा का होना नितांत आवश्यक है । हिंदी भारत के जन-जन की भाषा है और राष्ट्रभाषा के रूप में हमारी सांस्कृतिक विरासत और जीवन मूल्यों से जुड़कर राष्ट्रीय एकता को मजबूत कर रही है । हिंदी भारत के अधिकांश लोगों द्‌वारा समझी और बोली जाती है । हमारे स्वतंत्रता संग्राम की मुख्य भाषा हिंदी ही थी । देश के कोने-कोने से एक जुट होने वाले स्वतंत्रता सेनानी हिंदी भाषा के माध्यम से ही जनता से संपर्क करते थे । हिंदी वह नींव है जिस पर गांधी जी ने संपूर्ण राष्ट्र को एक होने का संदेश दिया था और इसमें वे सफल हुए । भारत के अनेक संतों समाज सुधारकों और राष्ट्रीय नेताओं ने अपने दूरदर्शिता के कारण हिंदी को ही अपने प्रचार का माध्यम बनाया जिससे देश के सभी क्षेत्रों में संपूर्ण जनमानस को एकता के सूत्र में पिरो सकें । आज हमारा देश स्वतंत्र हो चुका है लेकिन राजनैतिक आजादी ही पूरी आजादी नहीं है, हमें मानसिक तौर पर भी राष्ट्रभाषा के प्रयोग को आगे बढ़ाना है । हिंदी एक सरल और सुबोध भाषा है, इसका जितना प्रचार-प्रसार होगा, उतना ही इसका विकास होगा ।

हिंदी देश की राजभाषा, राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा है इसके प्रचार-प्रसार से देश की अस्मिता और गौरव में वृद्धि होगी । इसलिए आजादी के बाद भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में हिंदी को संघ की राजभाषा को गौरवपूर्ण स्थान प्रदान किया गया और हिंदी अपनी यह भूमिका बखूबी निभा रही है । सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए भारत सरकार की एक स्पष्ट राजभाषा नीति है जिसका अनुपालन एवं क्रियान्वयन करना हमारा संवैधानिक दायित्व तो है ही साथ-साथ नैतिक कर्तव्य भी है कि हम अपनी राजभाषा का सरकारी कार्यों में उत्तरोत्तर प्रयोग करें ।

पटना (बैंक)

स्थानीय सरकारी क्षेत्र के बैंकों एवं वित्तीय संस्थानों की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 50वीं बैठक दिनांक 22-01-2010 शुक्रवार को 11.00 बजे श्री प्रेम कुमार बांसल, आंचलिक प्रबंधक, बैंक ऑफ इंडिया, पटना अंचल एवम् अध्यक्ष नराकास(बैंक) पटना की अध्यक्षता में होटल चाण्क्य, पटना में संपन्न हुई । श्री बांसल ने कहा कि भारतीय रिजर्व बैंक और भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग समय-समय पर सरकारी बैंकों में हिंदी में कार्य करने हेतु दिशा-निर्देश जारी करते रहते हैं जिसका मूल उद्देश्य लक्ष्य के अनुरूप बैंकों द्वारा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन देना है । यह समिति भी इसी उद्देश्य के लिए कार्यरत है । उन्होंने कहा कि हिंदी न सिर्फ भारत में बल्कि विश्व स्तर पर अच्छी सेवा देने के लिए सर्वोत्तम भाषा के रूप में सामने आई है । दुनिया में यह सबसे ज्यादा लोगों द्वारा बोली जाती है । बदलते परिवेश में हिंदी का महत्व और बढ़ गया है । हमें खुशी है कि अब सभी प्रकार के साफ्टवेयर हिंदी में भी उपलब्ध हैं । आंतरिक कामकाज में अगर हिंदी को नहीं बढ़ावा मिलेगा तो देश की 80 प्रतिशत आबादी जो किसान मजदूर है, आवश्यकताओं को नहीं समझ पायेंगी । अपनी चिंतन प्रक्रिया में पहले हम हिंदी में सोचते हैं, फिर अंग्रेजी में लिखते हैं । उन्होंने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि कामकाज में सरल एवं आसान शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए । अंग्रेजी जो भी लिखी जाती है वह मूलत: अनुवाद की भाषा होती है । हिंदी में ऐसी कोई समस्या नहीं है । बैठक में उन्होंने यह भी कहा कि बदलते परिवेश में बैंकों की गतिविधियां भी तेजी से बदल रही हैं । आज सभी बैंकों में हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं । इन गतिविधियों से हमें भी अवगत करायें तो हमें भी सुविधा होगी ।

बालाघाट

राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने और इसके सुचारू क्रियान्वयन की मंशा से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा भारतीय जीवन बीमा निगम, बालाघाट के सभाकक्ष में ग्यारहवीं बैठक अपने उद्बोधन में अध्यक्ष महोदय द्वारा समस्त उपस्थित सदस्यों का स्वागत करते हुए कहा गया कि हिंदी देश की राजभाषा है, यह आम जनता के बोलचाल एवं देश के अधिकांश लोगों द्वारा अपने दैनोंदिन के कार्यों में इसका प्रयोग किया जाता है तथा भारतीय फिल्में एवं टी वी सिरियल्स भी इसके प्रचार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते आ रहे हैं । राजभाषा विभाग द्वारा देश के अधिकांश नगरों में केंद्रीय संस्थानों एवं उपक्रमों के लिए इस समिति का गठन किया गया है, समिति की छ:माही बैठक आयोजित कर नगर में स्थित केंद्रीय कार्यालयों, उपक्रमों एवं बैंकों आदि द्वारा किए जाने वाले शासकीय कार्यों में हिंदी के प्रयोग की प्रगति की समीक्षा कर हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने पर बल दिया जाता है, जिसके सफल परिणाम भी प्राप्त हो रहे हैं ।

इलाहाबाद

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, इलाहाबाद की वर्ष 2009-10 की दूसरी बैठक दिनांक 25-02-2010 को अपराह्न 03-45 बजे माननीय आयकर आयुक्त श्री संतोष कुमार की अध्यक्षता में आयोजित की गई ।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में माननीय आयकर आयुक्त श्री संतोष कुमार ने कहा कि राजभाषा का प्रचार-प्रसार हम वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा सहजता से संभव है । आप सभी के उत्साह एवं लगन को देखते हुए मुझे पूरा विश्वास है कि यह समिति राजभाषा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में निश्चित रूप से कामयाब होगी । उन्होंने बताया कि राजभाषा के कार्य में प्रगति के लिए समिति एवं आयकर विभाग की ओर से हरसंभव सहयोग मिलेगा । उन्होंने अपेक्षा की कि हम परस्पर तालमेल एवं मेलजोल तथा सहयोग एवं सत्प्रयासों से नए कीर्तिमान स्थापित कर सकेगी । नगर स्तर की संगोष्ठी के आयोजन के सुझाव पर बोलते हुए माननीय अध्यक्ष महोदय ने कहा कि समिति इस पर विचार कर सकती है ।

(ग) कार्यशाला

महाप्रबंधक दूरसंचार का कार्यालय, बी एस एन एल, दावणगेरे

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दावणगेरे के संयोजक कार्यालय में (महाप्रबंधक दूरसंचार का कार्यालय, बी एस एन एल, दावणगेरे) एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला दिनांक 06.01.2010 को संपन्न हुई । यह कार्यशाला उक्त दिनांक पूर्वाह्न 10.00 बजे से अपराह्न 05.00 बजे तक चलाई गई ।

कार्यशाला नराकास के सदस्य श्री सी. एन. शेखर जी के स्वागत भाषण से प्रारंभ हुई और वे ही इस कार्यशाला का आरंभिक सत्र लिए ।

कार्यालय के कनिष्ठ हिंदी अनुवादक श्री सी. एन. शेखर जी ने अपने सत्र में बुनियादी हिंदी के बारे में संक्षिप्त रूप से बताया । साथ ही हिंदी व्याकरण में लिंग, वचन और कारक पर एक नजर डाला और राजभाषा नीति में राजभाषा हिंदी संबंधी संवैधानिक व्यवस्थाएं, राजभाषा अधिनियम 1963 और राजभाषा नियम 1976 के बारे में संक्षिप्त रूप से व्याख्यान दिया । उन्होंने 10.00 बजे से 01.00 बजे तक व्याख्यान दिया ।

कार्यालय के सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं सदस्य सचिव नराकास दावणगेरे श्री रमेश वी कामत ने दोपहर का सत्र लिया जो अपराह्न 02.00 बजे से 05.00 तक था । ये अपने सत्र में दैनादिन कामकाज में प्रयोग किए जाने वाले विविध पत्रों के बारे में जानकारी दी और हिंदी में टिप्पणी लिखने के बारे में भी जानकारी दी ।

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन में दिनांक 22-23 फरवरी 2010, को दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । श्री सेनगुप्ता ने बताया कि हम हरेक हिंदी कार्यशाला में हिंदी सीखने के महत्व के बारे में बताते हैं लेकिन उसका परिणाम उतना नहीं मिल रहा है जितना मिलना चाहिए । उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा के साथ-साथ राष्ट्रभाषा भी है । कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक हम कहीं भी जाएँ इसका महत्व बहुत ही है । अत: हमारा कर्त्तव्य बनता है कि हम राजभाषा हिंदी को सीखें और अपने रोजमर्रा के कार्यालयीन कार्यों में इसका प्रयोग करें । विशेष कार्याधिकारी श्री परमसिवम ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि हिंदी का प्रयोग सुचारू रूप से करना चाहिए । केंद्रीय सरकार के कार्यालय में कार्यरत होने के कारण यह हमारा कर्त्तव्य बनता है कि हम इसका प्रयोग करें । अगर हम हिंदी का प्रयोग वास्तविक रूप से करेंगे तो अंत में उसका परिणाम मीठा होगा । उन्होंने कहा कि राजभाषा हिंदी सीखने के प्रति अगर हम लगाव एवं रूचि दिखाएँगे तो भविष्य में उससे हमें अनेक फायदे होंगे । हिंदी कार्यशाला में बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारियाँ दी जाती हैं जिसका हम अभ्यास कर हिंदी में परिपक्व बन सकते हैं । उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी सीखना एक दिन या दो दिन की बात नहीं है, इसे सीखने के प्रति हमें अपना पूरा योगदान देते हुए इस कार्यक्रम का भरपूर लाभ उठाना चाहिए ।

कार्यशाला में कुल 20 प्रतिभागी थे । कार्यशाला में राजभाषा नियम, हिंदी व्याकरण, पत्र लेखन, कार्यालय में प्रयुक्त शब्दों की जानकारी, हिंदी अनुवाद, विकिरण के साथ-साथ कुछ प्रशासनिक विषयों जैसे सूचना का अधिकार, सेवानिवृत्ति लाभ, सुरक्षा जागरूकता आदि विषय पर भी व्याख्यान दिए गए ।

भारत सरकार, परमाणु ऊर्जा विभाग नाभिकीय ईंधन सम्मिश्र, हैदराबाद

नाभिकीय ईंधन सम्मिश्र, हैदराबाद में 10 मार्च, 2010 को प्रशासन व लेखा वर्ग के कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

इसका उद्घाटन महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति श्री प्रणव कुमार बनर्जी ने किया । आपने कहा कि हिंदी के प्रचार-प्रसार में सबकी भागीदारी आवश्यक

है, केंद्र सरकार के कर्मचारी के नाते हमें हिंदी में हस्ताक्षर, छोटे-छोटे पत्र और नोटिंग में हिंदी का प्रयोग करना चाहिए । दैनिक कार्यों को आसानी से हिंदी में किया जा सकता है केवल शुरुआत करने की आवश्यकता है ।

चर्चा सत्र में नाईस के उप निदेशक (राजभाषा) श्री गजानन पाण्डेय ने संघ सरकार की राजभाषा नीति, हिंदी शिक्षण योजना के हिंदी प्राध्यापक श्री अम्बादास ने सामान्य हिंदी और व्याकरण, श्री सैयद मासूम रज़ा, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने परमाणु ऊर्जा विभाग की गतिविधियाँ तथा श्री इरफान अली, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने हिंदी में मसौदा लेखन व प्रोत्साहन योजना विषय पर व्याख्यान दिया ।

उक्त कार्यशाला के समापन अवसर पर प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए नाईस के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री एस. कृष्णन ने कहा कि हिंदी को मन से अपनाने की जरूरत हैं क्योंकि हिंदी राजभाषा है । यदि हमें अंग्रेजी या कोई दूसरी भाषा नहीं आती है और केवल हिंदी आती है तो हमारा काम चल जाएगा । अत: हमें हिंदी सीखने के कार्य को चुनौती के रूप में लेना चाहिए ।

उक्त कार्यशाला में 24 कर्मचारियों ने भाग लिया । कार्यशाला की सफल आयोजन में श्री संतोष कुमार, आशुलिपिक (हिंदी) और श्रीमती अनुराधा ने सहयोग दिया ।

आकाशवाणी, चेन्नई-4

आकाशवाणी, चेन्नई में राजभाषा की गतिविधियों को एक नया आयाम देते हुए हिंदी के विकास पथ को सारगर्भित करने के उद्देश्य से दिनांक 5-11-09 और 6-11-09 को दो महत्वपूर्ण आयोजन हुए । 5-11-09 को हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई । दिनांक 5-11-09 को केंद्र निदेशक एवं उप महानिदेशक (द.क्षे-1) की अध्यक्षता में संयुक्त हिंदी कार्यशाला आयोजित हुई । केंद्र निदेशक श्री के. श्रीनिवास राघवन ने कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए कहा कि मैं बड़ी प्रसन्नता से कार्यशाला का उद्घाटन करता हूँ, क्योंकि कार्यशाला हिंदी में काम करने में होनेवाली झिझक को दूर करने का अच्छा अवसर प्रदान करती है । इसलिए हम नियमित रूप से कार्यशालों का आयोजन करते हैं और राजभाषा को क्रियान्वित करने हेतु सक्रिय कदम उठा रहे हैं । उन्होंने कर्मचारियों से इस सुअवसर का लाभ उठाने का आग्रह किया । केंद्र के अधीक्षण अभियंता श्री आर. वरदराजन ने अपने विशेष वक्तव्य में कार्यशाला एवं संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए बधाई दी । उन्होंने कहा कि हम सब को अपनी झिझक दूर कर हिंदी में काम करने का सहृदयता से प्रयत्न करना चाहिए और संगोष्ठियों में बताए गए उपायों को कार्य रूप देकर राजभाषा को आगे बढ़ाना चाहिए । श्री राजगोपाल ने कार्यक्रम के आयोजन पर अपनी खुशी प्रकट करते हुए उपस्थित कर्मचारियों को अपनी बधाई दी ।

आकाशवाणी, महानिदेशालय के उप महानिदेशक श्रीमती अलका पाठक महोदया ने अपने आशीर्वचन में बताया कि हमारी कोशिश हिंदी को राजभाषा से हटकर जनभाषा बनाने में होनी चाहिए तभी उसका विकास होगा । हिंदी सरकारी फाइलों तक सीमित नहीं होना चाहिए । सरल हिंदी को समझने में किसी को कोई कठिनाई नहीं होती । हिंदी भाषा को जन-जन तक पहुँचाने के लिए नियमों की नहीं मानसिकता की जरूरत पड़ती है । कार्यशाला का उद्घाटन समारोह श्रीमती लता वेंकटेश, हिंदी अनुवादक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ समाप्त हुआ ।

कार्यशाला के प्रथम सत्र में आकाशवाणी, महानिदेशालय के संयुक्त निदेशक (रा.भा.) डॉ. के.एन. पाण्डेय कार्यशाला में उपस्थित कार्यालय प्रमुखों को राजभाषा की नीति तथा उसके क्रियान्वयन से संबंधित अधिनियम एवं नियमों की जानकारी प्रदान की । उन्होंने संस्कृतनिष्ठ हिंदी के सरलीकृत रूप के प्रयोग पर जोर डाला ।

कार्यशाला के द्वितीय सत्र में हिंदी शिक्षण योजना के सहायक निदेशक श्री कोमल सिंह ने दैनिक कार्यालयीन प्रयोग में राजभाषा हिंदी पर व्याख्यान दिया । कार्यालयीन प्रयोग में आनेवाली छोटी-छोटी टिप्पणियाँ लिखने का भी कर्मचारियों को अभ्यास करवाया ।

केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर

संस्थान के तकनीकी सहायक संवर्ग के कर्मचारियों के लिए दिनांक 25-02-2010 को एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन कर कुल 14 कर्मचारीगण प्रशिक्षित किए गए ।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता संस्थान के श्री एच. सी. हाईबुरु, उप-निदेशक (प्रशा. व लेखा) द्वारा

की गई । इस दौरान उन्होंने अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में यह उद्‌गार व्यक्त किया कि कार्यशाला एक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के तरह होता है जिसमें हम पूर्व में अर्जित ज्ञान को परिमार्जित व परिष्कृत करते है । उन्होंने यह भी कहा कि इस कार्यशाला का उद्‌देश्य कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेरित तथा प्रोत्साहित करने के साथ-साथ उनमें हिंदी में कार्य करने के प्रति व्याप्त झिझक को दूर करना है । इसके अतिरिक्त, उनके द्‌वारा यह भी अपील किया गया कि पदधारीगण इस कार्यशाला का भरपूर लाभ उठाएँ तथा अपने-अपने कार्य क्षेत्रों में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें । उक्त कार्यशाला का संचालन श्रीमती अवन्तिका साहू, हिंदी प्रध्यापिका, जवाहर नवोद्‌य विद्यालय, बहरमपुर (प.बं.) द्‌वारा किया गया ।

इस दौरान श्रीमती अवन्तिका साहू, हिंदी प्रध्यापिका, जवाहर नवोदय विद्यालय, बहरमपुर (प.बं.) द्‌वारा यह विचार प्रकट किया गया कि एक सरकारी कर्मचारी होने के नाते हमारा यह सांविधानिक और नैतिक कर्तव्य बनता है कि हम अपने अन्यान्य कार्य क्षेत्र के भांति राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं इसके विविध प्रावधानों के कार्यान्वयन तथा अनुपालन हेतु सतत प्रयत्नशील और कटिबद्‌ध रहें तभी हम संवैधानिक अपेक्षिताओं को पूर्ण करने में समर्थ हो सकते हैं । उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी ही एक मात्र ऐसी भाषा है जिसमें अन्य सभी भाषाओं को अपने अंदर समाहित करने की क्षमता विधमान है । इसके अतिरिक्त, उनके द्‌वारा शासकीय कार्यों में यथा संभव सरल और बोल-चाल की हिंदी के प्रयोग पर बल दिया गया । तत्पश्चात, उनके द्‌वारा कार्यशाला में ''मानक बर्तनी, लिंग, वचन और कारक जैसे हिंदी व्याकरण के गूढ़ विषयों पर विस्तृत रूप से चर्चा की गई जो कि काफी रोचक और लाभप्रद साबित हुआ । इसके अलावा, उन्होंने राजभाषा हिंदी के प्रयोजनमूलक स्वरूप एवं कार्यालयीन पत्राचार आदि के विविध स्वरूप समेत टिप्पण-आलेखन जैसे विषयों के साथ-साथ प्रशासनिक व पारिभाषिक शब्दावलियों के हिंदी पर्याय व शासकीय कार्यों में इसके अनुप्रयोग'' पर भी विशद रूप से प्रकाश डाला । साथ ही साथ उनके द्‌वारा दैनंदिन सरकारी कार्यों व पत्राचार में व्यवहृत होने वाले वाक्यांशों तथा शब्दों आदि के अंग्रेजी-हिंदी पर्याय जैसे उपयोगी सामग्री उपलब्ध कराने के अतिरिक्त उपर्युक्त विषयों पर जाँच परीक्षा ली गई जो काफी रोचक व लाभदायक सिद्‌ध हुआ । इसके अतिरिक्त, श्री आर.बी. चौधरी, सहायक निदेशक (रा.भा.) द्‌वारा कार्यशाला में राजभाषा नियम एवं अधिनियम तथा तत्संबंधी विभिन्न पहलुओं पर व्याख्यान दिया गया ।

सर्वशेष में प्रतिभागियों द्‌वारा कार्यशाला की उपयोगिता और सार्थकता पर विचार व्यक्त करने के साथ-साथ संस्थान के सहायक निदेशक (रा.भा.) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हिंदी कार्यशाला की समाप्ति की घोषणा की गई ।

आकाशवाणी, विशाखपट्‌टणम

22-12-2009 और 23-12-2009 को कार्यालय में कार्यरत सभी अधिकारियों के लिए एक विशेष 'हिंदी कार्यशाला' का आयोजन किया गया । इस दो-दिवसीय कार्यशाला में कुल मिलाकर 12 अधिकारियों ने भाग लिया ।

दिनांक 22-12-2009 को सर्वप्रथम हिंदी अनुवादक ने कार्यशाला में उपस्थित सभी अधिकारियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा कहा कि हिंदी में काम करने में जो संकोच तथा दिक्कत होती है उसे दूर करना ही इस कार्यशाला का मुख्य उद्‌देश्य है । तदुपरांत केंद्र के अधीक्षण अभियंता महोदय ने सभी प्रतिभागियों को संबोधित किया । उन्होंने कहा कि चूँकि आकाशवाणी, विशाखपट्‌टणम अब एक अधिसूचित कार्यालय बन गया है, अत: सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को चाहिए कि वे अपना अत्यधिक दैनंदिन कार्य यथासंभव हिंदी में करने की कोशिश करें और इस तरह की कार्यशालाओं का पूरा-पूरा लाभ उठाएं ताकि राजभाषा संबंधी नीति-नियमों का अनुपालन सुनिश्चित हो पाए ।

तत्पश्चात अपराह्न 02.30 बजे से सायं 05.30 बजे तक प्रथम सत्र में बतौर अतिथि वक्ता बनकर पधारे डॉ. एस. कृष्ण बाबु, पूर्व सहायक महाप्रबंधक (हिंदी), राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड, विशाखपट्‌टम ने 'राजभाषा अधिनियम एवं राजभाषा नीति' नामक विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए देश की राजभाषा के रूप में हिंदी को ही चुने जाने के पीछे समकालीन ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि का हवाला देते हुए उस समय की राजनीतिक परिस्थितियों की विस्तृत जानकारी अपनी 'पवर-पॉइंट' प्रस्तुतीकरण द्‌वारा दी ।

दिनांक 23-12-2009 को पूर्वाह्न 10.30 बजे से दोपहर 01.30 बजे तक चले दूसरे सत्र के दौरान ड्रेजिंग

कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, विशाखापट्टणम में प्रबंधक (राजभाषा) के पद पर कार्यरत डॉ. जी. रामनारायण ने 'प्रयोज़न-मूलक' हिंदी विषय पर अपने वक्तव्य के माध्यम से सरकारी काम-काज के संदर्भ में राजभाषा हिंदी के समुचित प्रयोग पर प्रकाश डालते हुए कार्यशाला में उपस्थित सभी अधिकारियों की शंकाओं को दूर किया । उन्होंने हिंदी व्याकरण से जुड़े कुछ एक अंशों पर रोशनी डाली और दैनिक काम-काज में प्रयुक्त होने वाले सरल हिंदी वाक्यांशों के प्रयोग की जानकारी भी दी ।

बी.ई.एम.एल. लिमिटेड, के.जी.एफ. कॉम्प्लेक्स 23/1, चौथा मैन रोड, एस. आर नगर, बंगलौर-560 027

दिनांक 23-12-2009 को के.जी.एफ. कॉम्प्लेक्स के विभिन्न प्रभागों में कार्यरत कर्मचारियों तथा अधिकारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । श्री बी. दुर्गा विजय चंद, कार्मिक अधिकारी (मा.सं.) ने कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि वे हिंदी के प्रचार-प्रसार में प्रतिबद्धता से योगदान दें । उन्होंने हिंदी कार्यशालाओं के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कंपनी में सभी स्तर के कार्मिकों के लिए समय-समय पर निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है और उन कार्यशालाओं में उपस्थित प्रतिभागियों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपने दैनिक कार्यालयीन कामकाज में इसका व्यवहारिक प्रयोग भी करेंगे ।

कार्यशाला के प्रथम सत्र में श्री अमज़द अलि खाँ ने प्रतिभागियों को हिंदी व्याकरण और वर्तनी पर व्याख्यान दिया जिसमें प्रतिभागियों की कई शंकाओं का समाधान हुआ ।

कार्यशाला के द्वितीय सत्र में श्री खाँ ने राजभाषा नियम और अधिनियम पर प्रकाश डालते हुए धारा 3(3) के अंतर्गत आनेवाले कागजातों, तिमाही प्रगति रिपोर्ट संबंधी प्रारुप, पत्र लेखन, टिप्पण लेखन, हिंदी में आवेदन करना आदि विषयों का अभ्यास कराया । इन विषयों को प्रतिभागियों ने गंभीरता से लिया और कहा कि ऐसी कार्यशालाओं के आयोजन के बाद उनके हिंदी कार्य में वृद्धि होगी ।

राजभाषा हिंदी के प्रसार-प्रचार तथा कार्यालयीन काम-काज में हिंदी को बढ़ावा देने हेतु बी.ई.एम.एल. लिमिटेड बेंगलूर कॉम्प्लेक्स के मानव संसाधन संगोष्ठी कक्ष में दिनांक 24 दिसंबर, 2009 को बेंगलूर कॉम्प्लेक्स के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । अपने भाषण में उपस्थित प्रतिभागियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि हमें अपना दैनिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में करना चाहिए । कंप्यूटरों पर भी अधिक से अधिक कार्य हिंदी में ही करना चाहिए ताकि कंपनी में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाया जा सके और निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सके ।

बी.ई.एम.एल. लिमिटेड के मैसूर स्थित कॉम्प्लेक्स कार्यालय में दिनांक 16 जनवरी, 2010 को हिंदी में प्रगामी प्रयोग से संबंधित कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला में कुल 28 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया और संघ की राजभाषा नीति के विभिन्न पहलुओं पर सारगर्भित व्याख्यान का लाभ उठाया ।

कार्यशाला का उद्घाटन श्री एल. युवराज कुमार सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक (तकनीकी प्रशिक्षण) ने किया । उन्होंने अपने भाषण में कहा कि हिंदी कार्यशाला का आयोजन राजभाषा से संबंधित कार्यक्रमों में सबसे महत्वपूर्ण अंग है क्योंकि कार्यशालाओं द्वारा न केवल राजभाषा में कार्य करने की प्रेरणा मिलती है बल्कि हिंदी के प्रयोग में आने वाली व्यवहारिक कठिनाइयों का निराकरण भी होता है । इसके साथ ही उन्होंने कार्यशाला में भाग लेने वाले प्रशिक्षणार्थियों को शुभकामनाएं दी और आशा व्यक्त की कि उक्त कार्यशाला सभी प्रतिभागियों के लिए सार्थक सिद्ध होगी ।

प्रथम सत्र में डॉ. मूर्ति ने प्रतिभागियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति का संक्षिप्त परिचय कराया । देवनागरी लिपि में हिंदी की सामान्य आशुद्धियों को दूर करने हेतु सुझाव दिए गए, लिपि के सरलीकरण की नीति पर प्रकाश डाला गया तथा अंग्रेजी-हिंदी शब्दों, वाक्यांशों का अभ्यास भी करवाया गया ।

कार्यशाला के द्वितीय सत्र में उन्होंने प्रतिभागियों को हिंदी व्याकरण, पत्र लेखन, कार्यालय में प्रयुक्त शब्दों की जानकारी, छोटे-छोटे पदबंधों का अभ्यास कराया । हिंदी

साफ्ट्वेयरों की उपयोगिता, ऑनलाइन अनुवाद, श्रुतलेखन, वाचांतर आदि सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग करने संबंधी जानकारी भी दिलाई गई । श्री जे.आर. गोपालकृष्णन, हिंदी अधिकारी, सामूहिक कार्यालय, बीईएमएल लिमिटेड, बेंगलूर ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया ।

न्यूक्लियर पॉवर कार्पो. आफ इंडिया लि., कैगा बिजली उत्पादन केंद्र, 1 से 4, कैगा

कैगा बिजली उत्पादन केंद्र 1 से 4 संयंत्र स्थल में दिनांक 18 व 19 मार्च, 2010 को दो एक दिवसीय हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया ।

दिनांक 18-03-2010 को अधिकारियों के लिए तथा 19-03-2010 को कर्मचारियों के लिए ये कार्यशालाएं आयोजित की गई थीं ।

दोनों कार्यशालाओं में श्री सूर्यकांत, प्रबंधक (राजभाषाओं) ने स्वागत कर उन्हें कार्यशाला के उद्देश्य से अवगत कराया कहा कि इन कार्यशालाओं का मुख्य उद्देश्य आपकी झिझक, कठिनाईयों, शंकाओं को दूर कर आप में आत्मविश्वास जागृत कर हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना है ।

तारापुर परमाणु बिजलीघर से संकाय सहायता हेतु आमंत्रित प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती सुरभि साली ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि भारत एक बहुभाषिक देश है और संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 राष्ट्र भाषाएं हैं इसलिए सभी के पढ़ाई का माध्यम भी अलग-अलग होता है । सरकारी नौकरियों में भर्ती होने वाले सभी कर्मचारी हिंदी जानते हों यह जरूरी नहीं है पर सरकारी कार्यालयों में सरकारी कार्यकलाप राजभाषा में करना अनिवार्य होता है । आपके पास कार्यसाधक ज्ञान तो है पर अभ्यास के अभाव में एक प्रकार की झिझक, शंका को दूर करना और दिशा निर्देश कर यथासंभव गागर में सागर भरना ही कार्यशालाओं का उद्देश्य होता है ।

वरिष्ठ प्रबंधक (मा. सं.) श्री वी. जी. उमामहेश्वरन ने प्रतिभागियों से कहा कि वैसे तो कार्यालय में कई अनुभागों में हिंदी में कार्य चल ही रहा है इसके साथ-साथ यदि आप सभी भी कार्यशाला से प्रेरित होकर यहां से लौटने के बाद कल से प्रतिदिन एक-एक शब्द या वाक्य भी लिखने का प्रण कर लिखना आरंभ करें तो शेष लक्ष्य भी अवश्य प्राप्त हो जाएगा ।

अपर महाप्रबंधक (मा. सं.) श्री रमेश रं थोरात ने अपने उद्भाषण में कहा कि भारत सरकार के आदेशानुसार इन कार्यशालाओं का आयोजन राजभाषा कार्यान्वयन का एक महत्वपूर्ण अंग है । इसका मुख्य उद्देश्य रोजमर्रा के कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिए मार्गदर्शन देना है । राजभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा होता है । जैसे अन्य राष्ट्रीय चिह्न महत्व रखते हैं ठीक वैसे ही राजभाषा का भी अपना महत्व होता है । राजभाषा ही सभी देश वासियों को एक सूत्र में बांधे रखती है । सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आप सभी का सहयोग अपेक्षित है ।

केंद्र निदेशक, कैगा 1 व 2, श्री जे. पी. गुप्ता प्रथम कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में आंमत्रित थे । उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि केजीए इकाई भले ही 'ग' क्षेत्र में आए पर कैगा ही नहीं नराकास के बैठकों में भी मैंने यह देखा है कि यहां राजभाषा के प्रति लोगों में इतनी रूचि है कि यह क्षेत्र बिल्कुल हिंदी क्षेत्र की भांति लगता है । बोलचाल में सभी हिंदी का अच्छा प्रयोग कर लेते हैं केवल लिखने के विषय में ही कुछ झिझक है ।

आकाशवाणी केंद्र, शिलचर

आकाशवाणी केंद्र, शिलचर के सम्मेलन कक्ष में 11 एवं 12 मार्च, 2010 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिलचर के तत्वावधान में ''संयुक्त राजभाषा कार्यशाला एवं प्रतियोगिता'' का आयोजन किया गया । कार्यशाला के प्रथम सत्र में राष्ट्रभाषा विद्यापीठ शिलचर के आचार्य एवं सचिव श्री देवेश मिश्र ने ''राजभाषा हिंदी के व्याकरण से संबंधित समस्याएं एवं उनका समाधान'' विषय पर प्रकाश डाला । जबकि दूसरे सत्र में हिंदुस्तान पेपर कॉरपोरेशन लि., कछाड़ पेपर मिल, पंचग्राम के वरिष्ठ सहायक-एसजी (राजभाषा) श्री चितरंजन लाल ने ''हिंदी के लेखन-वाचन की कठिनाई तथा समाधान'' विषय पर प्रतिभागियों को लाभान्वित किया ।

इस अवसर पर प्रतिभागियों के लिए हिंदी निबंध एवं टिप्पण व प्रारूप लेखन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया । आकाशवाणी केंद्र, शिलचर के सहायक केंद्र निदेशक

श्री मुकुल रंजन वर्मन तथा सहायक अभियंता श्री कुश प्रसाद यादव की देखरेख में केंद्र के सहायक व प्रभारी (राजभाषा) श्री विकास दास ने समस्त कार्यों का संचालन किया ।

रेल डाक सेवा ''एस'' मंडल, शिलचर

रेल डाक सेवा, ''एस'' मंडल, शिलचर के सम्मेलन कक्ष में 10 मार्च, 2010 को दो घंटे का एक ''राजभाषा कार्यशाला'' का आयोजन किया गया । श्री मानिक दास, अधीक्षक रेल डाक सेवा, ''एस'' मंडल, शिलचर द्वारा कार्यशाला के उद्घाटन के उपरांत हिंदुस्तान पेपर कॉरपोरेशन लि., कछाड़ पेपर मिल, पंचग्राम के वरिष्ठ सहायक-एसजी (राजभाषा) श्री चितरंजन लाल ने ''हिंदी के लेखन-वाचन की कठिनाई तथा समाधान'' विषय पर रेल डाक सेवा, ''एस'' मंडल के प्रतिभागियों को लाभान्वित किया । मंडल के सहायक व प्रभारी (राजभाषा) श्री सत्यज्योति नाथ ने समस्त कार्यों का संचालन किया ।

कछाड़ पेपर मिल

हिंदुस्तान पेपर कॉरपोरेशन लि., कछाड़ पेपर मिल, पंचग्राम के प्रशासनिक भवन में 17 मार्च, 2010 को एक दिवसीय ''राजभाषा कार्यशाला'' का आयोजन किया गया । कार्यशाला के प्रथम सत्र में केंद्रीय विद्यालय पंचग्राम के स्नातकोत्तर हिंदी शिक्षक श्री विन्ध्याचल गुप्ता ने ''हिंदी की व्याकरणिक समस्याएं और समाधान'' एवं ''प्रयोजन मूलक हिंदी'' पर प्रकाश डाला । श्री मदन सिंघल, सचिव एवं प्राचार्य, अग्रसेन हिंदी संस्थान, शिलचर ने ''हिंदी के लेखन-वाचन की कठिनाई तथा समाधान'' विषय पर प्रतिभागियों को लाभान्वित किया । मिल के वरिष्ठ सहायक एसजी (राजभाषा) श्री चितरंजन लाल ने मिल के उप प्रबंधक (मा सं एवं का से) श्री जगदीश देबनाथ के हिंदी निर्देशन में कार्यशाला का संचालन करते हुए उपस्थितों का स्वागत एवं धन्यवाद ज्ञापन किया ।

एन एच पी सी लि., कार्यपालक निदेशक (क्षेत्र-4) 74-75, दक्षिण मार्ग, सैक्टर-31ए, चंडीगढ़-160 030

क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ में 22 फरवरी, 2010 को अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला का उद्घाटन श्री आई डी दयाल, कार्यपालक निदेशक ने किया । श्री दयाल जी ने अपने संबोधन में कहा कि ''हिंदी हमारी अपनी भाषा है और हमें इसका प्रयोग करते हुए गौरवान्वित होना चाहिए । हमारे देश में हिंदी का प्रयोग ऐसा होना चाहिए कि हिंदी के प्रयोग के लिए इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करने की आवश्यकता ही न रह जाए । हिंदी बहुत सरल भाषा है इसे आसानी से बोला व समझा जाता है । हम अपनी बात को आसानी से दूसरे को समझा सकते हैं । शुद्ध हिंदी लिखने के लिए उच्चारण सही होना आवश्यक है ।''

उद्घाटन सत्र में श्री सीवीसी विश्वनाधा, प्रमुख (वित्त) ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि ''इस कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हम नियमित रूप से हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन करते रहते हैं । जिसमें दूसरी संस्थाओं से अतिथि वक्ताओं को आमंत्रित करते हैं ।'' मेरा सभी से अनुरोध है कि इस कार्यशाला में उपस्थित अतिथि वक्ताओं के ज्ञान का अधिक से अधिक लाभ उठाएं ।

कार्यशाला में श्री राजेंद्र सिंह बेवली, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), पंजाब एण्ड सिंघ बैंक, चंडीगढ़ ने ''राजभाषा हिंदी के प्रति सकारात्मक सोच'' विषय पर महत्वपूर्ण व्याख्यान दिए ।

कार्यशाला के तीसरे सत्र में डॉ. अशोक कुमार, प्रवक्ता (हिंदी), पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ ने ''आधुनिक परिप्रेक्ष्य में राजभाषा हिंदी का स्वरूप'' विषय पर महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया ।

कार्याशाला के चौथे सत्र में श्री देश राज, सहायक राजभाषा अधिकारी ने हिंदी पत्राचार का अभ्यास करवाया । इस कार्यशाला में 17 कार्मिकों ने भाग लिया ।

राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान दोना पावला, गोवा-403 004

विश्व हिंदी दिवस (10 जनवरी) के अवसर पर दिनांक 13-1-2010 को राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान में संस्थान के निदेशक डॉ. सतीश आर. शेट्ये की अध्यक्षता में एक दिवसीय कार्याशाला का आयोजन किया गया । अपने स्वागत भाषण में निदेशक डॉ. शेट्ये ने संस्थान में हिंदी के प्रगामी प्रयोग की स्थिति को बेहद आशाजनक बताया और

इस प्रकार के कार्यक्रमों के द्वारा हिंदी का विकास सुनिश्चित करने की बात कही । अपने भाषण में गोवा विश्वविद्यालय के हिंदी के स्वनामधन्य प्रोफेसर डॉ. रवीन्द्र नाथ मिश्र ने हिंदी भाषा को अत्यंत सजीव और वेगमान बताया तथा इस कार्यशाला हेतु उपस्थित अधिकारियों और कर्मचारियों की प्रशंसा की कि वे राजभाषा के कार्यान्वयन हेतु कितने गंभीर और प्रयत्नशील हैं । संस्थान की रा.का.स. के अध्यक्ष डॉ. ज़ाकिर अंसारी ने अपने स्वागतीय भाषण में सभी कर्मचारियों से जर्मनी, इटली, कोरिया, फ्रांस, जापान जैसे देशों से प्रेरणा लेने की बात कही जो कि अपनी स्वयं की भाषा के माध्यम से विश्व में अपनी सफलता का परचम लहरा रहे हैं । संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. राजीव निगम ने बताया कि हिंदी का पूरा इतिहास संघर्ष कर रहा है परंतु यह भाषा संघर्षों के द्वारा अपनी राह स्वयं बनाना जानती है और इसे किसी वैशाखी की जरूरत नहीं । सत्र के समापन पर संस्थान के हिंदी अधिकारी राकेश शर्मा ने मंचासीन अतिथियों और उपस्थित प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया ।

उद्घाटन सत्र के बाद प्रथम सत्र का संचालन हिंदी शिक्षण योजना, पणजी के प्राध्यापक श्री देवकी नंदन पाठक ने किया । उन्होंने उपस्थित प्रतिभागियों को केंद्र सरकार की राजभाषा नीति की बारिकियों के साथ-साथ हिंदी में पत्र-लेखन, प्रारूपण, टिप्पण आदि का प्रशिक्षण दिया । द्वितीय सत्र का संचालन संस्थान के हिंदी अधिकारी राकेश शर्मा ने किया । उन्होंने प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रतिभागियों के समक्ष हिंदी साफ्टवेयर एवं फांट्स का इंस्टालेशन, यूनिकोड़ की विशेषताएं, ऑनलाइन एवं ऑफलाइन हिंदी शब्दकोश के साथ-साथ मशीनी अनुवाद की तकनीकी बारिकियों का विश्लेषण किया । कंप्यूटर पर हिंदी का सरलता से प्रयोग कैसे किया जाए इस बारे में उपस्थित प्रतिभागियों ने काफी रूचि ली एवं अपनी जिज्ञासाओं और समस्याओं का संतोषजनक समाधान पाया । कार्यशाला में बड़ी संख्या में युवा परियोजना सहायक/प्रशिक्षुओं ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया ।

आकाशवाणी : चंद्रपूर

आकाशवाणी चंद्रपूर केंद्र में राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा बुधवार दिनांक 10 फरवरी, 2010 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

बुधवार दिनांक 10 फरवरी, 2010 को प्रमुख मार्गदर्शक सिद्धार्थ मेश्राम ने इस कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि "हमारा यह प्रयास होना चाहिए की हर कार्य अधिकतम हिंदी में हो, हिंदी कार्यशाला के अंतर्गत सरकारी पत्राचार में हिंदी का प्रयोग, हिंदी एवम अंग्रेजी वाक्य सॉचो का तुलनात्मक अध्ययन और हिंदी भाषा, हिंदी टंकन, हिंदी आशुलिपिक की परिक्षाएं पास करने पर दिए जानेवाली वेतनवृद्धी और नगद पुरस्कार की जानकरी उन्होंने दी" । सरकारी पत्राचार में हिंदी के प्रयोग को समझाने के लिए पत्रलेखन का कार्य कार्यशाला में दिया गया, और हिंदी एवम अंग्रेजी वाक्य सांचो का तुलनात्मक अध्ययन की चर्चा की ।

आकाशवाणी : पणजी गोवा

आकाशवाणी पणजी के केंद्र निदेशक श्री बी.डी. मजुमदार ने 17 मार्च, 2010 को त्रिदिवसीय हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए अध्यक्षीय उद्बोधन करते हुए यह विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भारत के संविधान में उल्लेख किया गया है कि भारतीय भाषाओं से शब्द लेकर हिंदी भाषा की शब्दावली विकसित की जाए जिससे भारत की मिली-जुली संस्कृति अभिव्यक्त हो सके । भारतीय उपमहाद्वीप की भाषाओं और बोलियों के शब्दों का हिंदी ने ग्रहण किया है । समन्वय की यह भावना भारतीय संस्कृति और हिंदी के साहित्य का प्राण है ।

मुख्य अतिथि श्री देवकी नंदन पाठक ने भारत सरकार की राजभाषा नीति और संसदीय राजभाषा समिति के विषय में विस्तार से व्याख्या की । राजभाषा हिंदी के संदर्भ में उन्होंने भारत के संविधान के विभिन्न अनुच्छेदों को उद्घृत करते हुए प्रेरणा और प्रोत्साहन के द्वारा राजभाषा हिंदी को क्रियान्वित करने पर बल दिया । उन्होंने कहा कि राष्ट्र की संपर्क भाषा, राजभाषा और विश्वभाषा के रूप में हिंदी में समन्वय की विराट भावना है । उपनिषदों और बुद्ध की विचारधारा प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कालिदास, कबीर, तुलसी आदि को उद्धृत करते हुए भारतीय भाषाओं में रचे गए महान साहित्य की विवेचना की ।

महानिदेशालय, भा.ति.सी.पु. बल

महानिदेशालय, भा.ति.सी.पुलिस द्वारा भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन एवं सरकारी काम हिंदी में

करने में कर्मचारियों की झिझक दूर करने के लिए लिपिकीय प्रशिक्षण स्कूल, एस.एस. वाहिनी, सबोली में बल की विभिन्न इकाइयों से आए 29 हैं कां/सी.एम. के लिए 14-02-2010 से 19-02-2010 तक "चार दिवसीय हिंदी कार्यशाला" अयोजित की गई ।

श्री ओम प्रकाश शर्मा, सहायक सेनानी (कार्या.) एवं प्राचार्य, लिपिकीय प्रशिक्षण स्कूल ने अपने स्वागत संबोधन में अवगत कराया कि 44वें लिपिकीय कोर्स की समाप्ति पर 29 हैं कां./सी.एम. के लिए 14.02.2010 से 19.01.2010 तक "चार दिवसीय हिंदी कार्यशाला" अयोजित की गई और आज लिपिकीय कोर्स की समाप्ति और हिंदी कार्यशाला का प्रमाणपत्र वितरण समारोह आयोजित किया गया है । उन्होंने कहा कि हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन से हर स्तर पर सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ेगा और कार्मिकों की हिंदी में काम करने में आने वाली कठिनाइयां एवं झिझक दूर होगी । उन्होंने अवगत कराया कि इस कार्यशाला में हिंदी से जुड़े विभिन्न विषयों की व्यावहारिक कक्षाएं भी आयोजित की गई और सभी प्रशिक्षणार्थियों ने इसमें उत्साह और रूचि से भाग लेकर कार्यशाला को सफल बनाया । श्री श्याम लाल, सूबेदार मेजर (रा.भा.) ने हिंदी कार्यशाला की समाप्ति पर आयोजित परीक्षा का परिणाम घोषित किया । जिसका सभी ने करतल ध्वनि से स्वागत किया ।

मुख्य अतिथि श्री बी. सिन्हा, सेनानी, एस.एस. वाहिनी ने सर्वप्रथम सभी प्रशिक्षणार्थियों को लिपिकीय कोर्स एवं हिंदी कार्यशाला में रूचिपूवर्क भाग लेने और इसके सफल आयोजन के लिए बधाई दी । उन्होंने लिपिकीय कोर्स के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि यह कोर्स एक आधारशिला के रूप में है । इसमें सिखाए गए पाठ आगे की सेवा के लिए गुरूमंत्र हैं । उन्होंने कहा कि पहले मैनुअल टाइपराइटर होते थे, पर आजकल सुविधाओं में आमूलचूल परिवर्तन हुआ है । कंप्यूटर जैसे उपकरणों से सुविधाएं बढ़ी हैं । बौद्धिक एवं शैक्षिक स्तर बढ़ने से उच्च शिक्षित कर्मी सेवा में आ रहे हैं । उन्होंने कहा कि अपने काम को सोच-समझ कर करें, आपकी भूमिका अहम है और वह संतुलित होनी चाहिए । उन्होंने हिंदी कार्यशाला के आयोजन की गंभीरता की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए हिंदी के प्रयोग को महत्व देने का अनुरोध किया और इसके प्रयोग के संबंध में सचेत रहने और जागरूक रहकर काम करने का निदेश दिया । अंत में उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए प्रशिक्षण के आयोजन एवं व्यवस्था में हुई चूक को अन्यथा न लेने का अनुरोध किया क्योंकि यह वाहिनी ढांचागत रूप में एक प्रशिक्षण केंद्र नहीं है । राशन एवं वर्दी की खरीद जैसी संवेदनशील ड्यूटी के साथ प्रशिक्षण अतिरिक्त कार्य है । इसके साथ-साथ उन्होंने 44वें कोर्स की समापन की घोषणा भी की ।

केंद्रीय भूमि जल बोर्ड, मुख्यालय फरीदाबाद

केंद्रीय भूमि जल बोर्ड मुख्यालय फरीदाबाद में दिनांक 02 फरवरी, 2010 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला के उद्घाटन के अवसर पर श्री बी. एम. झा, अध्यक्ष, केंद्रीय भूमि जल बोर्ड, ने अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी में कामकाज करना हमारा संवैधानिक दायित्व है । इस लिए हमारा कर्तव्य है कि अपना दैनिक कामकाज हिंदी में करें । श्री एस. के. सिन्हा, निदेशक (प्रशा.) ने अपना उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि हिंदी के प्रोत्साहन के लिए हम लोगों को निरन्तर प्रयत्नशील रहना चाहिए । श्री अशोक कुमार सचदेवा, निदेशक (रा.भा.) ने आशा व्यक्त की कि कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत अधिकारीगण अपना दैनिक कामकाज हिंदी में करेंगे । इस अवसर पर डॉ. वीरेन्द्र कुमार सिंह (वीरेन्द्र परमार) उपनिदेशक (रा. भा.) केंद्रीय भूमि जल बोर्ड की सद्य:प्रकाशित पुस्तक हिंदी सेवी संस्था कोश का विमोचन किया गया । इस कोश के संबंध में लेखक ने स्वयं बताया कि इसमें देश-विदेश की 103 हिंदी सेवी संस्थाओं की प्रविष्टियां शामिल की गई हैं । यह कोश प्राध्यापकों, हिंदी सेवियों, हिंदी हितैषियों के साथ-साथ सामान्य लोगों के लिए भी उपादेय है ।

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय नाशिक रोड

कर्मचारियों में हिंदी कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए मुद्रणालय में 65वीं हिंदी कार्यशाला का दिनांक 03 और 04 दिसंबर, 09 को आयोजन किया गया । स्थानीय बैंकों/उपक्रमों के राजभाषा अधिकारियों/प्रबंधकों को आमंत्रित व्याख्यान के लिए किया गया । कार्यशाला में कुल ग्यारह (11) कर्मचारी-प्रतिभागियों ने भाग लिया । सहायक निदेशक (रा.भा.) श्री एस. व्ही. मुर्हेकर ने कार्यशाला का शुभारंभ

किया । उन्होंने कहा कि कर्मचारियों की जनभाषा में अर्थात् हिंदी में कार्य करने की आदत डालनी चाहिए जिससे वे अपने कार्य अधिक प्रभावी ढंग से कर पाएंगे । उन्होंने कहा कि इस वैश्विक प्रतिस्पर्धा के युग में सभी आवश्यक भाषाओं का ज्ञान रखना समय की आवश्यता है । अब अनेक बड़े देश भारत के साथ व्यापार करने के लिए हिंदी सीख रहे हैं । उन्होंने हिंदी को अधिक व्यावहारिक और सरल बनाने के लिए सभी कर्मचारियों से हिंदी सीखने और उसका उपयोग अपने सरकारी कार्य में करने की अपील की । उन्होंने कहा कि इसका अच्छा प्रभाव आनेवाले स्टाफ पर पड़ेगा तथा आगे आनेवाले स्टाफ भी आसानी से हिंदी में कार्य कर सकेगा । कार्यशाला में राजभाषा नीति, वार्षिक कार्यक्रम और प्रोत्साहन योजनाएं, हिंदी शब्दलेखन और हिंदी पत्राचार तथा हिंदी में कार्य आरंभ कैसे करें ? इत्यादि विषयों पर व्याख्यान दिए गए । कार्यशाला का समापन श्री एस आर वाजपे, उप मुख्य अभियंता एवं प्रभारी मुख्य प्रशासन अधिकारी ने किया और उन्हीं के करकमलों से कर्मचारियों को प्रमाणपत्र दिए गए । उन्होंने हिंदी में कार्य करने के लिए मानसिकता बदलने पर जोर दिया । कर्मचारी प्रतिभागियों ने भी कार्यशाला के आयोजन और प्राप्त हिंदी ज्ञान के प्रति संतोष और प्रसन्नता व्यक्त की और सफल आयोजन के लिए श्री शेखर वि. मुर्हेकर, सहायक निदेशक (राजभाषा) और हिंदी स्टाफ को धन्यवाद दिया ।

पश्चिम रेलवे कार्या. मुख्य कारखाना प्रबंधक, दाहोद

कारखाना दाहोद के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 17-05-10 से 21-05-10 तक प्रतिदिन सोमवार से शुक्रवार समय 11.00 से 13.00 बजे तक, 05 कार्य दिवस में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला में मुख्य कारखाना प्रबंधक एवं उससे संबंधित कार्यालयों के विभिन्न अनुभागों में कार्यरत लगभग 21 कर्मचारियों ने भाग लिया । दिनांक 17.05.10 को श्री संजय अग्रवाल, अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य कारखाना प्रबंधक ने कार्यशाला का सरस्वती के फोटो पर माल्यार्पण एवं द्वीप प्रज्जवलित कर उद्घाटन किया । श्री संजय अग्रवाल, अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य कारखाना प्रबंधक ने कार्यशाला में उपस्थित प्रशिक्षार्थियों को दैनिक कार्य में सामान्यत: प्रयुक्त वाक्यांशों और शब्दावली की जानकारी दी तथा कार्यशाला के महत्व पर प्रकाश डाला । उन्होंने कहा कार्यशाला चलाने का उद्देश्य तभी पूरा होगा जब सभी प्रशिक्षार्थी अपना दैनिक कार्य हिंदी से करेगें । तत्पश्चात् कार्यशाला में अन्य अधिकारियों एवं राजभाषा अधीक्षक श्री वीरेन्द्र प्रसाद शर्मा ने प्रशिक्षार्थियों से मीटिंग में पत्राचार आदि का अभ्यास करवाया । कार्यशाला के अंतिम दिन प्रशिक्षार्थियों को विभिन्न अनुभागों से संबंधित उपयोग में आने वाले हिंदी शब्दावली की भी जानकारी दी तथा कसौटी परीक्षा ली गई जिसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान पाने वालों को नकद पुरस्कार एवं प्रास्ति पत्र से सम्मानित किया गया । कार्यशाला की फोटो सहित उक्त रिपोर्ट को राजभाषा भारती के आगामी अंक से प्रकाशित किए जाने की व्यवस्था करें ।

कार्यालय : क्षेत्रीय आयुक्त : कोयला खान भविष्य निधि क्षेत्र-दो, रांची

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय एवं कोयला खान भविष्य निधि मुख्यालय, धनबाद के दिशा-निर्देशों के आलोक में क्षेत्र-दो, रांची में एक ''हिंदी कार्यशाला'' का आयोजन किया गया । यह कार्यशाला विशेष रूप से कार्यालय के सभी अधिकारियों, अधीक्षकों, प्रभारियों एवं कर्मचारियों के लिए आयोजित किया गया है ।

सहायक आयुक्त ने अपने विचारों में कहा कि रांची क्षेत्र-II कार्यालय में काफी कार्य हिंदी में ही हो रहे हैं । उन्होंने अपने उद्गार में कहा कि हमें, अपनी राजभाषा का सम्मान करते हुए अपना सारा कार्य हिंदी में ही सम्पन्न करना चाहिए । उन्होंने कहा कि ऐसी कार्यशाला का आयोजन से न केवल राजभाषा के प्रचार-प्रसार में वृद्धि होगी बल्कि आपसी विचार-विमर्श से राजभाषा को और अधिक प्रभावी ढंग से लागू किया जा सकता है ।

श्री राजश कुमार सिन्हा, सहायक आयुक्त-दो ने बताया कि राजभाषा नियम/अधिनियम के संबंध में उपस्थित अधिकारियों और प्रभारियों को विस्तार से बताया और सरकारी पत्रों के विभिन्न रूपों से लिखने के बारे में विस्तृत वर्णन किया । उन्होंने कहा कि इस रांची-दो कार्यालय में अधिकतम काम हिंदी में हो रहे हैं और 1963 धारा 3(3) का अनुपालन करने के बाबत में सभी प्रभारियों को अवगत कराया ।

श्री दिलीप कुमार, सहायक, स्थापना अनुभाग ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि स्थापना अनुभाग में दिन प्रति-दिन अधिकतम कार्य अर्थात संपदा फाईलों, सेवा पुस्तकें, बजट आदि नोटिंग एवं प्रारूप लेखन हिंदी में पेश कर रहे हैं । श्री पी.एम.के प्रसाद कनिष्ट हिंदी अनुवादक ने धारा 3.3 के अनुपालन पर भी जोर दिया कि स्थापना अनुभाग से निकलने वाले कार्यालय आदेश, सामान्य भविष्य निधि के मंजूरी आदेश आदि द्विभाषी रूप में भी निकाली जायेगी । सहायक आयुक्त ने इस पर अपनी सहमति जताई ।

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लि. प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड के अध्यक्ष तथा प्रबंध निदेशक श्री एम.एस. राणा जी के निदेशानुसार प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद मे तीन दिवसीय प्रथम संयुक्त हिंदी कार्यशाला पूर्ण गरिमा के साथ (25-27 मार्च, 2010) सम्पन्न हुई । कर्मचारी एवं पर्यवेक्षक स्तर की इस कार्यशाला में सभी इकाईयों एवं मुख्यालय के 23 प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

शुभारंभ एवं समापन श्री अजय कुमार श्रीवास्तव विभागाध्यक्ष, प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद की अध्यक्षता में संपन्न हुआ ।

श्री श्रीवास्तव जी ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि जब विदेशी व्यक्ति और विश्वविद्यालय हिंदी अपना रहे हैं ''अवतार'' जैसी फिल्में बनाकर करोड़ों का लाभ कमा रहे हैं तब हम राजभाषा हिंदी को अपनाने में पीछे क्यों रहें ? जनभाषा हिंदी हमारे राष्ट्र का गौरव है, हमें अपना कार्य हिंदी में करके राष्ट्रीयता महसूस करनी चाहिए ।

प्रबंधक (रा.भा.) डा. आलोक कुमार रस्तोगी, ने राष्ट्रीय एकता, अखंडता और अस्मिता की प्रतीक हिंदी को प्रेम और निष्ठा से अपनाने का आह्वान करते हुए कहा कि यदि हम प्रतिमाह 2% काम हिंदी में बढ़ा दें तो, वर्ष भर में 24% काम हिंदी में बढ़ाकर अपने अनुभाग, विभाग, इकाई और निगम को यशस्वी बनाने में सक्रिय भागीदार हो सकते हैं ।

तेलुगु भाषी, मुख्य प्रशासन अधिकारी श्री रामुलु ने कार्यक्रमों का पूरा संचालन हैदराबादी हिंदी में कर, सबको मोह लिया । श्री महबूब बल्लि ने अपने कार्यालय में राजभाषा प्रगति का विवरण दिया और आभार प्रदर्शन किया ।

बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र केंद्रीय रेशम बोर्ड, मेन रोड, मोती नगर बालाघाट

बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र, केंद्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय (भारत सरकार) बालाघाट के कार्यालय परिसर में दिनांक 22-03-2010 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए कार्यालय प्रमुख श्री देबाशीष दास, वैज्ञानिक-डी एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष द्वारा कार्याशाला में उपस्थित सभी अधिकारियों व कर्मचारियों का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए अपने उद्बोधन में कहा गया कि राष्ट्रभाषा हिंदी में कार्य करना अपने देश के प्रति प्रेम व सम्मान करना है । उन्होंने इस भाषा की विशेषता को बतलाते हुए कहा कि यही विश्व की एक ऐसी भाषा है जिसमें जो बोला जाता है वही लिखा जाता है । आज हमारे अनिवासी भारतीय भी विदेशों में इस भाषा के माध्यम से अपनी पहचान बनाने में सफल हो रहे हैं । इस भाषा का व्याकरण इतना सहज व सरल है कि अहिंदी भाषा क्षेत्रों के व्यक्ति भी इसे आसानी से समझ लेते हैं व बोल भी लेते हैं ।

वैज्ञानिक महोदय द्वारा कार्यशाला के दौरान लिंगों के भेद मात्राओं के विषय में जानकारी दी गई । इसी केंद्र की प्रक्षेत्र इकाई, सिहोरा, जबलपुर के डॉ. डी.पी. सिंह, वैज्ञानिक सी द्वारा हिंदी में तकनीकी आलेख, प्रतिवेदन व पत्र कैसे लिखे तत्संबंध में विस्तृत जानकारी दी गई । अंग्रजी के तकनीकी शब्दों का हिंदी में अर्थ बतलाकर उनका अभ्यास कराया गया । इस अवसर पर इस केंद्र के श्री रामजी लाल, वैज्ञानिक सी द्वारा अपने उद्गार में हिंदी भाषा के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए कहा कि हिंदी एक भाषा ही नहीं वरन एक भावना है, जो सभी धर्मो के लोगों को एकता रूपी माला में पिरोने का काम करती है ।

एन.टी.पी.सी. लि., आफिस कांपलैक्स, सैक्टर-33, फरीदाबाद-121003 (हरियाणा)

22 जनवरी, 2010 को उप प्रबंधक/सहायक प्रबंधक स्तर के अधिकारियों के लिए एक हिंदी कार्यशाला आयोजित

की गई । इस कार्यशाला में विभिन्न विभागों के 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

इस हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन श्री आर.आर. शर्मा, महाप्रबंधक (मानव संसाधन व राजभाषा) ने किया । उन्होंने सभी प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि भाषा किसी भी देश या समाज की अस्मिता की पहचान होती है । हिंदी हमारे देश की सांस्कृतिक एकता की पहचान कराने वाली भाषा है । हिंदी को हमारे संविधान में राजभाषा का गौरव प्रदान किया गया है इसलिए हमें हिंदी का सम्मान करते हुए अपनी झिझक को दूर करके मन से हिंदी में काम करना चाहिए । उन्होंने कहा कि हमारे निगम में विद्युत उत्पादन के साथ-साथ राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी सराहनीय प्रयास किए जा रहे हैं और आज विश्व में भी हिंदी महत्वपूर्ण भाषा बन गई है, हमें अपने देश में भी हिंदी की प्रगति के लिए गम्भीर प्रयास करने चाहिए । उन्होंने कहा कि हमारे निगम में प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना के आधार पर राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा दिया जा रहा है और नियमित रूप से हिंदी कार्यशालाएं भी आयोजित की जाती हैं । उन्होंने हिंदी कार्यशालाओं के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इन कार्यशालाओं की सार्थकता तभी है जब हम इन कार्यशालाओं में दी गई जानकारी का भरपूर लाभ उठाएं और अपने दैनिक कार्यालयीन कार्य में उसका उपयोग करें । उन्होंने सभी प्रतिभागियों से अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने का आह्वान किया ।

कार्यशाला के प्रथम सत्र में डॉ. राजबीर सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने प्रतिभागियों को राजभाषा नीति के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी । उन्होंने स्लाइड्स के माध्यम से प्रतिभागियों को राजभाषा नियमों और अधिनियम के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि यह हम सब का सवैंधानिक दायित्व है कि हम अपने निगम में अपना अधिक से अधिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में ही करें ।

कार्यशाला के दूसरे सत्र में डॉ. रवि शर्मा, रीडर, श्रीराम कॉलेज ऑफ कामर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय ने प्रतिभागियों को मानक हिंदी वर्तनी तथा टिप्पण आलेखन विषय पर महत्वपूर्ण जानकारी दी । उन्होंने प्रतिभागियों को शब्दों के मानकीकरण के विषय में बताते हुए तर्कसंगत रूप से शब्दों को शुद्ध रूप में लिखने के बारे में बताया ।

कार्यशाला के अंतिम सत्र में प्रतिभागियों को हिंदी में उपलब्ध अधुनातन सॉफ्टवेयरों और उसके प्रयोग से संबंधित अद्यतन जानकारी देने के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय से तकनीकी निदेशक (राजभाषा) श्री केवल कृष्ण को आमंत्रित किया गया था । उन्होंने प्रतिभागियों को अधुनातन हिंदी सॉफ्टवेयरों के बारे में बताते हुए उनके व्यावहारिक प्रयोग के बारे में बताया । उन्होंने राजभाषा विभाग द्वारा विकसित किए गए मंत्रा एवं श्रुतलेखन हिंदी सॉफ्टवेयर के बारे में भी जानकारी दी कि इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से अब अनुवाद कार्य करना संभव है तथा केवल बोलकर ही कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य भी किया जा सकता है । उन्होंने बताया कि किस प्रकार हम हिंदी की टाइपिंग न जानते हुए भी कंप्यूटर पर हिंदी में टाइपिंग का कार्य कर सकते हैं । उन्होंने प्रतिभागियों को इन सॉफ्टवेयरों के प्रयोग का अभ्यास भी कराया तथा कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने में आने वाली उनकी शंकाओं तथा समस्याओं का समाधान भी किया ।

हिंदी कंप्यूटर कार्यशालाएं

निगम मुख्यालय में कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने का प्रशिक्षण देने के लिए आधे-आधे दिन की मेजी हिंदी कंप्यूटर कार्यशालाओं का आयोजन किया गया । इसके तहत निगम मुख्यालय में विभागवार पांच विभागों में कार्यशालाएं आयोजित की गई । 11 जनवरी, 2010 को कांट्रैक्ट्स (सिविल), 12 जनवरी, 2010 को डिजाइन (ई-एण्ड एम.), 13 जनवरी, 2010 को सीपीएमजी, 14 जनवरी, 2010 को वित्त तथा 15 जनवरी, 2010 को मानव संसाधन विभाग में कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने का प्रशिक्षण दिया गया । इन कार्यशालाओं में कुल 43 कार्मिकों को प्रशिक्षित किया गया । इन कार्यशालाओं में कार्मिकों को कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने में आने वाली कठिनाईयों के साथ-साथ कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य का अभ्यास भी कराया गया । प्रतिभागियों ने इन कार्यशालाओं में प्राप्त ज्ञान का उपयोग अपने दैनिक कार्य में करने का आश्वासन दिया तथा इस प्रकार मेजी हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन की सराहना की । इन कार्यशालाओं में राजभाषा विभाग में पदस्थ श्री स्वप्निल राज, वरिष्ठ पर्यवेक्षक (आई टी) ने प्रशिक्षण दिया ।

भारतीय कपास निगम लिमिटेड, रुडा बिल्डिंग, पांचवीं मंजिल, जामनगर रोड़ शाखा, राजकोट

दिनांक 30 दिसंबर, 2009 को श्री वी. के. सिन्हा, शाखा प्रबंधक की अध्यक्षता में "राजभाषा कार्यान्वयन एवं नीति" विषय पर "हिंदी कार्यशाला" का आयोजन किया गया । अतिथिवक्ता के रूप में श्री दीपक पंडया, सहायक निदेशक (राजभाषा) बी.एस.एन.एल. राजकोट, उपस्थित थे । इस अवसर पर शाखा प्रबंधक श्री सिन्हा ने कहा कि राजभाषा कार्यान्वयन केवल एक औपचारिकता के रूप में न लेकर हमें मूल काम-काज में हिंदी का प्रयोग करना चाहिए । अतिथि वक्ता श्री पंडया ने अपने व्याख्यान में कहा कि हिंदी देश की राष्ट्र भाषा ही नहीं इसका संबंध राष्ट्रीय मान और सम्मान के साथ हमारी संस्कृति से भी जुड़ा है । उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी व्यवस्थाओं एवं उनके अनुपालन के बारे में भी जानकारी दी । शाखा की राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी जानकारी देते हुए श्री संतोष कुमार शर्मा, राजभाषा प्रभारी, ने कहा कि किसी भाषा का मकसद भावनाओं को पहुंचाना होता है । इसके लिए यदि दूसरी भाषा के भी प्रचलित शब्दों का उपयोग करना पड़े तो इसमें कोई बुराई नहीं है ।

परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय, पश्चिमी क्षेत्र, जयपुर

परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय, पश्चिमी क्षेत्र जयपुर में दिनांक 3-2-10 को हिंदी कार्यशाला एवं दिनांक 4-2-2010 को कंप्यूटर कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

दिनांक 3-2-2010 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला का उद्घाटन कार्यवाहक क्षेत्रीय निदेशक डॉ. ए. वी. जयगोपाल ने किया । अपने उद्घाटन भाषण में डॉ. ए. वी. जयगोपाल ने कहा कि हिंदी कार्यशाला का आयोजन राजभाषा से संबंधित कार्यक्रमों में सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि कार्यशालाओं द्वारा न केवल राजभाषा में कार्य करने की प्रेरणा मिलती है बल्कि साथ ही हिंदी के प्रयोग में आने वाली व्यावहारिक समस्याओं का निराकरण भी होता है । इसके साथ ही उन्होंने कार्यशाला में भाग लेने वाले प्रशिक्षणार्थियों को शुभकामनाएं भी दीं एवं आशा व्यक्त की कि यह कार्यशाला सभी प्रशिक्षणार्थियों के लिए सार्थक सिद्ध होगी ।

कार्यशाला दो सत्रों में आयोजित की गई जिसमें प्रत्येक सत्र में दो व्याख्यान प्रस्तुत किए गए । प्रथम सत्र में पहला व्याख्यान भारतीय भू-सर्वेक्षण के हिंदी अधिकारी श्री एच. एस. दायमा ने प्रस्तुत किया । श्री दायमा ने "मानक वर्तनी व कार्यालयीन हिंदी की सामान्य त्रुटियां" विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया । अपने व्याख्यान में श्री दायमा ने कार्यालय में प्रयोग की जा रही हिंदी की सामान्य त्रुटियों पर प्रकाश डाला एवं उपस्थित प्रशिक्षुओं की जिज्ञासाओं का समाधान किया । दूसरा व्याख्यान श्री आर. के. शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा), आयकर विभाग ने प्रस्तुत किया । श्री शर्मा ने "कार्यालयीन पत्राचार" विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया ।

द्वितीय सत्र के प्रथम व्याख्यान में श्री दिनेश चन्द मीणा सहायक कार्मिक अधिकारी ने "अवकाश नियम व छुट्टी यात्रा रियायत नियमों" पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया । अपने व्याख्यान में श्री दिनेश चन्द मीणा ने अवकाश के विभिन्न प्रकारों, परिस्थितियों व बिना सूचना के अवकाश पर जाने पर अनुशासनात्मक कार्रवाही के संबंध में विस्तृत जानकारी दी । व्याख्यान के पश्चात् श्री दिनेश चन्द मीणा ने उपस्थित प्रशिक्षुओं की संबंधित जिज्ञासा का समाधान भी किया ।

द्वितीय सत्र में श्री अश्वनी कुमार शर्मा, सहायक लेखाकार ने द्वितीय व्याख्यान प्रस्तुत किया श्री अश्वनी कुमार शर्मा का व्याख्यान "आयकर के संबंध में सामान्य जानकारी" विषय पर था । अपने व्याख्यान में श्री अश्वनी कुमार शर्मा ने आयकर के संबंध में सामान्य जानकारी प्रदान की एवं आयकर के संबंध में प्रशिक्षुओं की जिज्ञासाओं का समाधान किया ।

दिनांक 4-2-2010 को कंप्यूटर कार्याशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला दो सत्रों में आयोजित की गई ।

कार्यशाला के प्रथम सत्र में श्री अभिषेक जैन प्रशिक्षुओं को सर्वप्रथम यूनीकोड फोण्ट की उपादेयता से सभी को

परिचित कराया एवं साथ ही उन्होंने यूनीकोड फोण्ट को सक्रिय करने व यूनीकोड के विभिन्न की-बोर्ड के संबंध में जानकारी प्रदान की ।

यूनीकोड फोण्ट के अनुप्रयोग के पश्चात् प्रशिक्षणार्थियों को फोण्ट परिवर्तन करने में सहायक **'परिवर्तन'** सॉफ्टवेयर की जानकारी दी । श्री अभिषेक जैन ने बताया कि परिवर्तन सॉफ्टवेयर की सहायता से किसी भी फोण्ट को अन्य फोण्ट में कैसे परिवर्तित किया जा सकता है ।

परिवर्तन सॉफ्टवेयर की सैद्धांतिक जानकारी देने के पश्चात् प्रशिक्षणार्थियों को हिंदी सॉफ्टवेयर ISM V5 के बारे में जानकारी दी गई । इसके दौरान ISM V5 का अनुप्रयोग एवं इसके विभिन्न एप्लीकेशन जैसे कि फोण्ट परिवर्तन, की-बोर्ड, टूल्स आदि के बारे में भी जानकारी दी गई । श्री अभिषेक जैन ने हिंदी टाइप न जानने की दशा में फोनिटिक की-बोर्ड का प्रयोग करने के संबंध में विस्तार से जानकारी दी जिसमें प्रशिक्षुओं को हिंदी वर्णमाला का फोनेटिक अध्ययन भी कराया गया ।

भारतीय विमान पत्तन प्राधिकरण, जयपुर

जयपुर विमानपत्तन पर दिनांक 10-3-2010 से 12-3-2010 तक तीन दिन की अर्धदिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई ।

इस अवसर पर निदेशक विमानपत्तन, जयपुर श्री अनुज अग्रवाल अपने व्याख्यान में कार्यालयी कामकाज में हिंदी का प्रयोग, लक्ष्य, कठिनाईयां एवं समाधान एवं प्रोत्साहन योजना विषय पर 90 मिनट का सारगर्भित व्याख्यान दिया, अपने पॉवर प्वाइंट प्रजेन्टेशन में निदेशक विमानपत्तन ने उपस्थित कुल 17 प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए आपसी विचार विमर्श कर अपने अनुभव शेयर किए तथा उनकी कठिनाईयों का निवारण भी किया ।

इस कार्यशाला में 3 अधिकारियों एवं 14 कर्मचारियों अर्थात् कुल 17 प्रतिभागियों ने भाग लिया, अंतिम सत्र में जांच परीक्षा भी रखी गई थी । उक्त जांच परीक्षा में प्रथम चार स्थान पर आने वालों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्रदान कर पुरस्कृत किया गया तथा सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए । निदेशक विमानपत्तन ने आशा व्यक्त की कि सभी प्रतिभागी अपना दैनिक कार्य कुशलता से हिंदी में संपादित करेंगे ।

भारतीय विमान पत्तन प्राधिकरण हवाई अड्डा राजकोट-360 006

हवाईअड्डा राजकोट में गुरुवार, दिनांक 18-19 मार्च, 2010 को "हिंदी कार्यशाला" का आयोजन किया गया है । हवाईअड्डा राजकोट की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित इस कार्यशाला का शुभारंभ राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री ईश्वर चन्द्र मित्तल, विमानक्षेत्र नियंत्रक ने कहा कि आयोजित की जाने वाली हिंदी कार्यशाला में हम सभी के शब्द ज्ञान में वृद्धि होनी चाहिए तथा हर कार्यशाला के बाद हिंदी पत्रचार में वृद्धि होनी चाहिए तभी हम लक्ष्यों को प्राप्त कर सकेंगे । कार्यशाला में हवाईअड्डा राजकोट के सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिया । इस कार्यशाला में विभिन्न विभागों से संबंधित टिप्पणियां/विभिन्न पत्राचार हिंदी में लिखने का व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया गया । इसके अलावा राजभाषा नीति, प्रोत्साहन योजनाएं आदि विषयों पर भी प्रकाश डाला गया । समन्वयक अधिकारी श्री एस. के. नेपालिया के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला समाप्त हुई ।

क्षेत्रीय तसर अनुसंधान केंद्र भंडारा

क्षेत्रीय तसर अनुसंधान केंद्र भंडारा में 30 दिसंबर 2009 को हिंदी कार्याशाला का आयोजन किया गया । इसमें रेशम बोर्ड के चारों केंद्रीय कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने हिस्सा लिया ।

अपने भाषण में डॉ. सिंघवी ने इस कार्यालय के क्रिया-कलापों और हिंदी में किए जा रहे शत प्रतिशत कार्यों का विवरण दिया । भंडारा के रेशम बोर्ड के अन्य केंद्रीय कार्यालयों द्वारा किए जा रहे हिंदी कार्यों का भी विवरण प्रस्तुत किया । मुख्य अतिथि श्री शशी कुमार वर्मा, ने हिंदी में किए जा रहे कार्यों का विवरण जानने के बाद इन प्रयासों की बहुत सराहना की । उन्होंने अपने भाषण "समाचार पत्रों में हिंदी का प्रयोग" संबंधी जानकारी का विस्तार से उल्लेख किया । साथ ही कुछ व्याकरण के गूढ़ रहस्य बताए जिनके लिए उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उनकी बहुत सराहना की ।

बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र, केंद्रीय रेशम बोर्ड, (वस्त्र मंत्रालय भारत सरकार) राजीव गांधी चौक के पास, शीतलामाता मंदिर रोड, पोस्ट बॉक्स सं. 11 भंडारा-441 904 (महाराष्ट्र)

केंद्रीय रेशम बोर्ड की संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति भंडारा के तत्वाधान में बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र, भंडारा में दिनांक 19-3-2010 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें भंडारा स्थित केंद्रीय रेशम बोर्ड के कार्यालयों के 30 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया ।

डॉ हरिनारायण चौरसिया ने "प्रयोजन मूलक हिंदी" विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया एवं चर्चा की । डॉ. श्रीमती मधुलता व्यास ने "पारिभाषिक शब्दावली के सिद्धांतों" पर विस्तृत चर्चा की एवं पारिभाषिक विभिन्न शब्दों का हिंदी से अंग्रेजी तथा अंग्रेजी से हिंदी में लिखने का अभ्यास भी कराया ।

इस अवसर पर डॉ. एन. आर. सिंघ्वी एवं श्री अहिंसक प्रल्हाद बागडे, वैज्ञानिक–सी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये । कार्यक्रम का संचालन डॉ. आर. एस. कटियार, वैज्ञानिक–सी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. एस. के माथुर ने किया ।

दूरदर्शन केंद्र, दिल्ली

दूरदर्शन केंद्र, दिल्ली में दिनांक 18 फरवरी, 2010 को केंद्र के प्रशासन एवं लेखा अनुभाग के कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

लेखा अनुभाग के कर्मचारियों के लिए आयोजित कार्यशाला में विशेषज्ञ श्री रमेश चंद्र बंसल ने कहा कि लेखा का काम हिंदी में संपन्न करना काफी आसान है क्योंकि इसमें अधिकतर आंकड़ों का उल्लेख होता है जिसके अनुवाद की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि आंकड़ों के लिए भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप ही प्रचलित है । लेखा अनुभाग के कर्मचारियों को लेखा संबंधी व्यवहारिक अभ्यास भी करने को कहा गया और उनके द्वारा किए गए कार्य की समीक्षा की गई ।

विशेषज्ञ ने कहा कि राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) के अंतर्गत जारी सभी कागजात द्विभाषी रूप में होने चाहिए । साथ ही उन्होंने कहा कि हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में दिए जाने चाहिए और पुन: यह जानकारी दी कि दूरदर्शन केंद्र, दिल्ली 'क' क्षेत्र में स्थित है, इसलिए यहा से 'क' तथा 'ख' क्षेत्रों में स्थित कार्यालयों के साथ शत्-प्रतिशत् पत्राचार हिंदी में ही किया जाना है ।

श्री बंसल ने उपस्थित कर्मचारियों को अलग-अलग सत्र में प्रशासनिक तथा लेखा कार्य का हिंदी में व्यवहारिक अभ्यास करवाने के साथ-साथ उन्हें राजभाषा नीति से भी अवगत करवाया । अभ्यास के दौरान अधिकांश कर्मचारियों ने अपने कार्य से संबंधित टिप्पणियां लिखीं, जिन पर विशेषज्ञ ने आवश्यक सुझाव दिए तथा साथ ही उन्होंने राजभाषा नियमों के संबंध में भी विस्तृत जानकारी प्रदान की ।

दूरदर्शन केंद्र, राजकोट

दिनांक 3 मार्च, 2010 को दूरदर्शन केंद्र, राजकोट में हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई । जिसमें कार्यालय अध्यक्ष सहित 25 से अधिक अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया । आकाशवाणी केंद्र राजकोट के अधीक्षण अभियंता श्री राजेश जैन और श्री वी. एस. यादव, हिंदी प्रभारी, कार्यशाला में मुख्य व्याख्याता थे ।

श्री यादव ने अपने वक्तव्य में हिंदी की राजभाषा के रूप में संवैधानिक व्यवस्था की मुख्य जानकारी दी और बताया कि राजभाषा नीतियों में भी सुधार की आवश्यकता है । अगर शिक्षा नीति में और सेवा भर्ती के दौरान हिंदी ज्ञान की अनिवार्यता हो तो शतप्रतिशत हिंदी प्रयोग न होने की समस्या नहीं होगी । वैसे भी अधिकतर सरकारी कर्मियों को हिंदी का ज्ञान तो होता है परंतु फिर भी अपेक्षित हिंदी प्रयोग नहीं होने का कारण–हिंदी प्रयोग के लिए हमारी मानसिकता एवं अभ्यास की कमी ही है ।

श्री जैन साहब ने हिंदी पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि केवल राजभाषा के रूप में हिंदी को देखने से दृष्टीकोण सीमित हो जाता है । हिंदी तो अपनी प्रकृति से और सरलता, वैज्ञानिकता, सहजता, अति विशाल समृद्ध शब्द-भंडार इत्यादि की दृष्टि से अद्वितीय भाषा के रूप में

है । इसे हर कोई बड़ी आसानी से सीख और समझ सकता है । भाषा कोई थोपने की चीज नहीं है । हिंदी प्रयोग के लिए केवल अपने दिल में हिंदी के प्रति अपना ममत्व व रुचि जागृत करने की आवश्यकता है ताकि स्वेच्छा से स्वीकार्य हो, तभी सही प्रगति होगी । हम सबको अंग्रेजी की तुलना में हिंदी तो ज्यादा समझ में आती है लेकिन फिर भी कार्य हम अंग्रेजी में ही करते हैं क्योंकि अंग्रेजी प्रयोग कर हम दूसरों के सामने अपने को सभ्य, प्रभावशाली उच्च शिक्षित मानते हैं । इसी लिए अंग्रेजी प्रयोग को अधिक महत्व दिया जाता है । हिंदी राजभाषा बनने से पहले भी देश की संपर्क भाषा, सर्वाधिक संख्या में बोली जाने वाली जनभाषा, और स्वतंत्रता आंदोलन की मुख्य भाषा थी । अब हम हिंदी का प्रयोग न करके हम राष्ट्र के कर्णधारों स्वतंत्रता सेनानियों और शहीदों का अपमान कर रहे हैं । हिंदी का प्रयोग केवल संविधान की बाध्यता या पैसे से ही नहीं, ममत्व से हो तभी आनंदायक होगा । क्योंकि बिना आनंद के कोई काम करने के लिए मन से राजी नहीं होता । समस्याएं हर जगह होती हैं, परंतु सफलता मन में दृढ़ संकल्प करने, इच्छाशक्ति की तीव्रता और प्रयास पर निर्भर है ।

आकाशवाणी, इंदौर

कार्यालय में दिनांक 10 मार्च, 2010 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । मुख्य अतिथि श्री हरेराम वाजपेयी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जो अपनी भाषा, संस्कृति, सामाजिक दायित्व और देशभक्ति को नहीं समझ पाते, वे ही हिंदी दिवस, हिंदी कार्यशाला जैसे आयोजनों के औचित्य का प्रश्न उठाते हैं । जिस प्रकार देश में दीपावली, होली के त्यौहार आस्था और उत्साहपूर्वक मनाए जाते हैं, वैसे ही हिंदी भाषा के प्रति हमारे मन में आस्था होनी चाहिए । श्री वाजपेयी ने कहा कि आकाशवाणी के कार्यक्रमों में अब नियमित रूप से भाषाई कार्यक्रम भी प्रसारित होने चाहिए, जिनमें भाषा के प्रति विचार-विमर्श हो ।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए केंद्राध्यक्ष श्री सुधीर सोधिया, अधीक्षण अभियंता ने कहा कि हम अपने मन में मंथन करें और कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग सच्चे मन से करें । उन्होंने कहा कि हमारा यह संवैधानिक कर्तव्य भी है । जब हम हिंदी में सोचते हैं, बोलते हैं तो फिर फाइलों पर टिप्पणी लिखते समय अंग्रेजी का प्रयोग क्यों करने लग जाते हैं ।

श्री सोधिया ने आगे कहा कि अधिकारी और कर्मचारी इन कार्यशालाओं में अपने कामकाज से संबंधित व्यावहारिक कठिनाइयों का निराकरण कर सकते हैं, अपनी झिझक को दूर कर सकते हैं ।

कार्यक्रम अनुभाग प्रमुख श्री प्रकाश शुजालपुरकर, सहायक केंद्र निदेशक ने कहा कि हमारे अंदर जो प्रतिभा है, उसे निखारने का काम ऐसी हिंदी कार्यशालाओं में किया जा सकता है । उन्होंने कहा कि हमें अपनी प्रतिभा का उपयोग समाज के लिए करना चाहिए ।

श्री एस. के. कदम, सहायक केंद्र अभियंता ने अपने संबोधन में कहा कि आकाशवाणी में ऐसी हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन हिंदी एकांश के सहयोग से पिछले कई वर्षों से होता रहा है और इनके माध्यम से अधिकारी और कर्मचारी अपनी दैनिक कठिनाइयों का निदान करते रहते हैं ।

इस अवसर पर श्री सुनील कुमार तिवारी, समाचार संपादक ने भी अपने विचार रखे । उन्होंने कहा कि जिस प्रकार केवल कानून बनाकर अपराध कम नहीं किए जा सकते, उसी प्रकार हिंदी भाषा का प्रयोग भी हमें सच्चे मन से करना होगा । उन्होंने कहा कि जिस प्रकार दीपावली पर हम ज्योति जलाते हैं, उसी तरह इन कार्यशालाओं के माध्यम से हमें अपने मन में हिंदी की लौ जलाना चाहिए । हमें अपने बच्चों के मन में भी अपनी मातृभाषा व संस्कृति के प्रति अपनत्व की भावना जागृत करना होगी ।

यूको बैंक अंचल कार्यालय, सैनिक बाजार, मेन रोड, रांची-834 001

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, रांची द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), रांची के तत्वाधान में अंतर बैंक यूनीकोड हिंदी कार्यशाला का आयोजन स्थानीय बसंत डायनेमिक्स की कंप्यूटर प्रयोगशाला में किया गया । इस कार्यशाला में बिना किसी खर्च के कंप्यूटर को हिंदी में कार्य करने योग्य बनाने और उनपर हिंदी में काम करने का प्रशिक्षण विभिन्न बैंकों के उन विशेषज्ञ अधिकारियों को दिया गया, जिनपर अपने संस्थानों के कार्मिकों को प्रशिक्षण देने की जिम्मेदारी है । यूको बैंक के सहायक मुख्य अधिकारी

(राजभाषा) डॉ. सुधीर कुमार साहु ने अतिथियों एवं प्रशिक्षुओं का स्वागत करते हुए उन्हें कार्यशाला के महत्व एवं उद्देश्यों की जानकारी दी । कार्यशाला का उद्घाटन यूको बैंक, अंचल कार्यालय, रांची के मुख्य अधिकारी श्री उदय प्रसाद श्रीवास्तव ने किया । उद्घाटन समारोह को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), रांची के सदस्य श्री किरण विक्टर किडो एवं बसंत डायनेमिक्स के निदेशक सरदार देवेन्द्र सिंह ने भी संबोधित किया । तत्पश्चात् कार्यशाला में उपस्थित प्रशिक्षुओं को यूको बैंक के सहायक मुख्य अधिकारी (राजभाषा) डॉ सुधीर कुमार साहु ने विभिन्न सत्रों में कंप्यूटर में निःशुल्क यूनीकोड एप्लिकेशन सक्रिय करके उसके माध्यम से माइक्रोसॉफ्ट वर्ड, माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल, एवं माइक्रोसॉफ्ट पावरप्वाइंट द्वारा सभी प्रकार के कामकाज हिंदी में करने का सैद्धांतिक एवं प्रयोगिक प्रशिक्षण प्रदान किया । विभिन्न बैंकों के राजभाषा प्रभारी अधिकारियों ने भी इस कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त किया ।

भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण, मुरगांव, गोवा बेस

चालू तिमाही अक्तूबर-दिसंबर 09 के दौरान दो एक दिवसीय हिंदी कार्यशालाएं क्रमश: दिनांक 29-10-2009 एवं 11-12-2009 को इस बेस कार्यालय पर आयोजित की गई ।

प्रथम वक्ता के रूप में उपस्थितों को संबोधित करते हुए श्री राजेश रंजन ने हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए इसे आम से खास तक (mass to class) की भाषा बताया । इस भाषा में सहजता है । यह देश की अस्मिता की सूचक है । यह पूरे देश में संपर्क का जरिया है । देश में इसकी व्यापक स्वीकार्यता है । समय के साथ हिंदी में शब्दों को अनुकूलन की क्षमता भी विकसित हुई है । जैसे Tragedy-त्रासदी, Comedy-कामेडी, Academy-अकादमी आदि ।

दूसरे सत्र में वक्ता श्री डी. एस. रावत ने हिंदी का राजभाषा के रूप में यात्रा, संसदीय राजभाषा समिति का गठन, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग का गठन, राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976, धारा 3 (3) के दस्तावेज एवं उन्हें तैयार करना, कार्यालयीन प्रयोग की भाषा आदि विषयों के ऊपर विस्तार से प्रकाश डाला जो सभी उपस्थित प्रतिभागियों के लिए ज्ञानवर्धक एवं कार्यालयी दृष्टि से काफी लाभदायक रहा । उन्होंने हिंदी के राष्ट्रभाषा, राजभाषा एवं संपर्क भाषा के स्वरूप पर भी अपने विचार व्यक्त किए ।

11-12-2009 को संपन्न कार्यशाला में श्री राजेन्द्र वर्मा, उप-निदेशक (कार्या.), हिंदी शिक्षण योजना, पुणे को मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया । श्री वर्मा ने कम्प्यूटरों में युनिकोड सक्रिय करने तथा विभिन्न प्रकार के टाइपराइटरों के बारे में विस्तार से बताया । साथ ही उन्होंने युनिकोड के महत्व एवं उपयोगिता पर भी अपने विचार व्यक्त किए । हिंदी प्रयोग की दृष्टि से कार्यशाला बहुत उपयोगी सिद्ध हुई । कार्यशाला के अंत में उन्होंने उपस्थितों की जिज्ञासाओं का समाधान किया । अनुवादक श्री आंजना के धन्यवाद के साथ कार्यशाला समाप्त हुई ।

(घ) हिंदी दिवस

मुख्य नियंत्रण सुविधा, हासन

मुख्य नियंत्रण सुविधा, हासन में सोमवार दिनांक 11-1-2010 को विश्व हिंदी दिवस बड़े उत्साह और हर्षोल्लास से मनाया गया । इस अवसर पर मुख्य नियंत्रण सुविधा के तकनीकी वर्ग तथा प्रशासनिक वर्ग के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए अलग-अलग हिंदी शब्दावली प्रतियोगिता और सामान्यज्ञान प्रतियोगिता आयोजित की गई । कुल 27 अधिकारियों/कर्मचारियों ने विश्व हिंदी दिवस पर आयोजित प्रतियोगिता में भारी उत्साह और उमंग के साथ भाग लिया । दोनों ही वर्गों में प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा दो सांत्वना पुरस्कार, इस प्रकार पांच-पांच पुरस्कार प्रदान किए गए । पुरस्कार वितरण श्री बी. वी. कानडे, समूह निदेशक/अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा श्री एच. आर. चन्द्रशेखर, प्रधान, कार्मिक एवं सामान्य प्रशासन/आंविस, एम. सी. एफ. द्वारा किया गया । श्री एस. एन. रामकृष्णा, वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी, एमसीएफ भी इस अवसर पर उपस्थित रहे ।

इस अवसर पर श्री विपिन अग्रवाल, वैज्ञानिक/अभियंता-एस. सी. ने हिंदी के बारे में एक मार्मिक कविता प्रस्तुत की । श्री सोनू जैन, क. हिंदी अनुवादक ने विश्व हिंदी दिवस का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया ।

श्री के. विवेकानन्द, हिंदी अधिकारी एमसीएफ ने सम्पूर्ण कार्यक्रम का सफल संयोजन एवं संचालन किया ।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओड़िशा, भुवनेश्वर

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सिविल लेखा परीक्षा), कार्यालय महालेखाकार (वाणिज्यक निर्माण एवं प्राप्ति लेखा परीक्षा), कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) एवं कार्यालय वरिष्ठ उप महालेखाकार (एल. बी. ए. एवं ए), ओड़िशा ने वर्ष 2009 का हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा सम्मिलित रूप से मिलजुल कर मनाए । दिनांक 1-9-2009 से 14-9-2009 तक हिंदी पखवाड़ा एवं दिनांक 14-9-2009 को हिंदी दिवस एवं समापन समारोह मिलजुल कर मनाए ।

दिनांक 1-9-2009 को हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन समारोह प्रधान महालेखाकार (सी.ए.) श्रीमान बी. आर. खैरनार की अध्यक्षता में कार्यालय के प्रांगण में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया ।

समारोह के अध्यक्ष अपने संक्षिप्त भाषण में राजभाषा विभाग के नियमों तथा हिंदी के प्रचार प्रसार में केंद्रीय सरकार कार्यालयों की भूमिका को विस्तार से समझाए । उन्होंने हिंदी दिवस के महत्व को समझाते हुए हिंदी को ज्यादा से ज्यादा प्रयोग में लाने का आग्रह किया । राजभाषा विभाग द्वारा कर्मचारियों को दिए जाने वाले प्रोत्साहन के बारे में भी अध्यक्ष महोदय ने विस्तृत जानकारी प्रदान की । मुख्य अतिथि श्रीमती नंदना मुंशी ने अपने अभिभाषण में कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि ये दिवस एक वाणी पर्व के समान है । उन्होंने कर्मचारियों में ये एहसास दिलाया कि हिंदी को राष्ट्रभाषा का गौरव हासिल हो गया है एवं इसे समृद्ध बनाने का दायित्व सभी कर्मचारी और भारतवासी पर है ।

तदुपरांत सम्मानीय अतिथि महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ने भारत के एक क्रांतीकारी कवि स्व. रामप्रसाद बिसमिल की इन पंक्तियों 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है' को दुहराते हुए कहा कि देश की अपनी राष्ट्रभाषा की उन्नति के लिए हमारे दिल में एक मजबूत तमन्ना या इरादा होना चाहिए । राष्ट्र तभी उन्नति के शिखर पर चढ़ सकता है जब लोगों के मन में एकता की भावना हो । ये एकता का कार्य हिंदी द्वारा संभव है । उन्होंने आगे कहा कि इस एकता के कारण देश प्रगति और समृद्धि की ओर बढ़ सकता है ।

उसके बाद प्रत्येक कार्यालय के हिंदी अधिकारी हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित होने वाले विभिन्न प्रतियोगिताओं के बारे में सूचना दी ।

दिनांक 1-9-2009 से 13-9-2009 तक पखवाड़ा मनाया गया जिसके दौरान कार्यालय में विभिन्न प्रतियोगिताएं वर्गवार आयोजित किए गए । वरिष्ठ लेखाअधिकारी/लेखा अधिकारी, सहायक लेखा अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग के लिए अलग-अलग प्रतियोगिताएं आयोजित किए गए, जिस में शुद्ध शब्द चयन, कविता पाठ, वादविवाद, श्रुतलेखन शामिल हैं । आखिर में एक रंगारंग अंताक्षरी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिस में सभी वर्ग के कर्मचारियों ने भाग लिया ।

दिनांक 14-9-2009 को पखवाड़े का समापन समारोह स्थानीय जयदेव भवन में बड़े धूम-धाम से आयोजित किया गया । समारोह की अध्यक्षता (सिविल लेखापरीक्षा) के प्रधान महालेखाकार श्रीमान बी. आर. खैरनार द्वारा किया गया ।

श्रीमती आत्रेयी दास, महालेखाकार (सी. डब्ल्यू. आर. ए.) द्वारा हिंदी पखवाड़े के अवसर पर गृह मंत्रीजी का संदेश पढ़ा गया । सम्मानीय अतिथि डॉ. गंगाधर वानोडे ने अपने अभिभाषण में कहा कि केंद्रीय सरकारी कार्यालय तथा इस से जुड़े संस्थाओं के कर्मचारियों को अपनी राष्ट्रभाषा हिंदी के महत्व को ध्यान में रखते हुए अपने कार्यालय का काम ज्यादा से ज्यादा हिंदी में करना चाहिए ।

मुख्य वक्ता डॉ. अंजुमन आरा ने अपने सारगर्भीत भाषण में कहा कि स्वतंत्रता के पूर्व तथा स्वतंत्रता के बाद भी हिंदी पूरी तरह अपने शैशव अवस्था को पहुंच चुकी थी । उन्होंने कहा कि लोगों के मन में यें भावना कदापि नहीं होनी

चाहिए कि हिंदी के आने से क्षेत्रीय भाषाओं पर कोई प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा । उन्होंने राज्य में हिंदी की दयनीय स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा कि स्कूलों में हिंदी अध्यापकों की कमी तथा अस्थाई तौर पर तैनाती हिंदी अध्यापकों के कारण यह स्थिति उत्पन्न हो गई । उन्होंने हिंदी के प्रचार एवं प्रसार हेतु राज्य में एक हिंदी साहित्य अकादमी की स्थापना पर बल दिया ।

मुख्य अतिथि डॉ. बहिदार जी ने अपने संक्षिप्त अभिभाषण में कहा कि यह उनका पहला हिंदी अभिभाषण है । उन्होंने संतोष व्यक्त किया कि हिंदी पखवाड़े के पावन अवसर पर उन्हें ये पहला अवसर मिला जिसके लिए उन्होंने अपना आभार व्यक्त किया । उन्होंने भारतीय संस्कृति की तुलना एक बहुरंगीय मोजाइक फर्श से किया जिसमें कई रंग के पत्थर जड़े हुए रहकर एक अनोखी शोभा प्रदान करते हैं । उसी तरह भारत में कई भाषाएं, कई संस्कृतियां मिलकर एकता की पहचान दिलाते हैं । साहित्यिक क्षेत्र में हिंदी बहुत आगे निकल गई । उन्होंने खेद व्यक्त किया कि तकनीकी एवं चिकित्सा के क्षेत्र में हिंदी आगे नहीं बढ़ पाई । फिर भी उन्होंने आशा व्यक्त की बहुत जल्द तकनीकी, वैज्ञानिकी तथा चिकित्सा क्षेत्र में भी हिंदी अपनी जगह बना लेगी । अंत में उन्होंने मानवाधिकार एवं उसके आयोग का एक संक्षिप्त परिचय प्रदान किया उस के बाद विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि, प्रधान महालेखाकार तथा आमंत्रित अन्य अतिथियों के करकमलों से पुरस्कार प्रदान किए गए ।

आकाशवाणी कटक

विज्ञापन प्रसारण सेवा, आकाशवाणी, कटक में 1 सितंबर से 15 सितम्बर, 2009 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया । इस बार आकाशवाणी, कटक के साथ संयुक्त रूप से पखवाड़े का आयोजन किया गया । 1 सितंबर को आयोजित उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता आकाशवाणी, कटक की केंद्र निदेशक सुश्री संजीवनी सुधा पट्टनायक ने की । राजभाषा हिंदी के महत्व पर प्रकाश डाला । उन्होंने पखवाड़े के दौरान आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं का विस्तृत विवरण दिया । आकाशवाणी, कटक के केंद्र अभियंता श्री बसंत कुमार बेहेरा ने अपने उद्बोधन में कहा कि हिंदी एक ऐसी कड़ी है जो जोड़ने का कार्य करती है । विज्ञापन प्रसारण सेवा के सहायक केंद्र निदेशक तथा कार्यालय प्रमुख डॉ यशोवन्त नारायण धरजी ने अपने अभिभाषण में कहा कि हिंदी का प्रचार और प्रसार करने में आकाशवाणी, दूरदर्शन और हिंदी चलचित्रों का बहुत बड़ा योगदान है । तुलसीदास रचित 'रामचरित मानस' ने भी हिंदी का प्रचार करने में प्रमुख भूमिका निभायी है । उन्होंने आगे कहा जन-जन तक पहुंचने वाली, समझने वाला और प्रयोग में आने वाली भाषा 'हिंदी' है ।

इस अवसर पर केंद्रीय हिंदी संस्थान के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. गंगाधर वानोडे मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे । उन्होंने अपने अभिभाषण में हिंदी भाषा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी साहित्य अति उच्च कोटि का है । उन्होंने आगे कहा कि हमें ज्यादा से ज्यादा सरकारी काम-काज हिंदी में करके अपने देश के प्रति हमारी अपेक्षाएं एवं जिम्मेदारी को निभाना चाहिए । आकाशवाणी, कटक की केंद्र निदेशक सुश्री संजीवनी सुधा पट्नायक ने अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में कहा कि हमें बिना किसी झिझक एवं संकोच के सरल हिंदी भाषा का प्रयोग करके अपना सरकारी काम-काज अधिक से अधिक हिंदी में करना चाहिए । अंत में आकाशवाणी, कटक के हिंदी अधिकारी श्री बासुदेव सिंह ने राजभाषा हिंदी में कार्यालयीन कार्य करने के लिए समस्त अधिकारी/कर्मचारियों से आग्रह किया तथा अतिथियों को धन्यवाद अर्पित किया ।

समापन समारोह में मुख्य वक्ता डॉ. रवीन्द्रनाथ मिश्र ने सभा को संबोधित करते हुए हिंदी साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर सविस्तार प्रकाश डाला । मुख्य अतिथि प्रो. राधाकान्त मिश्र ने अपने उद्बोधन में कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा है तथा बहुत बड़े भू-भाग में बोली जाती है । उन्होंने कार्यालयीन तथा व्यवहारिक हिंदी पर जोर देते हुए कहा कि इसे सीखना हमारे लिये बहुत जरूरी है क्योंकि इससे हम कार्यालय के कार्य बिना झिझक के हिंदी में कर सकते हैं । उन्होंने आगे कहा कि जिस गति से हिंदी का विकास सिर्फ अपने देश में नहीं बल्कि विदेशों में भी हो रहा है, उसे देखकर हमें आशान्वित होना चाहिए ।

एनएमडीसी लिमिटेड मुख्यालय खनिज भवन, कैसल हिल्स मासाब टैंक, हैदराबाद

एनएमडीसी लिमिटेड मुख्यालय, हैदराबाद में दिनांक 14 सितंबर, 2009 से 16 अक्तूबर, 2009 तक

'राजभाषा माह', विभिन्न श्रेणियों के कर्मचारियों के लिए हिंदी प्रतियोगिताओं हिंदी कार्यशाला तथा राजभाषा समारोह आदि कार्यक्रमों के आयोजन के साथ मनाया गया ।

दिनांक 16 अक्तूबर, 2009 को मुख्यालय में राजभाषा समारोह एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया ।

श्री राणा सोम, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक महोदय ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि निगम लोगों, खासकर अपने साथ काम करनेवाले तथा आसपास के लोगों से जुड़ा रहना चाहता है और इसके लिए हिंदी भाषा महत्वपूर्ण साधन है । कंपनी अपनी परंपरा के अनुसार हर क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने में विश्वास रखती है और राजभाषा के लिए भी यह बात लागू होती है । निगम हिंदी को राजभाषा के रूप में स्थापित करने, उसके प्रयोग को बढ़ाने तथा कार्यान्वयन में वृद्धि करने में हमेशा तत्पर रहा है और इसके प्रयासों की मान्यता में निगम को राष्ट्र के उच्चतम राजभाषा पुरस्कार–इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड से सम्मानित किया गया है । मुख्य अतिथि प्रो. ऋषभ देव शर्मा ने अपने भाषण में हिंदी के विकास की चर्चा की तथा वर्तमान में राजभाषा के रूप में इसके औचित्य पर प्रकाश डाला । एनएमडीसी को राजभाषा कार्यान्वयन एवं इसके प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग के लिए "इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार" प्राप्त करने पर बधाई दी । राजभाषा माह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को अध्यक्ष, मुख्य अतिथि एवं विशेष अतिथियों ने पुरस्कार प्रदान किए ।

उप क्षेत्रीय कार्यालय थाने, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, कामगार रुग्णालय परिसर, वागले इस्टेट, थाने-400604

निगम के उप क्षेत्रीय कार्यालय थाने में संयुक्त निदेशक (प्रभारी) श्री संजय कुमार सिन्हा की अध्यक्षता में "हिंदी दिवस समारोह" धूमधाम से मनाया गया ।

मुख्य अतिथि श्री राजेश सिंह जी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि अपने विचार व्यक्त करने का हिंदी एक मात्र ऐसी भाषा है, जो सहज एवं सुलभ है । हिंदी भाषा का सम्मान करते हुए साथ-साथ अन्य भाषाओं का भी सम्मान करना चाहिए। उन्होंने निगम के कर्मचारियों का हिंदी के प्रति रुचि एवं उत्साह देखकर आनंद व्यक्त किया । प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी कर्मचारियों को मुख्य अतिथि ने बधाई दी । मराठी मातृभाषा होने के बावजूद भी काफी मात्रा में कर्मचारियों की प्रतियोगिता में रुचि देखकर, उत्साह देखकर उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की ।

श्री संजय कुमार सिन्हा, संयुक्त निदेशक (प्रभारी) ने अपने अध्यक्षीय भाषण में मुख्य अतिथि का आभार व्यक्त किया । उन्होंने सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से आवाहन किया कि वे अपने ज्यादा से ज्यादा कार्य हिंदी भाषा में करें और जितना संभव होगा उतना भारत सरकार के नियमों का पालन करने की कोशिश करें । राजभाषा एक सद्भावना प्रेरणा पर आधारित है । उन्होंने यह भी आह्वान किया कि सभी कर्मचारियों एवं अधिकारीगण अपना हस्ताक्षर हिंदी में करें। उपस्थिति पंजिका में हस्ताक्षर हिंदी में करें । विभिन्न पत्र, अनौपचारिक टिप्पणी में अधिकारी अपना हस्ताक्षर हिंदी में कर सकते हैं । जो अधिकारी, कर्मचारी हिंदी में काम करने में सक्षम है, उन्हें हिंदी में काम करना चाहिए। जिन कर्मचारियों को प्रशिक्षण की आवश्यकता है, उन्हें प्रशिक्षण हेतु हिंदी कार्यशाला में भेज सकते हैं ।

श्री एस. व्ही. सावलकर, सचिव, एसिक कर्मचारी संघटना ने हिंदी दिवस के महत्व पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सिर्फ हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी में कार्य करने से या प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने से हिंदी का विकास नहीं होगा, बल्कि पखवाड़ा समाप्त होने के बाद भी निरंतर हिंदी में काम करने की कोशिश होनी चाहिए । हिंदी राजभाषा अपनी मातृभाषा के अत्यंत करीब है । हिंदी में कार्य करने में कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए । हस्ताक्षर से हिंदी के कार्य की शुरुआत करें । उन्होंने अपने सुझाव व्यक्त करते हुए कहा कि, उप क्षेत्रीय कार्यालय थाने में भी राजभाषा विभाग होना चाहिए,

राजभाषा विभाग का गठन करना चाहिए और वहां अनुवादक, हिंदी अधिकारी जैसे पद होना चाहिए जो हर शाखा का निरीक्षण करेंगे और हिंदी में कार्य करने के लिए बढ़ावा देंगे । प्रोत्साहित करेंगे । इससे ही हिंदी का अधिकाधिक विकास होगा ।

राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (नाईपर), सैक्टर 67, एस.ए. एस. नगर (मोहाली)-160062

14 से 29 सितम्बर, 2009 तक राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं कार्यान्वयन के लिए 'हिंदी पखवाड़ा' का आयोजन किया गया । हिंदी पखवाड़ा के आयोजन का मुख्य उद्देश्य, संस्थान में हिंदी का प्रचार-प्रसार तथा इसके अधिक से अधिक प्रयोग को बढ़ावा देना है ।

'हिंदी दिवस' 14 सितंबर से आरंभ हुए हिंदी पखवाड़ा के दौरान श्रुतलेख, अंग्रेजी शब्दों का हिंदी अनुवाद, निबंध, लघु हिंदी कार्यशाला, अंताक्षरी, शुद्ध लेखन, राजभाषा सामान्य ज्ञान, राजभाषा पाठ वाचन, 'तस्वीर से कहानी बनाओ' आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के विद्यार्थियों तथा कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया । इस वर्ष पखवाड़े के दौरान 9 विभिन्न प्रतियोगिताओं में 250 से अधिक प्रतिभागियों ने अपनी सहभागिता निभाई ।

29 सितंबर, 2009 को आयोजित हिंदी पखवाड़ा के समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री उदय कुमार सिन्हा, एक्जिक्यूटिव एडिटर, अमर उजाला, चण्डीगढ़ थे । उन्होंने कहा कि हिंदी देश के जन-जन की भाषा है । हम जितना हिंदी को सरल और सहज रूप से बोलेंगे, उससे स्वयं के आत्मविश्वास में बहुत वृद्धि होगी । उन्होंने समस्त उपस्थितजनों से अपील की कि लोगों को आगे आकर हिंदी का सम्मान करते हुए इसके प्रचार-प्रसार में सहभागिता निभानी चाहिए । आज बाजार ने स्वयं हिंदी को देश-विदेश में पहुंचा दिया है, जो आज किसी की दया की मोहताज नहीं है । उन्होंने नाईपर की प्रशंसा करते हुए कहा कि एक वैज्ञानिक संस्थान होने के बावजूद हिंदी के संवर्धन का जो कार्य किया है वो वाकई में अनुकरणीय है । हमें हिंदी का प्रयोग और प्रचार-प्रसार करने में किसी भी प्रकार की हिचक नहीं होनी चाहिए । हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है, अतः हमें अपनी राष्ट्रभाषा पर गर्व होना चाहिए। उन्होंने संस्थान में राजभाषा के सुचारू रूप से प्रयोग के लिए हिंदी कक्ष को भी बधाई दी । इसके साथ ही उन्होंने संस्थान की राजभाषा पत्रिका 'नाईपर दर्पण' के कलेवर की प्रशंसा करते हुए कहा कि इसमें प्रकाशित लेख उच्च कोटि के हैं ।

निदेशक नाईपर प्रो. पी. रामाराव ने अपने भाषण के दौरान संस्थान के समस्त विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों से प्रतिदिन कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के साथ-साथ समय-समय पर आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं में पूरे मनोयोग से भाग लेने की अपील की । उन्होंने कहा कि, हिंदी एक सशक्त एवं समृद्ध भाषा होने के साथ भारतीय संस्कृति की पहचान है । राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार द्वारा लागू की जा रही राजभाषा नीति प्रेरणा और प्रोत्साहन पर आधारित है । इस नीति का अनुपालन करते हुए राजभाषा का प्रयोग जो भी अधिकारी एवं कर्मचारी करेंगे तभी जाकर हम राजभाषा को उसका तय संवैधानिक दर्जा दिला सकेंगे ।

प्रो. सरनजीत सिंह, संकायध्यक्ष, नाईपर ने राजभाषा पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि जब तक हिंदी को लेकर आत्मसम्मान की भावना नहीं आएगी, हिंदी का विकास होना मुश्किल है । उन्होंने आगे गर्व से कहा नाईपर में राजभाषा के प्रयोग के लिए अनुकूल वातावरण मौजूद है । प्रो. सरनजीत ने कहा कि हम चाहते हैं कि यह संस्थान ट्राईसिटी (चण्डीगढ़, मोहाली एवं पंचकुला) में हिंदी में सबसे उच्च स्तर का संस्थान हो और यह लक्ष्य हम जल्द ही प्राप्त भी कर लेंगे । प्रो. सिंह ने हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के सफल संचालन के लिए हिंदी पखवाड़ा समिति की भी प्रशंसा की ।

(ङ) विश्व हिंदी दिवस

विदेश मंत्रालय द्वारा आयोजित विश्व हिंदी दिवस, 10 जनवरी, 2010

विदेश मंत्रालय और विदेश स्थित मिशनों द्वारा वर्ष 2006 से 10 जनवरी, का दिन प्रति वर्ष 'विश्व हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष भी 10 जनवरी, 2010 को विदेश मंत्रालय द्वारा विदेश सेवा संस्थान, नई दिल्ली में एक समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर विदेश राज्य मंत्री, श्रीमती प्रनीत कौर मुख्य अतिथि थीं। मुख्य अतिथि के रूप में अपने वक्तव्य में विदेश राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर ने कहा कि "विकास के इस दौर में वैश्विक मंच पर भारत ने एक सम्मानजनक स्थान हासिल कर लिया है। आज कंप्यूटर के क्षेत्र में हमारे युवा विशेषज्ञों ने जो ख्याति अर्जित की है, वह सर्वविदित है। यह जरूरी है कि हिंदी इस प्रगति में कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़े, नहीं तो वह पिछड़ जाएगी। हमारे अनेक साफ्टवेयर इंजीनियर इस दिशा में पूरी निष्ठा और समर्पण भाव से लगे हुए हैं, जिसके कुछ अच्छे परिणाम भी सामने आए हैं। अनेक वेबसाइट और ब्लॉग अब हिंदी में भी उपलब्ध हैं और इनमें से अनेक यूनीकोड आधारित हैं जो हिंदी को वैश्विक धरातल पर स्थापित करने में बहुत सहायक होंगे। मुझे यह बताते हुए बहुत खुशी है कि विदेश मंत्रालय की दोनों वेबसाइट यूनीकोड में हैं। इंटरनेट और हिंदी सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में अभी काफी काम किया जाना बाकी है, लेकिन मुझे विश्वास है कि सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी तेजी से आगे बढ़ेगी, क्योंकि तकनीकी दृष्टि से यह भाषा सूचना प्रौद्योगिकी के सर्वथा अनुकूल है।"

इस अवसर पर प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह जी का संदेश भी प्रेषित किया गया (देखे संलग्न)। विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा तथा दिल्ली, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय तथा दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ने वाले विदेशी विद्यार्थियों के लिए मंत्रालय द्वारा आयोजित हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता के विजेताओं को इस समारोह में नगद पुरस्कार प्रमाणपत्र व पुस्तकें दी गई। भारत में रहकर हिंदी सीख रहे चार विदेशी विद्यार्थियों ने इस अवसर पर हिंदी में अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के सहयोग से एक कवि सम्मेलन भी आयोजित किया गया। विख्यात कवि डॉ. कन्हैयालाल नंदन, श्री आलोक श्रीवास्तव, डॉ. (श्रीमती) कीर्ति काले, डॉ. सुनील जोगी एवं श्री सुरेंद्र दुबे ने इसमें हिस्सा लिया। बहुत बड़ी संख्या में विदेश स्थिति भारतीय मिशन जैसे क्रोएशिया, सूरीनाम, यूनाइटेड किंगडम, कनाडा, इंडोनेशिया, कुवैत, यमन, दक्षिण अफ्रीका, वियतनाम, बोत्सवाना, मस्कट, अज्बेकिस्तान, मॉरीशस, कोरिया, लागोस, जर्मनी, जापान, अमरीका, ट्रिनिडाड-टोबैगो, अजरबेजान, श्रीलंका, कजाकिस्तान, बुल्गारिया, इसराइल अत्यादि में श्री विश्व हिंदी दिवस समारोह आयोजित किए गए। कहीं-कहीं पर हमारे मिशनों ने हिंदी दिवस पढ़ा रहे स्थानीय विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर संयुक्त रूप से यह कार्यक्रम आयोजित किए।

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर विदेश मंत्रालय हिंदी के प्रचार-प्रसार के प्रति स्वयं को पुनः समर्पित करते हुए विदेश स्थित अपने मिशनों के माध्यम से नई-नई पहले करने के लिए तत्पर हैं।

भारत सरकार परमाणु ऊर्जा विभाग नाभिकीय ईंधन सम्मिश्र हैदराबाद

नाभिकीय ईंधन सम्मिश्र (एनएफसी) में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन

नाभिकीय ईंधन सम्मिश्र, हैदराबाद में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर डॉ. रोकश कुमार वाजपेयी, वैज्ञानिक, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, मुंबई अतिथि वक्ता थे-अपने नाभिकीय अपशिष्ट निपटान विषय पर अपने व्याख्यान में देश और विदेश में नाभिकीय अपशिष्ट के निपटान के लिए अपनाई जा रही तकनीकी के बारे में जानकारी दी और बताया कि इस दिशा में काफी कार्य किया जाना है। आकर्षक स्लाइड द्वारा प्रस्तुत इस वैज्ञानिक वार्ता को काफी सराहा गया।

प्रारंभ में, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक श्री प्रणव कुमार बनर्जी ने अपने संबोधन में कहा कि-स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी का योगदान सर्वविदित है इसलिए भारत सरकार ने स्वतंत्र भारत में पुनः हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। इस परिप्रेक्ष्य में प्रत्येक सरकारी कर्मचारी को हिंदी संबंधी अधिनियम व नियमों का पालन करना अनिवार्य है। इस कड़ी में अपने एनएफसी

में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की ।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में एनएफसी के मुख्य कार्यपालक श्री आर.एन. जयराज ने कहा कि साहित्य, मीडिया व विश्व बाजार में हिंदी ने अपना स्थान निश्चित कर लिया है। विभिन्न स्थानों पर विश्व हिंदी सम्मेलन के आयोजन से अब तो इसे विश्व मंच पर प्रतिष्ठित कराने की पहल की जा रही है यह हम सबके लिए गौरव की बात है ।

इस अवसर पर मुख्य कार्यपालक जी ने एनएफसी में हिंदी पुस्तकों के लिए स्थापित पुस्तकालय का भी उद्घाटन किया ।

श्री सैयद इरफान अली, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने अतिथि वक्ता का परिचय प्रस्तुत किया और श्री सैयद मासूम रजा, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने धन्यवाद ज्ञापित किया ।

कार्यक्रम का संचालन श्री राजानन पाण्डेय, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने किया । कार्यक्रम की सफलता में श्री संतोष कुमार, आशुलिपिक (हिंदी) ने भरपूर सहयोग दिया ।

परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय, पश्चिमी क्षेत्र, जयपुर

15 जनवरी 2010 को निदेशालय में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया । उप-क्षेत्रीय निदेशक श्री ओ. पी. यादव ने विश्व हिंदी दिवस के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत किए जिसमें उन्होंने कहा कि हिंदी सभी मायनों में एक संपूर्ण भाषा की कसौटी पर खरी उतरती है एवं इसे विश्व भाषा के रूप में मान्यता अवश्य मिलनी चाहिए। अपने विचार प्रस्तुत करते हुए उप-क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने विश्व हिंदी दिवस के महत्व पर भी प्रकाश डाला जिसमें उन्होंने कहा कि आज हिंदी, समय तकनीकी व देशों की सीमाओं को तोड़ते हुए एक भौगोलिक भाषा बनने की ओर अग्रसर हो चुकी है, एवं इसमें वे सभी तत्व विद्यमान हैं जो किसी भी भाषा को एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दिलाने के लिए पर्याप्त है ।

मुख्य वक्ता राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता देवर्षि कलानाथ शात्री को व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया । श्री कलानाथ शास्त्री ने अपने ओजस्वी एवं धाराप्रवाह वाणी में 'विश्व भाषा के रूप में हिंदी' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया । अपने व्याख्यान में श्री कलानाथ शास्त्री ने हिंदी की शक्ति एवं महत्व पर प्रकाश डाला, उन्होंने कहा कि हिंदी को विश्व भाषा के रूप में अलिखित रूप से तो मान्यता मिल ही चुकी है और यदि सकारात्मक प्रयास किए जाएं तो यह शीघ्र ही संयुक्त राज्य की सातवीं आधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त कर सकेगी ।

अपने व्याख्यान में श्री कलानाथ शास्त्री ने भाषा व संस्कृति के साझा महत्व पर भी प्रकाश डाला उन्होंने इस बात पर चिंता भी व्यक्त की कि आज देश की युवा पीढ़ी अंग्रेजी को अपनाने के कारण अपनी भारतीयता की पहचान को खोती जा रही है, उन्होंने कहा कि हिंदी का व्याकरण, भाषा विज्ञान, शैली व साहित्य हर कसौटी पर अंग्रेजी से उत्कृष्ट है परंतु फिर भी सामाजिक व राष्ट्रीय स्तर पर इसे तभी तक वांछित पहचान नहीं मिल सकी है जिसके लिए आवश्यक है कि देश की युवा पीढ़ी हिंदी को ससम्मान अपनाने का बीड़ा उठाए साथ ही उन्होंने हिंदी की प्रगति के लिए विश्व हिंदी दिवस जैसे आयोजनों की सराहना भी की।

द्वितीय सत्र में राजस्थान विश्वविद्यालय के सैद्धांतिक भौतिक विज्ञान के प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार नागावत ने 'कन्वर्जिंग टैक्नोलोजी फॉर शेपिंग फ्यूचर' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. नागावत ने पावर पांइण्ट प्रजेण्टेशन के माध्यम से अपना प्रस्तुतिकरण दिया जिसमें उन्होंने भविष्य की तकनीकी पर प्रकाश डाला। अत्यंत सुरुचिपूर्ण ढंग से व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए डॉ. नागावत ने भौतिक विज्ञान के जटिलतम सिद्धांतों को अत्यंत सरल ढंग से प्रस्तुत करते हुए भविष्य को तकनीकी व विज्ञान पर प्रकाश डाला । अपने व्याख्यान में डॉ. नागावत ने नैनो तकनीकी के भविष्य व विविध आयामों पर चर्चा को जिसमें उन्होंने नैनो तकनीकी के जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अनुप्रयोगों के बारे में बताया ।

डॉ. नागावत ने भविष्य के मानव के बारे में चर्चा करते हुए बताया कि जिस प्रकार में समयानुसार मशीन के विभिन्न संस्करण उपलब्ध होते हैं उसी प्रकार से भविष्य में मनुष्यों के भी संस्करण बना करेंगे और मनुष्य की जीवन प्रत्याशा में अत्यंत वृद्धि हो जाएगी। भविष्य के विज्ञान के बारे में बताते हुए डॉ. नागावत ने कहा कि कुछ वर्षों बाद विज्ञान की समस्त शाखाएं एक दूसरे की पूरक बनेंगी और भौतिक व रसायन विज्ञान का जीव विज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान होगा जिसकी सहायता से मनुष्य कृत्रिम अंगों का निर्माण करेगा जो वास्तविक अंगों से कहीं अधिक सक्षम व संवेदनशील होंगे। इसी संदर्भ में उन्होंने मशीन व मानव के संयुक्त रूप साइबोर्ग की संकल्पना पर भी प्रकाश डाला ।

प्रतियोगिता/पुरस्कार

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरन के अतिथि गृह के सभागृह में दिनांक 7 जनवरी, 2010 को हिंदी सप्ताह के दौरान कार्मिकों, गृहणियों एवं बच्चों के लिए आयोजित की गई विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरण के साथ-साथ हिंदी कवि गोष्ठी कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया । इस अवसर पर संयंत्र के कुछ कार्मिकों ने अपनी हिंदी कविताएं एवं एक कार्मिक ने कैशिओ यंत्र पर हिंदी गीत बजाकर सबका मनोरंजन किया । सभी प्रतिभागियों को स्मृति चिन्ह भी प्रदान किए गए ।

भारी पानी संयंत्र में हिंदी सप्ताह के दौरान माह अगस्त एवं सितंबर में संयंत्र के कार्मिकों हेतु 10 विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था, उनमें हिंदी पत्र लेखन, हिंदी अनुवाद, हिंदी सुलेख, हिंदी गीत, हिंदी पठन, हिंदी भाषण, हिंदी मेमोरी टेस्ट, हिंदी नारा, मौखिक प्रश्नोत्तरी, हिंदी निबंध लेखन आदि प्रतियोगिताएं शामिल थीं। साथ ही संयंत्र की आवासीय कॉलोनी में बच्चों एवं गृहणियों के लिए भी सात विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । बच्चों के लिए कविता लेखन, कहानी लेखन, हिंदी एवं अंग्रेजी वाक्यों का अनुवाद, हिंदी सुलेख, हिंदी निबंध लेखन, हिंदी श्रुतलेख इत्यादि प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं थी, गृहणियों हेतु हिंदी सुलेख एवं हिंदी मेमोरी टेस्ट प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया । इन सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि द्वय श्री पी. के. झा, अधीक्षक, नमक विभाग, तूतीकोरिन एवं श्रीमती कल्पना झा, श्री परमसिवम, विशेष कार्याधिकारी एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तूतीकोरिन के अध्यक्ष, द्वय श्री आई. सेनगुप्ता, तकनीकी सेवाएं प्रबंधक एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं श्रीमती सेनगुप्ता एवं प्रशासन अधिकारी श्री एस. एम. सिरोणमणि ने पुरस्कार वितरित किए । इस अवसर पर प्रतियोगिताओं के दौरान उपस्थित निर्णायक गणों को भी स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया । कार्यक्रम के प्रारंभ में श्री एम. एस. सिरोंमणि, प्रशासन अधिकारी ने सभी का स्वागत एवं हार्दिक अभिनंदन किया । अतिथियों ने सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया । तत्पश्चात श्रीमती वेल्लुताई ने प्रार्थना गीत गाकर समारोह का शुभारंभ किया । अध्यक्ष–राजभाषा कार्यान्वयन समिति श्री आई. सेन गुप्ता ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि किसी भी देश को एक जुट में जोड़ने के लिए एक भाषा की जरूरत होती है जिससे उस देश की एकता बढ़ेगी । अत: हमारा भी कर्तव्य बनता है कि हम भी अपनी राजभाषा सीखें और राष्ट्र की एकता को बनाए रखने में अपना सहयोग दें । विशेष अधिकारी श्री परमसिवम जी ने प्रसन्नता जताते हुए कहा कि हमारे कर्मचारियों ने हिंदी प्रतियोगिताओं में बहुत ही उत्साह के साथ भाग लिया एवं पुरस्कार प्राप्त किए । उन्होंने सभी कार्मिकों से अनुरोध किया कि वे अपने दैनिक कार्यों में भी हिंदी का प्रयोग करें । उन्होंने कहा कि सरकार हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु बहुत पैसे खर्च कर रही है हमें उसका लाभ उठाना चाहिए।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री पी. के. झा ने अपने उद्‌बोधन भाषण में कहा कि दक्षिण भारत में स्थित कार्यालय में इस प्रकार भव्य रूप से हिंदी कार्यक्रमों का आयोजन करना ही अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है । उन्होंने हिंदी दिवस की प्रमुखता को बताते हुए कहा कि भारत को स्वतंत्रता दिलाने में हिंदी का बहुत ही योगदान रहा है । हमारे संपूर्ण भारत के पूर्व नेताओं ने हिंदी के सहयोग से ही स्वाधीनता की लड़ाई जीत पाई है । उन्होंने कहा कि हिंदी किसी एक की भाषा नहीं है यह जन-जन की भाषा है, अत: राजभाषा हिंदी को उसका अधिकार दिलाना हमारा कर्तव्य बनता है । अतिथियों को स्मृति चिन्ह प्रदान किए गए कार्यक्रम का संचालन श्रीमती भाग्यवती एवं श्रीमती श्यामलता ने किया । कार्यक्रम के अंत में श्रीमती श्यामलता, हिंदी अनुवादक ने सभी का आभार व्यक्त किया ।

शिलांग में राजभाषा विभाग द्वारा कछाड़ पेपर मिल पुरस्कृत एवं सम्मानित

मेघालय की राजधानी शिलांग में कछाड़ पेपर मिल के मुख्य अधिशासी श्री मोहन झा को विगत 5 फरवरी, 2010 को राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित "राजभाषा समारोह" में पूर्वोत्तर क्षेत्र के उपक्रमों में कछाड़ पेपर मिल के राजभाषा कार्यान्वयन में वर्ष 2007-2008 में संघ सरकार की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के आधार पर द्वितीय स्थान प्राप्त करने हेतु केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय माकन के कर-कमलों द्वारा शील्ड प्रदान कर पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया। मिल के वरिष्ठ सहायक-एस. जी. (राजभाषा) श्री चितरंजन लाल को इस अवसर पर प्रमाण-पत्र प्रदान कर पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया ।

एन. एच. पी. सी. बालूटार पुरस्कृत

वर्ष 2007-2008 के राजभाषा कार्यान्वयन के उत्तम निष्पादन के आधार पर भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा पूर्वोत्तर क्षेत्र के सभी उपक्रमों में एनएचपीसी, तीस्ता-पांच पावर स्टेशन को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है । दिनांक 5-2-2010 को शिलांग में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में परियोजना प्रमुख श्री डी. चट्टोपाध्याय, मुख्य अभियंता (प्रभारी) ने हर्ष ध्वनि व तालियों की गूंज के भीतर यह पुरस्कार माननीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय माकन जी से प्राप्त किया । सम्मेलन में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, सरकारी क्षेत्रों व सेना (असम राइफल्स) के उच्च अधिकारी मौजूद थे।

पूर्वोत्तर सीमा रेल/निर्माण संगठन वर्ष 2008-2009 के लिए राजभाषा क्षेत्रीय पुरस्कार से पुरस्कृत

गृह मंत्रालय, राजभाषा, विभाग द्वारा वर्ष 2008-2009 के राजभाषा कार्यान्वयन के उत्तम निष्पादन के आधार पर पूर्वोत्तर सीमा रेल/निर्माण ने पूर्वोत्तर क्षेत्र के केंद्रीय कार्यालयों में द्वितीय स्थान प्राप्त किया । दिनांक 6-2-2010 को असम राइफल्स मुख्यालय, लाइटकोर, शिलांग के सभागार में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में माननीय गृह राज्य मंत्री अजय माकन के कर कमलों से श्री शिव कुमार, महाप्रबंधक/ निर्माण ने शील्ड ग्रहण किया, इस अवसर पर श्री बकरीदन, मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण को भी वर्ष 2008-2009 के दौरान निर्माण संगठन में संघ की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए द्वितीय स्थान प्राप्त करने में उनके सराहनीय योगदान के लिए प्रशस्ति पत्र माननीय गृह राज्य मंत्री के कर कमलों से प्रदान किया ।

रेल मंत्री राजभाषा रजत पदक

अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड ने दिनांक 27-1-2010 को श्री बकरीदन, भंडार नियंत्रक (निर्माण) एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी, पूर्वोत्तर सीमा रेलवे (निर्माण) को वर्ष 2008 के दौरान उनके द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में किए गए सराहनीय योगदान के लिए रेल मंत्री राजभाषा रजत पदक तथा प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया ।

एनएचपीसी लिमिटेड का क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ राजभाषा शील्ड से सम्मानित

एनएचपीसी लिमिटेड के क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग के लिए उत्कृष्ट प्रयास किए जा रहे हैं । यह प्रयास सराहनीय एवं प्रेरणादायक है। जिसके लिए एनएचपीसी के क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ को एनएचपीसी के निगम मुख्यालय, फरीदाबाद द्वारा वर्ष 2008-09 में किए गए राजभाषा प्रयोग के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया । इस पुरस्कार में राजभाषा शील्ड और 2500 का नकद पुरस्कार प्राप्त हुआ । यह पुरस्कार श्री रमेश नारायण मिश्र, कार्यपालक निदेशक ने प्राप्त किया ।

एनएचपीसी लिमिटेड के क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ को वर्ष 2008-09 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा देहरादून में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया । जिसमें राजभाषा शील्ड जो एनएचपीसी के महाप्रबंधक, श्री डी एस चौहान ने प्राप्त की और सहायक राजभाषा अधिकारी, श्री देश राज को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया । यह पुरस्कार माननीय गृह राज्यमंत्री, श्री अजय माकन के करकमलों द्वारा प्रदान किए गए ।

कार्यालय, रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक (पश्चिमी कमान), चंडीगढ़ को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से प्राप्त राजभाषा पुरस्कार

यह प्रसन्नता की बात है कि रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक (पश्चिमी कमान) चंडीगढ़ के कार्यालय को केन्द्र सरकार की राजभाषा नीति को संगठन में कार्यान्वित करने तथा राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु किए गए सराहनीय प्रयासों के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चंडीगढ़ द्वारा वर्ष 2007-08 के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया । दिनांक 18-2-2010 को टैगोर थियेटर, सेक्टर-18 बी, चंडीगढ़ में आयोजित वार्षिक राजभाषा समारोह में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं मुख्य आयकर आयुक्त, चंडीगढ़ द्वारा यह पुरस्कार प्रदान किया गया । रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक महोदय की ओर से सहायक नियंत्रक श्री अनिल कुमार गुप्ता ने उक्त पुरस्कार संबंधी स्मृति चिह्न एवं सम्मान पत्र ग्रहण किया । कार्यालयाध्यक्ष को दिए गए इस सम्मान के साथ उक्त समिति द्वारा हिंदी अधिकारी श्री गंगादास बासिया को भी सम्मान पत्र तथा स्मृति चिह्न भेंट किया गया है । सम्मान पत्र में तत्कालीन रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक श्रीमती नीता कपूर की संगठन में हिंदी के लिए किए गए प्रयासों की प्रशंसा की गई है । उक्त समिति द्वारा प्रकाशित पत्रिका "शिवालिका" में हमारे कार्यालय में वर्ष 2009 के सितंबर माह में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं एवं हिंदी कार्यशाला का आयोजन संबंधी विवरण प्रकाशित किया गया है ।

यह उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व वर्ष 1999 तथा 2002 में भी हमारे कार्यालय को यह गौरव प्राप्त हुआ था । अब तीसरी बार हमारे कार्यालय को यह पुरस्कार प्राप्त हुआ है जोकि हमारे कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए सम्मानजनक बात है क्योंकि उक्त पुरस्कार के लिए सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों द्वारा सामूहिक रूप से प्रयास किए गए थे । इस विषय में और अधिक प्रगति करने के हमारे प्रयास निरन्तर जारी रहेंगे ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति राजकोट द्वारा संयुक्त कार्यशाला/ परिचर्चा एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति राजकोट जिसके अध्यक्ष मंडल रेल प्रबंधक हैं, के तत्वाधान में अंतर विभागीय राजभाषा समिति वर्ष 2009-10 द्वारा दिनांक 23-11-09 "हिंदी की वर्तमान दशा एवं दिशा" विषय पर परिचर्चा और उसके बाद संयुक्त हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें अंतर विभागीय राजभाषा समिति के 24 सदस्य कार्यालयों के लगभग 50 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया ।

तदुपरांत दिनांक 24-11-09 से 5-12-09 तक क्रमशः कविता पाठ, वाक्, क्विज, पारिभाषिक शब्दावली, अर्थग्रहण स्मृति टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, सामान्य ज्ञान और निबंध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । इसी दौरान रेलवे इन्स्टीट्यूट राजकोट में गीत गायन का आयोजन भी किया गया । सभी प्रकार की प्रतियोगितओं में अंतर विभागीय राजभाषा समिति के सदस्य कार्यालयों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।

उक्त प्रतियोगिताओं में विजेता कर्मचारियों को पुरस्कृत करने के लिए दिनांक 27-1-2010 को समारोह आयोजित किया गया जिसमें मंडल रेल प्रबंधक, अपर मंडल रेल प्रबंधक और उपमहालेखाकार जैसे प्रमुख अतिथियों द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए ।

भारत संचार निगम लिमिटेड महाप्रबंधक भा सं नि लि मदुरै-625 002 तमिलनाडु

मदुरै नगर स्थित सरकारी कार्यालयों/भारत सरकार के उपक्रमों के बीच वर्ष 2008-2009 में राजभाषा कार्यान्वयन के सर्वोत्तम निष्पादन के लिए भारत संचार निगम लिमिटेड, मदुरै को राजभाषा शील्ड से पुरस्कृत किया गया है । तारीख 23-12-2009 को सम्पन्न नराकास की बैठक में श्री वी. के. संजीवी, महाप्रबंधक, मदुरै ने उक्त शील्ड प्राप्त किया ।

संगोष्ठी/सम्मेलन

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, 139 ब्रॉड वे, चैन्नई- 60018

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा ग्राहक सेवा संगोष्ठी का आयोजन

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा ग्राहक सेवा पर एक संगोष्ठी का आयोजन बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) के संयोजन में किया गया इस अवसर पर बैंक के महाप्रबंधक श्री पी. वाई. नागर ने बताया कि सभी बैंकों के लिए आज कासा (करेंट अकाउंट-सेविंग अकाउंट) जीवन रेखा बन गया है। बढ़ती लागतों का मुकाबला करने की दिशा में न्यून लागत जमा राशियों का संग्रहण सभी बैंकों की राष्ट्रीय आवश्यकता बन गया है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु अपने बैंक को "ग्राहक संकेन्द्रित संस्था के रूप में बदलने की आवश्यकता है। यह तभी संभव है, जब बैंक शाखाएं अपने सभी उत्पादों, सेवाओं एवं प्रक्रियाओं में ग्राहक हित को परम प्राथमिकता दें तभी उनको संतुष्ट एवं समृद्ध बनाने के साथ ही वे अपनी शाखा अंचल एवं अपने बैंक को भी शिखर तक ले जाने में सफल हो सकेंगी। आपने ग्राहक संतोष की पुरानी अवधारणा को अधिकतम ग्राहक आनंद (Customer Delight) से प्रतिस्थापित कर अधिकतम कारोबार एवं लाभ कमाने का माध्यम बनाने पर जोर दिया।

आपने मुख्य प्रबंधकों की विशेष भूमिका को रेखांकित करते हुए उन्हें प्रेरित एवं प्रोत्साहित करते हुए कहा कि आप सभी अपनी-अपनी बैंकों की टीम के कुशल नेतृत्व के द्वारा वर्तमान एवं नवीन ग्राहकों को वीआईपी ट्रीटमेंट दें। पुराने अप्रचलनीय खातों (डारमेंटस खाते) को पुनर्जीवित करने की भी गहन आवश्यकता है। नवीनतम उत्पादों को बाजार में लोकप्रिय बनाने के लिए कड़ी मेहनत एवं केन्द्रित प्रयास (Focussed Efforts) करें। आउट सोर्सिंग से नए ग्राहकों को बैंक के प्रवेश द्वार तक तो लाया जा सकता है, किन्तु शाखा के फ्रंट लाईन एवं बैंक आफिस स्टाफ के द्वारा श्रेष्ठ सेवाएं प्रदान कर ही उन्हें हम बैंक में बनाए रख सकते हैं। यहीं आपकी परीक्षा होती है, कि आपका नेतृत्व कितना प्रभावी है। आपको अपनी ब्रांच को असरदार सरदार बनाना है।

श्री नागर जी ने हर संभव काम "हिंदी में", हर काम "संभव" हिंदी में के नारे से अपनी बात का सारांश प्रस्तुत किया।

नराकास चेन्नई के अध्यक्ष एवं आई. ओ. बी. के महाप्रबंधक श्री पी. के. चतुर्वेदी जी ने अध्यक्षीय संबोधन में नराकास के ध्वज तले बैंकों की रचनात्मक उपलब्धियों का परिचय प्रस्तुत किया। ग्राहक सेवा के संबंध में श्री चतुर्वेदी जी राष्ट्रीयकृत बैंकों की उपलब्धियों की सराहना की किन्तु साथ ही साथ आपने निजी बैंकों के पास उपलब्ध कारोबार को भी सरकारी बैंकों में लाने की जबरदस्त चुनौती का मुकाबला करने हेतु ग्राहक सेवाओं को बेहतर से बेहतरीन बनाने के लिए सतत सार्थक प्रयास करने की सलाह दी।

भारत सरकार के राजभाषा विभाग के डिप्टी डायरेक्टर श्री वी. बालाकृष्णन ने संगोठी में "हिंदी का काम करने की बजाय अब हिंदी में काम" करने की अपनी सोच के कार्यान्वयन के लिए ग्राहक सेवा पर हिंदी में आयोजित इस संगोष्ठी के प्रायोजन एवं संयोजन हेतु यूनियन बैंक एवं आई ओ बी की सराहना की। आपने हिंदी में कामकाज हो या ग्राहक सेवा साधारण कार्यों को असाधारण ढंग से करने को श्रेष्ठता प्राप्त करने का मूल मंत्र बताया। भारत सरकार की अपेक्षाओं पर आपने विस्तृत प्रकाश डाला।

संगोष्ठी के मुख्य वक्ता एवं प्राचार्य स्टाफ महाविद्यालय एवं महाप्रबंधक आई. ओ. बी. बाल गोपाल कुरूप जी ने अपने दीर्घ अध्ययन एवं अनुभवों के आधार पर चैन्नई के सभी बैंकों के प्रतिभागियों की संगोष्ठी को विशेष गरिमा प्रदान की। आपने गोइपरिया कमेटी से लेकर वर्तमान सी, बी एस युग तक की ग्राहक की समस्याओं को गहन विश्लेषण कर प्रकाश डाला। श्रेष्ठ ग्राहक सेवा हेतु प्राइसिंग, धैर्य, तत्परता, समयबद्धता, तकनीकी कुशलता, उत्पाद ज्ञान, सौजन्यता, शाखा परिसर की सुव्यवस्था, ग्राहकों के मनोविज्ञान को समझने की आवश्यकता, के. वाई. सी मानदंडों की अनुपालना आदि पर विस्तृत जानकारी रूचिकर ढ़ंग से प्रदान की।

यूनियन बैंक के उप महाप्रबंधक श्री एल. के. सीकरी, सहायक महाप्रबंधक श्री राकेश सरीन, बैंक ऑफ इंडिया के उप महाप्रबंधक श्री आर. एन. तायल, आई. ओ. बी. के सहायक महाप्रबंधक (आई.टी.) श्री बलराज शर्मा, सदस्य सचिव श्री शेख अब्दुल कादर, इंडियन बैंक के मुख्य प्रबंधक श्री दिलवर अली, स्टेट बैंक की मुख्य प्रबंधक डॉ. विजया, सिंडीकेट बैंक के श्री रहीम, नराकास से श्रीमती अणिमा, सर्व श्री सुरेश कुलकर्णी, मारुती आदि ने कार्यक्रम को इन्द्रधनुषी सफलता प्रदान करने में अपनी-अपनी तरह से योगदान दिया । कार्यक्रम संचालन एवं संयोजन श्री साहनी यूनियन बैंक एवं सुरेश कुलकर्णी आई. ओ. बी. द्वारा किया गया ।

संगोष्ठी में सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों के 50 कार्यपालकों एवं मुख्य प्रबंधकों ने सहभागिता कर यूनियन बैंक तथा नराकास को सफल एवं सार्थक आयोजन हेतु बधाई दी ।

एनएमडीसी लि. के मुख्यालय-हैदराबाद में इस्पात मंत्रालय के हिंदी अधिकारियों का सम्मेलन

एनएमडीसी लिमिटेड के मुख्यालय, हैदराबाद में दिनांक 22-10-2009 को इस्पात मंत्रालय के तत्वावधान में इस्पात मंत्रालय के नियंत्रणाधीन उपक्रमों के हिंदी अधिकारियों का सम्मेलन सम्पन्न हुआ । सम्मेलन के आरंभ में एनएमडीसी लि. द्वारा राजभाषा के प्रयोग और कार्यान्वयन के लिए किए जा रहे विभिन्न कार्यों से संबंधित प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री वेद प्रकाश सिंह, संयुक्त निदेशक (राजभाषा) ने किया । तत्पश्चात् उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता निदेशक (वाणिज्य) श्री वी. के. शर्मा ने की ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री वी. के. शर्मा , निदेशक (वाणिज्य) ने कहा कि भारत एक विशाल देश है । जिसमें कई धर्मों और सभ्यताओं और विभिन्न भाषाभाषी निवास करते हैं, इन्हें एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा के रूप में हिंदी हमारे बीच में विद्यमान है । यह हमारी एकता का प्रतीक है । इसके कार्यान्वयन और प्रयोग को बढ़ाने में सभी को योगदान करना चाहिए । यह खुशी की बात है कि एनएमडीसी राजभाषा के कार्यान्वयन और प्रयोग में पिछले कई दशकों से प्रयासरत है और उसे उसके लिए भारत सरकार के उच्चतम पुरस्कार प्राप्त होते रहें हैं । आपने आशा व्यक्त की कि इस सम्मेलन से जो विचार सामने आएंगे । वे राजभाषा के प्रयोग को संबल प्रदान करेंगे । अपने संबोधन में श्री वेद प्रकाश सिंह, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), इस्पात मंत्रालय ने प्रसन्नता व्यक्त की कि इस्पात मंत्रालय के साथ-साथ इसके उपक्रमों में भी हिंदी का अच्छा प्रयोग हो रहा है । इसके लिए न केवल एनएमडीसी अपितु अन्य उपक्रमों को भी पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है । आपने इस तरह के सम्मेलनों के औचित्य पर भी प्रकाश डाला । इस अवसर पर श्री भीमसिंह, सहायक निदेशक (राजभाषा), इस्पात मंत्रालय ने भी अपने विचार रखे ।

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन

सातवीं राजभाषा वैज्ञानिक संगोष्ठी

दिनांक 30 मार्च, 2010 को भारी पानी संयंत्र के अतिथि गृह स्थित सभागृह में एक दिवसीय राजभाषा वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया ।

अपने उद्घाटन संबोधन में मुख्य अतिथि श्री उधल सिंह ने कहा कि दक्षिण भारत के कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु इस प्रकार के भव्य आयोजन करना बड़ा ही सराहनीय कार्य है । उन्होंने इस कार्य से जुड़े सभी कार्मिकों को बधाई दी । उन्होंने कहा कि हिंदी संपर्क भाषा के रूप में काम कर रही है । इससे दुनिया के कोने-कोने के लोग परिचित हैं । संविधान में भी इसको महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है । अत: हमारा कर्तव्य बनता है कि इसको आगे बढ़ाने में अपना सहयोग दें ।

भारी पानी संयंत्र के विशेष कार्याधिकारी एवं अध्यक्ष नराकास श्री एस. परमसिवम ने कहा कि हमारे कार्यालय में हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने हेतु किया जाता है एवं हमारे कार्मिक भी बड़े उत्साह के साथ भाग लेते हैं और हिंदी जानने वाले अधिकारीगण तकनीकी एवं वैज्ञानिक विषयों पर व्याख्यान भी देते हैं । उन्होंने कहा कि आवश्यकता के अनुसार हम अपने कार्यक्रमों में बदलाव लाते रहते हैं ताकि कार्मिकों को हिंदी के प्रति लगाव बना रहे । उन्होंने कहा कि बरसों से हिंदी के कार्यान्वयन में बदलाव आते रहे हैं, हमें भी स्थिति के अनुसार राजभाषा हिंदी का प्रभावी ढंग से कार्यान्वयन हेतु योगदान देना चाहिए । इस अवसर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री आई. सेनगुप्ता ने कहा कि हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो भारत में मौजूद अलग-अलग संस्कृति को एक में बाँधती है । उन्होंने कहा कि हमारे वैज्ञानिक,

विज्ञान को अंग्रेजी छोड़ अन्य भाषाओं में पढ़ने के लिए तैयार नहीं होते । अगर हम वैज्ञानिक विषयों को देश की भाषा हिंदी में पढ़े तो हम उस विषय को बहुत ही आसानी से समझ पायेंगे और इसका परिणाम भी अच्छा होगा ।

उत्तर पूर्व विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान, जोरहाट

राष्ट्रीय विज्ञान संगोष्ठी का आयोजन

विज्ञान को हिंदी के अलावा स्थानीय भाषाओं में प्रसारित करने के लिए प्रयासरत निस्ट, जोरहाट ने हिंदी भाषा में 'जन जन हितकारी प्रौद्योगिकियाँ एव संचार माध्यम' विषय पर वर्षों पहले के उपरांत 10-11 दिसंबर, 2009 को संस्थान में राष्ट्रीय विज्ञान संगोष्ठी का आयोजन किया । संगोष्ठी में मूल रूप से पूर्वोत्तर के अनुसंधान संस्थान एवं विश्वविद्यालयों को आमंत्रित किया गया । संगोष्ठी का मूल उद्देश्य था आम जनता के लिए प्रौद्योगिकियां तैयार करने पर विचार करना और तैयार प्रौद्योगिकियों को उचित माध्यम से जन जन तक पहुँचाने के उपायों एवं संभावनाओं पर चर्चा करना । अपने तय कार्यक्रम अनुसार संगोष्ठी 10 दिसंबर, 2009 को शुभारंभ हुआ । संगोष्ठी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. पी.बी. कांजीलाल, वरिष्ठ वैज्ञानिक के स्वागत भाषण के साथ कार्यक्रम आरंभ किया गया । संगोष्ठी के उद्देश्य को स्पष्ट करने के लिए अपने प्रस्तावना भाषण में संगोष्ठी के राष्ट्रीय संयोजक श्री अजय कुमार, हिंदी अधिकारी, निस्ट, जोरहाट ने विज्ञान को जन प्रिय बनाने संबंधी नियमों का उल्लेख करते हुए कहा कि ऐसी संगोष्ठी का आयोजन आवश्यक है जिसमें विज्ञान को जन हित के समीप लाने के प्रयासों पर विचार किया जाता है । तत्कालीन प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह एवं सी एव आई आर के महानिदेशक प्रो. समीर कुमार ब्रह्मचारी का इस संबंध में दिशानिर्देश को जिक्र करते हुए कहा कि विज्ञान को सीधे जनता तक पहुँचाने का समय आ गया है ताकि जनता प्रत्यक्ष लाभ उठा सके । इसी से देश का सामुहिक विकास संभव हो सकेगा । इस संबंध में सी एस आई आर, निस्ट, जोरहाट के प्रयासों को भी बताया जिसमें जनता के लिए प्रौद्योगिकियां तैयार की जा रही हैं एवं प्रशिक्षण या कार्यशालाओं के माध्यम से उन्हें लाभान्वित किया जा रहा है । संगोष्ठी के अध्यक्ष महोदय ने निस्ट, जोरहाट से आम जनता को प्राप्त लाभ का आंकड़ा भी प्रस्तुत किया । इस अवसर पर अतिथि के रूप में उपस्थित राजभाषा विभाग, गुवाहाटी के सहायक निदेशक श्री अशोक कुमार मिश्र ने उत्तर-पूर्व में इस प्रकार के प्रथम प्रयास को हृदय से सराहा और अपना उद्धार व्यक्त करते हुए संस्थान के निदेशक डा. पी. जी. राव एवं संगोष्ठी के अध्यक्ष एवं संयोजक को बधाई दी । उन्होंने कहा कि यह प्रथम प्रयास है, परंतु ऐसी संगोष्ठियों का आयोजन समय-समय पर अवश्य किया जाना चाहिए । प्रथम प्रयास का प्रत्युत्तर भले ही कम हो परंतु यह भविष्य में फलदायी होगा । संगोष्ठी के शुभारंभ के अवसर पर क्षेत्रीय चिकित्सा अनुसंधान केंद्र (आई सी एम आर), डिब्रुगढ़ के वैज्ञानिक डॉ. पी. आर. भट्टाचार्या, केंद्रीय बॉस प्रौद्योगिकी केंद्र, गुवाहाटी के श्री बी. जे. लाल लूंगदिम, शोध अधिकारी, केंद्रीय मूगा अनुसंधान संस्थान के श्री गजेन ताई, केंद्रीय विद्यालय, निस्ट, जोरहाट से श्री मृत्युंजय कुमार एवं श्री प्रमोद कुमार ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए एवं संगोष्ठी आयोजन के प्रयास को सराहा । तत्पश्चात् संगोष्ठी का तकनीकी सत्र आरंभ हुए जिसमें लेख एवं विचार रखे गए । दूसरे दिन भी दो तकनीकी सत्र हुआ जिसमें शोध कर्ताओं ने अपनी शोध को प्रस्तुत किया । शोध प्रस्तुती में मूल रूप से खतरनाक बिमारियों, शुद्ध जल, औषधीय पौधों एवं सहज प्रयुक्ति के विज्ञान को जनता तक पहुँचाने पर ध्यान रखा गया जबकि विज्ञान को जन जन तक पहुँचाने के लिए स्थानीय भाषाओं, हिंदी, ग्रामीण के बीच कार्यशालाओं आदि पर बल देने के संबंध में चर्चा की गयी । शुद्ध पानी की आवश्यकताओं एवं ब्रह्मपुत्र के जल के उपयोग पर शोध पत्र श्रीमति पलाक्षी बरदलै एवं औषधीय पौधों के वैज्ञानिक लाभ पर शोध पत्र श्रीमति कल्पतरू दत्त मुदय, दोनों निस्ट, जोरहाट के शोध अधिकारी ने प्रस्तुत किया । शोधकर्ताओं को सीधे जनता के पास जाकर उन्हें समझाने पर बल दिया । शोध संस्थान इसके लिए अपनी एक अलग इकाई बनाये, इसकी भी संभावना तलाश की गयी । अंत में अध्यक्ष महोदय ने शोधकर्ताओं को सीधे जनता तक जाने एवं अनुसंधान संस्थान में सीधे लाने में कई कानूनी अड़चनों का हवाला देते हुए इस बात को स्वीकार किया इस संबंध में कदम उठाने की आवश्यकता है । वैसे निस्ट, जोरहाट इस ओर प्रयासरत है परंतु अन्य संस्थानों को भी आगे आने की आवश्यकता है । अंत में संयोजक ने अपने मुख्यालय सी एस आई आर के महानिदेशक प्रो. समीर कुमार ब्रह्मचारी के इस संगोष्ठी की सफलता के लिए आए संदेश को पढ़कर प्रतिभागियों को सुनाया जिसमें परिषद् के मिशन 'देश की जनता को अधिकतम आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय लाभ' को फलीभूत करने में संगोष्ठी के योगदान को इस दिशा में एक अनुठा प्रयास बताया । धन्यवाद ज्ञापन के उपरांत संगोष्ठी समाप्त घोषित किया गया ।

प्रशिक्षण

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, तकनीकी कक्ष, लोकनायक भवन, द्वितीय तल, "बी" विंग, खान मार्किट, नई दिल्ली-110 511 का दिनांक 20 अप्रैल, 2010 का
प. सं. 12015/4/2010-रा. भा. (त.क.)

परिपत्र

विषय : राजभाषा विभाग द्वारा राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र, राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण प्रतिष्ठान और सी-डैक के माध्यम से कंप्यूटर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम वर्ष 2010-2011 ।

राजभाषा विभाग द्वारा राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र, राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण प्रतिष्ठान और सी-डैक के माध्यम से वर्ष 2010-2011 के दौरान हिंदी में कंप्यूटर प्रशिक्षण के लिए कराए जाने वाले प्रशिक्षण के अंतर्गत 54 कार्यक्रमों की सूची संलग्न है । इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भारत सरकार के मंत्रालयों/विभागों, राष्ट्रीयकृत बैंकों और सरकारी उपक्रमों के अधिकारी/कर्मचारी भाग ले सकते हैं । इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कंप्यूटर पर सामान्यत : प्रयोग होने वाले सॉफ्टवेयरों (एमएस वर्ड, एमएस एक्सेल, पावर प्वाइंट आदि) के प्रयोग द्वारा कुशलतापूर्वक हिंदी में कार्य करने संबंधी जानकारी देने के अतिरिक्त कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग में आने वाली सामान्य समस्याओं के हल एवं अन्य उपयोगी जानकारी दी जाती है । यह देखते हुए कि आजकल काफी कर्मचारी/अधिकारी पहले ही कंप्यूटर पर कार्य कर रहे हैं, इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों को निम्न तीन स्तरों में उपलब्ध कराया जा रहा है :

(क) 'कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग' हेतु आधारभूत प्रशिक्षण कार्यक्रम (पांच दिवसीय) कंप्यूटर पर कार्य का ज्ञान न रखने वालों को कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग सिखाया जाता है ।

(ख) 'कंप्यूटर पर कुशल हिंदी प्रयोग' (पांच दिवसीय) : उन कर्मचारियों/अधिकारियों के लिए है जो कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग का कुछ ज्ञान/अनुभव रखते हैं ।

(ग) 'कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग के लिए प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण' (तीन दिवसीय) : उन कर्मचारियों/अधिकारियों के लिए जो पहले ही कंप्यूटर प्रयोग की अच्छी जानकारी रखते हैं तथा जिनको कंप्यूटर पर कुशल हिंदी प्रयोग प्रशिक्षण के उपरांत संबंधित कार्यालय अपने यहाँ बाकी कर्मचारियों/अधिकारियों को प्रशिक्षण देने के लिए उपयोग कर सकते हैं ।

2. इन कार्यक्रमों, नामत: (क) 'कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग' (संलग्नक-I व II) (ख) 'कंप्यूटर पर कुशल हिंदी प्रयोग' (संलग्नक- III व IV) तथा (ग) 'कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग के लिए प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण' (संलग्नक- V व VI) का अलग-अलग विवरण संलग्न है । सामान्यत: प्रशिक्षण कार्यक्रमों का समय प्रात: 9.00 बजे से सांय 5.00 बजे तक रहेगा एवं कार्यक्रम की अवधि श्रेणी (क) व (ख) के लिए पाँच दिनों तथा श्रेणी (ग) के लिए तीन दिनों की होगी । कार्यक्रमों की संलग्न तालिका (संलग्नक-II, IV व VI) में कार्यक्रमों की तिथि, कार्यक्रमों को आयोजित करवाने वाली संस्था का नाम तथा स्थान का विवरण दिया गया है । अनुरोध है कि कर्मचारियों/अधिकारियों के वर्तमान कंप्यूटर ज्ञान को देखते हुए आवश्यकता एवं उपयुक्ता के अनुसार उपरोक्त कार्यक्रमों में उचित स्तर के कार्यक्रम में नामांकन भेजे जाएं ।

3. प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए नामांकन-प्रपत्र का प्रारूप संलग्न है (संलग्नक-VIII) । प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए नामांकन-प्रपत्र भरकर कार्यक्रम के आरम्भ होने से कम से कम एक माह पूर्व डाक या ई-मेल द्वारा

सूची (संलग्नक-VII) में दिखाए गए संस्था के संबंधित प्रतिनिधि को भेज दें । इन संस्थाओं के मुख्यालय के पते इस प्रकार हैं । प्रशिक्षण केंद्र को भेजे गए नामांकन की प्रति संबंधित मुख्यालय को भी भेजी जा सकती है ।

क्र.सं.	संस्था	पता
1.	राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र	श्री केवल कृष्ण, तकनीकी निदेशक, 2रा तल, बी-विंग, कमरा सं.-बी-7, कंप्यूटर कक्ष, लोकनायक भवन, खान मार्केट, नई दिल्ली-110003 दूरभाष/फैक्स : 011-24619860 ई-मेल : kewal.krishan@nic.in
2.	राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण प्रतिष्ठान	श्री चंदन सिंह, निदेशक (प्रशा.) राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण संस्थान, एन.पी.टी.आई. परिसर, सैक्टर-33, फरीदाबाद-121003 दूरभाष : 0129:2272142 फैक्स : 0129-2275309 ई-मेल : swadeep65@yahoo.in
3.	सी-डैक	श्री वी. के. शर्मा, प्रोजेक्ट मैनेजर, सी-डैक, अनुसंधान भवन, सी-56, इंडस्ट्रियल एरिया, सेक्टर-62, नोएडा-261307 दूरभाष : 0120-2402551-60 फैक्स : 0120-2402569 ई-मेल : vksharma@cdacnoida.in

4. प्रशिक्षण कार्यक्रम का कैलेण्डर और नामांकन प्रपत्र राजभाषा विभाग की वेबसाइट (www.rajbhasha.gov.in) पर भी उपलब्ध है । कार्यक्रमों से संबंधित अन्य जानकारी/निर्देश नीचे दिए गए हैं :

- आवास एवं यात्रा खर्च की व्यवस्था प्रशिक्षार्थी के विभाग को वहन करनी होगी ।
- जहां तक संभव हो कृपया अपने निकटतम प्रशिक्षण केंद्र के लिए ही प्रशिक्षार्थियों को नामित करें ।
- संबंधित संस्थान से नामांकन स्वीकार हो जाने का पत्र प्राप्त होने पर ही प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए कार्यमुक्त किया जाए ।
- आवेदन पत्र प्रशिक्षार्थियों के प्रशासनिक कार्यालय से अग्रेषित होकर संबंधित संस्थान में पहुंचना चाहिए ।
- नामांकित प्रशिक्षार्थियों को कार्यालय में काम करने के लिए कंप्यूटर सुविधा उपलब्ध होनी चाहिए तथा वे कंप्यूटर पर हिंदी मे काम करने के लिए इच्छुक हो ।
- नामांकन मंजूर होने पर कार्यालय विशिष्ट के प्रशिक्षणार्थी के लिए सीट आरक्षित कर दी जाती है परंतु कार्यमुक्त न होने या अन्य कारण से प्रशिक्षण के प्रथम दिन बिना अग्रिम सूचना के प्रशिक्षाणार्थी के न आने से प्रशिक्षणार्थियों की संख्या क्षमता से कम रह जाती है तथा कभी-कभी संख्या बहुत कम होने पर प्रशिक्षण रद्द करने की स्थिति पैदा हो जाती है जिससे अन्य नामांकित प्रशिक्षणार्थियों को बड़ी असुविधा होती है । अत: प्रशिक्षण कार्यक्रम में नामांकन मंजूर होने के पश्चात, प्रशिक्षण अवधि के दौरान यदि नामांकित कर्मचारी/अधिकारी को कार्यमुक्त करने में समस्या आती है तो उसके स्थान पर कृपया किसी दूसरे पात्र कर्मचारी/अधिकारी को प्रशिक्षण के लिए भेजा जाए ।

5. सभी मंत्रालयों/विभागों/सरकारी उपक्रमों/राष्ट्रीयकृत बैंकों तथा सभी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों से अनुरोध है, कि वह संलग्न हिंदी कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अपने अधीनस्थ कार्यालयों में व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार करवाने का कष्ट करें जिससे अधिक से अधिक अधिकारी/कर्मचारी इन कार्यक्रमों का लाभ उठा सकें । कृपया की गई कार्रवाई से अधोहस्ताक्षरी को सूचित करें ।

(राकेश कुमार)
निदेशक (तकनीकी)
दूरभाष व फैक्स : 24619860/24617695
ई-मेल : techcell-ol@nic.in dir-tech@nic.in

संलग्नक-I

विषय : कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग हेतु आधारभूत प्रशिक्षण कार्यक्रम

अवधि : पांच पूर्ण कार्य दिवस

पात्रता : केंद्र सरकार, बैंक, सार्वजनिक उपक्रम/उद्यम इत्यादि कार्यालयों में कार्यरत अधिकारी/कर्मचारीगण

क्रमांक	दिन	विषय
1.	प्रथम दिवस	• पंजीकरण • कंप्यूटर परिचय-हार्डवेयर/सॉफ्टवेयर की जानकरी, फाइल प्रबंधन • विंडोज वातावरण परिचय • मानक भाषा एनकोडिंग एवं इसके लाभ-कंप्यूटर पर द्विभाषी सुविधा सक्रिय करना • नोटपैड/वर्डपैड में हिंदी भाषा का प्रयोग • फोंट व टाइपिंग संबंधी समस्याएं व उनका निवारण • अभ्यास
2.	द्वितीय दिवस	• विंडोज वातावरण-जारी • माइक्रोसॉफ्ट वर्ड
3.	तृतीय दिवस	• माइक्रोसॉफ्ट वर्ड • राजभाषा विभाग द्वारा विकसित मंत्र-राजभाषा, लीला-प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ तथा श्रुतलेखन-राजभाषा की जानकारी • लीला, मंत्र एवं श्रुतलेखन-राजभाषा का अभ्यास • हिंदी प्रयोग के लिए अन्य उपलब्ध सॉफ्टवेयरों की जानकारी, विशेषतया सूचना प्रौद्योगिकी की विभाग एवं अन्य द्वारा उपलब्ध कराए नि:शुल्क सॉफ्टवेयर
4.	चतुर्थ दिवस	• माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल तथा अभ्यास • माइक्रोसॉफ्ट पॉवर प्वाइंट तथा अभ्यास
5.	पंचम दिवस	• इंटरनेट ई-मेल • हिंदी टंकण अभ्यास • प्रशिक्षणार्थियों द्वारा बतायी गयी सामान्य समस्याओं की चर्चा और निवारण • सामान्य परीक्षा/समापन

कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग हेतु आधारभूत प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सूची

क्र. सं.	दिनांक		संस्था	स्थान
	से	तक		
1	2	3	4	5
1.	7-6-2010	11-6-2010	सी-डैक	नोएडा
2.	5-7-2010	9-7-2010	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	कान्ति बिजली उत्पादन निगम लि. मुजफ्फर नगर, बि.
3.	12-7-2010	16-7-2010	सी-डैक	नोएडा
4.	19-7-2010	23-7-2010	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनपीटीआई (प. क्षे.) नागपुर, (महाराष्ट्र)
5.	19-7-2010	23-7-2010	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनपीटीआई (पू. क्षे.) दुर्गापुर (पश्चिम बंगाल)
6.	19-7-2010	23-7-2010	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनपीटीआई (पीएसटीआई) बेंगलुरु (कर्नाटक)
7.	19-7-2010	23-7-2010	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	विपणन एवं निरीक्षण निदेशालय, एनएच-4, फरीदाबाद
8.	2-8-2010	6-8-2010	सी-डैक	नोएडा
9.	16-8-2010	20-8-2010	सी-डैक	नोएडा
10.	23-8-2010	27-8-2010	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनपीटीआई (पू. क्षे.) दुर्गापुर (पश्चिम बंगाल)
11.	23-8-2010	27-8-2010	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनपीटीआई (प. क्षे.) नागपुर, (महाराष्ट्र)
12.	23-8-2010	27-8-2010	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनपीटीआई (उ. क्षे.) बदरपुर, नई दिल्ली
13.	20-9-2010	24-9-2010	सी डैक	नोएडा
14.	20-9-2010	24-9-2010	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनएचपीसी, तीस्ता-5, गंगटोक
15.	4-10-2010	8-10-2010	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनएचपीसी, ईटानगर
16.	18-10-2010	22-10-2010	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनपीटीआई (उ. क्षे.) बदरपुर, नई दिल्ली
17.	18-10-2010	22-10-2010	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनपीटीआई (प. क्षे.) नागपुर, (महाराष्ट्र)
18.	18-10-2010	22-10-2010	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनपीटीआई (प. क्षे.) दुर्गापुर (पश्चिम बंगाल)
19.	18-10-2010	22-10-2010	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनपीटीआई (पीएसटीआई) बेंगलुरु (कर्नाटक)
20.	25-10-2010	29-10-2010	सी-डैक	नोएडा
21.	8-11-2010	12-11-2010	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	डीवीसी, कोलकाता
22.	22-11-2010	26-11-2010	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनपीटीआई (उ. क्षे.) बदरपुर, नई दिल्ली
23.	22-11-2010	26-11-2010	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनपीटीआई (प. क्षे.) नागपुर, (महाराष्ट्र)
24.	22-11-2010	26-11-2010	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	गोवा शिपयार्ड लिमिटेड, वास्को-डी-गामा, गोवा
25.	22-11-2010	26-11-2010	सी-डैक	नोएडा

कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग हेतु आधारभूत प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सूची–जारी

क्र. सं.	दिनोक		संस्था	स्थान
	से	तक		
1	2	3	4	5
26.	6-12-2010	10-12-2010	सी-डैक	नोएडा
27.	20-12-2010	24-12-2010	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनपीटीआई (उ. क्षे.) बदरपुर, नई दिल्ली
28.	20-12-2010	24-12-2010	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनपीटीआई (प. क्षे.) नागपुर, (महाराष्ट्र)
29.	17-1-2011	21-1-2011	सी-डैक	नोएडा
30.	17-1-2011	21-1-2011	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनपीटीआई (उ. क्षे.) बदरपुर, नई दिल्ली
31.	17-1-2011	21-1-2011	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनपीटीआई (प. क्षे.) नागपुर, (महाराष्ट्र)
32.	21-2-2011	25-2-2011	सी-डैक	नोएडा
33.	21-2-2011	25-2-2011	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनपीटीआई (उ. क्षे.) बदरपुर, नई दिल्ली
34.	21-2-2011	25-2-2011	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनपीटीआई (प. क्षे.) नागपुर (महाराष्ट्र)
35.	1-3-2011	5-3-2011	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनएचपीसी, कोटलीभेल, ऋषिकेश

नोट : सी-डैक नोएडा द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों हेतु सी-डैक नोएडा प्रशिक्षण स्थल से सेक्टर 12-22, नोएडा एवं मैट्रो स्टेशन सिटी सेंटर सेक्टर 34, नोएडा तक आने जाने के लिए प्रत्येक आधे घंटे के पश्चात् बस सुविधा प्रात: 8-15 से 10-00 तक सायं 4-30 से 7-20 बजे तक कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों व प्रशिक्षार्थियों के लिए उपलब्ध हैं । बाहर से आने वाले प्रशिक्षार्थी इस बस सुविधा का लाभ उठा सकते हैं ।

संलग्नक-III

राजभाषा विभाग द्वारा प्रयोजित 'कंप्यूटर पर कुशल हिंदी प्रयोग' के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का पाठ्यक्रम

अवधि : 5 पूर्ण कार्य दिवस।

पात्रता : केंद्र सरकार, बैंक, सार्वजनिक उपक्रम/उद्यम आदि कार्यालयों में कार्यरत अधिकारी/कर्मचारीगण

उद्देश्य : प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रशिक्षार्थियों को कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग संबंधी आवश्यक जानकारी एवं हिंदी प्रयोग में आने वाली समस्याओं का समाधान करना है ताकि प्रशिक्षण के फलस्वरूप प्रशिक्षणार्थी कंप्यूटर पर हिंदी का प्रयोग सरलतापूर्वक कुशलता से कर सकें ।

पूर्वापेक्षा : कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग का साधारण ज्ञान व अनुभव जिसमें इंटरनेट एवं ई-मेल का प्रयोग शामिल है ।

विषय सूची संबंधी विवरण :

1. विषय सूची में तथा विषय के अंतर्गत कवरेज में प्रशिक्षार्थियों की जरूरत एवं नयी व बेहतर तकनीक की उपलब्धता को देखते हुए ऐसे जरूरी बदलाव किए जा सकते हैं जो प्रशिक्षार्थियों की कार्यक्रम से संतुष्टि बढ़ाएं ।

2. इस कार्यक्रम में वे प्रशिक्षणार्थी भाग ले रहे होंगे जो कंप्यूटर पर पहले से ही काम कर रहे हैं । अत: पंजीकरण के बाद लगभग 30 मिनट के एक सत्र में इन प्रशिक्षणार्थियों से इनके द्वारा अनुभव की गई समस्याओं की जानकारी ली

जाएगी । इस जानकारी के प्रकाश में कार्यक्रम की विषय वस्तु (content) की समीक्षा करके उसको प्रासंगिक (relevant) एवं समसामयिक/अद्यतित (contemporary/updated) रखा जा सके। सामान्यत: विषय सूची प्रशिक्षणार्थियों द्वारा बताई गई सामान्य समस्याओं में से लगभग 90 प्रतिशत के समाधान में सक्षम होनी चाहिए । बची हुई विशिष्ट समस्याओं के समाधान के लिए कार्यक्रम के अंतिम दिन एक सत्र रखा गया है ।

3. कंप्यूटर में पहले से ही हिंदी में काम कर रहे प्रशिक्षणार्थियों में भी एक बड़ी संख्या उन प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षित है जो एम. एस. वर्ड में काम करते रहे हैं एवं जिनको एम. एस. एक्सेल या पावर प्वाइंट में काम करने का पर्याप्त ज्ञान/अनुभव नहीं है । अत: इनके लिए इन सॉफ्टवेयरों के बारे में आधारभूत जानकारी को आवश्यकतानुसार कुछ समय दिया जाए ।

4. भारत सरकार एवं अन्य संगठनों/संघों द्वारा हिंदी प्रयोग के लिए महत्वपूर्ण संसाधन नि:शुल्क (open source) उपलब्ध कराए गए हैं इनमें से जो सॉफ्टवेयर यूनीकोड मानक के अनुकूल है एवं जिनका उपयोग कार्यालयों में वर्तमान में हो रहे कंप्यूटर प्रयोग पर विपरीत असर डालने की संभावना नहीं है उनकी जानकारी दी जाएगी। भारत सरकार (सूचना प्रौद्योगिकी विभाग, राजभाषा विभाग आदि), सरकारी संस्थान एवं सरकार के अधीन संगठन, स्वायत सोसाइटी (सी-डैक आदि) के द्वारा सरकारी कार्यालयों में हिंदी प्रयोग के लिए विकसित किए गए सॉफ्टवेयरों जैसे ओपन आफिस, बोस आदि एवं अन्य संसाधनों की जानकारी देना प्रशिक्षण कार्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा होगा। भारत सरकार द्वारा सरकारी कार्यालयों में हिंदी प्रयोग को सरल एवं कुशल बनाने के लिए विक्रय के लिए उपलब्ध कराए गए अन्य उपयोगी सॉफ्टवेयर जैसे श्रुतलेखन की जानकारी भी दी जाए। किसी सॉफ्टवेयर की जानकारी में इनकी उपयोगिता क्षमता, पर्वापेक्षा (Pre-requisite) प्राप्त/इंस्टाल करना, प्रयोग करना एवं अन्य जरूरी जानकारी शामिल होगी ।

5. किसी भी विषय पर नियमित प्राध्यापकों को नवीनतम जानकारी की आवश्यकता होने पर राजभाषा विभाग एवं तकनीकी निदेशक, एन.आई.सी. उनके लिए उपयुक्त प्रशिक्षण की व्यवस्था करेंगे ।

6. यूनीकोड आधारित फोंटस हिंदी प्रयोग संबंधी एक बड़ी समस्या का समाधान है अत: इनके बारे में जानकारी देने के लिए पर्याप्त समय दिया जाएगा ।

7. इन मार्ग निर्देशों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम की विषय सूची में शामिल किए जाने के लिए कुछ विषय इस प्रकार हैं :

क्रमांक	विषय
1.	प्रशिक्षार्थियों से कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग में अनुभव की गयी समस्याओं का इनपुट लेना
2.	कंप्यूटर पर माइक्रोसाफ्ट वर्ड, एक्सेल, पावर प्वाइंट आदि की जानकारी पर पुनश्चर्या (refreshing)
3.	फोंट एवं टाइपिंग संबंधी समस्याएं, यूनीकोड का प्रयोग कैसे करें, पहले से तैयार डाक्यूमेंट को ओपन टाइप फोंटस में कैसे बदलें
4.	हिंदी प्रयोग के लिए भारत सरकार या सरकार से जुड़ी संस्थाओं द्वारा विकसित किए/कराए गए महत्वपूर्ण सॉफ्टवेयरों की उपयोगिता, क्षमता, प्राप्त/इंस्टाल करने का तरीका एवं प्रयोग विधि की जानकारी
5.	सामान्यता: प्रयोग होने वाले सॉफ्टवेयर (एम.एस.वर्ड, एम.एस.एक्सेल, एम.एस. पावर प्वाइंट आदि) का बेहतर प्रयोग करने के लिए उनके प्रयोग संबंधी गहन जानकारी
6.	वेबपेज का प्रबंधन, ई-मेल, खोज आदि

8. प्रशिक्षार्थियों की समस्याओं, विकास स्वरूप तकनीक में आए बदलाव एवं उन्नत तकनीक की उपलब्धता को ध्यान में रखकर उपरोक्त विषय की सूची के अतिरिक्त अन्य विषय समय-समय पर आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम में अतिरिक्त जानकारी/विषय शामिल किए जाएंगे ।

संलग्नक-IV

कंप्यूटर पर कुशल हिंदी प्रयोग प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सूची

क्र. सं.	दिनांक		संस्था	स्थान
	से	तक		
1.	21-6-2010	25-6-2010	सी-डैक	नोएडा
2.	26-7-2010	30-7-2010	सी-डैक	नोएडा
3.	9-8-2010	13-8-2010	सी-डैक	नोएडा
4.	9-8-2010	13-8-2010	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनएचपीसी, चमेरा, खैरी (हि.प्र.)
5.	6-9-2010	10-9-2010	सी-डैक	नोएडा
6.	6-9-2010	10-9-2010	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनएचपीसी, बैरास्यूल, सुरंगानी
7.	18-10-2010	22-10-2010	सी-डैक	नोएडा
8.	8-11-2010	12-11-2010	सी-डैक	नोएडा
9.	20-12-2010	24-12-2010	सी-डैक	नोएडा
10.	3-1-2011	7-1-2011	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनएचपीसी, टनकपुर, बनबसा
11.	10-1-2011	14-1-2011	सी-डैक	नोएडा
12.	17-1-2011	21-1-2011	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	विपणन एवं निरीक्षण निदेशालय, एनएच-4, फरीदाबाद
13.	7-2-2011	11-2-2011	सी-डैक	नोएडा
14.	12-2-2011	17-2-2011	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	एनटीपीसी, विंध्याचल (मध्य प्रदेश)
15.	14-2-2011	18-2-2011	सी-डैक	नोएडा

नोट : सी-डैक नोएडा द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों हेतु सी-डैक, नोएडा प्रशिक्षण स्थल से सेक्टर 12-22, नोएडा एवं मैट्रो स्टेशन सिटी सेंटर सेक्टर 34, नोएडा तक आने जाने के लिए प्रत्येक आधे घण्टे के पश्चात् बस सुविधा प्रातः 8.15 से 10.00 तथा सायं 4.30 से 7.20 बजे तक कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों व प्रशिक्षार्थियों के लिए उपलब्ध है। बाहर से आने वाले प्रशिक्षार्थी इस बस सुविधा का लाभ उठा सकते हैं ।

संलग्नक-V

कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग के लिए प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण

अवधि: 3 पूर्ण कार्य दिवस

पूर्वापेक्षा : केंद्र सरकार के कार्यालयों के वे कर्मचारी/अधिकारी जो कंप्यूटर प्रयोग की अच्छी जानकारी एवं अनुभव रखते हैं तथा जो प्रशिक्षण के उपरांत कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग संबंधी प्राप्त किये गये ज्ञान का प्रशिक्षण अपने कार्यालय में दूसरे कर्मचारियों/अधिकारियों को दे सकने की दृष्टि से उपयुक्त हों ।

पात्रता : केंद्र सरकार, बैंक, सार्वजनिक उपक्रमउद्यम/ आदि कार्यालयों में कार्यरत अधिकारी/कर्मचारीगण के लिए जो पहले ही कंप्यूटर प्रयोग की अच्छी जानकारी रखते हैं तथा जिनको कंप्यूटर पर कुशल हिंदी प्रयोग प्रशिक्षण के उपरांत संबंधित कार्यालय अपने यहाँ बाकी कर्मचारियों/अधिकारियों को प्रशिक्षण देने के लिए उपयोग कर सकते हैं ।

उद्देश्य : कार्यालयों में कंप्यूटर प्रयोग के ज्ञान एवं अनुभव में अग्रणी कर्मचारियों/अधिकारियों को कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग संबंधी उन्नत व अद्यतित जानकारी देकर उन्हें अन्य कर्मचारियों/अधिकारियों को प्रशिक्षण देने के लिए प्रशिक्षकों के रूप में तैयार करना ।

विषय सूची संलग्नक III में दिए गए विवरण के अनुरुप ।

संलग्नक-VI

प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सूची

क्र. सं.	दिनांक		संस्था	स्थान
	से	तक		
1.	09-08-2010	11-08-2010	रा,सू. विज्ञान-केंद्र	जयपुर
2.	01-11-2010	03-11-2010	रा,सू. विज्ञान-केंद्र	भोपाल
3.	06-12-2010	08-12-2010	रा,सू. विज्ञान-केंद्र	भोपाल
4.	06-12-2010	08-12-2010	रा,सू. विज्ञान-केंद्र	पटना

संलग्नक-VII

प्रशिक्षण केंद्रों का पता जहां पर नामांकन प्रेषित किया जाना है

1. एन.पी.टी.आई.

	प्रशिक्षण संस्थान	संपर्क पता/विवरण
1. बदरपुर	एनपीटीआई (उत्तरी क्षेत्र), बदरपुर थर्मल पॉवर स्टेशन, बदरपुर, नई दिल्ली- 110044	दूरभाष : 011-26940722, 26944198, 2694704 फैक्स : 011-26940722 ई-मेल :nptinr@vsnl.com
2. नागपुर	एनपीटीआई (पश्चिमी क्षेत्र), साऊथ अम्बाझरी रोड, नागपुर- 440 022	दूरभाष : 0712-2231478, 2226176, 2236538 फैक्स : 0712-2220413 ई-मेल :nptinag@nagpur.dot.net.in
3. दुर्गापुर	एनपीटीआई (पूर्वी क्षेत्र), सिटी सेन्टर, दुर्गापुर- 713 216	दूरभाष : 0343-2545888, 2546237 फैक्स : 0343-2545888 ई-मेल :dgp_nptier@sancharnet.in, dgp_rccfd@sancharnet.in
4. फरीदाबाद	निदेशक (प्रशा.), राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण संस्थान, एन.पी.टी.आई. परिसर, सैक्टर-33, फरीदाबाद-121 003	दूरभाष : 0129-2272142 फैक्स : 0129-2275309 ई-मेल :npti_rkc@yahoo.co.in
5. बैंगलूर	विद्युत प्रणाली प्रशिक्षण संस्थान, पोस्ट बाक्स नं. 8201, बैंगलूर-560 070	दूरभाष : 080-26713758, 26718186 फैक्स : 080-26713758, ई-मेल :bngpsti@kar.nic.in

प्रशिक्षण संस्थान	संपर्क पता/विवरण
6. फरीदाबाद (क्रम सं. 12 संलग्नक 4 के कार्यक्रम हेतु)	सहायक निदेशक (राजभाषा), नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कार्यालय, विपणन एवं निरीक्षण निदेशालय, न्यू सी.जी.ओ. काम्पलैक्स, फरीदाबाद- 121 001
7. कोलकाता	वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, दामोदर घाटी निगम, डीवीसी टावर, वीआईपी रोड, कोलकाता-7000054
8. गंगटोक	कार्यपालक निदेशक, तीस्ता जल विद्युत परियोजना चरण-5, एनएचपीसी लिमिटेड, पी.ओ. -सिंगताम, ईस्ट सिक्किम-737134
9. ऋषिकेश	प्रबंधक (मानव संसाधन), कोटली भेल परियोजना चरण-1ए, एनएचपीसी लिमिटेड, देवप्रयाग, पोस्ट बैग नं. 01, पो.ओ.-देवप्रयाग, जिला-टिहरी गढ़वाल (उत्तराखंड)
10. ईटानगर	प्रबंधक (मानव संसाधन), कार्यपालक निदेशक का कार्यालय (दिवांग एवं तवांग परियोजना), एनएचपीसी लिमिटेड, सैक्टर-सी, ईटानगर (अरूणाचल प्रदेश) -791111
11. सीधी	राजभाषा अधिकारी, एनएचपीसी लिमिटेड, विंध्याचल सुपर थर्मल पावर प्रोजेक्ट, पोस्ट -विंध्यनगर, जिला सीधी (म.प्र.)
12. चम्बा	1. प्रबंधक (मानव संसाधन), एनएचपीसी लिमिटेड, चमेरा पावर स्टेशन नं.-1. पोस्ट -खैरी- 176325 जिला-चम्बा (हि.प्र.)

	प्रशिक्षण संस्थान	संपर्क पता/विवरण
	2. उप-प्रबंधक (मानव संसाधन) एनएचपीसी लिमिटेड, बेरास्यूल, पोस्ट-सुरंगानी-176317 जिला-चम्बा (हि.प्र.)	
13. चम्पावत	प्रबंधक (मानव संसाधन), एनएचपीसी लिमिटेड, टनकपुर हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कैम्पस, पोस्ट ऑफिस-बनवासा, जिला-चम्पावत (उत्तरांचल)-262310	
14. गोवा	हिंदी अधिकारी, गोवा शिपयार्ड लिमिटेड, वास्को-डी-गामा, गोवा-403802	
2. सी-डैक		
नोएडा	प्रोजेक्ट मैनेजर, सी-डैक, अनुसंधान भवन, सी-56, इंडस्ट्रियल एरिया, सैक्टर-62, नोएडा- 261 307	दूरभाष : 0120-2402551-60 फैक्स : 0120-2402569 ई-मेल :vksharma@cdacnoida.in
3. राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र		
भोपाल	राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र सी विंग बेसमेंट, विंध्याचल भवन, भोपाल- 462004	दूरभाष : 0755-2551265 ई-मेल :kak.sucheeta@nic.in
जयपुर	राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र राजस्थान राज्य केंद्र, ट्रेनिंग डिवीजन, फूड बिल्डिंग, टाप फ्लोर, सचिवालय, जयपुर	दूरभाष : 0141-2227091 फैक्स : 0141-2227075 ई-मेल :sc.gupta@nic.in
पटना	राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र एन.आई.सी. (राज्य केंद्र), प्रथम तल, टेक्नोलाजी भवन, बैले रोड, पटना-800015	दूरभाष : 0612-2220964, 2236198 ई-मेल :santosh.kumar@nic.in

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग (तकनीकी कक्ष)
द्वितीय तल, लोकनायक भवन, खान मार्किट, नई दिल्ली
(दूरभाष : 24619860, फैक्स : 24619860/24617695)
ई-मेल-techcell-01@nic.in

नामांकन-प्रपत्र

टिप्पणी :- 1. यह कार्यक्रम उन अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए है, जिनके पास कंप्यूटर सुविधा उपलब्ध है, लेकिन उन्हें कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग संबंधी जानकारी कम है ।

2. प्रशिक्षण कार्यक्रम आरम्भ होने से एक माह पूर्व नामांकन-प्रपत्र सी-डैक/एन.पी.टी.आई./एन.आई.सी.में प्राप्त हो जाने चाहिए ।

3. सी.डेक/एन.पी.टी.आई./एन.आई.सी. से नामांकन स्वीकार किए जाने के संदर्भ में **विनिर्दिष्ट सूचना/पुष्टि प्राप्त किए जाने से पूर्व किसी भी अधिकारी को प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए निर्मुक्त नहीं किया जाना चाहिए ।**

(क) **कार्यक्रम**

शीर्षक : कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग (आधारभूत)/कंप्यूटर पर कुशल हिंदी प्रयोग/प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण (जो लागू न हो उसे काट दें)

तिथि : **संस्था :**

स्थान :

(ख) **नामांकन**

(1) (i) नाम ..... (ii) पदनाम .....

(iii) हिंदी ज्ञान का स्तर (कार्यसाधक)..... (iv) ई-मेल : .....

(v) टेलीफोन नं. ..... (vi) मोबाइल नं. .....

(vii) उपलब्ध कंप्यूटर सुविधा का विवरण (आपरेटिंग सिस्टम, इन्टरनेट की उपलब्धता, क्या आपका ई-मेल एकाउंट है? आदि) .....

(2) यदि पिछले 3 वर्ष में राजभाषा विभाग द्वारा प्रायोजित कंप्यूटर प्रशिक्षण या हिंदी प्रयोग संबंधी साफ्टवेयरों का प्रशिक्षण प्राप्त किया है तो उसका विवरण (अवधि, साफ्टवेयर) दिनांक सहित.....

(3) अभ्यर्भी द्वारा किए जाने वाले कार्यों का संक्षिप्त विवरण .....

(4) प्रयोग किए जा रहे कंप्यूटर साफ्वेयरों के नाम व इनमें काम करने का अनुभव.....

(5) क्या मुख्यतया: आप हिंदी में टिप्पणी लिखते हैं ? .....

(6) क्या हिंदी टाइपिंग जानते हैं?.....

अभ्यर्थी के हस्ताक्षर .....

नोट : प्रशिक्षणार्थी कृपया अपना ई-मेल पता और संपर्क फोन नं. अवश्य दें ताकि नामांकन की मंजूरी एवं अन्य आवश्यक सूचना समय से देना सुनिश्चित किया जा सके ।

(ग) अभ्यर्थी के कार्यालय द्वारा भरे जाने के लिए

1. पूरा पता (नामांकन की स्वीकृति जिस पर भेजी जानी है)

नाम/पद ....

मंत्रालय/विभाग/संगठन ....

पता ....

....

....

पिन.......................................दूरभाष : ....ई-मेल.............................

2. प्रमाणित किया जाता है कि

(1) कार्यालय अभिलेख के अनुसार अभ्यर्थी द्वारा दिया गया ब्यौरा सही है :

(2) नामांकन स्वीकार हो जाने पर अभ्यर्थी को प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित होने के लिए निर्मुक्त कर दिया जाएगा;

(3) अभ्यर्थी कंप्यूटर पर कार्य कर रहा है ।

नामांकन भेजने वाले कार्यालय की संदर्भ संख्या ....

स्थान ....

(अधिकारी के हस्ताक्षर एवं मोहर)

एन एच पी सी लि., क्षेत्रीय कार्यालय-III कोलकाता

हिंदी प्रवीण व प्राज्ञ परीक्षाओं का प्रमाण-पत्र वितरण

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए वर्ष 2009-2010 के लिए जारी वार्षिक कार्यक्रम एवं संसदीय राजभाषा समिति को निरीक्षण के दौरान दिए गए आश्वासनों में से एक भाषा प्रशिक्षण को पूरा करना को ध्यान में रखते हुए इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए तत्परता से कार्रवाई की गई और इस लक्ष्य को प्राप्त कर लिया गया । इस कार्यालय के हिंदी प्रशिक्षण के लिए पात्र हिंदीतर भाषी कार्मिकों को हिंदी शिक्षण योजना राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा संचालित हिंदी प्रवीण व प्राज्ञ पाठयक्रमों के प्रशिक्षण योजना के तहत प्रशिक्षण दिलाया गया । माह नवंबर, 2008 व मई, 2009 में हिंदी प्रवीण व प्राज्ञ परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुए 17 कार्मिकों का प्रमाण-पत्र दिनांक 24-02-2010 को प्राप्त हुआ ।

उक्त प्रमाण पत्र का वितरण दिनांक 05-03-2010 की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की चौथी तिमाही बैठक में श्री दिग्विजय नाथ, कार्यपालक निदेशक, क्षेत्र-III के करकमलों से किया गया । इस बैठक में राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य एवं सहायक प्रबंधक तथा उससे ऊपर के अधिकारी तथा प्रमाण-पत्र प्राप्त करने वाले कार्मिक उपस्थित थे ।

पाठकों के पत्र

त्रैमासिक पत्रिका ''राजभाषा भारती'' के 126वें अंक में महामहिम राष्ट्रपति जी का हिंदी दिवस के अवसर पर दिया हुआ अभिभाषण बहुत अच्छा लगा । जिसमें उन्होंने विनोबा जी के कथन द्वारा हिंदी के महत्व को स्पष्ट किया है । कुलदीप कुमार जी द्वारा लिखित ''राष्ट्रकवि मैथिलिशरण गुप्त'' नामक लेख बहुत ही सुंदर है । विश्व हिंदी दर्शन के अन्त ''विदेशी माटी में पल्लवित और पुष्पित हिंदी'' यह डॉ. एन.एस. शर्मा द्वारा लिखित लेख सचमुच विश्व हिंदी यात्रा को प्रस्तुत करने वाला लेख है । डॉ. अखिलेश शुक्ल जी अपने लेख में पुलिस की भूमिका को बखूबी समझते हैं आशा है कि पुलिस वर्ग इससे लाभान्वित होगा । '' राजभाषा भारती'' का हर अंक उत्कृष्ट और ज्ञान से भरा हुआ होता है । हर पत्रिका के अंक का संपादकीय लेख गिने-चुने शब्दों में, संक्षेप में हिंदी के महत्व को उजागर करने वाला होता है । इसके लिए मैं संपादक महोदय को धन्यवाद देता हूँ । '' राजभाषा भारती'' का यह वृक्ष ऐसा ही पल्लवित एवं पुष्पित होता रहे ऐसी आशा व्यक्त करता हूँ और पुनः एक बार राजभाषा भारती के परिवार को धन्यवाद देता हूँ ।

–प्रो. आर. डी. गवारे

हिंदी विभाग, अ.र.भा. गरूड, वरिष्ठ महा. शेंदुर्णी तार.जामनेर जि. जलगाँव -424204

'' राजभाषा भारती'' पत्रिका का 126 अंक (जुलाई-सितंबर, 2009) में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए आपके द्वारा किए जा रहे प्रयास सराहनीय हैं ।

–ओम प्रकाश कोटनाला

सहायक निदेशक (रा.भा.), हिंदी अनुभाग, नार्थ विंग, प्रथम तल, सेवा भवन, आर. के. पुरम, नई दिल्ली-66

त्रैमासिक पत्रिका 'राजभाषा भारती' के अंक 126 (जुलाई-सितंबर, 2009) में छपे सभी लेख, ज्ञानवर्धक हैं । हिंदी दिवस के अवसर पर भारत गणतंत्र की महामहिम राष्ट्रपति महोदया श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील जी का अभिभाषण प्रेरणादायक है । 'विदेश माटी में पल्लवित और पुष्पित हिंदी' नामक लेख से विदेश में हिंदी भाषा के प्रयोग/प्रसार/महत्व के बारे में काफी जानकारी मिली । 'राजभाषा संबंधी गतिविधियों' के माध्यम से विविध उपक्रमों के राजभाषा संबंधी क्रियाकलापों के बारे में पता चला ।

पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई ।

–सुश्री कमल भोजवानी

सहायक महाप्रबंधक राजभाषा, एयर इंडिया, ओल्ड एअरपोर्ट, कालिना, सांताकुंज (पूर्व) मुंबई

आरंभिक पृष्ठ पर हिंदी दिवस के उपलब्ध में महामहिम राष्ट्रपति महोदया द्वारा व्यक्त विचारों से सहमत हुआ जा सकता है । उनका यह कथन कि 'किसी भी भाषा का विकास उसमें उपलब्ध ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न विधाओं तथा सृजित साहित्य की गुणवत्ता पर निर्भर करता है' एकदम सटीक है । इस नजरिए से हमारा हिंदी भाषा भंडार अत्यंत समृद्ध और परिपूर्ण है ।

आपका 'संपादकीय' लेख भी विचारणीय है । प्रो शंकर बुंदेले का चिंतन 'भूमंडलीकरण के संदर्भ में हिंदी' वर्तमान बाजारवादी युग में हिंदी की दशा को रेखांकित करता है । भूमंडलीकरण, वैश्विकरण, बाजारवाद तथा उपभोक्ता समय में आज हिंदी को एक उत्पाद के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा है, अर्थात् 'बिकाऊ हिंदी' का प्रचलन बढ़ा है । इसमें बहुराष्ट्रीय कंपनियों के अतिरिक्त देश का बड़ा मीडिया समूह टीवी चैनल वगैरह शामिल है । अमरीश सिंह का लेख 'नए प्रयोग जरूरी हैं सरकारी कार्यालयों के हिंदी विभाग में ताजगी के लिए' तकनीकी रूप से उद्देश्यपूर्ण है । डॉ. विभा त्रिपाठी लिखित 'मन' संबंधी लेख महत्वपूर्ण है । साथ ही कुलदीप कुमार द्वारा प्रस्तुत 'राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त' के विषय में जानकारी पाठकों को प्राप्त हुई । डॉ. अखिलेश शुक्ल का लेख 'बदलते परिवेश में पुलिस की भूमिका' गंभीर चिंतनीय है । इसके अतिरिक्त पत्रिका की अन्य रचनाएं भी पठनीय एवं सराहनीय हैं । 'राजभाषा भारती' अपने नाम को सार्थक कर रही है । इससे हिंदी का व्यापक प्रसार हो रहा है।

–मोहम्मद मुमताज हसन

(कवि/लेखक), द्वारा-डॉ. मानो बाबू, रिकाबगंज, टिकारी, गया (बिहार)-824236

त्रैमासिक प्रत्रिका 'राजभाषा भारती' अंक 126 (जुलाई-सितंबर, 2009) में 'वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी की सार्थकता' और 'हिंदी शोध सांप्रत स्थिति, चुनौतियां एवं संभावनाएं' लेख विशेष रूप से हिंदी की वास्तविक स्थिति को परिचय कराने में सक्षम हैं। 'विदेशी माटी में पल्लवित और पुष्पित हिंदी ' लेख अत्याधिक प्रभावशाली है जो हिंदी के प्रति अगाध प्रेम का परिचायक है। निशाकान्त चतुर्वेदी का स्वास्थ्य संबंधी लेख-'सीमा सुरक्षा बल की कार्य परिस्थिति में मधुमेह से बचाव एवं शरीर भार पर नियंत्रण' उच्च कोटि का तथा सभी के लिए अत्यंत उपयोगी है।

आपकी प्रतिष्ठित पत्रिका द्वारा राजभाषा संबंधी सभी गतिविधियों की जानकारी भी समय-समय पर मिलती रहती है । विविध कार्यशालाओं, संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों का विवरण इस बात का परिचायक है कि राजभाषा विभाग हिंदी के विकास तथा प्रचार-प्रसार हेतु पूर्णतया समर्पित तथा प्रयत्नशील है। समय-समय पर पुरस्कार/प्रतियोगिताओं का आयोजन भी प्रशंसनीय है।

–डॉ. साधना तोमर
अ.सि. प्रोफेसर, हिंदी विभाग, जनता वैदिक महाविद्यालय, बड़ौत

राजभाषा भारती अंक 126 में बहुत से लेख हृदय स्पर्शी हैं।/प्रयास के लिए सादर नमन।

श्री देव प्रकाश मिश्र द्वारा लिखित 'दलित कटघरे में संत कबीर' नामक लेख पढ़कर अति प्रसन्नता हुई/लेखक ने बहुत ही स्पष्ट शब्दों में संत कबीर के व्यक्तित्व को उजागर किया है और पूर्व प्रयासों का समुचित उत्तर दिया है/लेखक को हृदय से साधुवाद।

–घनश्याम दास जिन्दल
सहायक राजभाषा अधिकारी, इलेक्ट्रानिक्स डिवीजन, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, मुंबई-400085

'राजभाषा भारती' का अंक-126 में श्री अमरीश सिन्हा का आलेख 'नए प्रयोग जरूरी हैं'······ बहुत पसंद आया। उन्होंनें अपने इस लेख में कुछ सुझावों के साथ सार्थक सवाल भी उठाए हैं और नए प्रयोग करने की चुनौती दी है, जिस पर राजभाषा विभाग को सार्थक बहस चलाकर आवश्यक कदम उठाने चाहिएं। वैसे इस लेख का कमजोर पक्ष यह रहा कि उन्होंने प्रचार-प्रसार एवं विज्ञापनबाजी पर विशेष ध्यान दिया है, जबकि ज्यादा जोर पत्राचार एवं टिप्पण-आलेखन पर होना चाहिए था। डॉ. हरीश कुमार सेठी ने अपने आलेख में मौजूदा कंप्यूटर प्रणाली की हिंदी करण के मानकीकरण पर विस्तृत प्रकाश डाला है, जो सभी के लिए उपयोगी है। वैसे इस संबंध में आपने कवर पृष्ठ-4 पर पूरा विवरण प्रकाशित किया है। श्री कुलदीप कुमार ने अपने लेख के माध्यम से राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की यादें ताजा कर दीं। श्री निशाकांत चतुर्वेदी ने हॉलांकि 'सीमा सुरक्षा बल को दृष्टग्रत रखकर ही अपना स्वास्थ्य आलेख तैयार किया है, तथापि यह उन सभी के लिए उपयोगी है जो पहाड़ पर प्रवास करते हैं।

–प्रभारी (राजभाषा)
हिंदुस्तान पेपर कॉरपोरेशन लिमिटेड, (भारत सरकार का उद्यम) कछाड़ पेपर मिल, पंचग्राम-788802

राजभाषा भारती का अंक 126 (जुलाई-सितंबर, 2009) पत्रिका के अवलोकन से प्रसन्नता हुई राष्ट्रभाषा हिंदी निःसंदेह राजभाषा अधिकारिणी, राजभाषा है। उक्त पत्रिका में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील महोदया का हिंदी दिवस समारोह का भाषण प्रकाशित हुआ है। महामहिम प्रतिभा देवी ने हिंदी दिवस समारोह में अभिव्यक्ति दी है कि "किसी भी भाषा का विकास उसमें उपलब्ध ज्ञान विज्ञान की विभिन्न विधाओं और सृजित साहित्य की गुणवत्ता पर निर्भर रहता है। यह शत् प्रतिशत् सही है। आप श्री महोदया ने अंत में व्यक्त किया है कि "भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में हिंदी भाषा का प्रयोग बढ़ रहा है।" इन भाव शब्द सुमनों की सुगंधमय अभिव्यक्ति साहित्यकारों के मन को गुदगुदाने वाली है। राजभाषा भारती का यह अंक विभिन्न आलेखों के भाव सुमनों का रंग बिरंगा पुष्पगुच्छ है। जो मोहक है। प्रसन्नता प्रदायक है तथा हृदय में उच्च भावों का स्फुरण कर रहा है।

–डॉ. रामचन्द्र महाजन 'अमरेश'
अध्यक्ष-आदर्श साहित्य समिति, 1, रामपेट खरगोन (म. प्र.)-451001

"राजभाषा भारती" राजभाषा के लिए शीर्षस्थ पत्रिका है इसके अंक आकर्षक ज्ञानवर्द्धक के साथ पठनीय, प्रशंसनीय एवं संग्रहणीय है जिसकी प्रस्तुति बेहद आकर्षित है। इसके प्रकाशन के लिए विशेष रूप से आपको तथा राजभाषा विभाग के सभी कार्मिकों तथा संपादक मंडल को बधाई।

"राजभाषा भारती" के 126वें अंक में सभी लेख स्तरीय हैं विशेष रूप से श्री अमरीश सिन्हा जी का लेख नए प्रयोग जरूरी है सरकारी कार्यालयों के हिंदी विभाग में ताजगी के लिए डॉ. उत्तम पटेल साहब का हिंदी शोध। सांप्रत स्थिति, चुनौतियां एवं संभावनाएं

श्री मुरारी प्रसाद जी का वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी की सार्थकता तथा पत्रिका में विभिन्न संस्थानों द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में किए गए कार्यों का विस्तृत विवरण प्राप्त होने के साथ-साथ नराकास की गतिविधियों की जानकारी भी ज्ञानवर्धक हैं ।

–गौतम कुमार मीणा
राजभाषा अधिकारी, दि ओरिएण्टल इंश्योरेस कंपनी लिमिटेड क्षेत्रीय कार्यालय, मैट्रो पालस, पहली मंजिल, नार्थ रेलवे स्टेशन रोड, एर्णाकुलम, कोचिन-682018

पत्रिका राजभाषा भारती का अंक 126 जुलाई-सितंबर, 2009 हर बार की तरह इसकी रूपसज्जा बेहतर है । सभी लेख जानकारी से भरे हैं। इनसे हिंदी में काम करने की प्रेरणा मिलती है ।

–अशोक कुमार बिल्लूरे
वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, मुख्य नियंत्रण सुविधा, पीबी नं. 66, सालगामे रोड, हासन-573201

"राजभाषा भारतीय" का अंक 126 (जुलाई-सितंबर, 2009) में राजभाषा से संबंधी विविध लेखों का संकलन जानकारीपूर्ण एवं ज्ञानवर्धन करने वाला लगा । 'विश्व हिंदी दर्शन' विशेष रोचकता एवं भावविभोर कर देने वाला लेख था। राजभाषा की वैविध्यपरक जानकारी के साथ-साथ सामाजिक, सांस्कृतिक और स्वास्थ्य संबंधी लेख भी ज्ञानवृद्धि एवं साहित्यिक अभिरुचि को बढ़ावा देने वाले हैं। अपने आप में एक संपूर्ण और ज्ञानवर्धक अंक प्रकाशित करने के लिए संपादक, सहायक संपादक और विविध लेखों के मूर्धन्य लेखक धन्यवाद के पात्र हैं ।

–वी. एस. नकवाल
राजभाषा अधिकारी, महाप्रबंधक, बीएसएनएल कार्यालय, नाशिक-422002

राजभाषा भारती अंक 121 (अप्रैल-जून, 2008) के अंक में प्रकाशित समस्त सामग्री स्तरीय पठनीय और ज्ञानवर्धक है । हिंदीतर भाषी लेखकों के लेख भी रोचक होने के साथ-साथ ज्ञानवर्धक, स्तरीय एवं प्रामाणिक हैं एवं हिंदी को आगे बढ़ाने में उनके योगदान को हिंदी भाषी लेखकों से कम नहीं आंका जा सकता है । अनु गौड का "शरद जोशी के साहित्य में धार्मिक विकृतियों पर व्यंग्य" लेख अच्छा लगा। समय-समय पर विभिन्न कार्यालयों की राजभाषा गतिविधियों से परिचित कराने में भी पत्रिका का योगदान महत्वपूर्ण है । "राजभाषा भारतीय" हिंदी विश्व में अपनी अलग ही पहचान बना चुकी है एवं राजभाषा हिंदी को आगे बढ़ाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल बधाई का पात्र है ।

–एस. के. शर्मा
हिंदी अधिकारी, कृते वरिष्ठ महाप्रबंधक, भारतीय आयुक्त निर्माणियां, आयुध निर्माणी, भंडारा

राजभाषा भारतीय अंक 126, जुलाई-सितंबर, 2009 पत्रिका का मुख आवरण, उत्तर दक्षिण पूर्व-पश्चिम के अद्वितीय चार दिशाओं की पारंपरिक गतिविधियों ने स्थूल-सूक्ष्म, दोनों दृष्टिकोणों से गंभीर ऊर्जा स्रोतों को प्रभावित कराया है । इस पत्रिका में प्रकाशित लेख आधुनिक जीवन चर्या के चिंतन-स्रोतों में बसी नैतिक संदर्भ-जिज्ञासा मानो एक एकांकीकृत स्वरूप हो। इसके फलस्वरूप हम राष्ट्रीय जनजागरण को यथार्थवादी विकासोन्मुखी बनाने के लिए उसकी बुनियाद में भाषाई मापदण्डों के आधार पर नई ऊर्जा, शक्ति एवं मर्मज्ञता प्रदान कर रहे हों । संपादकीय पृष्ठ के अंतर्गत उद्द्योषित विवेचना आदर्श जीवन-स्रोतों को नैतिकता, चारित्रिक एवं सात्विक मूल्यों का मानो साक्ष्य प्रमाण बन गए हैं ।

इस महती कार्य में संलिप्त सभी मित्र बंधुओं को साधुवाद।

–त्रिरत्न
सहायक निदेशक (रा. भा.) कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पंचदीप भवन 143 स्टर्लिंग रोड, चैन्नई-34

"राजभाषा भारती" के 126 अंक पत्रिका में प्रकाशित प्रो. शंकर बुंदेले की लेख "भूमंडलीकरण के संदर्भ में हिंदी" मुरारी प्रसाद की लेख "वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी की सार्थकता" और डॉ. एन. एस. शर्मा की लेख "विदेशी माटी में पल्लवित और पुष्पित हिंदी" ज्ञानवर्धक है । आपकी पत्रिका हिंदी की प्रगामी प्रगति के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगी । पत्रिका मंडली की सृजनात्मक प्रतिभा के लिएं बधाई एवं हिंदी के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

–वी. उषारानी
हिंदी अधिकारी, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सिविल लेखापरीक्षा), तमिलनाडु एवं पांडिचेरी, लेखापरीक्षा भवन, 361 अण्णा सालै, तेलामपेट, चैन्नई-600018

राजभाषा भारतीय के चिंतन स्तंभ में विचारपूर्ण लेख सभी पाठकों के लिए प्रेरणादायी होते हैं और हिंदी भाषा के गौरव की अभिव्यक्ति के द्वारा लोगों में राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति प्रेम को दृढ़ करते हैं । विचार विमर्श स्तंभ में समीक्षा द्वारा जहां रचनाओं का गंभीर मूल्यांकन होता है वहीं पाठकों को सत्य तक पहुंचने में एक सोपान मिल जाता है । प्रस्तुत अंक में "दलित के कटघरे में कबीर" शीर्षक लेख में धर्मवीर भारती की रचना "कबीर बाज भी कपोत भी उपीहा भी" की समीक्षा करते हुए लेखक का यह कथन "पहले जरूरत है कि अपने को इन जातिवादी भावनाओं से ऊपर उठाया जाए" और "तब कबीर का चिन्तन किया जाए अन्यथा इन समस्याओं का अंत नहीं हो सकता" अत्यंत सटीक है । इस वाक्य से कबीर दार्शनिक संतों के अध्यताओं को पाथेय मिला है साहित्यिकी और पुरानी यादें स्तंभ में प्रकाशित गंभीर किन्तु सहज बोधगम्य रचनाओं में प्रतियोगिता परीक्षा के लिए तैयारी करने वाले प्रत्याशियों को सहज ही सामग्री मिल जाती है । अन्य लेख भी प्रशस्त और पठनीय होते हैं । हिंदी विषयक गतिविधियां और समाचारों को पढ़कर पर्याप्त संतोष मिलता है ।

–स्वामी अनन्त भारती
स्वामी केशवानन्द योग संस्थान, दिल्ली

'राजभाषा भारती' पत्रिका के 126 अंक में प्रकाशित सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं । रचनाओं में विशेषतया डॉ. हरीष कुमार सेठी की 'हिंदी भाषा के विविध अंगों और कंप्यूटर प्रणाली का मानकीकरण' अत्यंत उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक है । अन्य सभी स्तंभ पठनीय तथा प्रेरणाप्रद हैं । पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को साधुवाद ।

–डी. वी. गोंडनाले
महाप्रबंधक, प्रतिभूमि कागज कारखाना, होशंगाबाद-461005 (मध्य प्रदेश)

'राजभाषा भारती' का जुलाई-सितंबर, 2009 अंक का संपादकीय काफी प्रेरणादायक है । पत्रिका की सभी रचनाएं ज्ञानवर्द्धक व उपादेयता से भरपूर हैं । पत्रिका में नया स्तंभ 'विचार-विमर्श' शुरू किया है इससे पाठकों को नई-नई जानकारियां मिलेंगी। इसका प्रथम लेख 'दलित कटघरे में संत कबीर' काफी शोधपरक है । संत कबीर, संत तुलसीदास जी के बारे में यह लेख मील का पत्थर साबित होगा।

पत्रिका को ऐसा भव्य व गरिमामय रूप देने के लिए आप और आपके सहयोगी साधुवाद के पात्र हैं ।

गजानन्द गुप्त, मंत्री
राष्ट्रभाषा प्रचार परिषद, गुर्गा सदन, 19-3-946, शमशीरगंज, हैदराबाद-500053

'राजभाषा भारती' 126वें अंक में प्रकाशित रचनाएं उच्च स्तरीय, ज्ञानवर्धक समसामयिक और रोचक होने के कारण संग्रहणीय हैं। छायाचित्रों से पत्रिका सुंदर एवं आकर्षक बन पड़ी है, जिससे विभिन्न कार्यालयों में राजभाषा संबंधी गतिविधियों से रूबरूह होने का अवसर प्राप्त हुआ है । 'नए प्रयोग जरूरी हैं–सरकारी कार्यालयों के हिंदी विभाग में ताजगी के लिए' राजभाषा से जुड़े कर्मियों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है । इससे राजभाषा के कार्यान्वयन में निश्चित रूप से नयापन आएगा। इसी परिप्रेक्ष्य में 'भूमंडलीकरण के संदर्भ में हिंदी' वैश्विक बाजार में हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता एवं आवश्यकता पर प्रकाश डालता है । पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में निश्चित रूप से सहायक सिद्ध होगी। संपादक मंडल एवं प्रकाशन से जुड़े सभी व्यक्ति तथा रचनाकार बधाई के पात्र हैं । पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए मंगल कामनाएं ।

–बापू साहेब शिवाप्पा कोरे
हिंदी अधिकारी, कार्यालय, वित्त एवं लेखा नियंत्रक (फै.) लेखा कार्यालय, गोला बारूद फैक्टरी, खड़की, पुणे-411003

'राजभाषा भारती' में हिंदी, हिंदी कार्यान्वयन एवं हिंदी प्रचार-प्रसार से संबंधित सारगर्भित लेखों से समृद्ध राजभाषा भारती का हर अंक हिंदी प्रेमियों के लिए संग्रहणीय है ।

–एम. जी. सोम शेखरन नायर
हिंदी अधिकारी, अंतरिक्ष विभाग, द्रव नोदन प्रणाली केंद्र, वलियमाला पि.ओ. तिरुवनंतपुरम-695547

"राजभाषा भारती" के अंक 126 (जुलाई-सितंबर, 2009) पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में पूर्णतया सहायक हैं । संपादक मंडल का कार्य प्रशंसनीय है ।

–डॉ. नागेश आर, अय्यर निदेशक
संरचना अभियांत्रिकी अनुसंधान केंद्र, सी.एस.आई.आर. कैंपस, तरमणी, चैन्नई-600113

राजभाषा भारती प्रत्रिका का अंक 126 (जुलाई-सितंबर, 2009), अंक मुखपृष्ठ से अंतिम पृष्ठ तक आकर्षक व मनोहर है। राजभाषा मास का यह अंक हिंदी भाषा की वैश्विक क्षितिज में उत्तरोत्तर हो रही गौरवशाली प्रगति को दर्शाता हुआ मौजूदा घड़ी में हिंदी विश्व में द्वितीय दर्जे की भाषा होने की विश्वस्तता निरुपित करता है। अंक में विदेशों के लगभग 165 विश्वविद्यालयों में हिंदी की व्यवस्था का उल्लेख मन हर्षित करता है। डॉ. एन.एस. शर्मा के लेख के अनुसार जर्मनी के 17 विश्वविद्यालयों में आज हिंदी के स्वतंत्र विभाग हैं। हमारी राजभाषा के प्रति विदेशी रुचि व रुझान होने की गरिमा का वर्णन है। जर्मन में संस्कृत समाचार के साथ-साथ नियमित रूप से शोधपूर्ण आलेख प्रसारित होने का उल्लेख भी हृदय प्रफुल्लित करता है। अंतर्राष्ट्रीय गौरव प्राप्त हुई भाषा अंग्रेजी के मूल शब्द मात्र दस हजार और हिंदी के दो लाख पचास हजार से भी अधिक होने की बात हिंदी के प्रचार-प्रसार और विकास की गौरवशालीनता दर्शाते हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि समूचे विश्व में एक दिन हिंदी उत्कृष्ट स्तर की प्रथम क्रमांक की होगी ही होगी। डॉ. उत्तम पटेल का लेख हिंदी शोध भी हिंदी की यथास्थिति की सही वास्तविकता का ही वर्णन है। श्री अमरीश सिन्हा का लेख भी कार्यालयों में हिंदी के लिए प्रयोग हेतु यथोचित निर्देशों से ओतप्रोत है। रचनाओं में एक स्तंभ स्वास्थ्य संबंधी भी अत्यंत उपयोगी, समसामयिक और अति सराहनीय है। मार्गदर्शक है। अन्य सभी रचनायें तथा आलेख पठनीय, रोचक तथा ज्ञानवर्धक है। इसके साथ-साथ देव प्रकाश मिश्र का नए स्तंभ में एक लेख कटघरे में संत कबीर और कुलदीप कुमार का लेख राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त भी उल्लेखनीय है। सामाजिक स्तंभ में भी डॉ. अखिलेश शुक्ल का लेख बदलते हुए सामाजिक परिवेश में पुलिस की भूमिका एक अच्छा समीचीन है। डॉ. विभा त्रिपाठी का 'मन' सामाजिक मूल्यों एवं समकालीन विमर्शों पर सहज काव्याभिव्यक्ति समसामयिक है, उच्चकोटि की, गंभीरतापूर्ण एवम् अति प्रभावी, प्रशंसनीय है, मर्मस्पर्शी है। संक्षिप्त में राजभाषा भारतीय उच्चकोटि के दार्शनिकों, समीक्षकों और लेखकों द्वारा प्रस्तुत आलेखों का भण्डार है, संकलन है, एक मनमोहक गुलदस्ता है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल ढेर सारी बधाइयों का पात्र है तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

–हरीश चन्द्र अग्रवाल
निवृत्त स्टेट बैंक अफसर, अकोला

राजभाषा भारती पढ़ कर भारत में हिंदी राजभाषा के होने वाले कार्यक्रमों के बारे में और राजभाषा अधिकारियों पूर्वोत्तर प्रदेशों में हिंदी का कार्यान्वियन दशा, दिशा के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त हुई।

–विजय राही, प्रदेश संगठक
मुंबई प्रदेश कांग्रेस सेवा दल, सांस्कृतिक विभाग, मुंबई

राजभाषा भारती का जुलाई-सितंबर का अंक 126 विषय स्तंभों का चयन बुद्धिमत्ता पूर्ण है। चूंकि शरीर ही सभी धर्म साधनाओं का माध्यम है, इसलिए श्री निशाकांत चतुर्वेदी का लेख 'सीमा सुरक्षा बल की कार्य परिस्थिति में मधुमेह से बचाव एवं शरीर भार पर नियंत्रण' एक अत्यंत उपयोगी लेख है। श्री चतुर्वेदी ने लेख लिखते समय हर कदम सम्हाल कर रखा है। यदि पाठक लेख में दी गई '-आदर्श दिन चर्या' का ही पालन करे तो वह अपने को पूर्ण स्वस्थ बना सकता है तथा दिन भर कल्याणकारी कार्य करते रहने पर भी थकेगा नहीं, बल्कि आनंद का रसास्वादन करेगा। वैसे सभी लेख अत्यंत उपयोगी हैं, विशेषकर चिंतन स्तंभ में प्रोफेसर शंकर बुंदेले ने एक बिल्कुल नए विषय का चयन किया है जिसके लिए वह बधाई के पात्र हैं। राजभाषा भारती के कलेवर को सुंदर अलंकारों से सजाने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

–नरेन्द्र वार्ष्णेय
सेवा निवृत्त सहायक प्रशिक्षण प्रबंधक, श्रीराम फर्टीलाइजर्स एण्ड केमीकल्स, कोटा (राज.)

'राजभाषा भारती' के विषय भी रोचक है। विश्व हिंदी दर्शन में 'विदेशी माटी में पल्लवित और पुष्पित हिंदी' लेख सुंदर है। हिंदी पूरे विश्व में फैल रही है। फिर भी कुछ राष्ट्रीय मनोभावना वाले हिंदी को अपना रहे हैं। केंद्रीय कार्यालयों में हिंदी का प्रभाव हो रहा है।

–बी. एस. शांताबाई
प्रधान सचिव, कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति, चामराजपेट, बेंगलूर-18

"राजभाषा भारती" के 126वें अंक की पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं, लेख एवं कहानियां बहुत ही मनोयोग से लिखी गई हैं। डॉ. उत्तम पटेल द्वारा लिखित "हिंदी शोध : सांप्रत स्थिति, चुनौतियां एवं संभावनाएं" डॉ. एन. एस. शर्मा द्वारा लिखित "विदेशी माटी में पल्लवित और पुष्पित हिंदी" बहुत ही रोचक, ज्ञानवर्धक और पठनीय है।

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका की श्रेष्ठ प्रकाशन के लिए बधाई और पत्रिका की बहुमुखी विकास एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

–हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु

राजभाषा भारती अंक 126 (जुलाई-सितंबर, 2009) पत्रिका के अन्य स्तंभों के साथ-साथ अंतिम पृष्ठ पर युनिकोड से संबंधी दी गई जानकारी सभी संस्थानों के लिए बहुत उपयोगी है ।

–डॉ. एम. ई. जॉन, क्षेत्रीय निदेशक
पशुपालन डेयरी एवं मात्स्यिकी विभाग, भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण, मुरगांव, गोवा

'राजभाषा भारती' के 126वें (जुलाई-सितंबर, 2009) अंक में समाहित समस्त सामग्री पठनीय एवं ज्ञानदर्धक है । पत्रिका के सभी रचनाकारों को हिंदी के प्रति अपने योगदान की निरंतरता के लिए तथा संपादक मंडल को उक्त पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

–अशोक कुमार भार्गव, लेखाकारी/राजभाषा
भारतीय लेखा तथा परीक्षा विभाग, प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक), राजस्थान

'राजभाषा भारती' अंक 126 (जुलाई-सितंबर, 2009) पत्रिका में राजभाषा हिंदी के नए-नए शब्दों दिशा-निर्देशों के साथ-साथ वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी की सार्थकता एवं आधुनिकता पर विचार तथा मधुमेह से बचाव जैसे महत्वपूर्ण लेखों का समावेश अत्यंत सराहनीय है ।

–एस. एस. राय, मेजर
मुख्यालय, 9 सैक्टर असम राइफल्स, पिन-934 829, मार्फत 99, सेना डाकघर

राजभाषा विभाग की त्रैमासिक पत्रिका राजभाषा भारती का 126वां अंक में राजभाषा हिंदी के संबंध में देश भर के कार्यकलापों से अवगत हुआ । पत्रिका में हिंदी भाषा के अतिरिक्त अन्य विविध विषय बेहद रोचक लगे । राजभाषा भारती में भाषा, ज्ञान-विज्ञान का प्रचुर भंडार समाहित है ।

–सादर सिंह
सहायक निदेशक (रा. भा.), संघ लोक सेवा आयोग, नई दिल्ली

पत्रिका राजभाषा भारती अंक 126 वर्ष जुलाई-सितंबर, 2009 में 'विदेशी माटी में पल्लवित और पुष्पित हिंदी' लेख पढ़ने से ज्ञात हुआ कि भारतवंशियों ने सारे विश्व में हिंदी का प्रचार एवं प्रसार कर अमूल्य योगदान दिया है । विशेष तौर पर दक्षिण-अफ्रीका, मारीशस, फीजी, सुरीनाम, गुयाना, त्रिनिदाद आदि देशों में हिंदी बहुत ही लोकप्रिय है एवं जनमानस की भाषा है । उनकी संस्कृति में रची बसी हुई है । अमरीका, रूस, जर्मनी, इंग्लैन्ड इत्यादि देशों में भी पठन-पाठन तथा शोधकार्य की समुचित व्यवस्था है । मैं समझता हूं कि विश्व भर में हिंदी निकट भविष्य में अपना एक गौरवमय स्थान बनाएगी।

–विजय कुमार तनेजा
केंद्रीय श्रम सेवा (सेवा निवृत्त), 27बी, पूसा रोड, नई दिल्ली

राजभाषा भारती, अंक 126, जुलाई-सितंबर, 2009 पत्रिका वास्तव में बेहद रोचक प्रभावी एवम् हिंदी की दशा, दिशा एवं विस्तार की जानकारी पुष्ट प्रमाणों सहित देती है । कंप्यूटर और विश्व बाजार में हिंदी अपने सरल रूप में जन-जन को आकर्षित कर रही है ।

–डॉ. आर. डी. 'चर्मा'
434 (19-1), हुडा केथल, हरियाणा-136 027

राजभाषा भारती, वर्ष 32 अंक 126, जुलाई-सितंबर, 2009 में 'चिंतन' के अंतर्गत प्रकाशित लेख हिंदी के प्रायोगिक तथ्यों से अवगत कराते हैं । अन्य लेखों में हिंदी के प्रति जन चेतना का आकलन कर पाना सहज हो जाता है।

–मनोहर धरफले
173, साकेत नगर, इंदौर-18

MGIPRRND—2629 HA/2010—5,000

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर कज़ाखिस्तान से आई विदेशी छात्रा को पुरस्कृत करती हुई विदेश राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर ।

नराकास दिल्ली (बैंक) की बैठक में "बैंक भारती" पत्रिका का विमोचन करते हुए (बीच में) श्री बी.एस. परशीरा, सचिव, भारत सरकार, साथ में है अन्य अधिकारीगण ।

पं.सं. 3246/77
आई एस एम एन 0970-9398

सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री
Prime Minister
संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी 10 जनवरी का दिन विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। वैश्विक मंच पर हिंदी को लोकप्रिय बनाने का यह एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है।

विगत कुछ वर्षों से वैश्विक मंच पर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाने में भारत सफल हो रहा है। इससे विश्वभर में हिंदी भाषा की लोकप्रियता और महत्त्व भी बढ़ा है। हिंदी भाषा को और अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए हमें सक्रिय प्रयास करने होंगे। विदेशों में बसे भारतीय और विदेश स्थित हमारे मिशन हिंदी को एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनाने में अपना पूरा सहयोग दे रहे हैं। इनके सहयोग से निश्चित ही लाभकारी परिणाम प्राप्त होंगे।

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

मनमोहन सिंह
(मनमोहन सिंह)

नई दिल्ली
2 जनवरी, 2010

भारत सरकार, राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय), लोकनायक भवन, नई दिल्ली-110003 के लिए शान्ति कुमार स्याल, सहायक संपादक द्वारा प्रकाशित तथा प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, रिंग रोड, मायापुरी, नई दिल्ली-110064 द्वारा मुद्रित ।